मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर-नरेश परमपद-प्राप्त राजर्षि महाराजा श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक आत्म-ज्ञान के पद्यों का संग्रह)

दूसरा भाग

संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहता

बीकानेर (राजस्थान)

मान पद्य–संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म–ज्ञान

(भूतपूर्व जोधपुर–नरेश परमपद–प्राप्त राजर्षि महाराजा श्री श्री मानसिंहजी महोदय रचित व्यावहारिक आत्म-ज्ञान के पद्यों का संग्रह)

दूसरा भाग

संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहता

बीकानेर (राजस्थान)

सरी बार) (१००० ( )

सम्वत् २००६

(मूल्य कागज, छपाइ,) का २।। रु०) (

जय-श्री मुद्रा प्रेस

C/o कोडूराम भवरलाल जिल्द साज

कोट गेट, बीकानेर मे भवरलाल स्वर्णकार द्वारा मुद्रित



संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक

रामगोपाल मोहता

मान पद्य-संग्रह

दूसरे भाग की पद्य-सूची

मान पद्य-संग्रह

अथवा

व्यावहारिक आत्म-ज्ञान

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, एक अखण्डित देव ।
गुणिजन गुण गायन करें, करत बुद्धि जन सेव ॥
मानसिंह जग आयके, ऐसा रटहु गणेश ।
आय जाय जन्मे नहीं, अमर रहत हमेश ॥
गुणगण[1] गणपति[2] गणाधिपति[3]; गुणहु अनन्त गुण होय।
मानसिंह वो गणपती, मरे न जन्मे कोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

सईयाँ गणपति गुण गावो ए।
निराकार निर्लेप गजानन्द, सोई मनावो ए ॥ टेर ॥
मूल महल में ॐ गणेशा, सोई निज ध्यावो ए।
निश्चय करने उलटा चालो, निज घर आवो ए ॥ १ ॥
ज्ञान कर्म संग नित रहवो, बाहर न जावो ए।
अपनो स्वरूप सोई तुरिया बिच, मौज उड़ावो ए ॥ २ ॥

१—तीन गुणों का समुदाय, २—सगुण ईश्वर, ३—परब्रह्म ।

श्वास न रूंधो कान नहीं मूंदो, ब्रह्म में समावो ए।
मातों हि सुख बिना हि परिश्रम, सहजे चढ़ावो ए ॥ ३ ॥
प्रकृति पुरुष पुरुष सो प्रकृति, भिन्न न बतावो ए।
तू है जगत् जगत् है तुझ में, एक मिलावो ए ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु ब्रह्म स्वरूपी, सहज दिखावो ए।
मान गणेश मरे नहिं जन्मे, अमर पद पावो ए ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मान सेव वो भगवती, रही विश्व को धार।
वो देवी क्या सुमरिये, जो और से मांगण हार।
और से मागण हार, भीग फिर और लगावे।
इतनी हिम्मत नॉय, आप हाथे जो खावे।
पुरुषारथ में हीन सो, पूजत मूर्ख गंवार।
मान सुमर वो भगवती, रही विश्व को धार॥

॥ कुण्डलिया ॥

योगमाया जो कृष्ण की, कृष्ण सर्व आधार।
तू उनही को ध्याय ले, तब हो बेड़ा पार।
तब हो बेड़ा पार, रूप अपने को पावे।
कृष्ण के मॉय समाय, माया फिर नॉय सतावे।
काल सदा डरतो रहे, मिटे जो द्वैत विकार।
योग माया जो कृष्ण की, कृष्ण सर्व आधार॥

॥ कुण्डलिया ॥

कोइक पूजत कालिका, कोइक चण्डी ध्याय।
कोइक पूजत शीतला, अन्धविश्वास न जाय।
अन्धविश्वास न जाय, कहो कब तक समझावे।
कह गये संत अनन्त, अनन्त[1] जो कहत थकावे।
डाको चाहे कितनी कहो, अक्ल जरा नहीं आय।
कइयक पूजत कालिका, कइयक चण्डी ध्याय॥

॥ चौपाई ॥

चारूँ वेद में कही यह बानी। इच्छा आदि ब्रह्म की मानी॥
तातें बात समझ कर लीजे। पुरुष एक रट दुविधा तजीजे॥

१—शेष भगवान्।

इच्छा पुरुष माँय मिल जावे। तातें पुरुष जो एक कहावे॥
अविद्या मात्र लेश है भाई। तातें बंधन रूप कहाई॥

॥ दोहा ॥

माया ब्रह्म द्वितिये नहीं, हुवा न कभी होय।
मानसिंह जग भरम में, पड़ी लटक रही सोय॥

॥ दोहा ॥

मान कहे महादेव सब, करे न अर्थ विचार।
देव विचारे आपनो, तो भव सागर पार॥
सब देवन को देव है, महा एक आतम देव।
और देव सब छोड़ के, करिहे आतम सेव॥
जीव भाव जड़ता तजो, फिर नहीं आय कलेश।
सब से शेष पावे तुम्हें, उनको समझ महेश॥
विषय तजे इन्द्री तजी, तज दीनो जब मन।
तब मिल गये निज शंभु, से, आतम अखिल रतन॥

॥ गान ॥

॥ राग टोडी । ताल तिताला ॥

उन हर की बलिहारी, साधो मैं तो उन हर की बलिहारी।
सबके हृदय बीच जो व्यापक, वेद रटे नित चारी। साधो मैं तो॥ टेर॥
नहीं काशी कैलाश में जाऊँ, पैंड एक नहीं धारी।
तीन गुणों पर मन को मार्यो, सो महेश त्रिपुरारी॥ १॥
नहीं भंग पीवे न होय बावरो, चातुर अजब खिलारी।
जगत् रच्यो और रहत अकर्ता, इनकी शोभा न्यारी॥ २॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जब, बिगड़ी बात सुधारी।
मानसिंह परस्यो निज शंकर, गिरजा सुरत हमारी॥ ३॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरव । ताल दादरा ॥

हे महेश दीन बन्धु, सर्व व्यापी प्यारे।
हम हैं तेरे तुम हो मेरे हम न तुम से न्यारे॥ टेर॥
कहते हैं यह मसखरे सब मकर से उचारे।
गाल को बजाय गाय झूठ कहें सारे॥ १॥
कहते तुमको भंग पीये कलंक झूठ डारे।

विश्वपति हो जो तुम्ही जगत के उजारे ॥ २ ॥
तुम से भूमि और आकाश सूर्य चन्द तारे।
जाने नहीं अर्थ तेरो वृथा सिर को मारे ॥ ३ ॥
कहते हैं जो शिव शिव अर्थ ना विचारे।
आत्म रूप शिव स्वरूप वेद कहे चारे ॥ ४ ॥
कहते बम्म भोला तुम्हें मूर्ख जो गंवारे।
अगर आप भोले होते जगत किम रचारे ॥ ५ ॥
करते है यह विनय तुम से वेद विधि उचारे।
मगर अर्थ भूल गये जिनसे दुःख भारे ॥ ६ ॥
बार बार वर यह मांगू घट के पट उघारे।
मान जीव भाव त्याग ब्रह्म में विठा रे ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

श्याम स्वरूप सभी जग है वह नित्य सदा न गयो नहीं आयो।
गुंडन गोल में भूल गयो इन न्यारो हि न्यारो जो मोय बतायो।
देवदत्ताथ कृपा करके निज रूप दिखाय के भरम मिटायो।
मान को ज्ञान परी अबही तब पोल के पन्थ को दूर हटायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल ध्रुपद ॥

झूलत[1] मेरो अखण्ड श्याम[2], पास रहत प्यारी[3] ॥ टेर ॥
नाय कहीं जाय आय, प्राण को आधारी।
भूले जीव जाने नाँई, पावत दुःख भारी ॥ १ ॥
पंच कोश पंच विषय, रहत आज्ञाकारी।
देव जाको दिव्य दृष्टि, मोह तम हारी ॥ २ ॥
नहीं राधे कुकर्म कीन, कृष्ण ना व्यभिचारी।
मानसिंह पूर्ण ब्रह्म, कुरी कहे लबारी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल ध्रुपद ॥

कृष्णचन्द्र पुरुष एक, गोपी जगत् सारी ॥ टेर ॥
धरत स्वाँग नये नये, भीख के भिखारी।
कहत हरि ब्रज विहारी, जगत को विहारी ॥ १ ॥

१—सर्वत्र व्याप रहा, २—आत्मा, ३—बुद्धि।

कृष्ण जैसे महा योगी, वेद रटत चारी ।
इनके मन में शरम नाँहीं, कहवत व्यभिचारी ॥ २ ॥
मान कहे देवनाथ, मेरी तो सुधारी ।
मेरी कही तुम भी मानो, होवहु भवपारी ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल करवा ॥

मोहन रूप मिल्यो जग में ओ मोहन हारो रे;
रूप निज श्याम निहारो । हाँ रूप निज० ॥ टेर ॥
आदि अमर अज्ञात कहाय, नित्य रहे ओ आय न जाय ।
गुणिजन करत विचार धार नित एक ही सारो रे । रूप निज श्याम० ॥ १ ॥
यही गोपाल और ग्वाल कहाय, नारी पुरुष में एक रहाय ।
वोही बैंस बजाय के विश्व नचावन हारो रे । रूप निज श्याम० ॥ २ ॥
वन उपवन लीना सब जोय, न्यारो नहीं तो मिले क्या कोय ।
गीता ग्रन्थ में कृष्ण स्वयं यूँ आप पुकारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ३ ॥
भूल पड़े सो न्यारो गाय, न्यारो कहे जाके हाथ न आय ।
ढूँढ लेवो सब जगत मिले नहीं श्याम हमारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ४ ॥
तुम ढूँढो जो नंद को लाल, वो तो गये काल के गाल ।
घट घट ढूँढो आतम कृष्ण नहीं तो काल तुम्हारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ५ ॥
देवनाथ भ्रम भञ्जनहार, जिन दिखलायो नित्य अवतार ।
मानसिंह जब निरख लियो भ्रम उड़ गयो सारो रे । रूप निज श्याम० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल तिताला या करवा ॥

देख्यो मैं तो सब घट श्याम विहारी रे ॥ टेर ॥
श्याम बिना कोई घट नहीं खाली, हरदम समझ विचारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ १ ॥
जिण घट में जो श्याम न होवें, चट देवें बाहर निकारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ २ ॥
वोही मन्दिर वोही है मूरत, वोही है प्रेम पुजारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ३ ॥
जड़ चेतन में श्याम ही दीखे, श्याम रूप नर-नारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ४ ॥
श्याम ही मित्र श्याम कहिये शत्रु, सृष्टि श्याम निहारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु मिले मान को, जिण कियो सुखकारी रे । देख्यो मैं तो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉंड-आसावरी। ताल तिताला या कैरवा ॥

देख्यो मैं तो सब जग खेल खिलारी रे ॥ टेर ॥
खेले खेल अखेल है नित, इनकी है गत इक न्यारी रे । देख्यो मैं० ॥ १ ॥
मोतियाबिन्द कियो सब जग को, भूल गयो जग सारी रे । देख्यो मैं० ॥ २ ॥
अंजन ज्ञान कियो गुरु मुख सूँ, जब सूझी मोहे सारी रे । देख्यो मैं० ॥ ३ ॥
साधक सिद्ध ने सिद्ध सुजान भये, सोई अंजन हम सारी रे । देख्यो मैं० ॥ ४ ॥
नभ पाताल भूमण्डल सारो, कौतुक रूप निहारी रे । देख्यो मैं० ॥ ५ ॥
मान कहे ऐसी भई मम दृष्टि, जैसे तुलसी पुकारी रे । देख्यो मैं० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती-गरबा, मेला। ताल नकटा दादरा ॥

वाला सब मॉय खेले म्हारो श्याम, एने कोई जाणतो नथी ।
जाणतो नथी एने पहिचानतो नथी, वाला सब मॉय खेले० ॥ टेर ॥
क्यों कहिये श्याम हमारो रे । सब मॉय खेले सब थी न्यारो रे ।
हॉं रे वाला पूरण रूप तमाम, एने कोई जाणतो नथी ॥ १ ॥
भूला जीव बाहिर भरमावे रे । बिन जाण्यॉं बिन केम करी पावे रे ।
हॉं रे वाला शी कर थाय विश्राम, एने कोई जाणतो नथी ॥ २ ॥
प्राणांनु प्यारो वालो आपनु आप छै रे, भेद बिना बधा मेहे सन्ताप छै रे ।
हॉं रे वाला पड़ता नथी वेद ना कलाम, एने कोई जाणतो नथी ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु भेद जणाव्यो रे । शुद्ध करी ने रूप समझाव्यो रे ।
हॉं रे वाला दूर थई रह्यो छै अज्ञान, एने कोई जाणतो नथी ॥ ४ ॥
मानसिंह हवे भूलत नॉई रे । जेवो हतो तेवो दीधो लखाई रे ।
हॉं रे वाला दीधो छै काल सिर पॉंव, एने कोई जाणतो नथी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती गरबा। ताल नकटा दादरा ॥

वाला सूता उडाड़ी गुरु नींद छै रे ॥ टेर ॥
जन्म अनेकनी था नीन्द एवी कहिये ।
हॉंरे वाला आयने बजाई गुरु वीण छै रे । वाला सूता उडाडी० ॥ १ ॥
जागी गयो छूँ हवे पाछो नथी सोऊँ ।
हॉंरे वाला गुरु चरणॉं मे सिर दीन छै रे । वाला सूता उडाडी० ॥ २ ॥
आत्म तत्त्व पायो हवे सबे दुःख टूटा ।

हाँरे वाला ब्रह्म घोड़े चढ़ी थयो वींद छै रे। वाला सूता उडाड़ी० ॥ ३ ॥
देवनाथ हाथ पकड़ आप में मिलायो।
हवे मान थयो गुरू बिच लीन छे रे। वाला सूता उडाड़ी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड—आसावरी । ताल कैरवा ॥

नेरख[1] रूप सुख पाई हे, विहारी[2] जी रो, निरख रूप सुख पाई हे ॥ टेर ॥
नव में विहार[3] करे ओ निर्भय, किण सूँ ही शंके[4] नांई हे। विहारीजी रो० ॥१॥
सुरत सुहागण श्याम ने निरख्यो, मन मन्दिर रे माँई हे। विहारीजी रो० ॥२॥
नेत झाँकी ज्याँरे पड़दो न कोई, बात कराँ मन भाई हे। विहारीजी रो० ॥३॥
बाल न ज्वान वृद्ध कुछ नाँही, एक रस रहत सदाई हे। विहारीजी रो० ॥४॥
एक रस श्याम[5] श्यामा[6] भई एक रस, रस[7] विच रस हो समाई हे। विहारी ॥५॥
मानसिंह गुरु देवनाथ सो, भ्रम दियो दूर भगाई हे। विहारीजी रो० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग टोडी जौनपुरी । ताल कैरवा ॥

सनमुख दरसण कीना; विहारीजी रा, परगट दरसण कीना।
कर दरसण सब दुविधा भागी, इत उत कहीं भटकी ना। विहारीजी रा० ॥टेर॥
करम कपाट ज्याँरा नहीं उघड़े, वो समझो मत हीना।
करम कपाट को दूर कियो जिन, सदाई रहत रङ्ग भीना ॥ १ ॥
इण दरसण में अमृत बरसे, भाग बड़ा जिन पीना।
है मतिमन्द प्रकट नहीं जोवे, जाय पथरन सिर दीना ॥ २ ॥
मन्दिर में गावें और नाचे, निरत बहू विध कीना।
हम तो परिश्रम बहुत ही कीनो, वाह वाह तक नहीं दीना ॥ ३ ॥
गाय गाय सिर दूखण लागो, नाचण शक्ति रही ना।
हम ही थाक कर घर को चले गये, उण तो कुछ भी कही ना ॥ ४ ॥
ऐसो गूंगो देव हमारो, वृत्ती मान रही ना।
मानसिंह आतम भयो अनुभव, पल एक दूर गई ना ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग गोरी । ताल कैरवा ॥

इन छवि पर बलिहारी, मोहन प्यारे इन छवि पर बलिहारी ॥ टेर ॥

१—आत्म ज्ञान, २—आत्मा, ३—व्यापक, ४—सदा एक रस, ५—आत्मा, ६—सुरता, ७—आत्म प्रेम।

ममता स्वरूप मुकुट शिर धारी, सब जग को अधिकारी।
सब को खेलावे आपही खेले, ऐसो है अजब मदारी। मोहन प्यारे० ॥ १ ॥
मीठा बोल चाल अति मीठी, प्रेम सहित ब्रह्मचारी।
अपनो ही भाव सकल मॉहि देखे, समझे न जग को न्यारी। मोहन प्यारे० ॥२॥
चारू वेद उपनिषद इक शत, हो तुम सार में सारी।
सो सारांश गुप्त नहि राख्यो, गीता प्रगट पुकारी। मोहन प्यारे० ॥ ३ ॥
नभ और भू पाताल बसी सब, लागत हमको प्यारी।
आप बजावे आप बस भयो है, करत रागनी सारी। मोहन प्यारे० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु निगुण सगुण होय, बात कही अति भारी।
मानसिंह गम अन्तर कर के, मन बिच देख्यो मुरारी। मोहन प्यारे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज लावणी की। ताल कैरवा ॥

मिल्यो सखी मग में बनवारी, उन्हीं से लागी दो तारी ॥ टेर ॥
मैन मोहन से लगी म्हारी, सैन लगते ही सुधि हारी।
गो रक्षक गोपाल ने, मम तन मन वश कीन।
और बात मोये कछु नहीं सूझे, भई श्याम आधीन,
भूल गई तन की सुधि सारी, उन्हीं से लागी० ॥ १ ॥
मैन में अजब रंग प्यारी, प्रेम की छटा बहुत भारी।
कैद किये इण विश्व को, न्यारो रह गयो आप।
जो इणने जाणे नहीं मरे, सहे तीन संताप,
कहे यूँ वेद प्रकट जारी, उन्ही से लागी० ॥ २ ॥
उड़े अब जीव ब्रह्म दोई, पिया[1] और प्यारी[2] एक होई।
पड़दा टूटा द्वैत का, पायो एक स्वरूप।
अपने आप समा गयो सरे, दूर भरम का कूप,
आनन्द उपज्यो दिल में भारी, उन्ही से० ॥ ३ ॥
करें क्या जन इण से हारी, थाक गये वेद कहत चारी।
इण चटकील श्याम ने, सबको लियो चित चोर।
विश्व विभू की कुञ्ज गली में, खेले नवलकिशोर।
खेल रही गोपी संग नारी, उन्हीं से० ॥ ४ ॥

१—आत्मा. २—वृत्ति।

मिले गुरु देवनाथ नामी: कृपा कर भेट्यो निज स्वामी ।
मान ज्ञान जोबन (१) तणो गुण्डन को नहीं दीन ।
महात में मान समा गयो सरे, होय कृष्ण में लीन,
मिटी है विपदा सब म्हारी, उन्हीं से लागी० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'व्रज के रसिया' की । ताल कैरवा ॥

ऐसो अजर अमर घनश्याम (२) श्याम से प्रीत लगाई रे ॥ टेर ॥
प्रीत लगाय के पलटत (३) नांई रे । जो पलटे तो प्रीत न कहाई रे ।
प्रीत लगाय के पलटत नांई । जो पलटे तो प्रीत न कहाई ।
शीश (४) उतार धरयो जब अपनो आवत नांई रे । ऐसो अजर अमर० ॥१॥
प्रीति करी जद यह फल पायो रे । अपने संग निज रूप बनायो रे ।
प्रीति करी जद यह फल पायो । अपने संग निज रूप बनायो ।
जीव जीव के जाल मिटाय जिन भ्रान्ति भगाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥२॥
सत् चित् घन प्रभु नाम तुम्हारो रे । सब में रहत लगत अति प्यारो रे ।
सत् चित् घन प्रभु नाम तुम्हारो । सब में रहत लगत अति प्यारो ।
क्या कहूँ शोभा आपकी मैं कुछ पार न पाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥३॥
देवनाथ को साथ सुहायो रे । जिन ब्रह्मण्ड को ब्रज यह बतायो रे ।
देवनाथ को साथ सुहायो । जिन ब्रह्मण्ड को ब्रज यह बतायो ।
मान रास अब देखत मन में हरष मनाई रे । ऐसो अजर अमर० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'व्रज के रसिया' की । ताल कैरवा ॥

थाँसूँ प्रीत करी मनमोहन (५), म्हारी (६) प्रीत निभाज्यो जी ॥ टेर ॥
इण भव में कोई साथी न म्हारो जी । थे हो म्हारा ने मैं हूँ थाँरो जी ।
इण भव में कोई साथी न म्हारो । थे हो म्हारा ने मैं हूँ थाँरो ।
आदि सनातन जाण आपणो मत बिसराज्योजी । थाँसूँ० ॥ १ ॥
थे छो मोटा ने मैं हूँ छोटा (७) जी । होय अविद्या में कर्म किया खोटा जी ।
थे छो मोटा ने मैं हूँ छोटा । होय अविद्या में कर्म किया खोटा ।
अब तो आपणो जाण अविद्या दूर हटाज्यो जी । थाँसूँ० ॥ २ ॥

१—मनुष्य जीवन, २—आत्मा, ३—दृढ़ निश्चय, ४—देहाभिमान का त्याग, ५—परमात्मा, ६—जिज्ञासु, ७—जीवभाव ।

हम तुम दोऊ इक संग उपजाये जी । एक अनेक तुमही तो बनाये जी ।
हम तुम दोऊ इक संग उपजाये । एक अनेक तुम ही तो बनाये ।
मैं हूँ अंश तुम्हारो प्रभु अब मोय मिलाज्यो जी । थाँमूँ० ॥ ३ ॥
किया अनेक एक कर लीजे जी । तुम बहुनामी कछु नहिं छीजे जी ।
किया अनेक एक कर लीजे । तुम बहुनामी कछु नहिं छीजे ।
हम तुमरी आज्ञा को पाली अब तुम पालीज्यो जी । थाँमूँ० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मज्ञानी जी । मान बात तब ही पहिचानीजी ।
देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मज्ञानी । मान बात तब ही पहिचानी ।
प्रेम पियाला पाय नाथ अपनो अपनाज्यो जी । थाँमूँ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'ब्रज के रसिया' की । ताल कैरवा ॥

देखो माया सब गोपाल की, क्या तुम रास दिखावो रे । ॥ टेर ॥
असल मिले नकली नहीं भावे रे । झूठे स्वाँग कुण ध्यान लगावे रे ।
असली मिले नकल नहीं भावे । झूठे स्वाँग कुण ध्यान लगावे ।
मत पुरुषां रे स्वाँग धार मत ध्यान गमावो रे । देखो माया सब० ॥ १ ॥
कृष्ण समान नहीं ब्रह्मचारी रे । आप समान लखी ब्रजनारी रे ।
कृष्ण समान नहीं ब्रह्मचारी । आप समान लखी ब्रज नारी ।
झूठो नाम लगाय धर्म ने दाग लगावो रे । देखो माया सब० ॥ २ ॥
अन्तर कृष्ण को ध्यान लगावो रे । होय बारीक कृष्ण में समावो रे ।
अन्तर कृष्ण को ध्यान लगावो । होय बारीक कृष्ण में समावो ।
जाणो ईश्वर रूप जन्म तुम फेर न पावो रे । देखो माया सब० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु पर उपकारी रे । सहज बतायो है कृष्ण मुरारी रे ।
देवनाथ गुरु पर उपकारी । सहज बतायो है कृष्ण मुरारी ।
मान कहे मैं देखूँ नहीं तुम दूर हो जावो रे । देखो माया सब० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत में, पूजा एक महान ।
पूजन जिन (१) को भूल गये, पूजन लगे पहान (२) ॥
मानसिंह या जगत में, पूजा एक प्रधान ।
पूजन जिनको भूल गये, सभी बिगाड़ी तान ॥
सेवा कर आने नहीं, सेवक नाम धराय ।

१—आत्मा. २—पत्थर ।

निज मन्दिर में श्याम है, तिनकी सेवा पन्थ ॥
ऊपर तिलक लगाय के, जगत दिखाऊ सन्त ।
अन्तर तिलक (१) सो विसरियो, लख्यो न प्रेम को पन्थ ॥
प्रेम पन्थ जाने बिना, प्रेम नगर (२) किम आय ।
प्रेम नगर आयाँ बिना, गिरधर मिलसी नाँय ॥
प्रेम गाम पारथ चल्यो, मिले हैं सुन्दर श्याम ।
सो गीता को देख लो, कहत प्रेम को गाँव ॥
प्रेम गाम की सैल सो, पारथ प्रतक्ष कीन ।
रण भूल्यो भारत कियो, रह्यो ब्रह्म में लीन ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

मिल गये प्रेम पुजारी रे, मन्दिरिये(३) में मिल(४) गये प्रेम पुजारी(५) रे ॥ टेर ॥
प्रेम पुजारी कपट पट खोल्यां, दरश दियो गिरधारी रे । मन्दिरिये में मिल गये० ॥ १ ॥
उण मन्दिर में दरशण कीना, मिटी है कल्पना सारी रे । मन्दिरिये में० ॥ २ ॥
मन मैलापण दूर गयो सब, हरदम रहत उजियारी रे । मन्दिरिये में० ॥ ३ ॥
मानसिंह जब मिले गिरधर में, नाँहि पुरुष नहिं नारी रे । मन्दिरिये में० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

प्रेम नहीं पर (६) घर में, यह देख्यो मैं तो, प्रेम नहीं पर घर में ॥ टेर ॥
चारूँ ही धाम तीरथ सब खोज्या, पायो मन मन्दिर में । यह देख्यो मैं तो ॥ १ ॥
पर घर प्रीत प्रीत नहीं घर सूँ, सो योंही रहसी अधर में । यह० ॥ २ ॥
प्रेम पन्थ कोई विरला पावे, कबहूँ न जाय भँवर (७) में । यह० ॥ ३ ॥
बाहिर भटकी कबहूँ न पायो, खो दीवी संपति अमर में । यह० ॥ ४ ॥
पर घर पलट घर को घर जोयो, उतर ने खेली समर (८) में । यह० ॥ ५ ॥
मानसिंह प्रेम पद पूरो, जाय मिल्या गिरधर में । यह० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-आसावरी । ताल कैरवा ॥

सिन्धु सुता (९) पति पायो, अन्तर में तो, सिन्धु सुता पति पायो ॥ टेर ॥

१-ज्ञान, २-सर्वात्म भाव, ३-मन, ४-परमात्मा से मिल गये, ५-आत्मप्रेम के उपासक, ६-बाहिरी मन्दिरों आदि में, ७-अविद्या, ८-विचार रूपीयुद्ध, ९-परमात्मा

शिव रिपु(१)मेरो कछु ना कर ही, विष्णु प्रिय(२)मन भायो । अन्तर मैं तो ॥१॥
भृगु के मित्र (३) को अलग कर दीनो, राधे मीत (४) अपनायो । अन्तर० ॥ २ ॥
भरत रिपु (५) को नाश कियो जद, मीत (६) प्रह्लाद सुहायो । अन्तर० ॥ ३ ॥
रावे रिपु (७) को अलग कियो मैं, मान यूँ सहज समायो । अन्तर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

कृष्ण कहाँ किम आवे । श्रद्धा बिन कृष्ण कहो किम आवे ॥ टेर ॥
क्या वो आवे कहाँ गयो है, नैन (८) बिना नहीं पावे ।
नारी नर और नर निरखे नारी, कृष्ण को दोष लगावे । श्रद्धा० ॥ १ ॥
यह तन रथ इन्द्रिय सब घोड़े, अर्जुन मन ठहरावे ।
निज निश्चय की बाग डोर कर, कृष्ण हाथ पकड़ावे । श्रद्धा० ॥ २ ॥
शुद्ध चेतन निज कृष्ण विराजे, दिव्य दृष्टि दरसावे ।
गुरु गम ज्ञान तरक कर पूछे, सब संशय भग जावे । श्रद्धा० ॥ ३ ॥
मन और जीव जो एक रूप है, जीव ही ब्रह्म कहावे ।
अर्जुन कृष्ण कृष्ण भयो अर्जुन, गीता गुप्त गम पावे । श्रद्धा० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु भेद दियो जद, मन को भरम मिटावे ।
मान कृष्ण मेरे पास सदा है, कुण फिर भेज बुलावे । श्रद्धा० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

पपीहा (९) वृथा बोल क्यों खोवे । तू बोले पर शक (१०) सुने नहीं
बिरहनी (११) सुन कर रोवे ॥ टेर ॥
मरुधर(१२) देश कोमां जल(१३) दूरो, कहाँ यहाँ निकट पड्यो है ।
बूँद(१४)चहे तो जाय दधि(१५)दिग, जहां नित मेघ(१६)चढ्यो है ॥ १ ॥
इन्द्र(१७)भी निठुर(१८)निठुर हैं हम भी, दोनूँ को युद्ध(१९)छिड्यो है ।
महा भयानक काल (२०) निकस गयो, तब हूँ न प्राण हरयो है ॥ २ ॥

१—कामदेव, २—सत्वगुण, ३—क्रोध, ४—प्रेम, ५—मोह, ६—ज्ञान, ७—मान, ८—ज्ञान-दृष्टि, ९-नाम रटने वाला, १०-भगवान, ११-भक्त, १२-तुरीय पद, १३-आनन्द, १४-आनन्द, १५-विचारसमुद्र, १६-ज्ञानामृत रूपी वर्षा, १७-परमात्मा, १८—नाम रूप से परे=निर्बन्ध, निर्लिप्त, १९—एकता की लड़ाई, २०—मृत्यु ।

या तो पपीहा पीह (१) मत बोलो, नहीं मन भावत मोहे ।
बाल पीह पीह पीयहि (२) बुलावे, जब जानें हम तोहे ॥ ३ ॥
वे दिन (३) गये सुनत बान तेरी, अब तो दूर (४) गयो है ।
उड़ परे जाय कान मत खावे, शीश पचाय रह्यो है ॥ ४ ॥
पिया परदेश (५) जहाँ तुम जावो, यहाँ पड़ यो क्या रोहे ।
मान कहे चातक (६) मानो अब, काहे को मूरख भयो है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मोहे भगवत भक्ति भावे ।
ब्रह्म सम्बन्ध प्रेमयुत लीनो और न सम्बन्ध सुहावे ॥ टेर ॥
गोस्वामी श्री सतगुरु मेरे, जिनसे प्रेम बढ़ावें ।
जो अतीत गोपाल निरख के, बाहर कहीं न जावें । मोहे भगवत०॥ १ ॥
सब कुछ भोगत रहत अभोगी, बाल न वृद्ध कहावे ।
ऐसो पाय अवर क्यों ध्यावें, मन मन्दिर दरसावे । मोहे भगवत० ॥ २ ॥
पाँच पचीस मिली सब गोपी, तुरिये पद जहीं आवे ।
अनहद रास रच्यो एकताई, कृष्ण में गोपी समावे । मोहे भगवत० ॥ ३ ॥
पन्थापन्थ के जाल फँसे नहीं, प्रेम मार्ग बिच जावे ।
विश्व सभी है रूप विष्णु को, सो हम इष्ट मनावे । मोहे भगवत० ॥ ४ ॥
पेला पन्थ में बहुत रहे हम, अब ना श्यान नमावें ।
असली वैष्णव विश्व को जाने, सो इस मार्ग में आवे । मोहे भगवत० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु गाम गोकुल में, मधु अर बैन सुनावे ।
मानसिंह अब मरे न जन्मे, ब्रह्म स्वरूप समावे । मोहे भगवत० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के ढंके" की । ताल कैरवा ॥

म्हारी जी रो ओगो है अमर सदाई हो ।
म्हणें मैं तो निरख परम सुख पाई हो ॥ टेर ॥
र (७) ने ऊ (८) सूँ बणियो है ओगो, जिण में धागो (९) लग्यो अमोलो ।
से चढ़ावण आई हो । बिहारी जी रो० ॥ १ ॥

१– परमात्मा का नाम रटना, २– परमात्मा ३– अन्ध-विश्वास की दशा, आगे बढ़ गये, ५–दूर, ६–पपीहा, चतुर, ७– अन्तःकरण, ८–पद्–सम्पत्ति, —कता ।

शिव रिपु(१)मेरो कछु ना कर ही, विष्णु प्रिय(२)मन भायो । अन्तर में तो ॥१॥
भृगु के मित्र (३) को अलग कर दीनों, राधे मीत (४) अपनायो । अन्तर० ॥ २ ॥
राम रिपु (५) को नाश कियो जद, मीत (६) प्रह्लाद सुहायो । अन्तर० ॥ ३ ॥
राधे रिपु (७) को अलग कियो मैं, मान यूं सहज समायो । अन्तर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

कृष्ण कहो किम आवे । श्रद्धा बिन कृष्ण कहो किम आवे ॥ टेर ॥
कथा बो आवे कहाँ गयो है, नैन (८) बिना नहीं पावे ।
नारी नर और नर निरखे नारी, कृष्ण को दोष लगावे । श्रद्धा० ॥ १ ॥
यह तन रथ इन्द्रिय सब घोड़े, अर्जुन मन ठहरावे ।
निज निश्चय की बाग डोर कर, कृष्ण हाथ पकड़ावे । श्रद्धा० ॥ २ ॥
शुद्ध चेतन निज कृष्ण विराजे, दिव्य दृष्टि दरसावे ।
गुरु गम ज्ञान तर्क कर पूछे, सब संशय भग जावे । श्रद्धा० ॥ ३ ॥
मन और जीव जो एक रूप है, जीव ही ब्रह्म कहावे ।
अर्जुन कृष्ण कृष्ण भयो अर्जुन, गीता गुप्त गम पावे । श्रद्धा० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु भेद दियो जद, मन को भरम मिटावे ।
मान कृष्ण मेरे पास सदा है, कृष्ण कि भेज बुलावे । श्रद्धा० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

पपीहा (९) वृथा बोल क्यों खोवे । तू बोले पर राम (१०) सुने नहीं,
विरहनी (११) सुन कर रोवे ॥ टेर ॥
मरुधर(१२) देश कोसां जल(१३) दूरो, कहाँ यहाँ निकट पड्यो है ।
बूंद(१४)चहे तो जाय दधि(१५)ढिग, जहां नित मेघ(१६)चढ्यो है ॥ १ ॥
इन्द्र(१७)भी निठु(१८)निठुर है हम भी, दोनूं को युद्ध(१९)छिड्यो है ।
महा भयानक काल (२०) निकस गयो, तब हूं न प्राण हरयो है ॥ २ ॥

१—कामदेव, २—सङ्कर्षण, ३—क्रोध, ४—प्रेम, ५—मोह, ६—ज्ञान, ७—मान, ८—ज्ञान-दृष्टि, ९—नाम रटने वाला, १०—भगवान, ११—भक्त, १२—तुरीय पद, १३—आनन्द, १४—आनन्द, १५—विचारसमुद्र, १६—ज्ञानामृत रूपी वर्षा, १७—परमात्मा, १८—नाम रूप से परे निर्बन्ध, निर्लिप्त, १९—एकता की लड़ाई, २०—मृत्यु ।

या तो पपीह् पीह् (१) मत बोलो, नहीं मन भावन मोहे।
बोल पीह् पीह् पीयहि (२) बुलावे, जब जानें हम तोहे ॥ ३ ॥
वो दिन (३) गये सुनत बान तेरी, अब तो दूर (४) गयो है।
उड़ परे जाय कान मत खावे, शीश पचाय रह्यो है ॥ ४ ॥
पिया परदेश (५) जहाँ तुम जावो, यहाँ पड़्यो क्या रोहे।
मान कहे चातक (६) मानो अब, काहे को मूरख भयो है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मोहे भगवत भक्ति भावे।
ब्रह्म सम्बन्ध प्रेमयुत लीनो और न सम्बन्ध सुहावे ॥ टेर ॥
गोस्वामी सो सतगुरु मेरे, जिनसे प्रेम बढ़ावें।
गो अतीत गोपाल निरख के, बाहर कहीं न जावें। मोहे भगवत० ॥ १ ॥
सब कुछ भोगत रहत अभोगी, बाल न वृद्ध कहावे।
ऐसो पाय अवर क्यों ध्यावें, मन मन्दिर दरसावे। मोहे भगवत० ॥ २ ॥
पाँच पचीस मिली सब गोपी, तुरिये पद जहीं आवे।
अनहद रास रच्यो एकताई, कृष्ण में गोपी समावे। मोहे भगवत० ॥ ३ ॥
पन्थापन्थ के जाल फँसे नहीं, प्रेम माग विच जावे।
विश्व सभी है रूप विष्णु को, सो हम इष्ट मनावे। मोहे भगवत० ॥ ४ ॥
पोला पन्थ में बहुत रहे हम, अब ना स्थान गमावें।
असली वैष्णव विश्व को जाने, सो इस मारग में आवे। मोहे भगवत० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु नाम गोकुल में, मधु भर बैन सुनावे।
मानसिंह अब मरे न जन्मे, ब्रह्म स्वरूप समावे। मोहे भगवत० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के डंके" की । ताल कैरवा ॥

विहारी जी रो छोगो है अमर सदाई हो।
निरख्यो मैं तो निरख परख सुख पाई हो ॥ टेर ॥
चार (७) ने छः (८) सूँ बणियो है छोगो, जिण में बागो (९) लग्यो अमोलो।
वृत्ति चढावण आई हो। विहारी जी रो० ॥ १ ॥

१- परमात्मा का नाम रटना, २- परमात्मा ३- अन्ध-विश्वास की दशा, ४- आगे बढ़ गये, ५- दूर, ६- पपीहा; चतुर, ७- अन्तःकरण, ८- षट्-सम्पत्ति, ९- पकता।

साम्य (१) योग को मोर मुकुट है, प्रेम प्रीत की सोहे लट है।
एकटक ध्यान लगाई हो। बिहारी जी० ॥ २ ॥
इण छोगे रा तार (२) अनन्ता, गिण गिण हार्‌या वेद और ग्रन्था।
धारे सो अमर हो जाई हो। बिहारी जी ॥ ३ ॥
ओ छोगालो छैल छबीलो, कृष्णचन्द्र नित रहत रँगीलो।
मिले जो रँगीली (३) तो पिव पाई हो। बिहारी जी० ॥ ४ ॥
ओ छोगालो नित मतवालो म्हाँने घणो नित लागे वालो।
छोडण कदे न चित चाई हो। बिहारी जी० ॥ ५ ॥
नाथजी आया पट खुलवाया, मान मान मे महान मिलाया।
रहूँ मैं मन्दिरिये रे मॉंई हो। बिहारी जी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी। ताल तिताला ॥

मारग वाम (४) हमारो, साधो मारग वाम हमारो।
जग से ही वाम चले न दाहिने(५), निज स्वरूप चित्त धारो ॥ टेर ॥
वृत्ति भगवती पूजा कीनी, कियो ज्ञान उजियारो।
बीज मंत्र ले 'तत्त्वमसि' को, उर विधि मेरे धारो। साधो मारग वाम० ॥ १ ॥
पॉंच(६)पचीस(७) मिल जागण (८) कीनो, उड गयो भरम अन्धारो।
ऊँच ने नीच जाति कुल नाँहि, ऐसो पन्थ हमे प्यारो। साधो मारग वाम० ॥ २ ॥
वृत्ति उपवृत्ति सुरती और निरती, जमघट भयो अपारो।
भेद भाव को दूर कियो है, एक ही रूप निहारो। साधो मारग वाम० ॥ ३ ॥
प्रेम प्रीत मद पियो धापके, मन अजिया (९) सुत मारो।
मन मिल गोठ(१०)करी बेगम(११)घर, आनंद भयो है अपारो। साधो मारग ॥ ४ ॥
जग आचार को पलट दिये हम, कौन ब्रह्म व्यभिचारो।
ऐसे वाम घर जो कोई आवे, वो प्यारो है मित्र हमारो। साधो मारग० ॥ ५ ॥
ना कोई करम ज्यूँ कुकर्म नाँहि, हूँ दोनूँ से न्यारो।
ब्रह्म ज्योति उर अन्तर जागी, जीवपनो उड्यो सारो। साधो मारग० ॥ ६ ॥

१–समता, २–नाम रूप, ३–जिज्ञासु वृत्ति, ४–अज्ञान ग्रस्त जनसाधारण की मनमत के विरुद्ध, ५–जन साधारण की रूढ़िवाद के अनुकूल, ६–इन्द्रियां, ७–प्रकृतियां, ८–आत्मज्ञान, ९–बकरा, १०–एकतारूपी सहभोज, ११–आत्मानन्द

ब्रह्म स्थिर थांवर (१) वार भयो अब, लख्यो ब्रह्म आधारो।
पड़वा(२)बीज(३)एक कर लीनी, ऐसो मतो विचारो। साधो मारग वाम० ॥७॥
इस मारग को वाम मारगी, होवे तो हो भवपारो।
मान कहे उलटा क्यूँ दौड़ो, रत्न जन्म को हारो। साधो मारग वाम० ॥८॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज 'पनजी मुखड़े बोल' की। ताल कैरवा ॥

शिव और हम नित एक रूप है, शिव नहीं न्यारो रे; मित्र(४)हमारो रे।।टेर।।
जब तक जाल अविद्या फैली, तब तक जीव विचारो रे।
जाल अविद्या दूर करी जब, शुद्ध निहारो रे। मित्र हमारो रे॥ १ ॥
जब तक जीव भाव नहीं मिटियो, उड्यो न भरम अन्धारो रे।
जीव भाव मिट ब्रह्म भयो जद, परम उजारो रे। मित्र हमारो रे॥ २ ॥
आज काल को मित्र नहीं है, आदि अनादि प्यारो रे।
जीव अहंकार मिट्यो जद तन सूँ, लागत प्यारो रे। मित्र हमारो रे॥ ३ ॥
भंग तमाखू पी पी सुलफा, क्या तुम शिव को चितारो रे।
शिव पद(५)तुम से दूर रह जासी, नरक दवारो रे। मित्र हमारो रे॥ ४ ॥
मान कहे थे मानो मित्रो, अब तो आँख उघाड़ो रे।
चारूँ वेद पुकार कहे, मानक (६) मत हारो रे। मित्र हमारो रे॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

गुरुदेव बने सिर हाथ धरे अपने शिष्य से फिर कपट चलावे।
अन्तर और ने बाहर और ही आप डूबे और शिष्य डुबावे।
ऐसे को भूल न भेटो गरु तुम भेटो जबे कि खरो पत आवे।
मान कहे बिन जान कियो गुरु अन्त समय फिर वह पछतावे ॥

॥ सवैया ॥

देवहुनाथ को शीश दियो हम खूब तरह उन्हें पहिले बजाये।
खोट न देखी रती उनमें तबही चरणों बिच शीश नमाये।
चाहे जैसे हो बजाय लिये हम खोटे खरे कई बोल सुनाये।
क्षत्रि के पूत सो चूकें कबे हम मान कहे सब भरम उड़ाये॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह सतगुरु मिल्या, लिया मैं ढोल बजाय।

१—शनीचर, २—प्रतिपदा=अद्वैत, ३—द्वितिया=द्वैत, ४—जीव ब्रह्म की एकता, ५—ब्राह्मी स्थिति, ६—मनुष्य जन्म।

मन मन्दिर बैठाविया, पलक न बाहर जाय ॥
जाजम ढाला जुगत सूँ, मन बुद्धि चित अहकार।
चारों पावतल दाविया, बैठा संत विचार ॥
राम केरी गादी करी, तुरियो कियो तखत।
मान गुरु यूँ टीकियो, कियो जो आतम रत्त ॥
टीको काढ्यो तत्त्व सूँ, शिष्य यूँ शीश नवाय।
शीश दियो सब कुछ दियो, अब कुछ देवण नॉय ॥
पॉच चोरां ने पकडिया, पकड ने किया साध।
मानसिंह दुःख अब मिट्यो, करता वाद विवाद ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज वाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

सो साधू मत मानिये, समता सहज समावे।
अपणो रूप सब मे लखे, राग न द्वेष बढावे जी ॥ टेर ॥
करम करे अकरता रहे, दुःख सुख रतीय न माने।
पीड़ पराई आपणी, दूजो भेद न आणे जी ॥ १ ॥
करनव करणो समझ के, सब कुछ कर लेवे।
नीच करम स्वपने ना करे, ज्यॉ सूँ टालो देवे जी ॥ २ ॥
करम करे सो योगिया, निकमा रतिय न रहवे।
अपणे योग्य सबवे लखे, सबमें सम होय केहवे जी ॥ ३ ॥
सो साधू मेरे प्राण है, जग मांही भल आवे।
स्वॉग धार जग ना ठगे, अपणो काम दिखावे जी ॥ ४ ॥
पर उपकारी संत है, ज्यॉरा चरण पुजावे।
वारो चरणे दुक लेत ही, उनके सम हो जावे जी ॥ ५ ॥
धोय चरण करूं आरती, झिग मिग जोत जगाऊँ।
पॉचो बाती जग रही, सम्मुख दरसण पाऊँ जी ॥ ६ ॥
देवनाथ ऐसे संत है, गुरु कृष्ण अवतारा।
मानसिंह अर्जुन हुवा, सो निज शिष्य तुम्हारा जी ॥ ७ ॥

॥ सवैया ॥

१. चरण ही धोवन धोय कहे सब प्रेम को नीर कोई नहीं लावे।
प्रेम के नीर से धोवे जो पाद जो तो पय पीय हृदय शुद्ध थावे।

प्रेम भी हो उर स्वारथ हो नहीं शीतलता जरणा जल थावे ।
मान कहे सोई धोय चरण चरणामृत पीवे वही संत कहावे ॥

॥ सवैया ॥

प्रेम पयोधि मँगाय तहाँ जिन माँय मधुरता मिश्री मिलाई ।
जरणा जल से शुद्ध धोय लिये पद फिर करणी की केसर चढ़ाई ।
सुरत शिला ले शील को चन्दन समता हाथ उन्हें घुटवाई ।
मान कहे अस पूज गुरु पद ले उन आज्ञा को शीश चढ़ाई ॥

॥ सवैया ॥

पास में देव और दूर गये हम पास के देव को दीन दुराई ।
भूल करी अस भारी अति हम और ही और में टाट कुटाई ।
पहिले ही जान पिछान कियो नहीं मान सबै यों ही शान गमाई ।
देव समान ही देव भये अब देव रहे हमते भिन्न नाँई ॥

॥ कवित्त ॥

गम हू को कीनो घृत पंच तत्व दीपक लीन, ता बिच ज्ञान को प्रकाश जो दिखायो है। पंच विषय बाती कर ताहि में जगन लग्यो, करके विवेक दोऊँ हाथ में उठायो है। कृष्णरूप गुरु व्यापक सब बीच नित, अर्जुन जीव रूप हाथ आरती सजायो है। तत्व बोध भयो तब टूट गई आपदा सब, मानसिंह सहज यों स्वरूप में समायो है ॥

॥ सवैया ॥

मान कहा तुम जुल्म करे उन मोक्ष स्वरूप को फेर बुलावे ।
कृष्ण ही मोक्ष और मोक्ष थे अर्जुन काहे को घर योनि वे आवे ।
शब्द सदा अनेक अमर हैं जो कोई पढ़े अजहू तिर जावे ।
देवहु नाथ विचार करे शुद्ध कृष्ण स्वरूप में सहज समावे ॥

॥ सवैया ॥

झूठी कही नहीं साच कहूँ मैं वेद ने ग्रन्थ ये साफ सुनावे ।
धर्म घटे अधर्म बढ़े तबही अवतार धरे हरि आवे ।
इनमें इचरज कहा तुम मानिये सर्व भूतेश तो कृष्ण कहावे ।
ज्ञानी सदा है कृष्ण स्वरूप अज्ञानी सोही अर्जुन बन जावे ।
मान अन्देश करो न दयानिधि या बिच संशय जरा नहीं आवे ।
हो तुम कृष्ण और अर्जुन हूँ मैं कृष्ण की गीता यह साफ बतावे ॥

॥ सवैया ॥

ज्ञानी सदा नित श्रेष्ठ ही है यह वेद और ग्रन्थों में साख सुनाई।
आगे भी श्रेष्ठ थे श्रेष्ठ अभी यहाँ पर ज्ञानी कोऊ पावत नाँई।
जो भी मिले सब स्वारथिये उनमें कुछ श्रेष्टता नांय दिखाई।
कोऊ तन पूजत पूजत धन को स्वारथ की सब पूजा मँगाई।
मन की पूजा तो आप कही तुम कृष्ण के रूप से भिन्न हो नाँई।
मान कहे मैं मान लई अर्जुन बनके यह पूजा चढ़ाई॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज वाणी की। ताल दीपचन्दी ॥

तुम हो कृष्ण संशय नहीं, वेर ही वेर पुकारूँ।
वेद वक्ता कोई पूछ लो, कहने हिम्मत न हारूँ जी ॥टेर॥
गुरु नाम है श्रेष्ठ जन, श्रेष्ठ एक ब्रह्म कहावे।
ब्रह्म लखे तेहि ब्रह्म है, कृष्ण स्वरूप दिखावे जी ॥ १ ॥
पाच पचीमाँ सूं परे लखे, सब ने सम कर राखे।
कृष्ण अर्थ यह सिद्ध है, गर्गाचार्य यों भाखे जी ॥ २ ॥
कथन करे सोई कृष्ण है, यह ही सिद्धान्त हमारा।
वेद व्यास को देख लो, माने कृष्ण अवतारा ॥ ३ ॥
अर्ज करे सोई 'अर्जु' है, गुरु से 'जन' होय पूछे।
आरतता उसमें नहीं, तो फिर क्यों गुरु पूजे जी ॥ ४ ॥
कला कौशल मेरे नाथजी, जीवन के आधारा।
मानसिंह परमाण से, मैं हूँ शिष्य तुम्हारा जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी। ताल दीपचन्दी ॥

नमो गुरुदेव गुसांई, चरण में, नमो गुरुदेव गुसाँई।
वार वार करूँ वन्दन थाँने, राखूँ म्हारे हिरदे रे माँई। चरण में० ॥ टेर ॥
गो अतीत स्वामी इन्द्रिन के, वेद ग्रन्थ सब गाई।
हो अपार प्रभु पार न पावे, शेष रटन थक जाई। चरण में नमो गुरु० ॥१॥
मन मन्दिर में आप विराजो, पूजूँ प्रेम सदाई।
ध्यान धूप और पुष्प प्रीति के, ज्ञान सुगंधी आई। चरण में नमो गुरु० ॥२॥
पशु पक्षी से टरणों में वर्स कर, मानुष देह धराई।
मानुष ते तुम कीन देवता, यह गुण भूलूँ नांई। चरण में नमो गुरु० ॥३॥
नित्य विराजो दूर न जावो, आ छिन सरसी नांई।

मान कहे गुरुदेव कृपानिधि, मेरे तो आप सहाई। चरण में नमो गुरु० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "चैन के रसिये" को । ताल दीपचन्दी ॥

नमो जी नमो सतगुरु स्वामी ॥टेर॥
जीव उधारण जग माँय आया, सत् उपदेश शिष्याँ ने सुणाया,
मेट दिवी म्हाँरे मनड़े री खामी । नमो जी नमो० ॥१॥
जीव जीव कह सकल बँधाया, असली मारग कोई ना समझाया,
अब के मिलिया हो म्हारा अन्तर्यामी । नमो जी नमो० ॥२॥
ब्रह्म भेद गुरु अबके दीयो, तुम्हरे प्रताप अखण्ड अमी पीयो,
भल आया ओ म्हारा नाथ नमामी । नमो जी नमो० ॥३॥
मान कहे म्हारो मन समझायो, असली रूप लख मस्त बनायो,
मिट गई मनड़े री आदत निकामी । नमो जी नमो० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "चैन के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

गुरु माफ करो मैं सेवक थाँरो ॥टेर॥
जाण बड़ा थाँरी शरणे आयो, भवसागर में अति दुःख पायो।
दीन जान प्रभु अब तो उबारो। माफ करो मैं सेवक थाँरो ॥१॥
मेरो कसूर कठा तक गाऊँ, जो गाऊँ तो मन शरमाऊँ।
कीन गुनाह मैं अनन्त अपारो। माफ करो मैं सेवक थाँरो ॥२॥
पोला पन्थ में खूब फँसायो, आतम तत्त्व किणी न बतायो।
जिण पकड़्यो जिण मार्‌यो हि मार्‌यो। माफ करो० ॥३॥
अब तो सुनो गुरुदेव गुसाँई, हाथ गह्यो अब छोड़जो नाँई।
छोड़ दियो तो बह जाऊँ भव धारो। माफ करो० ॥४॥
मान कहे हो म्हारा अन्तर्यामी, आप समान कर हो मोहे स्वामी।
ब्रह्म मिलाय के भरम निवारो। माफ करो० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल रूपक ॥

अवगुण गारे हमहि हैं, प्रभु गुण के ग्राहक आप हो।
गुण अवगुण मत देखो मेरे, हरो त्रीये ताप हो ॥टेर॥
आप सेती करूँ विनती, जपूँ हरदम जाप हो।
जान बालक भूल बकसो, गुना कीजै माफ हो ॥१॥

हम जो जीव तो तुमहि ब्रह्म हो, नित्य माई बाप हो ।
बाप बेटो एक कर लो, दूर होय सन्ताप हो ॥ २ ॥
भलो बुरो तोई आपको, अब करो सवदा साफ हो ।
दोय को अब एक करलो, सद्यो न जाय कलाप हो ॥ ३ ॥
देवनाथ को हाथ लीयो, जपन भया अजाप हो ।
मान कहे मन मान्यो मेरो, जपूँ मेरो जाप हो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "खेलण दो गिणगोर" की । ताल दीपचन्दी ॥

ले चालो उण देश (१), सायब (२) म्हाँने ले चालो उण देश।
होजी म्हारा दीनबन्धु घनश्याम (३), प्रभुजी म्हाँने ले चालो० ॥ टेर ॥
भटक भटक दुःख पाय, प्रभुजी म्हे भटक भटक दुःख पाय।
होजी म्हाँने किण हूँ न दिवी थाँरी राय। सायब म्हाँने ले चलो ॥१॥
पथापंथ फिराय, प्रभुजी जग पंथापंथ फिराय।
होजी मैं तो दिया है थाँने विसराय। सायब म्हाने ले चालो० ॥२॥
पत्थर पाथर पूज, प्रभुजी मैं तो पत्थर पाथर पूज।
होजी मैं तो खोई है तुम्हारी सूझ। सायब म्हाँने ले चालो० ॥३॥
दोऊँ कर जोड़ पुकार, प्रभुजी थाँने दोऊँ कर जोड़ पुकार।
होजी म्हाने लेगो इण भव सूं उबार। सायब म्हाँने ले चालो० ॥४॥
मान कहे सुनो नाथ, अर्ज म्हारी मान कहे सुनो नाथ।
होजी म्हारो पकड़यो तो छोड़ो मत हाथ। सायब म्हाँने ले चालो० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "खेलण दो गिणगोर" की। ताल दीपचन्दी ॥

मत मन में घबराय, शिष्य तू मत मन में घबराय।
हारे थाँने देऊँला देश दिखाय, शिष्य तू मत मन में० ॥ टेर ॥
शूर वीर मन रह, शिष्य तू शूर वीर मन रह।
हाँरे तू तो हिम्मत हार मत बैठ। शिष्य तू मत मन में० ॥१॥
तेरो पिया तुझ माँय, शिष्य लख तेरो पिया तुझ माँय।
हाँरे शिष्य आतम रूप लखाय। शिष्य तू मत मन में० ॥२॥

१—आत्मातुमन. २—सद्गुरु, ३—कृपालु गुरुदेव।

जीव ब्रह्म दोऊँ एक, शिष्य लख जीव ब्रह्म दोऊँ एक।
हाँरे शिष्य कर जोवो आतम विवेक। शिष्य तू मत मन में० ॥ ३ ॥
हिम्मत हुती सिर लीन, शिष्य मेरी हिम्मत हुती सिर लीन।
हाँरे शिष्य छोडण को कौल न कीन। शिष्य तू मत मन में० ॥ ४ ॥
तारण रो प्रण मोय, शिष्य जीव तारण रो प्रण मोय।
हाँरे शिष्य क्यों कर छोडूँला तोय। शिष्य तू मत मन में० ॥ ५ ॥
मान कहे रंग तोय, नाथ जी मान कहे रंग तोय।
हाँरे लोगों गुरू हो तो ऐसा होय। शिष्य तू मत मन में० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मद (१) छकियाँ ने न छोड़; ए म्हारी सुघड़ कलाली (२),
हे मतवाली, मांगे जितो मद (३) पाय ॥ टेर ॥
जो मदवा ने उत्तर देसी, तो मद पीवे नाँय।
धरिया रहसी थाँरा सगला, फिर पीछे पछताय; ए म्हारी सुघड़० ॥१॥
बिन मदवा कुण मांगसी ए, हिम्मत किणी री नाँय।
मर जीवाँ(४)हो सो ओ मद पीवे, जीवतड़ा(५)मर जाय; ए म्हारी सुघड़० ॥२॥
और तो कुछ नहीं देवसी रे, काटने दे शिर(६) मोल।
शीश लियो पीछे क्या तू मांगे, पाय शराब (७) अतोल; ए म्हारी सुघड़० ॥३॥
महर करो म्हारी सुघड़ कलाली, और न आवे दाय।
मान कहे मैं तेरा रसियान, अब दूजो किण ने ध्याय; ए म्हारी सुघड़० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कलाली" की । ताल धीमा कैरवा ॥

चालो रे मदवा सोहन शिखर दरबार हो मस्ताना।
उठे सुरत कलाली सूँ मदड़ो(८) पीयलो हो राज ॥ टेर ॥
पावणो होय तो घर बैठाँ ने पाय हे कलाली(१०)।
म्हे चालाँ नहीं नौकर थाँरे बाप रा हो राज ॥१॥
मानो रे मदवा (११) हठ ने कर दो दूर हो मस्ताना।

१—आत्म ज्ञान का जिज्ञासु, २—ज्ञानी सद्गुरु, ३—आत्मज्ञान, ४—देहाभिमान से रहित, ५—देहाभिमानी, ६—देहाभिमानी, ७—आत्मज्ञान, ८—भक्त, ९—आत्मज्ञान, १०—सतगुरु, ११—जिज्ञासु।

कोई हठ न राखजो तो मद नहीं पावसाँ हो राज ॥२॥
ओ हठ म्हारो अब तो छूटे नाँय हे कलाली ।
कोई पावे तो पीयाँ नहीं तो मदड़ो रहण दो हो राज ॥३॥
लेलो लेलो सोहन शिखर आनन्द हो मस्ताना ।
कोई गिगन (१) मण्डल रो दुम्तर खेलणो हो राज ॥४॥
थोड़ो तो मदड़ो घर बैठाँ ने पाय हे कलाली ।
कोई आछो लागो तो उण घर चालसाँ हो राज ॥५॥
हँसिया हँसिया सतगुरु सैन चलाय हो मस्ताना ।
कोई हठ तो नहीं छूटे ओ राजवी (२) तणो हो राज ॥६॥
नहीं है थाँसू सोहन शिखर कोई दूर हो मस्ताना ।
कोई नीचाँ सूँ मन ने ऊपर खैंच लो हो राज ॥७॥
नीचो गिरियो आश्रम वर्ण रे माँय हो मस्ताना ।
ओ तो चर्म दृष्टि में मनड़ो उलझियो हो राज ॥८॥
करलो करलो अहं ब्रह्म रो भाव हो मस्ताना ।
कोई आई र शिखर मे ऊँचो खेलणो हो राज ॥९॥
भली करी म्हाँने दियो जो साच बताय हे कलाली ।
मैं तो मारग शिखर रो दूजो जाणतो हो राज ॥१०॥
अब तू म्हाँने प्याला (३) किताई भर पाय हे कलाली ।
अब तो तू कहसी जठेई चालसाँ हो राज ॥११॥
पग सूँ चलावे तो देवाँ न आगे पाँव हे कलाली ।
कोई बिन पग चलावे फेर चढ़ जावसाँ हो राज ॥१२॥
बात सुणी तो हँसी है सुघड़ कलाल हो मस्ताना ।
कोई मिलियो मस्तानो मदवो मानसिंह हो राज ॥१३॥
थाँ सो म्हाँने मिली न और कलाल हे कलाली ।
म्हाने वरजत बरजत ने मदड़ो पाय दियो हो राज ॥१४॥
नहीं भूलूं थाँरो मानसिंह एहसान हे कलाली ।
कोई ओरूँ मिलजो म्हाँने सतगुरु नाथ जी हो राज ॥१५॥

१–आछी स्थिति, २–क्षत्री वीर, ३–उपदेश।

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

वाह वाह मद (१) पान तुम्हारा, नाथजी वाह वाह मद पान तुम्हारा है ॥टेर॥
जगत पीये सो यह मद नाँही, यह मद जग से न्यारा, नाथजी वाह वाह० ॥१॥
उण मद से तो इज्जत हनन हो, यह मद भव से तारा, नाथजी वाव वाह० ॥२॥
उण मद से तो लाखों मर गये, इनसे अनन्त उबारा, नाथजी वाह वाह० ॥३॥
उण मद में मिथ्या अहङ्कार हो, सत् अहङ्कार इण धारा, नाथजी वाह वाह० ॥४॥
उण मद को तो विभव भी चाहिए, सिर साटे यह प्यारा, नाथजी वाह वाह० ॥५॥
देवनाथ गुरू मिले मद छकिया, मान जात बलिहारा, नाथजी वाह वाह० ॥६॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध मन से सारङ्ग करे, दिवस पहर मध्यान्ह ।
गुणिजन विविध विचार से, करहु राग को ज्ञान ॥
सारङ्ग सुत (२) सारङ्ग (३) रटे, तब ही सारङ्ग(४) आय ।
मानसिंह सारङ्ग (५) बिना, सब रङ्ग (६) निकमा (७) थाय ॥
सारङ्ग (८) रङ्ग (९) सारङ्ग (१०) लखे, और लखे नहिं कोय ।
मानसिंह सारङ्ग (११) लख्याँ, सारङ्ग (१२) रूप ही होय ॥
स्याह (१३) रङ्ग को मेट दे, सह (१४) रङ्ग में मिल जाय ।
सह रङ्ग मिलियाँ सब मिले, एकहू रहसी नाँय ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूर । ताल कैरवा ॥

माया बड़ी नखराली, हो नाथ (१५) थाँरी माया बड़ी नखराली ॥टेर॥
सुर नर मुनि जन पकड़न कारन, बहुतक मन में धारी । हो नाथ० ॥१॥
थाने छोड़ नहीं दूजो सूँ पतीजे, कईयाँरी श्यान बिगाड़ी । हो नाथ० ॥२॥
जालम जबर महा छलगीरी, मिलने दे जावे श्या तारी । हो नाथ० ॥३॥
इणरो नखरो ओ तो निभे आप सूँ, औरों रे नहीं रेवण वाली । हो नाथ० ॥४॥
मानसिंह कहे नाथ सुनो अब, कीजै सहाय हमारी । हो नाथ० ॥५॥

१-आत्म ज्ञान, २-जीवात्मा, ३-परमात्मा, ४-आत्मज्ञान, ५-आत्मज्ञान, ६-जीवन, ७-निरर्थक, ८-परमात्मा, ९-स्थिति, १०-विरहनी जिज्ञासु वृत्ति रूपी स्त्री, ११-परमात्मा, १२-परमात्मा, १३-अज्ञान का काला रङ्ग, १४-एकता का भाव, १५-परमात्मारूपी सद्गुरू ।

॥ गान ॥

॥ राग मारंङ्गलूर । ताल कैरवा ॥

माया ब्रह्म भिन्न कहा माने हो मान अजू, माया ब्रह्म भिन्न कहा माने।
तू मो में और मैं तोही तू है, *माया छिपी कब छाने। हो मान अजू० ॥ टेर ॥*
किनको ठगणी और ठगे यह किनको, दोय दीखन क्यों थाने। हो० ॥ १ ॥
जुदा हुवा जाने ठग्या और ठगाया, पडिया अविद्या रे पाने। हो० ॥ २ ॥
न्यारी रह्यो नी यह तोही को ठगमी, बात जाहिर जग जाने। हो० ॥ ३ ॥
भोंदू को ठगत यार नहीं लागे, बुद्धिवान् न ठगाने। हो० ॥ ४ ॥
देवनाथ कहे मानसिंह सुन, भेद भरम मत आने। हो० ॥ ५ ॥

प्रश्न

॥ दोहा ॥

मान कहे हो नाथ जी, जो भोंदू जीव ठगाय।
तो ब्रह्मा विष्णु महेश से, वे क्यों भोंदू रह जाय ॥

उत्तर

॥ दोहा ॥

रे नृपति बालक तू, चातुर चपल प्रवीन।
कहा की ला कहा पर धरी, तैं समय न आवन दीन ॥

॥ सवैया ॥

माया ही खेल करे सगरे और माया ही आपते आप ठगाई।
माया ही विष्णु और माया है ब्रह्मा माया ही शङ्कर आप बन आई।
माया ही ब्रह्म स्वरूप बनी फिर ना कोई ठगी न किन्हीं से ठगाई।
देवनाथ कहे मान सुनो यों ब्रह्म विभू विच जाय समाई ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, सुनता निकसो खोड़।
भली करी आ नाथ जी, दिवी अविद्या तोड़ ॥

॥ कवित्त ॥

ब्रह्मा और विष्णु महादेव नहीं जीते माया, शृंगी और पराशर माया हू घबराये हैं। नारद शुकदेव आदि गोरख से ज्ञानी जन, नाथ मछन्दर माया ही ने भरमाये हैं। गुरु मुख यह खोड़ निकसो हुए हैरान हम हिम्मत ह

हार बैठा आलसी कहावे हैं। देवनाथ हाथ धरतकरी पहिचान मान, देह अभिमान भंड फोड़ के गिराये हैं॥

॥ कवित्त॥

माया न भिन्न भिन्न ब्रह्म कहूँ जान्यो आज, माया हू जान्यो हम ब्रह्म को स्वरूप है। माया और जीव ब्रह्म उपाधि तीनों यह, तीन कर देखे तो पड़े भव-कूप है। तीन एक एक तीन एक रस जान्यो सदा, भिन्नता मिटी तो सब मेरो हीज रूप है। कहे राव मानसिंह सुनो संसार सगरी, आप जान लियो फिर मिटी त्रिविध धूप है॥

॥ गान॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा॥

मान वचन

ज्यों कीनो ज्यों वाह वाह, गिरधर ज्यों कीनो ज्यों वाह वाह॥ टेर॥
तू ही अनेक एक तू कहिये, फिर न्यारो कहाँ पावा।
गोपी कौन भोग करे किनते, देखो भरम भुलावा। गिरिधर ज्यों कीनो०॥ १॥
नहीं कोई पाण्डव कुरु नहीं कोई, तो गीता कौन सुनावा।
आपहि पढ़े सुने फिर आपहि, तो क्यों परिश्रम उठाया। गिरिधर ज्यों०॥ २॥
कर्म कुकर्म नहीं है दोनो, क्यों फिर जुदा बनावा।
आपहि करे भरे फिर आपही, क्यों ये प्रपञ्च चलावा। गिरिधर०॥ ३॥
ये तो बात नहीं मन भाई, अरुझन बीच फँसावा।
मान कहे गुरु देवनाथ सुनो, क्यों फिर भरम भुलावा। गिरिधर०॥ ४॥

॥ गान॥

॥ राग भैरवी। ताल कैरवा॥

गुरु वचन

जो कीयो सो कीयो, मान हम जो कीयो सो कीयो।
जो कुछ कियो मेरी सब इच्छा तोको दुःख कहा दीयो। मान हम०॥ टेर॥

भास (१) आभास (२) और महाभास (३) ये, सबही झूठ पिछानी ।
दोनों महाभास में मिल रहे, तो नहि आन न जानी । मात तेने यह० ॥२॥
पत्थर शीश सभी ये कल्पित, आखिर कोई न आनी ।
तेरी सत्ता सबी में व्यापक, काहे को तुम अकुलानी । मात तेने यह० ॥३॥
है तू यह सब मरजी तेरी, होय दिवस की कहानी ।
देवनाथ कहे मानसिंह सुन, मत मन कीजै गिलानी । मात तेने यह० ॥४॥

॥ राग सारंग मलार । ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

रूप नहीं बिन क्या लखे, ऐसा देव कुण ध्यावे ।
नाम नहीं जाकी क्या रटे, क्या भ्रम कूप गिरावे जी ॥१॥
गुड़ गुड़ ह्याँ मुख मीठा नहीं, मुख में स्वाद न आवे ।
ऐसो नीरस यही ब्रह्म है, हम को नहीं भावे जी ॥२॥
प्यास मिटे पीये नीर को, नहि तर प्राण गमावे ।
नीर नीर कहाँ प्यास ना मिटे, झूठो भरम बतावे जी ॥३॥
सूने भवन जाय क्या करे, वहाँ कछु लेना न देना ।
ऐसो नीरस ब्रह्म आपको, अब तुम हमको न कहना जी ॥४॥
यातें तो जीव जग भलो, या में आनन्द आवे ।
अन्धविश्वास में कुण पड़े, वातां हि ब्रह्म मिलावे जी ॥५॥
मान कहे सुनो नाथजी, खाली मत बहकावो ।
रस होय तो ब्रह्म तेवसां, सूको दूर हटावो जी ॥६॥

॥ राग सारंङ्ग-मलार । ताल दीपचन्दी ॥

गुरु वचन

तेरो रूप तू ही आप है, दूजो नहीं कोई ।

अपणो नाम पहचान ले, सुमरण सहजाँ होई जी ॥ टेर ॥
मीठा खारा तोसे भिन्न नहीं, तू ही रस ने रसैया ।
तू ही तो स्वाद तू ही लेत है, न्यारा किण तोय कहियाजी ॥ १ ॥
देश ग्राम कोई है नहीं, है तो तुम मॉय भरिया ।
रस ने नीरस तू ही आप है, सब रस तोमें घरिया जी ॥ २ ॥
आनन्द विक्षेप जो भिन्न कहाँ, क्यों तै भिन्न कर मान्या ।
तोही ते आनन्द भयो, दुःख तैं आपहि ठान्या जी ॥ ३ ॥
भर्म साच तेरो है तूही, जिण विधि है त्यों रहिये ।
तू ही तो कूप तू ही गिर रह्यो, इण मे विपत्ति नहीं है जी ॥ ४ ॥
तू ही तो जीव ईश जगत है, तू ही है खेल खिलारी ।
तू ही तो खेल होय खेलतो, तो मे रचना सारी जी ॥ ५ ॥
जीव ब्रह्म जग चाहे सो, लखले निज मन मॉई ।
उलटा ने सीधा सीधा उलट दो, माने दुःख नहीं कॉई जी ॥ ६ ॥
कुए तो सूका ने हरिया होया, किण मे रस नॉई ।
नाथ कहे सुण मानसिंह, यह कथा पोल चलाई जी ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

सिंहनी के गर्भ हूते श्वान नहीं पैदा होत, सिंहनी के सुत सदा सिंह ही कहाये हैं। सिंहनी के जाये को कोई श्वान हू न कहत कभी, चाहे हो कैसा ही पर सिंह ही बताये हैं। ऐसे ही जीव जो ईश्वर अंश कहत तुम, ईश्वर है सिंह तो श्वान कैसे जाये हैं। कहे राव मानसिंह भरम की है बात यह, ईश जीव माया यह एक ही कहाये है ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंज" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

मत भूल जीव बण, आदि अनादि पूरण ब्रह्म है। आदि अनादि पूरण ब्रह्म है, ए हाँ हाँ हाँ हाँ; मत भूल जीव बण आदि अनादि पूरण ब्रह्म है ॥ टेर ॥

जीव कहे कद जनमियो सरे किण दिन भयो अवतार;
हाँ हाँ जीव कहे कद जनमियो सरे० ।
जो मरियो तो कहाँ गयो सरे अचरज मोय अपार;
हाँ हाँ जो मरियो तो कहाँ गयो सरे० ।
असंख्य जुगाँ सूँ चल रयो सरे, आपही माने हार रे ।
मत भूल जीव वरण० ।। १ ।।

जो जनम्यो तो सही कहो स थारा कुण है मा और बाप;
हाँ हाँ जो जनम्यो तो सही कहो स० ।
जिण दिन सूँ सृष्टि रची सरे उण सूँ ही पहिला आप;
हाँ हाँ जिण दिन सूँ सृष्टि रची सरे० ।
जीव जीव बक बावरे स कोई, निकमी सहे संताप रे ।
मत भूल जीव वरण० ।। २ ।।

जीव जीव बकतो फिरे स थारी किसड़ी कहिये जात;
हाँ हाँ जीव जीव बकतो फिरे स० ।
अपणा आप विचार ले स तू क्यों नहीं मेटे रात;
हाँ हाँ अपणा आप विचार ले स० ।
रे मतिहीन क्यों भूलयो सरे, गुड़ गुड़ कह विष खात रे ।
मत भूल जीव वरण० ।। ३ ।।

तू ही स्वर्ग तू नरक है सरे तू ही इन्द्र तू ही देव;
हां हां तू ही स्वर्ग तू ही नरक है सरे० ।
ब्रह्मा विष्णु महेश तू ही सरे तू ही करत है सेव;
हाँ हाँ ब्रह्म विष्णु महेश तू ही सरे० ।
तू ही तुमको जाणले सरे, आतम अचल अभेव रे ।
मत भूल जीव वरण० ।। ४ ।।

तू ही जड़ चेतन तू ही सरे स्थावर जङ्गम सोय;

हां हां तू ही जड़ चेतन तू ही सरे० ।
तेरे सिवाय दूजो नहीं सरे होयो न कभी होय;
हां हां तेरे सिवाय दूजो नहीं सरे० ।
वेद ग्रन्थ ने जोयले सरे, न्यारो कहे न कोय रे ।
मत भूल जीव बण ॥ ५ ॥
देवनाथ समरथ मिल्या स जिन दीनो नाथ बणाय,
हां हां देवनाथ समरथ मिल्या स० ।
महान् नाथ सब सृष्टि को सरे होय अनाथ वलाय,
हां हां महान् नाथ सब सृष्टि को सरे०
मानसिंह जब सिंह है सरे, भेड़ संग कुण जाय रे ।
मत भूल जीव बण० ॥ ६ ॥
॥ गान ॥

॥ तर्ज "रजे" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

आ खड़ी रे महल (१) में, मन में हुलसी रे सुरता सुन्दरी ।
मन में हुलसी रे सुरता सुन्दरी, ए हां हां हां हां । आ खड़ी रे महल में० ॥ टेर ॥
खोल किवाड़ी(२)महल री स आ निरखे अपणो पीव(३), हां हां खोल किवाड़ी० ।
कहे सो केवल ब्रह्म है स क्या आगे कोई है जीव; हां हां कहे सो केवल० ।
जीव जीव भेला हुया स कोई न्यारो रहसी पीव; हां हां जीव जीव भेला० ।
फिर कद मिलसो पीव सूं सरे, यों ही रह जासी जीव रे । आ खड़ी० ॥ १ ॥
देखण गई आ पीव ने सरे रही पिव मांय मिलाय, हां हां देखण गई आ० ।
हिम गल्यो पाणी भयो सरे जब देण कुण आय, हां हां हिम गल्यो पाणी० ।
ना कोई जीव न ब्रह्म है स उठे एको ब्रह्म कहाय, हां हां ना कोई जीव न० ।
अपनो आपही आप है स उठे, दूजो नहिं दरसाय रे । आ खड़ी० ॥ २ ॥
मैं ही जीव मैं ही ब्रह्म हूं सरे दूजो भरम लियो मान, हां हां मैं ही जीव मैं ही० ।

मेरी सत्ता सब जगत है सरे दूजो कोई न जान, हां हां मेरी सत्ता सब० ।
सब में मेरो हि रूप है सरे दीखे नहीं कोई आन, हां हां सब में मेरो रूप० ।
चार वेद सब पढ़ लिया स मैं पढ़ल्या अठारह पुरान रे, आ खड़ी० ॥ ३ ॥
देवनाथ री मेहर सूँ स मैं, असली लियो पहचान, हां हां देवनाथ री मेहर० ।
कृपा करी म्हारे नाथजी स म्हाने दीनी निज की जान, हां हां कृपा करी म्हारे ।
अपनो ज्ञान उचारियो स गुरु राख्यो सिर अहेसान, हां हां अपनो ज्ञान० ।
मानसिंह भूले नहीं सं थांरो करो जीवन भर गान रे । आ खड़ी० ॥ ४ ॥

॥ गाना ॥

॥ तर्ज "रंजो" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

गुरु वचन

नृप भयो रे बावरो, किनको अहेसानी तू फिर कौन है ।
किनको अहेसानी तू फिर कौन है, ए हां हां हां हां । नृप भयो रे० ॥ टेर ॥
गरु शिष्य तो जब तक हुता स तेरे हुतो जीव रो भाव, हां हां गरु शिष्य ता० ।
ब्रह्म भयो गुरु शिष्य नहीं सरे एक रो होत अभाव, हां हां ब्रह्म भयो० ।
जैसो तन तेरो बन्यो सरे ऐसो हि मेरो बनाव, हां हां जैसो तन० ।
ए पानी का बुदबुदा सरे, इनको कहा चढ़ाव रे । नृप भयो रे० ॥ १ ॥

शिष्य वचन

गुरुदेव गुसांई० उतरे नहीं सिर सूं थांरो भार हो ।
उतरे नहीं सिर सूँ थांरो भार हो म्हांरा हां हां हां । गुरुदेव गसांई० ॥ टेर ॥
जन्म अनेकां में फिरयो स म्हाने कोई यन दियो बताय, हां हां जन्म अनेकां० ।
जो मैं आपे जाण तो स तो पहिले जाणयो तांय, हां हां जो मैं आपे० ।
आप मिल्या ही जाणयो स म्हाने मारग दियो दिखाय । हां हां आप मिल्या० ।
कहो गुरां कैसे भूलिये सरे, मन सूं भूल्या न जाय हो । गुरुदेव गसांई० ॥ १ ॥

गुरु वचन

भाव एवं देह सो, स शिष्य फिर लागे रहो जाग ...

हाड़ माँस रो पूतलो स शिष्य या सूँ न प्रेम वढाय, हाँ हाँ हाड़ माँस रो० ।
मैं तू न मैं एक हाँ सरे दूजो समके नाँय, हाँ हाँ मैं तू तू मैं० ।
दूजो समझियाँ दु:ख हुवे स शिष्य, नहीं तू ब्रह्म कहाय रे । नृप भयो० ॥८॥

शिष्य वचन

जो गुरु तन नही होवतो स ओ ज्ञान कहाँ से आय, हाँ हाँ जो गुरु तन० ।
चम दृष्टि सेवा करूँ म मैं मिल्यो रहूँ तुम माँय, हाँ हाँ चम दृष्टि० ।
प्रथा वनी रहे जगत की सरे गुरु को भाव न जाय, हाँ हाँ प्रथा वनी० ।
अन्तस में दोऊँ एक हाँ मरे, तत्त्व स्वरूप कहाय हो । गुरु देव गुसाँई० ॥२॥

गुरु वचन

सुन नृप तू साची कहे स यामें भूठ कहे कछु नांय, हाँ हाँ सुन नृप० ।
इणी प्रथा ने राखताँ सरे प्रथा घणी बढ़ जाय, हाँ हाँ इणी प्रथा ने० ।
धर्म ओट के बीच में स ए चोट घणा सिर खाय, हां हां धर्म ओट के० ।
तू नृप शिष्य परवीण है सरे, कहा तुम्हें समझाय रे । नृप भयो० ॥३॥

शिष्य वचन

नाथ मो माई बाप है सरे गुण अवगुण कछु नाँय, हां हां नाथ मो माई० ।
अवगुण को देखूँ नही स मैं गुणगुण लेऊँ उठाय, हां हां अवगुण को० ।
अवगुण अपना भुगतसी सरे मोको नहीं भुगताय, हां हां अवगुण अपना० ।
नाथ कियो सो सही है स मेरे, ये धारण मन मांय हो । गुरुदेव गुसांई० ॥३॥

गुरु वचन

रे नृप तू आछो भयो सरे अजहू रह गयो भूल, हां हां रे नृप तू० ।
मैं सोनो दियो मोलवों स तू डारे कङ्कर धूल, हां हां मैं सोनो दियो० ।
माने तो मरजी तेरी स शिष्य अन्धविश्वास न भूल, हां हां माने तो मरजी०
देवनाथ कहे मानसिंह सुण, सहसी दु:ख री शूल रे । नृप भयो० ॥४॥

शिष्य वचन

दु:ख सुख चाहे कुछ भी सहो स मैं प्रण कियो छोड़ूँ नांय, हां हां दु:ख सुख०

प्राण जाय तो जाइये सरे सिंह घास नहीं खाय, हां हां प्राण जाय तो० ।
मैं सुधर्‌यो इण भेप सूं सरे सो अब खरड़ू नांय, हां हां मैं सुधर्‌यो० ।
मान कहे हो नाथ जी सरे, रहूं नाथ शरणाय हो । गुरुदेव गुसांई० ॥४।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "रंजे" के गीतों की । ताल कैरवा ॥

हे म्हारी सुघड़ कलारी(१)प्याला(२)मस्तांने(३)भर पाय दे ।
प्याला मस्तांने भर पायदे, ए हां हां हां हां । हे म्हारी० ॥ टेर ॥
इण मन रा महुआ करो सरे ज्ञान लेवो गुड़ गाल, हां हां इण मन रा० ।
तनड़ेरो मटको करो सरे ब्रह्म अगन को जाल, हां हां तनड़े रो० ।
बंकनाल(४) से उलट के सरे या विधि मद को निकाल, हां हां बंकनाल० ।
प्रेम पियूष हम मद पिये सरे, हैं मस्तों के लाल । हे म्हारी सुघड़० ॥१॥
इण प्याले में छक रया सरे कोईयक महान सुजान, हां हां इण प्याले में० ।
यह प्याला जिन जिन पिया सरे पाया पद निर्वाण, हां हां यह प्याला० ।
ध्रुव प्रह्लाद शुकदेव जी सरे गोरख कबीर गुणवान, हां हा ध्रुव प्रह्लाद० ।
पी प्याला खुद मस्ती का सरे, लिया ब्रह्म रस ज्ञान । हे म्हारी सुघड़० ॥२॥
आवागमन में भटकता सरे प्याला पिया अनेक, हां हां आवागमन में० ।
अब हम सबको त्याग के सरे पिया जो प्याला एक , हां हां अब हम सबको० ।
निज स्वरूप का मद पियें सरे, गह सतगुरु की टेक, हां हां निज स्वरूप का० ।
कर विचार उर में लख्यो स मैं, आप स्वरूप अलेख । हे म्हारी सुघड़० ॥३॥
अगम निगम की वाट से स हम जाने चाहत हैं दूर, हां हां अगम निगम० ।
निज स्वरूप को देख के सरे करें सबन को चूर, हां हां निज स्वरूप को० ।
ब्रह्म रतन को छोड़ के स हम क्यों गहें कंकर धूर, हां हां ब्रह्म रतन को० ।
निज मद में अलमस्त हैं स हम, करें काल का चूर । हे म्हारी सुघड़० ॥४॥
देवनाथ को कर गह्यो स हम सदा रहें भरपूर, हां हां देवनाथ को० ।

१—वृत्ति, २—आत्मज्ञान, ३—जिज्ञासु जीवात्मा, ४—अविद्या ।

तिमिर मिट्यो अब सुख भयो म उर ऊगो ज्ञान को सूर, हां हां तिमिर० ।
जीवन्मुक्ति पायली म अब मुक्ति रहत मजूर, हां हां जीवन मुक्ति० ।
मान महान को रूप है म यह, सब जग मेरो नूर । हे म्हारी सुघड़० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज बाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

मान वचन

अरज करूँ हो म्हारा नाथ जी, म्हारी अरजी सुणिये ।
ब्रह्म ज्ञान कैड़ो आप रो, उणरी गाथा गुणिये जी ॥ टेर ॥

गुरु वचन

वाह रे वा शिष्य सूरवां, क्षत्राणी जायो ।
रीत अनादि ना तजी, भल नूँ जग में आयोजी ॥ टेर ॥
भेद कहूँ मैं निज ब्रह्म रो, पहिला एक सुण भाई ।
ब्रह्म ज्ञान धारण कठिन है, मीठी खीर है नाई जी ॥१॥

मान वचन

दुःख सुख सूँ म्हे नहिं डरां, डरता तो क्षत्री क्यों होया ।
प्राण राखों नित हाथ में, काल देख मन रोया जी ॥२॥
रण वंके रजपूत है, नाम सुण और घबरावे ।
काल सूतो नित ओजके, जाको नींद न आवे जी ॥३॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

वंका सीधा ही नहीं, नहीं शमशेर सूँ काम ।
मानसिंह सीधा रहे, तो परसे आतम राम ॥
वो मरणो कुछ और है, यह मरणो कुछ और ।
इण मरणे तो वो मरे, जिण लियो चित चोर ॥
सुण्यो सुण्यो ब्रह्मज्ञान है, गुण्यो न उर में कोय ।
अब गुणनो सीखाय दूं, मरद सुखी तू होय ॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

ऐसी कृपा अब कीजिये, सब सुख मिले घर मांय।
जप तप मैं कुछ ना करूँ, दुख देखूँ ला नांय ॥

गान का अन्तरा

नीरस ज्ञान सुणसूँ नहीं, यह पैला सुण लीजे।
रस हुवे तो आनन्द आवे, नहिं तो चुप कर लीजे जी ॥ ४॥

गुरु वचन

रसना चटोरी है आपरी, नित उठ रस ने चावे।
श्रवण जबर चाटुक अति, रस बिन और न भावे जी ॥५॥
विष अमृत भेलो हुवे, छांट ने न्यारो कीजे।
हम तो देवणहार हैं, मन भावे सो लीजे जी ॥६॥

मान वचन

विष अमृत भेलो पीवता, थांरे पास क्यों आता।
छांट पावण ने तो गुरु किया, श्रो तो पेलाई पी जाता जी ॥७॥

गुरु वचन

देख चतुरता मान री, नाथ मन में हँसियाया।
शिष्य तो बहुत हम मूँडिया, गुरु शिष्य अब ही पाया जी ॥८॥

मान वचन

यह मत कहो मेरे नाथ जी, तुम हो अन्तर्यामी।
सत्री पूत हम अडक हैं, मेटो सब मम खामी जी ॥९॥

गुरु वचन

धीर धरो नर मानसी, व्याकुल नहीं होना।
गुरु तो होना ऐसे शिष्य का, मूरख से मुफ्त में रोना जी ॥१०॥

शिष्य तो कड़वे ही होत हैं, गुरु मीठा कर लेवे ।
इनको फिकर नहीं मानसी, भली बुरी सब सहवे जी ॥११॥

मान वचन

साची कहूँ हो म्हारा नाथ जी, सिंह और नृपति दोई ।
लाख जतन का लीजिये, याने ज्ञान न होई जी ॥१२॥

गुरु वचन

सिंह क्षत्री सीधा घणा, याने सर कर लेवां ।
नहीं सर होवे तो हम नाथ क्या, अनाथ ही रहेवां जी ॥१३॥

॥ दोहा ॥

मान अति राजी भयो, सुन सतगुरु के वैन ।
कही मो ये फर छोडसी, अब पावेगे चैन ॥

गुरु वचन

गान का अन्तरा

कहो नृपति क्या चाहत हो, सो मोय खोल सुनावो
कौन कमी तो मे रही, मो अब हमसे पावो जी ॥१४॥

मान वचन

जीव ब्रह्म क्यों दोय हैं, क्यों कर होवे एकताई ।
कहां जाय दोनो मिले, ये गम देवो बताई जी ॥१५॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

यह तो जरा सी बात है, या में दुस्तर नांय ।
जीव भाव ने पलट दे, तो तूही ब्रह्म कहाय ॥

मान वचन

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

तुम्हें तो सहज दीखता है, हमें नहीं सहज आता है ॥ टेर ॥
हमें तो ऐसा लगता है, ब्रह्म कोई गोत्र है न्यारा ।

आप कहते तूही तो ब्रह्म है, हँसा इसका जो आता है ॥ १ ॥
अगर वो सहज ही होता, तो आप से आप मिल जाता।
न जाने गुप्त कितना है, खबर मुझको न पाता है ॥ २ ॥
कोई कहे चौथे आसमाँ पर, कोई सतलोक बताते हैं।
कोई कहे क्षीर सागर में, मेरा दिल यों गभराता है ॥ ३ ॥
कहाँ को ढूँढने जावें, पता नहीं है कोई उसका।
कृपा करके बता दोगे, तुमरा क्या बिगड़ता है ॥ ४ ॥
कोई कहे गोकुल के बन में, खड़ा गैयाँ चराता है।
चौरासी कोस में ढूँढा, मगर वो कहीं न पाता है ॥ ५ ॥
त्याग वैराग्य में कोई कहे, फिरे जङ्गलों में धारे भेष।
मरे हम भूल के मारे, नजर वो कहीं न आता है ॥ ६ ॥
सुनो अब नाथ जी मेरी, गमावो वक्त न हाथों से ॥
मान अब शरण में आया, जीव क्यों रह के जाता है ॥ ७ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

क्यों अकुलावे मानसिंह, पलटो अपना भाव ।
जीव कहत अब ब्रह्म कहो, है इतनो ही चाव ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

कहने ही मात्र से ब्रह्म बने प्रभु यह तुमतो अब ठीक बताई।
कहने से ही ब्रह्म बने इनमें कुछ विपत उठावन नाँई।
कई तीर्थ उपवास किये और नाना भाँति विपत्ति उठाई।
अब तो सहज बतावत हो यह पहिले ऐसो बतायो क्यों नाँई।
बात ही बात में छोड़ूँ नहीं ऐसे विश्वास नहीं मन माँई।
मान कहे महाराज सुनो तुम छत्री के पाने पड़े अब आई।

गुरु वचन

॥ चौपाई ॥

मन से पलट पलट मन स ही। वचन पलट ब्रह्म लख उर तेही॥
तू तो सब कुछ जाने नरेशू। औरन खण्ड करे अन्देशू॥
पर उपकार करण के ताँई। तुम ये जाण कर गोष्ठी चलाई॥

॥ दोहा ॥

बात सुनी यह नाथ की, हँस बोले तब राव।
जैसा कुछ है समझलो, कह दीजे ब्रह्म भाव॥

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी, बहरे तवील। ताल नक्टा दादरा ॥

गुरु वचन

तू है जो अनादि ब्रह्म सदा, नृप भूल गयो जद जीव भयो।
तेरो जो स्वरूप सबी जग है, तू तो तोही को तोय भूलाय रयो॥१॥
तू आप की भूल मिटाय दहे, फिर नाँ तो आयो और नांय गयो।
जब आप मे आप समाय गयो, तब दोय को खोय के एक भयो॥२॥
मूढ तू ही तो ब्राह्मण क्षत्री बन्यो, और तू ही तो वैश्य को भाव कियो।
फिर तू ही तो शूद्रपनो धरके, और तू ही तो सबहू को दास भयो॥३॥
तुम मान सचेत रहो मनमे, अब आप में आप दिखाय रहो।
तेने नाथ को हाथ गह्यो चित सूँ, उनके चरणों बिच शीश दियो।४॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं भूल्यो अब मोयको, तो क्यों कर भूल्यो नाथ।
आप आपको भूले क्यों, यही हाँसी मोये आत॥

गुरु वचन

जैसे सर्प हो जेवड़ी, सीप ही रूपा होय।
ऐसे भूल्यो मानसिंह, चिन्ता करो न कोय॥

मान वचन

कछुक गुह कछु तेज हो, रजू सर्प तब पाय।
मेरे घोर अन्धेर है, क्यों कर वो दरसाय।।

गुरु वचन

बिलकुल अन्धियारो नहीं, है जो पदारथ ज्ञान।
निज स्वरूप को भूल गयो, सर्प ही व्यापे मान।।

॥ गान ॥

॥ राग भिंझोटी, बहरे तबील । ताल नकटा दादरा ॥

मान वचन

अब भरम उड़ाय भली करिये, प्रभु शरण तुम्हारी मैं आय पड़्यो ॥ टेर ॥
कारण कौन यह तिमिर भयो, और शुद्ध स्वरूप को भूल गयो।
जब नित्य प्रकाशी क्यों मंद भयो, अब शरण तुम्हारी मैं आय पड़्यो ।।१।।
नित्य अच्युत वो कलंकी क्यों, यह भेद बताय देवो सगरो।
पहिले ब्रह्म हो तो कैसे जीव भयो, अब शरण तुम्हारी० ॥ २ ॥
नाथ को साथ कियो अब तो, प्रभु मेट देवो मन को झगरो।
तुम गुप्त न नेक रखो हमसे, अब शरण तुम्हारी० ।।३।।
मान कहे कर जोड़ दोई, जो क्षमा करिये जन जान मोई।
यह जाति स्वभाव न छूटत है, अब शरण तुम्हारी० ॥ ४ ॥

गुरु वचन

॥ गान ॥

॥ राग भिंझोटी, बहरे तबील । ताल नकटा दादरा ॥

मान अजान नहीं अब तू, क्यों जान अजान दिखावत है ॥ टेर ॥
मेरा हमेशा ही काम यही, कोई शिष्य यहां पूछन आवत है।
अपनो करणो है जो काम सदा, फिर क्यों मन में घबरावत है ॥ १ ॥
काम करे न डरे मन में, चाहे केतिक बार पूछन चावे।

साधु हुए समता के लिए, फिर कारण कौन क्रोध आवे ॥ २ ॥
तेरे जिसो नहीं पूछनहार, तो मेरे जिसो नहीं बतलावे ।
डरने की बात कौन नृपति, सब अपनो ही काम सो दिखलावे ॥ ३ ॥
देवहुनाथ कहे दिल से, चाहे केतिही बार ले पूछ हमे ।
नृप तू ही है तू ही है तू ही सदा, नृप हम तुम एक स्वरूप मिले ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह कहे नाथजी, अजहूँ भेद दरसाय ।
यह गूँगे गुड़ कह दियो, मैं तो समझ्यो नाँय ॥
गुरु कीने मैं जोय के, लीने खूब बजाय ।
कामी क्रोधी लालची, मैं भी करतो न्याय ॥
क्रोधी तो हम ही भये, हैं नाहर की जात ।
तुम सो दीनदयाल हो, जिनमे लिखे सिर हाथ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

देव कियो तोय मानसिंह, पशु बणे क्यों लाल ।
सब मे एक स्वरूप है, यह कर देखो ख्याल ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

जब एक स्वरूप बताय रहे तब एक हँसे और एक क्यों रोवे ।
एक तो मौज उड़ाय रयो और एक कहो कंकर क्यों सोवे ।
एक तो राज करे जग को और एक जो भूख मरत इम जोवे ।
मान कहे किम एक लखे दीखत प्रत्यक्ष यह द्वैतक दो है ॥

गुरु वचन

॥ गान के अन्तरा ॥

मूल अविद्या री काढ दे, जीव जीव मिटावे ।
घट तज परगट ओलखो, तब निज निजरां आवेजी ॥ १६॥

मान वचन

दर्द होय जब घट मांही, मांयले ने दुःख कांई होवे ॥
घाव लगे तो तन में लगे, मांय बैठो वो क्यों रोवे जी ॥१७॥

गुरु वचन

वो तो रोवे ने हँसे नहीं, सहजे आनन्द रूपा ।
उनकी सत्ता सूँ प्राण यह, ओलखे दुःख को स्वरूपा जी ॥१८॥

मान वचन

जब तक आतम देह में, तब तक हा हा चिल्लावे ।
देह छोड़ बाहर नीकसे, फिर कुछ नांय सुनावे जी ॥१६॥
देह ने प्राण तो पड्या रेवे, आत्मा इकेलो जावे ।
फिर क्यों नहीं बोले वो नाथ जी, यह तो सब योंही रह जावे जी ॥२०॥

गुरु वचन

निकेल्यो जिणने पहचानियो, वो है तेरो तू रूपा ।
सगले जिकर ने छोड़दे, केवल शुद्ध स्वरूपा जी ॥२ ॥

मान वचन

यूँ तो कह्या सूँ नहीं छूटसो, आगे भेद बताओ ।
ओ दुःख सुख कुण भोगवे, अब मत नाथ छिपावो जी ॥२२॥

गुरु वचन

सब से तू तुजसे है सबी, सब में है तू रलिया ।
तेरे सिवाय कोई है नहीं, थांसूँ कोई नहीं टलिया जी ॥२३॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं हूँ मैं हूँ मैं ही हूँ, यह कई बार कहदीन ।
पण क्यों कर हूँ मैं नाथजी, या की न निश्चय कीन ॥
देह हूँ या प्राण हूँ, या हूँ सूक्ष्म शरीर ।
या कारण या लिंग हूँ, समझ कहो गुरु पीर ॥

साधु हुए समता के लिए, फिर कारण कौन क्रोध आवे ॥ २ ॥
तेरे जिसो नहीं पूछनहार, तो मेरे जिसो नहीं बतलावे ।
डरने की बात कौन नृपति, सब अपनो है काम सो दिखलावे ॥ ३ ॥
देवहुनाथ कहे दिल से, चाहे केतिही बार ले पूछ हमें ।
नृप तू ही है तू ही है तू ही सदा, नृप हम तुम एक स्वरूप मिले ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह कहे नाथजी, अजहूँ भेद दरसाय ।
यह गूँगे गुड़ कह दियो, मैं तो समझ्यो नॉय ॥
गुरु कीने मैं जोय के, लीने खूब बजाय ।
कामी क्रोधी लालची, मैं भी करतो न्याय ॥
क्रोधी तो हम ही घणे, है नाहर की जात ।
तुम तो दीनदयाल हो, जिनसे लियो सिर हाथ ॥

गुरु वचन

॥ दोहा ॥

देव किये तोय मानसिंह, पशु बणे क्यों लाल ।
सब में एक स्वरूप है, यह कर देखो ख्याल ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

जब एक स्वरूप बताय रहे तब एक हँसे और एक क्यों रोवे ।
एक तो मौज उड़ाय रयो और एक कहो कंकर क्यों ढोवे ।
एक तो राज करे जग को और एक जो भूख मरत इम जोवे ।
मान कहे किम एक लखे दीखत प्रत्यक्ष यह द्वैतक दो है ॥

गुरु वचन

॥ गान के अन्तरा ॥

सूल अविद्या री काढ दे, जीव जीव मिटावे ।
घट सब परगट ओलखो, तब निज निजरां आवेजी ॥ १६ ॥

मान वचन

दर्द होय जब घट मांही, मांयले ने दुःख कांई होवे ॥
घाव लगे तो तन में लगे, मांय बैठो वो क्यों रोवे जी ॥१७॥

गुरु वचन

वो तो रोवे ने हँसे नहीं, सहजे आनन्दारूपा ।
उनकी सत्ता सूँ प्राण यह, ओलखे दुःख को स्वरूपा जी ॥१८॥

मान वचन

जब तक आतम देह में, तब तक हा हा चिल्लावे ।
देह छोड़ बाहर नीकसे, फिर कुछ नांय सुनावे जी ॥१६॥
देह ने प्राण तो पड़्या रेवे, आत्मा इकेलो जावे ।
फिर क्यों नहीं बोले वो नाथ जी, यह तो सब योंही रह ज

गुरु वचन

निकल्यो जिणने पहचानियो, वो है तेरो तू रूपा ।
सगले जिकर ने छोड़दे, केवल शुद्ध स्वरूपा जी ॥२ ॥

मान वचन

यूँ तो कह्या सूँ नहीं छूटसो, आगे भेद बताओ ।
ओ दुःख सुख कुण भोगवे, अब मत नाथ छिपावो जी ॥२२॥

गुरु वचन

सब से तू तुझसे है सब्री, सब में है तू रलिया ।
तेरे सिवाय कोई है नहीं, थांसूँ कोई नहीं टलिया जी ॥२३॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

मैं हूँ मैं हूँ मैं ही हूँ, यह कई बार कहदीन ।
पण क्यों कर हूँ मैं नाथजी, या की न निश्चय कीन ॥
देह हूँ या प्राण हूँ, या हूँ सूक्ष्म शरीर ।
या कारण या लिंग हूँ, समझ कहो गुरु पीर ॥

सुरती तो पहिचान करावे, वृत्ति लेवे भेद जनाय । बात कहूँ० ॥२॥
सुरती वृत्ति दोनों को दृष्टा, उपवृत्ति आनन्द; बाला सुरती० ।
चौथी अवस्था तुरिये मांही, निशि दिन रहत स्वच्छन्द । बात कहूँ० ॥३॥
अब क्या बूझे बूझ नरेशू, विलम्ब करो मत कोय; बाला अब क्या० ।
तू पूछत जो नहि अलमावे, आलस न आवे मोय । बात कहूँ० ॥४॥

मान वचन

दोहा

बूझण को जागा नहीं, अब भेद रयो नहीं नेक ।
पण बात कहूँ मैं नाथ जी, संशय रही मन एक ॥
एक एकलो आत्मा, जिणरे चार मुकाम ।
न्यारो न्यारो क्यों कर रहे, कहिये भेद तमाम ॥

गुरु वचन

चारों मांही एक है, एकण मांही चार ।
वो चारूँ ही आप है, कीजे मान विचार ॥

मान वचन

ये तो तुम फिर नई कही, उलझन डारी और ।
एक चार कैसे बने, माने नहीं मन मोर ॥
क्या कारन चहूँ टुकड़े, क्यों कर चारस मांय ।
कृपा करो कहो नाथजी, संशय देहु मिटाय ॥

गुरु वचन

जब जाग्रत में रहत है, जाग्रत सुपने आय ।
सुपन सूँ हो सुषुप्ति, फिर जाग्रत में जाय ॥
दोनों को आनन्द कहे, रहे तीसरी माय ।
चौथी बीच में जायके, आनन्द दुःख दोऊ नांय ॥

मान वचन

क्या चौथी कहीं दूर है, चढ़णो है आसमान ।
सो भी हमें बताइये, अब मत राखो मौन ॥

गुरु वचन

नहीं चढ़णो री पैड़ियां, घाटी कहिये न कोय ।
नहीं उडणो आकाश में, असली निश्चय होय ॥

मान वचन

जाग्रत सूँ सुपने गयो, सुपन सुषुप्ति मांय ।
इन में पहिले नहीं हुतो, कहां थो कहां से जाय ॥
तुम कहते हो नित्य है, व्यापक रग रग मांय ।
कहां से आयो कहां गयो, संशय देहु मिटाय ॥

गुरु वचन

॥ गान का अन्तरा ॥

जाली जाल चूके नहीं, निकले तो फँसावे ।
ज्ञान कतरनी हाथ है, काट के दूर हटावे जी ॥२४॥
नहीं तो गयो ने आयो नहीं, है नित एक रस भरिया ।
समय समय परभाव से, खेल न्यारा न्यारा करिया जी ॥२५॥
यों तू ओलख निज रूप ने, सही सही समझायो ।
भरम रयो तो फिर काढले, अवसर ऐसो आयो जी ॥२६॥

मान वचन

॥ दोहा ॥

कौन भरम अब रहत है, दीनो भरम उड़ाय ।
मान कहे हो नाथ जी, सही दियो समझाय ॥
सङ्ग कियो जब नाथरो, फिर क्यों रहे अनाथ ।
जिण में ही देव जो नाथ है, लिये देव के हाथ ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

बात कही समझाय सभी पण तू मत गुप में राखजे भाई ।
मेरो तो भार उतार दियो अब भार दियो तेरे सिर चाँई ।

मुरती तो पहिचान करावे, वृत्ति लेवे भेद जनाय। बात कहूँ० ॥२॥
मुरती वृत्ति दोनों का द्रष्टा, उपवृत्ति आनन्द, बाला सुरती०।
चौथी अवस्था तुरिये मांही, निशि दिन रहत स्वच्छन्द। बात कहूँ० ॥३॥
अब क्या बूझे बूझ नरेशू, बिलम्ब करो मत कोय: बाला अब क्या०।
नृ पुरुत जो नहिं अलसावे, आलस न आवे मोय। बात कहूँ० ॥४॥

मान वचन

दोहा

बूझण को जागा नहीं, अब भेद रयो नहीं नेक।
पण बात कहूँ मैं नाथ जी, संशय रही मन एक॥
एक एकलो आत्मा, जिणरे चार मुकाम।
न्यारो न्यारो क्यों कर रहे, कहिये भेद तमाम॥

गुरु वचन

चारों मांही एक है, एकण मांही चार।
यो चारूँ ही आप है, कीजे मान विचार॥

मान वचन

ये तो तुम फिर नई कही, उलझन डारी और।
एक चार कैसे बने, माने नहीं मन मोर॥
क्या चारन चहूँ टुकड़े, क्यों कर चारन मांय।
कृपा करो कहो नाथजी, संशय देहु मिटाय॥

गुरु वचन

जब जाग्रत मे रहत है, जाग्रत सुपने आय।
सुपन सूँ हो सुषुप्ति, फिर जाग्रत मे जाय॥
दोनों को आनन्द रहे, रहे तीसरी मांय।
चौथी बीच में जायके, आनन्द दुःख दोऊ नांय॥

मान वचन

क्या चौथी वहाँ दूर है, चढ़णो है आसमान।
सो भी हमें बताइये, अब मत राखो मौन॥

गुरु वचन

नहीं चढ़णो री पैड़ियां, घाटी कहिये न कोय ।
नहीं उड़णो आकाश में, असली निश्चय होय ।।

मान वचन

जाग्रत सूँ सुपने गयो, सुपन सुषुप्ति मांय ।
इन में पहिले नहीं हुतो, कहां थो कहां से जाय ।।
तुम कहते हो नित्य है, व्यापक रग रग मांय ।
कहां से आयो कहां गयो, संशय देहु मिटाय ।।

गुरु वचन

।। गान का अन्तरा ।।

जाली जाल चूके नहीं, निकले तो फँसावे ।
ज्ञान कतरनी हाथ है, काट के दूर हटावे जी ।।२४।।
नहीं तो गयो ने आयो नहीं, है नित एक रस भरिया ।
समय समय परभाव से, खेल न्यारा न्यारा करिया जी ।।२५।।
यों तू ओलख निज रूप ने, सही सही समझायो ।
भरम रयो तो फिर काढले, अवसर ऐसो आयो जी ।।२६।।

मान वचन

।। दोहा ।।

कौन भरम अब रहत है, दीनो भरम उड़ाय ।
मान कहे हो नाथ जी, सही दियो समझाय ।।
सङ्ग कियो जब नाथरो, फिर क्यों रहे अनाथ ।
जिण में ही देव जो नाथ है, लिये देव के हाथ ।।

मान वचन

।। सवैया ।।

बात कही समझाय सभी पण तू मत गम में राखजे भाई ।
मेरो तो भार उतार दियो अब भार दियो तेरे सिर सांई ।

मेरी तो भार दियो तुझको और तेरो जो भार हम लीन उठाई।
मेरे तो भार को प्रगट करे तू तेरो भार जो देऊँ जराई।
देखहु नाथ कहे सुन मान ये याद रखे अपने मन मांई।
जो तू गुप्त मे राख दियो बदलो लेऊँ तोहि मे छोड़हु नांई॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

पनी कहो तुम काहे को नाथ जो गुप्त रखूँ क्यों पूछन चाऊँ।
यही कारण मैं वार ही वार यह भटके आन तुमारे जो खाऊँ।
भटके है नही मदके है मेरे इन कारण खावन लाज न लाऊँ।
मन मे है मेरे एकलो न चलूँ मैं साथ मेरे सब जगत ले जाऊँ॥

॥ कवित्त ॥

प्राणी प्राणी मात्र मे ब्रह्म को उपदेश करूँ, जीव जीव भाव को जग ते खोय डारूँ मैं। मेरो वश पहुँचे नाथ ब्रह्म रूप करूँ जगत, एक ही स्वरूप रूप सब मे निहारूँ मैं। सृष्टि को नियम मो तोड़ हू न सकूं मैं, मुझते तिरे इतने जीव पार तारूँ मैं। कहे राव मानसिंह अति तो कहा कहूं, रति रति कहयो सो पन्थ लिख डारूँ मैं॥

॥ गान का अन्तरा ॥

मान कहे हो म्हारा नाथ जी, लेऊँ मे आण तुम्हारी।
तिरिया जिता तो जीव तारसूँ, यही प्रतिज्ञा हमारी जी॥ २७॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूंदड़ी के डंके की। ताल कैरवा ॥

भगवत् नारद को समझावे, ये ही निज ज्ञान है रे॥ टेर॥
समझ कर देखो जी ऋषिराज, सब है मेरो जग यह साज,
इससे करता हूँ सब काज, फिर भी नही किसका मोहताज। ये ही०॥ १॥
नारद कहीं आय नहीं जाय, सब मे रूप मेरो नू पाय,

दिल से देवो भेद मिटाय, जिण सूँ जन्म मरण मिट जाय। ये ही० ॥ २ ॥
नारद माया ब्रह्म न दोय, ब्रह्म और माया एक ही जोय,
न्यारो रह्यां सरे नहीं कोय, इसड़ी भूल भरमना खोय। ये ही निज० ॥ ३ ॥
तू मन ब्रह्मा सुत मत मान, मन में दासी पुत्र मत जान,
ब्रह्मा तुमसे भिन्न नहीं आन, तज दे द्वैत अविद्या टान। ये ही निज०॥४॥
मन में ब्रह्मा सुत अभिमान, जिनसे है यह खैंचा तान,
अब तो करो दूर अज्ञान, जिनसे सहजे हो कल्याण। ये ही निज० ॥ ५ ॥
घर के देवनाथ अवतार, आये भू पर दूजी बार,
करणे मान को भव जल पार, लीनी जीवित मोक्ष सुधार। ये ही निज० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूंदड़ी के डंके" की । ताल करवा ॥

मिलिया सतगुरु समधी मोय, भली करी आय के रे ॥ टेर ॥
धर कर नाना रूप अनेक, गिनती करूँ कहा नहीं लेख;
जिण म्हारे मारी रेख पर मेख(१)। भली करी आय के रे ॥ १ ॥
खोये जन्म कुमारी(२) अनन्त, जिनको गिनत न आवे अन्त;
हम तो भटके पोल के पन्थ। भली करी आय के रे ॥ २ ॥
अब के जुड्यो असल सूँ ब्याव (३), म्हारे मन में घणो उछाव;
देख्यो दिन दिन दूणो चाव। भली करी आय के रे ॥ ३ ॥
दियो म्हाने कर सूं कर पकड़ाय(४), पिया ये दीनो रूप बताय;
मिल गई अपने पिव सूं जाय। भली करी आय के रे ॥ ४ ।
रही मैं भटक भटक दिन खोय, मिल्यो नहीं जोड़ी रो वर कोय;
कहो सखी कैसे सम्बन्ध होय। भली करी आय के रे ॥ ५ ॥
मिल गयो जोड़ी रूप स्वरूप, देखयो मेरो ही रूप अनूप;

१— कर्म बन्धन काटे, २— अज्ञानवस्था, ३— आत्मज्ञान, ४— जीव ब्र की एकता का ज्ञान।

मिट गई तीनों ताप की धूप । भली करी आय के रे ॥ ६ ॥
समधी देवनाथ मस्तान, दीयो जीवन मोक्ष को दान;
ज्यांरो रिण भूले नहीं मान । भली करी आय के रे ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे मित्रो सुनो, कही है बीती सोय ।
व्याही सुरत सुहागिनी, अब क्वांरी रही न कोय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हारी नींद उडाई, नाथ मिलिया सूँ किया सनाथ रे ॥ टेर ॥
ढूंढत ढूंढत म्हे फिर्‌या स म्हांने मिल्यो नहीं ब्रह्म ज्ञान ।
ना साचा सतगुरु मिल्या स म्हारे लाग्यो न उर में बान ।
मठ मँडिया सब हेरिया सरे सब ही दीखी दुकान रे । म्हारी नींद ॥१॥
हेरत हेरत हारिया सरे बैठ गया घर मांय ।
सूतां ने आण जगाविया सरे कर पकड़ ने उठाय ।
मैं चातक ज्यों तरसता सरे प्यासों ने पाणी पाय रे । म्हारी नींद ॥२॥
दूजा दावा टूटग्या सरे भयो तत्व रो ज्ञान ।
ब्रह्म रूप म्हारा नाथजी स म्हांने कर लियो आप समान ।
जन्म मरण सब मिट गया स म्हारो लग्यो नाथ से ध्यान रे । म्हारी नींद ॥३॥
देवनाथ के हाथ से स म्हारी बिगड़ी गई है सुधार ।
मानसिंह निश्चय भई स अब सहज हुआ भव पार
ऐसो आप में देखियो सरे मोय रूप संसार रे । म्हारी नींद ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हाँने कृष्ण (१) मिल्याहो , नाथ्यो मन मोहन इण मन नाग ने ॥ टेर॥
नाग मेरो सबसे बुरो स ज्यांरे पाँच नागणी (२)संग।
हृदय रो नीर(३) विगाड़ियो सरे कालो कियो है कलंक।
सुध जल इणमें बस रहे स वो खेले माँय भुजंग रे। म्हाने कृष्ण मिल्या ॥१॥
संत सबी संग ग्वालिया स इण दिया सब ने छिटकाय।
हृदय कालिंदी में कूदिया सरे पलक जेज नहीं लाय।
सूतो नाग जगा लियो सरे मन में डराया नाँय रे। म्हाँने कृष्ण० ॥ २ ॥
कुमति नागनी कड़क के सरे कड़वा वैण सुणाय।
मानी एक नहीं नाथ जी स यांने डाट दिवी पल माँय।
पकड़ पूँछ(४) ने नाग जगायो, युद्ध करण री चाय रे। म्हाँने कृष्ण० ॥ ३ ॥
घणा दिवस याँने भया स थे दीयो नीर बिगाड़।
अब तो हृदय तज सजन रो स कोई दुर्जन हृदय जाय।
जबरदस्ती सूँ पकड़ ने नाथ्यो परवा कीनी नाँय रे। म्हाँने कृष्ण० ॥ ४ ॥
नाग नाथ ने बाहिर आया मीठी बीण सुनाय।
कालो मिट आछो भयो स यों निर्मल नीर बहाय।
जीव जहर तो गल गयो स अब ब्रह्म अमी प्रगटाय रे। म्हँने कृष्ण० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण सा सरे मान हैं दास हमेश।
यूँ कर निश्चय जाणली सरे लिया नाग उपदेश।
यूँ मन नाग ने नाथ लो स क्या कथा सुणो थे हमेश रे। म्हाँने कृष्ण ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "मारवाड़ी इके" की । ताल कैरवा ॥

नाथ शरण में नाथ समान, मेट दियो मन रो अभिमान ॥ टेर ॥

१—सद्गुरु, २—इन्द्रियां, ३—विवेक, ४—वृत्ति।

सब जग नाथ प्रतीत जो होय, नाथ सिवाय न दूजो कोय।
टूट गयो मन रो अज्ञान। नाथ शरण में० ॥ १ ॥
नाथ आदि और नाथ हैं अन्त, नाथ गुणिन में है गुणवन्त।
नाथ रूप को कियो है ज्ञान। नाथ० ॥ २ ॥
जल थल नभ पृथ्वी मे जोय, पवन और अग्नि मे सोय।
नाथ बिना है खाली कौन। नाथ० ॥ ३ ॥
नाथ हाथ धर कियो सनाथ, मेट दिवी तिरगुण की रात।
अपने रूप को लियो पिछान। नाथ० ॥ ४ ॥
मानसिंह सर्वज्ञ है सोय, नाथ बिना नहीं सृष्टि कोय।
क्या जाने नर मूढ अजान। नाथ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

सत गुरु मिलिया भयो रे आनन्द, छूट गये सब काल के फन्द ॥ टेर ॥
भेटत भागा भरम अन्धार, जिण सूं मिट गया द्वैत विकार।
बन्ध मिटाय भये निर्बन्ध। छूट गये सब काल के फन्द ॥ १ ॥
रस्ता बहुत में किरिया अनेक, सत गुरु मिलताँ पायो एक।
उर बिच ऊगो ब्रह्म को चन्द। छूट गये० ॥ २ ॥
ब्रह्म दरस भयो अन्तर माँय, कुण म्हारे दरसण करवा जाय।
दूर गये मेरे दुख द्वन्द। छूट गये० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु मिले दयाल; जिन मिलतां मोयँ कीनो निहाल।
आँख छताँ क्यूं मान रहे अन्ध। छूट गये० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज " मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

सतगुरु ऐसी कृपा जो कीन; आतम तत्व की बूटी दीन ॥ टेर ॥
कुण घोटे कुण वाहर जाय; कुण छाणन रो कष्ट उठाय।

नित्य स्वच्छ और साफ दीन मोये, वो बूटी हित चित कर पीन।
आतम तत्व की० ॥ १ ॥

सत्य असत्य को कियो विचार; दियो विवेक गलन पर डार।
साफ भई ऐसी बूटी मेरी, पीताँ भयो जो काल आधीन। आत्म तत्व की० ॥२॥
पीकर बूटी भये मस्तान; नहीं उतरे अब आतम ज्ञान।
चारूँ वरण मेरे एक समान है, बजी अद्वैत की आछी बीन। आत्म० ॥ ३ ॥
जो ऐसी बूटी को पाय; उनको शंभु (१) तुरत मिल जाय।
काल को भी महाकाल कहाय, मत पीवो यह भंग मलीन। आत्म० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले सुजान; शिवजी प्रसन्न भये कृपा निधान।
मान कहे मैं लियो है जान, अब नहीं पीऊँ यह भंग मतिहीन। आत्म० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की। ताल कैरवा ॥

हो अतीत सब में गोपाल, तन धारी सब ही हैं ग्वाल ॥ टेर ॥
पास रहे और जाने नाँय, तिमिर (२) दोष ते पिछाने नाँय।
दिन दिन फँसे जगत के जाल। तन धारी० ॥ १ ॥
इण तन में जो लियो विचार, मन माँयले ने लीनो मार।
पलट गये अन्तर के ख्याल। तन धारी० ॥ २ ॥
तन में न जोवे बाहर जाय, बाहिर फिरे ज्याँने दीखे नाँय।
गुन्ड गोल में लुटावे माल। तन धारी० ॥ ३ ॥
मान नाथ जी दियो सुझाय, अब मेरी बाहर जाय बलाय।
सब में एक ही रूप है लाल। तन धारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके की" । ताल कैरवा ॥

म्हारा सतगुरु स्वामी, सूतो जगाई सुख (३) भर नींद से ॥ टेर ॥

१–आत्मा, २–अज्ञानान्धकार, ३–मोह–निद्रा.

सुख से सोई, निद्रा खोई, जाग के जोई, सूती जगाई सुख भर नींद से ॥ १ ॥
बेन (१) बजाई, नींद उड़ाई, चट चेताई, सूती जगाई सुख भर नींद से ॥ २ ॥
जागी पाया, पीव(२)मिलाया, निकट ही आया: सूती जगाई सुख भर नींद ॥३॥
सुपने(३) सोई, अति दु:ख पाई, अब के आई, सूती जगाई सुख भर नींद ॥ ४ ॥
निन्द्रा सुख मान्यो, यूँ ही हठ ठान्यो, नहिं मर जान्यो, सूती जगाई ॥ ५ ॥
टूटी आसा, भ्रम की फासा, सहज निवासा: सूती जगाई सुख भर नींद ॥ ६ ॥
नाथ न आता, जमपुर(४) जाता, यूँ ही दुःख पाता; सूती जगाई सुख ॥ ७ ॥
मान अकेला, गुरु न चेला, मेट झमेला; सूती जगाई सुख भर नींद से ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ "तर्ज मारवाड़ी गाली के ढङ्के" की । ताल कैरवा ॥

पिया(५) थाँ सूँ सम्बन्ध आदि सदाई हो ।
भूली जिण सूँ न्यारी भई मैं(६) दुःख पाई हो ॥ टेर ॥
जीव जीव को जाल बिछायो, असली तत्त्व मोंये नॉय बतायो;
हीरां री गाँठ गमाई हो । पिया थाँ सूँ ॥ १ ॥
चारूँ धामा, भ्रम ही भ्रामा, भटकी तमामा,
तोई न दरसण पाई हो । पिया० ॥ २ ॥
सद्गुरु आया, भेश दिखाया, फेर मिलाया;
टूटोड़ी जोड़ी है सगाई हो । पिया० ॥ ३ ॥
मिलने न नाथा, यूँ ही बह जाता, लाज गुमाता,
मान गयोड़ी लाज आई हो । पिया० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के ढङ्के" की । ताल कैरवा ॥

आज म्हारे निज सूँ जुड़ी है सगाई रे ।
नातो ऐड़ो अवर जुड्यो कभी नाँई रे ॥ टेर ॥

१—उपदेश, २—आत्मा, ३—मनोराज्य, ४—जन्म-मरण का चक्कर ।
५—आत्मा, ६—वृत्ति ।

सुरता नारी, भई पिव प्यारी, सुखिया भारी; अब दुःख सुपने नाँही रे।
आज म्हारे० ॥ १ ॥
सास हमारी, समता नारी, लागे प्यारी; जिण म्हांने प्रीतम से मिलाई रे।
आज म्हारे० ॥ २ ॥
सुसर हमारा, ज्ञान है प्यारा, सब से न्यारा; जिण म्हाँने पार लगाई रे।
आज म्हारे० ॥ ३ ॥
गयो अज्ञाना, उड़्यो अभिमाना, लाग्यो ध्याना; आप में आप समाई रे।
आज म्हारे० ॥ ४ ॥
व्याह रचायो, यूँ वर पायो, जन्म न आयो; एको ही एक मिलाई रे।
आज म्हारे० ॥ ५ ॥
जिण से जाई(१), उन्हीं को ब्याही(२), इचरज आई; दूजो न वर दरसाई रे।
आज म्हारे० ॥ ६ ॥
सतगुरु बापू, मेट संतापू, आप में आपू; दूजो दीखे नाँई रे।
आज म्हारे० ॥ ७ ॥
कहे यूँ मानं, अब न अजानं, लियो निज ज्ञानं; देवनाथ में समाई रे०।
आज म्हारे० ॥ ८ ॥

। गान ।

॥ तर्ज मारवाड़ी 'पन्ने' की । ताल दीपचन्दी ॥

वा वा हो म्हारा नाथजी, साचो श्याम मिलायो हो ॥ टेर ॥
सूती हती सुख(३) नींद में, ज्ञान चंग बजायो हो।
हेलो (४) कर बतलावियो, पीया नजरे मिलायो(५) हो। वा वा हो म्हारा० ॥१॥
मैं तो जाण्यो के दूर है, ओ तो पास में पायो हो।
चितरो चेत म्हारो सूधरयो, पिया बैन(६)सुनायो हो। वा वा हो म्हारा०॥२॥
काशी मथुरा द्वारिका. फिर फिर खूब ठगायो हो।

१—आत्मा से स्फुरता, २—आत्मा में लय होना।
३—सोहं निद्रा. ४—उपदेश देकर, ५—आत्मानुभव, ६—सोहं शब्द

मन गुरु मिल्या ने समझियो, सहजे आनन्द आयो हो। वा वा हो० । ३ ॥
चौथे (१) नगर में पहूंचिया, नहीं पैंडो करायो हो।
मार्ग सुगम दियो नाथजी, म्हाने सेनी समझायो हो। वा वा हो म्हारा० ॥ ४ ॥
अमर सुहागिन (२) पुरन भई, जो दुहाग न आयो हो।
मान कहे म्हारे सुख भयो, पिया ने कण्ठ(३)लगायो हो। वा वा हो म्हारा० ॥ ५ ॥
॥ मान ॥

॥ तर्ज डंका "मगीजी ने परजण आया" की। ताल कैरवा ॥

वा वा नाथ निज रूप तुम्हारो; क्या कहूं मन में लागे प्यारो।
कहूँ मैं किस कर वचन न आवे, वेद थाके गये चारों; कहा बिरद हमारो।
वा वा नाथ० ॥ टेर ॥

थाके जहाँ पर वचन विलास । केवल एक रूप विश्वास।
क्या गुण वरणूँ अनन्त गुणा हो, तेरो है रूप जग सारो; किण सूं नहीं न्यारो। वा वा नाथ० ॥ १ ॥

गम कहूं तो अगम है सोय। अगम कहूं सहजे गम होय।
गम और अगम के अन्तर बाहर, मध्य तेरो ही उजियारो- तू है इक सारो।
वा वा नाथ० ॥ २ ॥

और लख्यो जद और बतायो। तुझ में मिल्यो तो कुछ नहीं पायो।
खोजी में खोज समाय गयो जब, मिट गयो खोजण हारो, सब खोज हमारो।
वा वा नाथ० ॥ ३ ॥

देव नाथ गुरु कियो सनाथ। मानसिंह को पकड़्यो हाथ।
हाथ पकड़ के ले लियो निज में, जगत पड़ी झकमारो, नित मैं मतवारो।
वा वा नाथ० ॥ ४ ॥

१—तुरीयावस्था, २—जन्म मरण से रहित ज्ञानावस्था, ३—आत्मानुभव।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पपैया" की । ताल कैरवा ॥

नाथ जी ने निज में पाया रे । म्हाँरो उड़ग्यो तिमिर अज्ञानः आप में आप समाया रे ॥ टेर ॥

करम के फन्द हटाया रे । जन्म और मरण मिटाया रे ।
दियो म्हाँने "तत्वमसि" निज ज्ञान । आप में आप समाया रे ॥ १ ॥
मिटी सब रात अन्धारी रे । पिये री सुरत निहारी रे ।
म्हारे दिल में ऊगो भाण । आप में आप समाया रे ॥ २ ॥
नाथ अमृत बरसाया रे । जिसे नहीं पीत अघाया रे ।
मैं तो पियो आप मद पान । आप में आप समाया रे ॥ ३ ॥
नाथ जी रे रूप हो रहिया रे । मिथ्या को भाव तज दइया रे ।
म्हारे खुल रही अन्तर खान । आप में आप समाया रे ॥ ४ ॥
नाथ ने पल नहीं भूलाँजी । कृपा सूँ सुख में भूलाँजी ।
म्हारो मिटग्यो मान अभिमान । आप में आप समाया रे । ५ ।
मिल्या म्हाँने देव स्वरूपी नाथ । दिखायो जीव ब्रह्म एक जात ।
अब म्हारो मिटग्यो आन और जान । आप में आप समाया रे ॥ ६ ॥
नाथजी भलो कियो अहसान । मेट दी पोल की खैंचा तान ।
थाँरो क्यों गुण भूले मान । आप में आप समाया रे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पपैया" की । ताल कैरवा ॥

नाथ निज अमर हमारे जी ।
ये तो मरें न जन्में नाँय, जासूँ मोये लागे प्यारे जी ॥ टेर ॥
जाणो मत देह भाव से नाथ । नाथ है पूर्ण ब्रह्म सनाथ ।

जिकांरो वेद अनन्त गुण गात; जाम् म्हांने लागे प्यारे जी ॥१॥
नात (१) को शब्द यह स्पष्ट बतात । गयो नहीं तो फिर कैसे आत ।
यासे नित रहे जगत के मांय; जाम् म्हांने लागे प्यारे जी ॥२॥
यदि ये जन्म मरण मे आत । कहते फिर इनको क्यो ये नात ।
मोय मन रही प्रतीती आय, जाम् म्हाने लागे प्यारे जी ॥
मान निज अर्थ को जोयाजी । नाथ के रूप मे मोयाजी ।
नहीं लाभ वात अब आय; जाम् म्हाने लागे प्यारे जी ॥४॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार मे, मौड़ी(२) पड़ी पिछाण ।
सत्संगी मिलिया नहीं, मिल्या स्वार्थी आन ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल तिताला ॥

हमारे मन गुरु पद बहुत सनेह ॥ टेर ॥
गुरु पद नेह अवर नहीं दूजो, बरसत प्रेम को मेह ।
शील सनेह नीर मे भीज्यो, धुपी करम की खेह । हमारे० ॥ १ ॥
तीन (३)पाद यह माया माहि, यां म ' वैर न नेह ।
चौथा पाद गुरु निज कहिये, ता मे मिलके रहे । हमारे० ॥ २ ॥
गुरु पद मे जो मिले है प्राणी, फिर ना जन्म धरे ।
मानसिंह फिर भय है कौन को, निश दिन निडर फिरे । हमारे० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु तुरिये पद मे, तहां नित शिष्य रहे ।
मानसिंह यह भाव गुरु पद को, पलक न दूर रहे । हमारे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मांड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "मरियें की । ताल दीपचन्दी ॥

मन गुरु मिलिया आय, भली ए म्हारे आज सावणिये री तीज(४)॥टेर॥

१—न आलस्य आने वाला, २—देर से, ३— जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति । ४—शुभदिन

सत् गुरु मिलिया प्रेम सूँ रे, बोयो शबद रो बीज।
विरह री बादलिया झुक रही रे म्हारे, चमकी ज्ञान के री बीज।
भली ए म्हारे० ॥ १ ॥

सुरता ऊभी गोखड़े(१) रे, रही विरह विच भीज।
थर(२) थर कंपे प्रीतम (३) उर(४) लीनी, उर लीनी प्रीतम रीझ(५)।
भली ए म्हारे० ॥ २ ॥

जीव ब्रह्म जद एक कया जद, मन म्हारो गयो पतीज।
हम प्रीतम दोऊँ झूलिया (६) रे, ज्यूँ बादल(७) में बीज ( )।
भली ए म्हारे० ॥ ३ ॥

देवनाथ सा पीव मिल्या रे, जिनको संग हम कीन।
मान कहे ऐसो सावण(९) आयो, होय रही पिया(१०) बिच लीन।
भली ए म्हारे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

मिली ए म्हांने राम(११)रँगीली कलाल(१२)।मद(१३)पियो कोई हरिजन(१४)लाल।
मिली ए म्हांने० ॥ टेर ॥

ओ मद पीवे कोई मद(१५) छकिया, मन मांहे होय दलाल(१६)।
शीश(१७)उतारत देर नहीं ज्यांरे, नांव सुण्यो डरे काल। मिली ए म्हांने० ॥१॥
ओ मद पोवे सो मुड़दा(१८) कहिये, आवे नहीं जम रो जाल(१९)।
अपणे रूप सूँ पलक न न्यारो, हरदम राखे ख्याल। मिली ए म्हांने० ॥ २ ॥
आतो कलाली जालम(२०) घणी रे, पेहलाई मांगे लाल(२१)।

—जिज्ञासा, २—प्रभातुर ३—उद्गुरु, ४—निज शिष्य बनाया, ५—प्रसन्न हो कर, —शंका समाधान ७—अज्ञानांधकार, ८—ज्ञान का प्रकाश, ९—आत्म-ज्ञान,—स्वरूप, १०—आत्मा, ११—आत्मानुभवी, १२—सद्गुरु, १३—आत्मज्ञान, १४—जिज्ञासु, १५—विषयों से तृप्त, अपने में संतुष्ट, १६—अनासक्त, १७—देहाभिमान १८—देहाभिमान से रहित, १९—जन्म-मरण का जंजाल, २०—जबरदस्त, २१—जीवभाव।

पलक उधार करे नहीं कबहुँ, क्यों कर लेवाँ चित टाल। मिली ए म्हाँने० ॥३॥
देवनाथ गुरु असल कलाली, भूपन के भूपाल।
मान गरीब वाँरे द्वारे आयो, अब कृपा कीजे कृपाल। मिली ए म्हाँने० ॥ ४॥

॥ मान ॥

॥ राग सारङ्ग मलार, तर्ज "पणियारी" की । ताल कैरवा ॥

चाली म्हारी सुरता गिगन(१) मण्डल मे, रात(२) दिवस गिरणाई(३) रे॥टेर॥
मोहन शिखर(४) मे चमकी(५) बीजली, गिगन घटा(६) चढ आई रे।
मधुर मधुर धुन बोले पपैया (७), वैरण नींद (८) उड़ाई रे॥ १ ॥
चितरे चौक मे झूलो (९) माड्यो, झूले तीज(१०) सवाई (११) रे।
पाँच (१२) पचीस (१३) तीस सँग सखियाँ, सुन्दर शोभा पाई रे॥ २ ॥
ममता रो हार पीव (१४) पहरायो, सुनन्द(१५) भई जग माँई रे।
प्रेम पुष्प म्हारा कबहू न सूके, नित चौसर हरियाई रे॥ ३ ॥
ओहं सोहं लागा झकोरा, झूलो चढ्यो नभ (१६) माँई रे।
मैं डरती प्रीतमजी (१७) ने पकड़या, छोड़ूँ तो गिर जाई रे॥ ४ ॥
देवनाथ चतुर्मास के रमिया (१८), मैं वाँसूँ कम नाँई रे।
मानसिंह कहे आनन्द माँय रेणो, म्हारे तो सावण (१९) सदाई रे॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "पणियारी" की ताल कैरवा ॥

धीमे(२०) बरस(२१) म्हारा मेहा(२२) पानी(२३), म्हाँने(२४) अति डर (२५)
आवे रे॥ टेर॥

१—उच्चस्थिति, २—सदा, —प्रफुल्लित, ४—बुद्धि, ५—प्रकाश, ६—आत्मज्ञान, ७—ज्ञानोपदेश देनेवाला, ८—मोहनिद्रा, ९—विचार, शंका समाधान, १०—सुरता, ११—उमङ्ग से, १२—इन्द्रियाँ, १३—प्रकृतियाँ, १४—सद्गुरु, १५—सर्वात्म भाव, १६—ब्राह्मी स्थिति, १७—सद्गुरु, १८—चारों अवस्थाओं का स्वामी भाव से भोक्ता, १९—आत्मानुभव की तरी, २०—आहिस्ते, २१—उपदेश दो, २२—सद्गुरु, २३—उपदेश, २४—वृत्ति, २५—घबड़ाहट।

प्रीतम (१) तो परदेश(२) बसत है, कुण म्हाँसूँ प्रेम बढ़ावे रे।
सारंग(३) सुनत सारंग (४) यों बोल्यो, सारंग (५) मन धड़कावे रे ॥ १ ॥
आधी सारंग (६) मध्य माँय ने, सारंग (७) यूँ सूँसावे रे।
इत सारंग(८) निकलत अँखियन ते, सारंग (९) होश भूलावे रे ॥ २ ॥
सारंगसुत(१०) तो छिप्यो सारंग(११) में, सारंग (१२) नहीं दरसावे रे।
विरहन सारंग (१३) सारंग (१४) पोखे, स्याहरंग (१५) ले मर जावे रे ॥ ३ ॥
उडरे सारंग(१६) जहाँ मेरो सारंग(१७), सारंग (१८) ऐसे बुलावे रे।
मान कहे तेरो तुझ में ही सारंग (१९), स्याह रंग क्यों न हटावे रे ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मानसिंहजी का प्रश्न ॥

जो थी पुतली लवण की, सागर रही मिलाय।
पलट बैन केवे नहीं, किम कर ज्ञान सुनाय ॥
कही यों सन्त कबीर ने, सुनिये श्री महाराज।
संशय सभी मिटाइये, जद यह सरही काज ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "बाणी" की। राग कैरवा ॥

शिष्य अब, क्यों सुलझयो उलझावे होजो। बुद्धिमान विचार करो उर,

१—आत्मा, २—अदृश्य-दूर, ३—सद्गुरु उपदेश रूपी गरजना, ४—जिज्ञासु रूपी मोर, ५—वृत्ति रूपी स्त्री, ६—अज्ञानान्धकार रूपी रात, ७—काल रूपी सर्प, ८—काजल (रोने का भाव) ९—वृत्ति रूपी स्त्री, १०—जीवात्मा, ११—अज्ञानान्धकार रूपी रात, १२—परमात्मा, १३—वृत्ति रूपी स्त्री, १४—परमात्मा, १५—पाखण्ड रूपी अफीम, १६—मन रूपी हंस, १७—परमात्मा, १८—विचार रूपी मोती, १९—परमात्मा।

उलटो क्यों अर्थ लगावे रे शिष्य अब, क्यों सुलझ्यो उलझावे हो जी ॥ टेर ।
जीव भावसों पुतली लवण की, जग के कर्म कमावे हो जी ।
जीव भाव अब ब्रह्म मे गल गयो, पलट फेर नहीं आवे रे । शिष्य अब० । १
यों न जाण हम मिट गये तन से, मूक रूप होय जावे हो जी ।
ज्ञान समुद्र अज्ञान ज्ञान भयो, भाव अभाव मिटावे रे । शिष्य अब० ॥ २ ॥
जो वे कबीर मूक होय जाता, तो कुण शब्द सुणावे हो जी ।
वाणी बिना शब्द नहीं निकले गूँगा क्यों कर बतावे रे । शिष्य अब० ॥ ३ ॥
जग मांहि गूँगा फिरत बहुत सा ज्याने, क्यों नहीं ज्ञानी बतावे हो जी ।
बोलत नांय सैनी सूँ समझे, मूरख कह बतलावे रे । शिष्य अब० ॥ ४ ॥
जीव भाव जिते वणो ही भभके, अप्रिय शब्द सुणावे हो जी ।
ब्रह्मरूप हो आत्म मुख बोले, सो जग रे समझ नहीं आवे रे । शिष्य अब० ॥५॥
जग री समझ तो मिट गयो सगलो, फेर जनम नहीं पावे होजी ।
देवनाथ कहे फेर पूछ शिष्य, कहत कभी न घबरावें रे । शिष्य अब० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मांड । ताल दादरा ॥

मानसिंह जी का प्रश्न

म्हारा नाथजी आवो, शंका मिटावो, अरज सुणो दीनानाथ ॥ टेर ॥
राजयोग तो सगलो कहयो, हठयोग ना गाय ।
राजयोग ही जो जग मे होतो, तो क्यों हठयोग बताय जी । म्हारा नाथ० ॥१॥

गुरु वचन

नृप ठीक सुनाई, राजी मन मांई, दु:ख मोहे कछु नांय ॥ टेर ॥
है हठयोग करणी जबराई, झूठ नहीं इण मांय ।
इण हठयोग ने उलटो ले लियो, जिण सूँ सब दु:ख पाय रे । नृप ठीक० ॥ २ ॥
जबरा भरया म विषय जगत रा, सहजे रुकसी नांय ।
प्राण अपान एक कर सन्धि, खैंच ठिकाणे लाय रे । नृप ठीक० ॥ ३ ॥

॥ मान वचन ॥

क्या मैं इड़ा पिंगला साधूँ, क्या लेऊँ श्वास रुकाय।
रेचक पूरक कर लूँ कुम्भक, लेऊँ श्वास चढाय जी। म्हारा नाथ जी० ॥ ४ ॥

॥ गुरु वचन ॥

इड़ा पिंगला स्वासा ने रोक्यां, तन तो स्थिर हो जाय।
रेचक पूरक कुम्भक कीयां, मन स्थिर होसी नांय रे। नृप ठीक० ॥ ५ ॥
प्राण अपान की जाणो सन्धि, कर ब्रह्म जीव ने एक।
सहजे सूर अभय घर ऊगे, टल जावे लिखिया लेख रे। नृप ठीक० ॥ ६ ॥

मान वचन

क्या मैं मूल अडाण को बान्धूँ, नाभि कमल उलटाय।
कर कुम्भक वैराट चढाऊँ, दशवें द्वार पै जाय जी। म्हारा नाथ जी० ॥ ७ ॥

॥ गुरु वचन ॥

मूल अडाण सूँ कुछ नहीं होसी, काज सरसी नांय।
द्वादश सूँ दशवें पर जावो, पण मनतो नांय रुकाय रे। नृप ठीक० ॥ ८ ॥
मूल अडाण बान्धो निश्चय रो, आतम है सब मांय।
नाभी विवेक री जोयलो रे, तो सायद मिल जाय रे। नृप ठीक० ॥ ९ ॥
जग सूँ उलट उलटावो दसां ने, मुख्य तूँ ही है द्वार।
तूँ दश में स्थिर होय ने रहवो, तो सहजे उतरसो पार रे। नृप ठीक० ॥ १० ॥

॥ मान वचन ॥

कुण्डली छेदन काहे को करणो, क्यों मुद्रा को कीन।
सो यह सत्य बताओ स्वामी, तुम सर्वज्ञ प्रवीन जी म्हारा नाथ। जी० ॥ ११

॥ गुरु वचन ॥

गांठ अविद्या री तुम छेदो, नागिनी बुद्धि जगाय।
शब्द श्वासा ने ब्रह्म स्थित करले, फिर तूँ आवे नांय रे। नृप ठीक० ॥ १२ ॥
खेचरी मुद्रा ज्ञान सूँ साधो, ब्रह्मानन्द मद पाय।
वोमद तो तन छूट्यों सूँ मिटसी, ओ मद मिटसी नांय रे। नृप ठीक० ॥ १३

मान वचन

नेती धोती सब कोई साधे, अन्तःकरण शुद्ध होय।
सो हम स्वामी कैसे साधे, सही बताओ मोय जी। म्हारा नाथ जी० ॥ १३ ॥

गुरु वचन

जगत विषय में निवृत होणो, लेणा पाप धुवाय।
सतगुरु शब्दाँ री नेती धोती, मन धुप साफ हो जाय रे। नृप ठीक० ॥ १४ ॥

मान वचन

अजरी ने बजरी कई सिध साधे, कर कर मन में उछाव।
आप कहो तो यही हम साधे, कौन है इनको भाव जी। म्हारा नाथजी०॥ १५ ॥

गुरु वचन

तू ही अजर है और तू ही बजर है, चाले बजर भी नांय।
ऐसी अजरी बजरी साधो तो, काल कभी नहीं खाय रे। नृप ठीक० ॥ १६ ॥
तुम तो बुद्धिमान् नरेश, तोमे कमी कुछ नांय।
परहित कारण पूछत हो तुम, राजी घणो मैं मन मांय रे। नृप ठीक० ॥ १७ ॥

मान वचन

पुत्र चाहे हो कितनो ही समझू, पितु को पूछन अधिकार।
साख बड़ां की लाग जावे तो, मान लेवे संसार जी। म्हारा नाथ० ॥ १८ ॥
म्हाने तो गुरु पहिले दीनो, इण विद्या रो दान।
यह अहसानी कदेई नहीं भूले, जब तक जग में मान जी। म्हारा नाथ० ॥ १६ ॥

गुरु वचन

अब तक है अहसानी नृपति, तैं कछू साध्यो नांय।
ओ हठयोग कियो फिर स्यांरो, रह गयो धूल के साथ रे। नृप ठीक० ॥ २० ॥

मान वचन

जब तक तन है तब तक स्वामी, सेवक को है भाव।
आतम तुम हम एक है दोनूँ, इन में संशय कछू नांय जी। म्हारा नाथ० ॥ २१ ॥

॥ गुरु वचन ॥

माने तो भूपति मौज तिहारी, दोष मो में कछु नांय ।
अन्धविश्वास उमर भर रहसी, तो सुण्ये ही नांय छुड़ाय रे । नृप० ॥ २२ ॥

॥ मान वचन ॥

विधना तो हमें मानुष कीनो, आप कियो देव समान ।
देव सूँ अरणो रूप कर लीनो, तो क्यों कर भूले मान जी । म्हारा० ॥ २३ ॥

॥ गुरु वचन ॥

मनोमय प्राणमय परतीती, तब तक मानुष सोय ।
ज्ञान विज्ञान सूँ देव बरयों तूँ, आनन्द आप ही होय रे । नृप० ॥ २४ ॥
मेरे समान करजाणयों नाहीं, और हठ नहीं तेरे समान ।
देवनाथ कहे यही हठयोग है, देवो योग मिलाय रे । नृप ठोक० ॥ २५ ॥

॥ मान वचन ॥

अन्तर को हठ मेट दियो मैं, ऊपर मेटूँ नांय ।
मान कहे महाराज न करजो, राखो चरणां मांयजी । म्हारा० ॥ २६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी ॥ ताल दीपचन्दी ॥

कृपा कर नाथ बतावो, कौन सो पर उपकार ॥ टेर ॥
जग तो माया और सुत की भूखी, कहां से देऊं मैं लाय ।
दौड़ दौड़ के पूछत मोको, पल एक छोड़े नांय । कृपा कर० ॥ १ ॥
दुनिया ढूँढे वचन सिद्ध को, क्यों कर होय विश्वास ।
सिद्धि रिद्धि तो पाखण्ड तुम कहवो, कैसे करूं मैं अभ्यास । कृपा कर० ॥ २ ॥
दुनिया चाहे सब रस भोगा, कैसे करूँ मैं तइयार ।
सो सब रीत मोय समझावो, जासूँ तिरे भव पार । कृपा कर० ॥ ३ ॥
नाथ को साथ कियां नहीं मिलसी, तो मिले कौन के द्वार ।
मानसिंह कहे सुनो हो नाथजी, भूलूँ नहीं आभार । कृपा कर० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

मान मत व्याकुल होय सुन, पर उपकार की रीत ॥ टेर ॥
तूँ है राजा ईश रूप 'नत, लख मन नीत अनीत ।
भली बुरी सांच अपने मन, बुरी मूँ रे वो विपरीत । मान मत० ॥ १ ॥
दीन जनों की सेवा कीजे, सेवा कर शुद्ध नीत ।
अपनो स्वरूप सकल विच जानो, तो लेवोला जग जीत । मान मत० ॥ २ ॥
गोरख कबीर सा सन्त सरमा, सुत माया को न दीत ।
वाड़ा बन्दी पैर पुजावत, गावत स्वारथ के गीत । मान मत० ॥ ३ ॥
तेरे सुन तोय दुःख जब दीनो, कोई सिद्ध सुख क्यों न कीत ।
सुख दुःख सगरे होने सो होवें, मन हो मन भयभीत । मान मत० ॥ ४ ॥
आत्म निरोध कियो जब हमने, तेरे मन की कह दीत ।
ऐसा सिद्ध मैं तोको बनाऊँ, ईण कारण मन लीत । मान मत० ॥ ५ ॥
राम और कृष्ण थे पर उपकारी, गावत गुण जो पूनीत ।
राजा युधिष्ठिर और विक्रम से, वा पुरुषां री लख नीत । मान मत० ॥ ६ ॥
ज्यांरा नांव पूजीजे जगत में, पर उपकार जो कीत ।
देवनाथ कहे मानसिंह सुन, सह तन उपण शीत । मान मत० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल कैरवा ॥

पार भवसिन्धु लगावे रे, उण गुरु सूं कर हेत ॥ टेर ॥
गुरु में न दोष दोष शिष्य मांहि, ज्ञान समझ नहीं लेत ।
अन्धविश्वास त्रास महे जम री, रतन मिलावे रेत । पार भवसिन्धु० ॥ १ ॥
बिना परख के पास क्यूँ जावे, क्यूं अपणो सिर देत ।
पारख परख पछे सिर देवे, सदा सन्त जन कहत । पार भवसिन्धु० ॥ २ ॥
साचा मिलियां सैन देवे साची, अवगुण सब हर लेत ।
देवनाथ कहे मानसिंह सुण, खोय मत केशर खेत । पार भवसिन्धु० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ धुन "बरूतूजी" की । ताल कैरवा ॥

धणी खमा म्हारे सतगुरु री बलिहारी रे, अरे हाँ रे मैं बलिहारी रे।
जिण दीनो ब्रह्म विचारी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ १ ।
धणी खमा म्हाँने किया ब्रह्म निर्वाणी रे, अरे हाँ रे किया निर्वाणी रे।
नहीं होवे मृतक निशाणी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ २ ॥
धणी खमा इण देह रो भाव मिटायो रे, अरे हाँ रे भाव मिटायो रे।
म्हाँने ब्रह्म रूप दरसायो रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ।
धणी खमा अब के निज आनन्द आयो रे, अरे हाँ रे आनन्द आयो रे।
मनड़े रो भरम मिटायो रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ४ ॥
धणी खमा गुरु देवनाथ निज ज्ञानी रे, अरे हाँ रे नाथ निज ज्ञानी रे।
ज्यों मूँ सुरत मान री मानी रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ धुन "बरूतूजी" की । ताल कैरवा ॥

अगम कूट पर सुरता जल ने आई रे, अरे हाँ रे सुरता आई रे।
उठे सतगुरु सैन चलाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ १ ॥
तू है गैली इतने दिवस ठगाई रे, अरे हाँ रे दिवस ठगाई रे।
ये तो प्रीतम जाण्यो नाँई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ २ ॥
फिर फिर बाहर नाहक श्यान गमाई रे, अरे हाँ रे श्यान गमाई रे।
ठगन के संग ठगाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ३ ॥
इण राशि ग्रह के बीच में मोय फँसाई रे, अरे हाँ रे मोय फँसाई रे।
मैं सुम्ने न निकलन पाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ४ ॥
ब्रह्म जनेऊ देवनाथ पहराई रे, अरे हाँ रे नाथ पहराई रे।
इण पोल से मोय बचाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ५ ॥
मानसिंह यूँ सही बात कह गाई रे, अरे हाँ रे बात कह गाई रे।
जो बीती सो समझाई रे; जियो म्हारा लाल जी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

अब हम प्रेम पियाला पिया ॥ टेर ॥
सत् गुरु कृपा करी जब हम पर, कर्म बंध हर लीया।
बंध गये निर्बन्ध भये हम, फेर जन्म नहीं लीया ॥ १ ॥
पहिले तो बाण बहुत से मारे, जो मारे सोई सहिया।
जन्म जन्म के दरद मिटाये, सतगुरु वैद जो भईया ॥ २ ॥
पीवत प्याला चढ गई मस्ती, पहिले मुवा फिर जीया।
मान कहे गुरुदेव को भेट मे, शीश काट धर दीया ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

क्या करूँ कर नहीं जानूँ, विनय प्रभु, क्या करूँ कर नहीं जानूँ।
मैं अजान ज्ञान नहीं मोमे, जाते वृथा हठ ठानूँ। विनय प्रभु० ॥ टेर ॥
करूँ मैं गुनाह पर माफ करो तुम, यह एहसान मन मानूँ।
बार बार मैं पूछत हूं तुम्हे, झूठी हठ यूं ठानूँ। विनय प्रभु० ॥ १ ॥
जो दुख रुख अब कहूं फिर किणने, तुम से अवर न जानूँ।
मुझ सो ढीठ ज्ञानी कहाँ तुमसो, जिनसे दर्द बखानूँ। विनय प्रभु० ॥ २ ॥
रंगड़ के सुत बोली कड़ी मेरी, जाने पत्थर बरसानूँ।
तुमसे वज्र मिले कब हमको, फिर किनसे टकरानूँ। विनय प्रभु० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरुनाथ मान के, आपे मैं पहचानूँ।
दीन बन्धु तुम मैं हूं दीन प्रभु, पार करो भगवानूँ। विनय प्रभु० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल । ताल धमाल ॥

भाग भला नाथ भेटिया होजी, दीया भरम उडाय।
प्याला पियाला साधो प्रेम रा होजी, छिक रवा निज रे माँय। भाग भला० ॥टेर॥
नाथ रो साथ सुहावियो होजी, दिया म्हाँने भव सूँ तार।

अन्तर उजालो होय रह्यो होजी, सन्मुख भया रे दीदार । भाग भला० ॥ १ ॥
नाथ मिल्या आनन्द भया होजी, मिट गया द्वैत विकार ।
एक रूप उर ओलख्यो होजी, सोई निज सबको आधार । भाग भला० ॥ २ ॥
नाथ साथ नहीं होव तो होजी, भव में यूँ ही बह जात ।
संग कियो म्हारे नाथ रो होजी, जाताँ रो पकड्यो हाथ । भाग भला० ॥ ३ ॥
कान फट्या ज्यूँ मन फाड़ियो होजी, आतम रूप समाय ।
अपणी आतम जाणी जगत में होजी, सोई निज आप केवाय । भाग भला० ॥४॥
इसड़ा मिल्या म्हाँने नाथजी होजी, मिलिया देव स्वरूप ।
नाँव जिसाई गुण नीसर्‌या होजी, महा भूपन के भूप । भाग भला० ॥ ५ ॥
दाम वाम चित्त में वसे होजी, ऊपर कहे शिव राम ।
साध नहीं साकट खरा होजी, जासूँ राजी नहीं राम । भाग भला० ॥ ६ ॥
चेला चेली चित्त अटकिया होजी, के चित्त मठ मन्दिर माँय ।
त्याग्याँ रो यूँ ही नाम है होजी, गृहियाँ सूँ आगे जाय । भाग भला० ॥ ७ ॥
साधु असाधु दोऊ कया होजी, दीना साफ बताय ।
मानसिंह कहे समझलो होजी, भेटो बजाय बजाय । भाग भला० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल । ताल धमाल ॥

ओलूड़ी आवे हो म्हारे नाथ री होजी, कद मिलो दीन दयाल ।
बीछड़ियाँ अब कद मिलो होजी, पल पल आवो म्हाँने याद ॥ टेर ॥
दरसण कियाँ दुःख जावतो होजी, भेट्याँ भागत अन्धार ।
याद करूँ गुण नाथ रा होजी, फिर धर आवो अवतार । ओलूड़ी ॥ १ ॥
गुण सिमरूँ हियो उमटे होजी, नैणाँ ढलकत नीर ।
धूक् धूक् विधना बावरी होजी, क्यों हरे संत भव पीर । ओलूड़ी० ॥ २ ॥
साकट साधु है एक सा होजी, करे एक सो ही काम ।
साकट मिलताँ दुःख देवे होजी, बिछड़ताँ ए लेवे प्राण । ओलूड़ी० ॥ ३ ॥

इसड़ी जाणुं तो प्रीति क्यों करूं होजी, काहे को करूं रे सनेह ।
चोखड़िया ए दुःख देवसी होजी, इसड़ा रो नाम न लेह । ओलूड़ी० ॥४॥
विधना को चाहिये हता होजी, सुनवे को उपदेश ।
मान कहे औंहूं पधारजो होजी, सुन शिष्य को आदेश । ओलूड़ी ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

ऐसो मिला हरिजन ध्यावो ए । दरशण कियाँ दुरमत दूर लेवे,
ऐड़ा संत वधावो ए ॥ टेर ॥

धीमी चाल बोल ज्यां धीमा, सीतल कहावो ए ।
सीतल नयन देखत अमी बरसे, ज्यांरा दरशण पावो ए ॥ १ ॥
खोटा चतल काग ज्यूं करड़ा, ज्यां सूं दूर रहावो ए ।
छल भरया बोल नैण विष भरिया, ज्यां ने दूर परावो ए ॥ २ ॥
भेष हंस रो चाल बुगलों री, ज्यां रे निकट न जावो ए ।
कनक कटारी कुण खाय कलेजे, बस यूं समझावो ए ॥ ३ ॥
सब गुण होय ने अवगुण एक होय, तो खोल बतावो ए ।
जो अवलछ को मेट सके नहीं, तो मुंह न लगावो ए ॥ ४ ॥
सब गुण सम्पन्न होवे संत सीधा, वां ने सीस नवावो ए ।
अपणो रूप सकल मे जाणे, वांरे बेन्यां बिक जावो ए ॥ ५ ॥
साधु भाव रखो मन अपणे, दूर न हटावो ए ।
पारख करण मे जौहरी बण रेवो, फिर धोखो न खावो ए ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु जौहरी मेरा, जिन परख बतावो ए ।
मानसिंह अब हीरा बिणजूं, घण चोट चढ़ावो ए ॥ ७ ॥

॥दोहा ॥

सारंग राग सुहावनी, जिसमे होवे नूर ।
ज्ञान होय ब्रह्मज्ञान री, तो मन करले मजूर॥

पांच (१ सखी मेली भई, गावे सारंग लूर।
चौथे (२) पद पर बैठके, पलक न रेवे दूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी मैं तो सुगणा(३) ही संत बधाया हे माय;
नुगणा(४) जीवां री अठे क्या करूँ ॥ टेर ॥
म्हारो तो घर(५) सजनी अजब सांकड़ो(६)।
हेजी अठे नुगणा धूम मचावे हे माय । नुगणां० ॥ १ ॥
म्हारे तो घर में हेली पांच सहेली(७) ।
हेजी ए तो पांचो सूँ किणी ने भरमावे हे माय । नुगणां० ॥ २ ॥
म्हारे तो घर में हेली रतन(८) खजानो ।
हेजी ए तो नुगणाई भरम धसावे हे माय । नुगणा० ॥ ३ ॥
सन्त सुपातर आवो घणेरा ।
हेजी ज्यांने देख्यां ही जीव सुख पावे हे माय । नुगणां ॥ ४ ॥
देवनाथ जैसा सन्त सुज्ञानी ।
हेजी म्हारो ज्यां सूँ मन हरपावे हे माय । नुगणां० ॥ ५ ॥
मानसिंह नित शरण सन्तों री।
हेजी म्हांने नुगणां सूँ डर आवे हे माय । नुगणा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी म्हांने पिया जी(९) री सैज(१०) मन भावे हे माय,
पीयाजीरी सैज्यां म्हे जास्यां ॥ टेर ॥
मन बुद्धि चित्त अहङ्कार चार संग।

१—पांच प्रकार की वृत्ति. २—तुरियावस्था. ३—श्रेष्ठपथारी, ४—पाखण्डी ५—अन्तःकरण. ६—सूक्ष्म. ७—इन्द्रियां, ८—विचार. ९—आत्मा, १०—आत्मज्ञान।

इसड़ी जाणु तो प्रीत क्यों करुं होजी; काहे को करूं रे सनेह ।
ओढ़ंडिया ए दुख देवसी होजी, इसड़ा रो नाम न लेह । ओलूड़ी० ॥४॥
विधना को चहिये हता होजी, सुनवे को उपदेश ।
मान कहे औरूं पधारजो होजी, मुन शिष्य को आदेश । ओलूड़ी ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल दीपचन्दी ॥

सैयाँ ऐसा हरिजन ध्यावो ए। दरशण कियाँ दुरमत हर लेवे,
ऐड़ा संत बधावो ए ॥ टेर ॥

धीमी चाल बोल ज्यां। धीमा, सीतल कहावो ए ।
सीतल नयन देखत अमी बरसे, ज्यारा दरशण पावो ए ॥ १ ॥
आंटा चतल काग ज्यूं करड़ा, ज्या सूं दूर रहावो ए ।
छल भरया बोल नैण विष भरिया, ज्यां ने दूर परावो ए ॥ २ ॥
भेष हंस रो चाल बुगलों री, ज्यां रे निकट न जावो ए ।
कनक कटारी कुण खाय कलेजे, बस यूँ समझावो ए ॥ ३ ॥
सब गुण होय ने अवगुण एक होय, तो खोल बतावो ए ।
जो अवलञ्छ को मेट सके नहीं, तो मुँह न लगावो ए ॥ ४ ॥
सब गुण सम्पन्न होवे संत सीधा, वां ने सीस नवावो ए ।
अपणो रूप सकल मे जाणे, वांरे बेच्यां बिक जावो ए ॥ ५ ॥
साधू भाव रखो मन अपणे, दूर न हटावो ए ।
पारख करण मे जौहरी बण रेवो, फिर धोखो न खावो ए ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु जौहरी मेरा, जिन परख बतावो ए ।
मानसिंह अब हीरा बिणजूं, घण चोट चढ़ावो ए ॥ ७ ॥

॥दोहा॥

सारंग राग सुहावनी, जिणमें होवे लूर ।
दान होय ब्रह्मज्ञान री, तो मन करले मंजूर॥

पांच (१ सखी मेली भई, गावे सारंग लूर।
चौथे (२) पद पर बैठके, पलक न रेवे दूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी मैं तो सुगणा(३) ही हेत बधाया हे माय;
नुगणा(४) जीवां रो अठे क्या करूँ ॥ टेर ॥
म्हारो तो घर(५) सजनी अजब सांकड़ो(६)।
हेजी अठे नुगणा धूम मचावे हे माय । नुगणां० ॥ १ ॥
म्हारे तो घर में हेली पांच सहेली(७) ।
हेजी ए तो पांचो सूँ किणी ने भरमावे हे माय। नुगणां० ॥ २ ॥
म्हारे तो घर में हेली रतन(८) खजानो ।
हेजी ए तो नुगणाई भरम धसावे हे माय । नुगणा० ॥ ३ ॥
सन्त सुपातर आवो घणेरा ।
हेजी ज्यांने देख्यां ही जीव सुख पावे हे माय । नुगणां ॥ ४ ॥
देवनाथ जैसा सन्त सुज्ञानी ।
हेजी म्हारो ज्यां सूँ मन हरपावे हे माय । नुगणां० ॥ ५ ॥
मानसिंह नित शरण सन्तों री ।
हेजी म्हांने नुगणां सूँ डर आवे हे माय । नुगणा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेली म्हांने पिया जी(९) री सैज(१०) मन भावे हे माय,
पीयाजीरी सैज्यां म्हे जास्यां ॥ टेर ॥
मन बुद्धि चित्त अहङ्कार चार संग ।

१—पांच प्रकार की वृत्ति. २—तुरियावस्था. ३—श्रेष्ठाचारी, ४—पाखण्डी
५—अन्तःकरण. ६—सूक्ष्म. ७-इन्द्रियां, ८-विचार. ९-आत्मा, १०-आत्मज्ञान।

हेजी म्हाँने चार वोलाऊ(१) सुहावे हे माय। पियाजी री० ॥ १ ॥
श्रवण मनन निदि यासन करके।
हेजी म्हे तो सीधे ही मारग चल जास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ २ ॥
निज निश्चय रो सुरमो सारयो।
हजी म्हे तो एकता रो तिलक चढास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ३ ॥
पूरण प्रेम री पाटी पाड़ी।
हेजी म्हे तो निर्भय नथली लगास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ४ ॥
हित रो हार ने मेहदी दया री।
हेजी म्हे तो करुणा रा कंगण धरास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ५ ॥
ज्ञान वैराग बाजूबन्द बांध्या।
हेजी म्हे तो चूपाँ निगम जड़ास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ६ ॥
चित्त केरी चूड्यां ने बींटी भाव री।
हेजी म्हे तो पुराणी प्रीत पैरास्या हे माय। पियाजी री० ॥ ७ ॥
अरणा रा भांझर नाम नेवरया।
हेजी म्हे तो समता शृंगार सजास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ८ ॥
पहर ओढ कर जास्यां सासरे (२)।
हेजी फिर पलट पीहर (३) नहीं आस्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ९ ।
काम क्रोध पेहरायत ऊभा।
हेजी म्हे तो थां सूँ नांहि डरास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ १० ॥
चौथी (४) मेडी पीव म्हारो पौढ़े।
हेजी वांने सूता ने जाय जगास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ ११ ॥
प्रीतम (५) प्यारी (६) और प्यारी ही प्रीतम।
हेजी उठे एक होय रल जास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ १२ ॥
देवनाथ पिया मानसिंह के।
हेजी म्हे तो यों पतिव्रत निभास्यां हे माय। पियाजी री० ॥ १३ ॥

१—साथ पहुंचाने वाले, २—आत्मस्थिति, ३—अज्ञानावस्था, ४—तुरियावस्था, ५—आत्मा, ६—वृत्ति।

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी थे तो कुबजा रे महलां मत जावो रसिया, म्हारे आवो ॥ टेर ॥
कुबध कूबरी कुबध करेला । माल तुम्हारो मुफ्त हरेला ।
हेजी थे तो इण सूँ दूर रहावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ १ ॥
ज्ञान गुलाल केसर करुणा री । सन्मुख होय मारो पिचकारी ।
हेजी म्हारे प्रेम रो रंग बरसावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ २ ॥
सुमति रुकमणी राह नित जोवे । आप बिना वो अकेली न सोहवे ॥
हेजी इण चाकर सूँ चित्त मत लावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥३॥
असली नार महल में ठाढी । अवरां सूँ प्रीत करो मत गाढी ।
हेजी तुम नाहक लोग हँसावो रसिआ, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ४ ॥
मान कहे मानो पिया मेरे । तुम मेरे और हम हैं तेरे ।
हेजी तुम आदि सनातन लावो रसिया, म्हारे आवो । हेजी थे तो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग लूहर । ताल कैरवा ॥

हेजी मैं तो वृत्ति री अम्बा पुजाई हे माय ।
इण विधि पायो म्हारे श्याम ने ॥ टेर ॥
ना कोई देवल पत्थर घसिया ।
हेजी मैं तो घर बैठां ही राम पाई हे माय । इण विधि० ॥ १ ॥
'मैं' मद 'मैंसा आगे दीना ।
हेजी वांपर ज्ञान की खड्ग चलाई हे माय । इण विधि० ॥ २ ॥
शीश कमल को फूल चढायो ।
हेजी औ तो कबहूं कुम्हलत नांही हे माय । इण विधि० ॥ ३ ॥
वृत्ति निरोध कियां पिव पायो ।
हेजी म्हारे और तो चहिए नांई हे माय । इण विधि० ॥ ४ ॥
शील सन्तोष निज नेग [illegible]

हेजी जिके "ब्रह्माग्नि" धुन गाई हे माय । इण विधि० ॥ ४ ॥
"तत्त्वमसि" मद पायो अम्ब ने ।

हेजी याको पीतों ही मस्त बनाई हे माय । इण विधि० ॥ ६ ॥
आय नशे बिच खुश भई अम्बे ।

हेजी म्हॉने ब्रह्म तत्त्व दरसाई हे माय । इण विधि० ॥ ७ ॥
इच्छा रूप वृत्ति प्रकटी ब्रह्म मे ।

हेजी इण ने जिण सूं मैं मान बताई हे माय । इण विधि० ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु सुघड़ पुजारी ।

हेजी जिण मान ने जुगति सुणाई हे माय । इण विधि० ॥ ६ ॥

॥ मान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के 'लूर' की । ताल कैरवा ॥

हॉं आनन्द आयो रे, सतगुरु जी म्हारे रङ्ग(१)बरसायो रे; आनन्द आयो०
॥ टेर ॥

पाँच(२)पचीस(३)मिली सब नारी क्रीड़ा कोड़ लगायो रे ।
ज्ञान को चङ्ग ध्यान सूँ खड़क्यो मङ्गल गायो रे । आनन्द आयो रे ॥ १ ॥
सूती नींद (४) जाग गई कईयक बंसी(५) शोर मचायो रे ।
उर्ध्व बङ्क (६) की कुंज गलिन मे खेल रचायो रे । आनन्द आयो रे ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह एतो सुणतां ही उठ धायो रे ।
क्या जाणूँ इण कौन गलिन में मुखड़ो छिपायो रे । आनन्द आयो रे ॥३॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद ऐसो फाग खेलायो रे ।
मान ब्रह्माण्ड चौक मे बैठो गयो न आयो रे । आनन्द आयो रे ॥ ४ ।

॥ मान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के 'लूर' की । ताल कैरवा ॥

अरे हाँ रे दूजो नांई रे आतम है जग में एक गुसाँई रे; दूजो नांई रे ॥टेर॥
पढ़ पढ़ भया हैरान बात सब एक ही एक बताई रे ।

१—ज्ञानोपदेश, २—इन्द्रियां, ३—प्रकृतियां, ४—मोह निद्रा, ५—शब्द, ६—ब्रह्माकार वृत्ति ।

एक सिवाय कह्यो नहीं दूजो यह दरसाई रे । दूजो नांई रे० ॥ १ ॥
माया ब्रह्म ब्रह्म है माया माया ब्रह्म री छांई रे ।
ज्यों प्रतिबिंब सूरज रो दीखे सूर्य कहाईरे । दूजो नांई रे० ॥ २ ॥
वेद ग्रन्थ उपनिषद् सारा एक उणी ने गाई रे ।
सांख्य योग भी देखो उणी ने सिद्ध बताईरे । दूजो नांई रे० ॥ ३ ॥
जोगी जती सती सन्यासी आतम ही बतलाई रे ।
मारण जारण और उच्चाटन आतम मांई रे । दूजो नांई रे० ॥ ४ ॥
जन्तर मन्तर और वशीकरण चाहे जितना पढ़ाई रे ।
जिनको आतम निश्चय है उनको डर नांई रे । दूजो नांई रे० ॥ ५ ॥
एक मिल्यो दूजो क्यों ध्यावो लो प्रण मन रे मांई रे ।
मानसिंह गुरुदेव कृपा कर एक बताई रे । दूजो नांई रे० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के "लूर" की । ताल कैरवा ॥

हांरे अजब खिलारी रे, आ खेल रही संग सुरता प्यारी रे; अजब० ॥ टेर ॥
जगत चौक में खेल मराड्यो है एक पुरुष सब नारी रे ।
एक पुरुष अनेक रूप जग दीखे सारी रे । अजब० ॥ १ ॥
साज छत्तीस बजे इण जग में रुण झुण भुण झुणकारी रे ।
आप ही बैठ बजाय रह्यो ऐसो गुणकारी रे । अजब० ॥ २ ॥
उण रसिये ने वोहीज जाणे सही ज्ञान पिचकारी रे ।
सन्मुख खेले पर क्या जाणे नार गंवारी रे । अजब० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद बिगड़ी बात सुधारी रे ।
मानसिंह ने कोड़ लियो चढ़तां भवधारी रे । अजब० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग, तर्ज फागण के "लूर" की । ताल कैरवा ॥

या या पिया बुलावे रे,

सखी चाल उणी रे देश पिया नोय फाग (१) खेलावे रे। पिया० ॥ टेर ॥
देह अभिमान दूर अब मेलो जब प्रीतम मिल जावे रे ।
देह तणो अभिमान मांय क्यूँ ध्यान गुमावे रे। पिया बुलावे रे० ॥ १ ॥
जिन दश रो पीहर (२) मे रेहणो यहाँ क्यूँ रीझ रहावे रे ।
पाँचूं (३) परा शत्रु कहिये आँख लड़ावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ २ ॥
याँ पर पुरुषाँ प्रीति करो ना भवजल मे बह जावे रे ।
जो पतिवरता नार कहीजे पिया मिलावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ ३ ॥
आतम देव अखण्ड अविनाशी तेरो पिया कहावे रे ।
मान कहे अब मान बावरी क्यों तू ठगावे रे । पिया बुलावे रे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

अब मेरी मानी (४) मरता नार, पिया (५) ने खूब रिझायो है ॥ टेर ॥
प्रीतम रीझ मेरे घर आयो रे । ज्ञान लगाय अज्ञान मिटायो रे ।
प्रीतम रीझ मेरे घर आयो । ज्ञान लगाय अज्ञान मिटायो ।
उड़्यो दूर अज्ञान प्रेम को प्यालो पायो रे । अब मेरी मानी० ॥ १ ॥
प्रीतम रीझ के बैन बजायो रे । बज्यो बैन सब के मन भायो रे ।
प्रीतम रीझ के बैन बजायो । बज्यो बैन सब के मन भायो ।
काल फौज गई दूर सहज मे सहज समायो रे । अब मेरी मानी० ॥ २ ॥
दोय दोय को दूर भगायो रे । एक रूप सब मे दरसायो रे ।
दोय दोय को दूर भगायो । एक रूप सब मे दरसायो ।
दोय को पड़दो दूर गयो जब एक लगायो रे । अब मेरी मानी० ॥ ३ ॥
भूल हती जिन खूब कियायो रे । भूल मिटी जद भरम गमायो रे ।
भूल हती जिने खूब कियायो । भूल मिटी जद भरम भगायो ।
ज्ञान भान उर ऊग गयो तब तिमिर मिटायो रे । अब मेरी मानी० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु गोद उठायो रे । इण नेणों दीदार दिखायो रे ।

१—आनन्द, २—शरीर भाव, ३—पाँच विषय, ४—मननशील, ५—आत्मा ।

देवनाथ गुरु गोद उठायो । इण नेणाँ दीदार दिखायो ।
मान भयो आनन्द आप में आप समायो रे । अब मेरी मानो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

ब्रज में खेल रह्यो गोपाल, ग्वाल संग मंगल गावे रे ॥ टेर ॥
पांच पचीस ग्वाल संग मांई रे । गो अतीत गोपाल गोसांई रे ।
पाँच पचीस ग्वाल संग माँई। गो अतीत गोपाल गोसाँई ।
विश्व रूपी यह ब्रज इसी में बैन बजावे रे । ब्रज में खेल० ॥ ॥
नाड़ी नव ने बहत्तर कोठा रे । बंक नाल यह सुन्दर ओटा रे ।
नाड़ी नव नें बहत्तर कोठा । बंक नाल यह सुन्दर ओटा ।
सुप्त नाड़ी की कुंज गलिन में खेल खेलावे रे । ब्रज में खेल० ॥ २ ॥
वृत्ति राधे बसत उर माँई रे । बार बार कर नाच नचाई रे ।
वृत्ति राधे बसत उर माँई । बार बार कर नाच नचाई ।
नाच रह्यो गोपाल प्रेम सूँ तारी बजावे रे । ब्रज में खेल० ॥ ३ ॥
देवनाथ ऐसो कृष्ण बतायो रे । नित्य है अमर गयो नहीं आयो रे ।
देवनाथ ऐसो कृष्ण बतायो । नित है अमर गयो नहीं आयो ।
मान कृष्ण कहाँ ढूँढण जावे घर हि मिलावे रे । ब्रज में खेल० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिया" की । ताल कैरवा ॥

नरेशू सब में सुन्दर श्याम, बात यह मानी किम जावे ॥ टेर ॥
मित्र क्यों भूल पड़यो अज्ञान, अजानी जान छताँ होवे ॥ टेर ॥
तुम कहते हो सब में व्यापक कैसे चित आवे ।
पृथक पृथक यह दीखत है जग न्यारो दरसावे । नरेशू सब में० ॥ १ ॥
कर विचार तू अपने मन में कौन हँसे रोवे ।
पृथक पृथक यह जिन को दीखे मोह निशा सोवे । मित्र क्यों० ॥ २ ॥

एक ही एक तो दोय भये क्यों अचरज यह आवे।
दोय होय विस्तार बढायो क्यों यह दुःख पावे। नरेशू सब मे० ॥ ३ ॥
कब तो एक था कब दो हुवा क्या था क्या होवे।
जैसा है तैसा ही है वह भ्रम क्यों ना खोवे। मित्र क्यों० ॥ ४ ॥
प्रलय महा प्रलय क्यों लिखा सब झूठ कही जावे।
यदि यह झूठी बात होय तब लिखनो क्यों चावे। नरेशू सब मे० ॥ ५ ॥
खेले खेल मदारी आपे खेलत मन मोहे।
अपनो खेल जी चाहे समेट ले उन्हें कहत को है। मित्र क्यो० ॥ ६ ॥
ऐसो मदारी फिर है न्यारो न्यारो रह जावे।
वही मदारी हमे बतावो पकड़ घरां लावे। नरेशू सब मे० ॥ ७ ॥
तूं ही खेल और तूं ही मदारी तूं ही हँसे रोवे।
मान कहे कवि बंक सुनो तुम किनको क्या जोवे। मित्र क्यों० ॥ ८ ॥
तुम नरेश हो जालो जबरे जीत्यो किम जावे।
वेद वक्ता मानो अज ही आयो ऐसे दरसावे। नरेशू सब मे० ॥ ९ ॥
उलट उलट कई वार उलटियो फरक नहीं लावे।
मानों कांटे बीच तुली फिर रतियन घट जावे। नरेशू सब मे० ॥ १० ॥
कितनी वेर फेर कर पूछ्यो ना तू मुँझलावे।
बंक कहे क्षत्राणी पय को नाहिन लजावे। नरेशू सब मे० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "व्रज के रसिया" की। ताल कैरवा ॥

करलो भक्ति अपने रूप की, जिसमें आनन्द पावोगे ॥ टेर ॥
बार बार को भटक भटकते यों मर जावोगे।
इसमें हाथ कछू नहीं आवे रतन गमावोगे।
पांचू विषय चोर है संग में माल लुटावोगे। करलो भक्ति० ॥ १ ॥

जो इस मन के रहे आधीन तो स्थान गमावोगे ।
यह मन है लुच्चा जो अक्ल का धोखा खावोगे ।
सतगुरु संग रखो नित अपने मौज उड़ावोगे । करलो भक्ति० ॥ २ ॥
ज्ञान अग्नि उर बीच जगा कर लाय चेतावोगे ।
पांचू विषय प्रबल यह कहिये इन्हें जलावोगे ।
पांचू विषय खाक जब हुए सहज समावोगे । करलो भक्ति० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु सही दियो अब क्यों अटकावोगे ।
मान रतन को जान लियो अब क्या ले जावोगे ।
ऐसे तुम भी जानों तो सुख से सो जावोगे । करलो भक्ति० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

भक्ति भक्ति सब ही कहे, भक्ति करे न कोय ।
जो सच्ची भक्ति करे, तो भगवत जुदा न होय ॥
मानसिंह संसार में, स्वांग से भक्ति न होय ।
भक्ति करे तो सहज कर, स्वांग न साजो कोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग-मलार, तर्ज वाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

नींद उड़ाई म्हारे नाथ जी, ज्ञान रो ढोल बजायो ।
घोर निद्रा सूँ किसो जागतो, करके दया उठायो जी ॥ टेर ॥
ज्ञान विज्ञान लखाविया, साची बात सुनाई ।
पोल गलो सूँ काढ़ियो, सीधी राह बताई जी ॥ १ ॥
ज्ञान ग्रन्थ सुनिया बहुल सा, त्याग ही त्याग बखाण्यो ।
कृपा करी म्हारे नाथजी, अब के त्याग पिछाण्यो जी ॥ २ ॥
असली आनन्द ने भूलग्या, नकली में भरमायो ।
सूको ब्रह्म हो ब्रह्म बक्या, ऊँडी खाड गिरायो जी ॥ ३ ॥
असली आनन्द की मालुम भई, सहज स्वरूप हमारा ।
मेरा जग जग में ही तो हूँ, मुझ से जग नहिं न्यारा जी ॥ ४ ॥

मेरा यह सब खेल है, मैं ही भया हूं मदारी ।
मैं ही तो देखणहार हूं, ऐसा अजब खिलारी जी ॥ ५ ॥
उपनिषद एक शत आठ मे, यही है गीत सुनायो ।
"तुही है तुही है तुही है", दुजो ब्रह्म कठे से आयो जी ॥ ६ ॥
आही कही म्हांने नाथजी, घट में खोज लगायो ।
पट खोल परगट देखियो, मान शुद्ध समायो जी ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारङ्ग । ताल तिताला ॥

करी हम सफल कमाई, देखो ऐसी करी हम सुफल कमाई ॥ टेर ॥
पूरब कर्म के रहना भरोसे, तो देता बात गुमाई ।
पूरब कर्म सूं तो मिलग्यो मानुष तनु, कर पुरुषारथ पाई ॥ १ ॥
सुण सुण कथा धारयो नही उर में, इससे सुनी निकलाई ।
वाचनहार की जिह्वा घिस गई, पुस्तक आप घिसाई ॥ २ ॥
वाचन हार तो मिलिया स्वार्थी, हम पण समझत नाई ।
व्रत उपवास मे ऊमर खोई, असली चीज गुमाई ॥ ३ ॥
व्रत कथा सुन महातम सुणिया, बातों रा बिछाण उड़ाई ।
क्रोड़ा अर्ब तो तिरता बताया, पर निजरा मे एक न आई ॥ ४ ॥
सुन सुन मोक्ष रा महल ए नेड़ा, कथा जो खूब बचाई ।
श्रोता ने वक्ता दोनोंई डूबा, वांने तारणियो कोई नांई ॥ ५ ॥
महातम अध्याय म्हारे आडा न आया, डूब्या गहरे जल मांई ।
म्हे तो डूब्या ज्यारी परवा नांहीं, गुरु लिए साथ डुबाई ॥ ६ ॥
बहुत जतन सूं मोको मिलियो, फेर भी सँभल्या नाई ।
नाथ को हाथ धरत ही चेत्या, अनन्त भानु दर्साई ॥ ७ ॥
वकता ही सूता श्रोता ही सूता, कहो किम पार तिराई ।
जागबड़ा सूतां ने मिलिया, चाबक चोट चलाई । ८ ॥

भेज्यो तने निज रूप ओलखने, अलुझ्यो अलुझाड़े रे मांई।
ऐसी आवाज सुनी कानों सूँ, थर थर रह्यो कम्पाई ॥ ६ ॥
मान कहे जो पीछे कह आयो, ऐसी कोऊ करजो नांई।
जागतड़ा गुरु जोय ने कीजो, तारत जेज न लाई ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह या जगत में, और मस्ती सब धूर।
खुद मस्ती सो मस्ति है, है हमको मंजूर ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

वाह वाह जगे हम वाह वाह जगे, इस नींद(१)से यारो हम वाह वाह जगे ॥टेर॥
न किसी ने हमको जगाया था, सब स्वारथ शाकी पिलाया था।
इस मोह मद में बहकाया था; अब वाह वाह जगे हम० ॥ १ ॥
स्वारथ शाकी को दूर किया, दिल के परदे को चूर किया।
अपने आपको हम मंजूर किया; अब वाह वाह जगे हम० ॥ २ ॥
असली मस्तों(२) के पास गये, उस यार (३) की हम तलाश गये।
तब मन के होश(४) हवास गये; अब वाह वाह जगे हम ० ॥ ३ ॥
मान मिटाया मैल(५) सबी, पहुंचे बेहद के महल (६) जबी।
यह छूट गई दुःख गैल तबी; अब वाह वाह जगे हम० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा

खूब मिले जी खूब मिले, अब खूब मिले जी खूब मिले।
यारों(७) की यारी में खूब मिले, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ टेर ॥
जिस यार (८) को ढूँढने जाते थे, हम जगह जगह भटकाते थे।

१—मोह निद्रा, २—ज्ञानी पुरुष, ३—आत्मा, ४—चपलता, ५—द्वैत विकार, ६—आत्मस्थिति, ७—आत्मज्ञानी लोग, ८—आत्मा।

हम नाना वस्त्र उठाते थे, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ १ ॥
हम फिर फिर के हैरान हुए, जिन्हें ढूँढते हम परेशान हुए।
अब अपने आप सन्तान हुए: अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ २ ॥
सब दूर ही दूर बताते थे, नहीं बात कोई समझाते थे।
यों बहुत से मारे जाते थे, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ३ ॥
दिल का परदा जब दूर हुआ, जुदाई का नाता चूर हुआ।
मैं अपने आप मजूर (१) हुआ, अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ४ ॥
भाग भले जब नाथ मिले, पूरण पुरुषों के साथ मिले।
कहे मान हम एक ही ज्ञान मिले; अब खूब मिले जी खूब मिले ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

पाय लिया अब पाय लिया, जिसे ढूँढते थे उसे पाय लिया ॥ टेर ॥
अब आना और जाना कुछ न रहा, अब यार (२) जुदाई कुछ न रहा।
मैं तो अपने आपसे आप मिला। अब पाय लिया अब० ॥ १ ॥
पाया दिल के महखाने (३), अब दिल की बात तो दिल जाने।
हम मान लिया न किसकी माने। अब पाय लिया० ॥ २ ॥
मानोगे तो तुम आवोगे, नहीं तो मेरा क्या ले जावोगे।
निज तत्व से दूर रह जावोगे। अब पाय लिया० ॥ ३ ॥
हम अपना हुक्म उठावेंगे, नहीं और के हुक्म से जावेंगे।
कहे मान फेर नहीं आवेंगे। अब पाय लिया० ॥ ४ ॥

॥ मान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

हम पीते ही प्याला (४) चुपचाप हुए ॥ टेर ॥
इस प्याले मे अजब रस देखा; कि पीते ही दिल से साफ हुए ॥ १ ॥
मन के उद्गम मिटे अब सब ही, हम जपते जपते अजाप हुए ॥ २ ॥

१—जीव ब्रह्म की एकता, २—परमात्मा, ३—दिल के अन्दर, ४—गुरु उपदेश।

और और का भरम मिटा सब, अब हम अपने आप हुए ॥ ३ ॥
मान कहे गुरु देवनाथ से, नित्य सुखी निर्भय हुए ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

ताया हुआ घृत (१) नाँय पिया उन छाछ(२) पिवी है ऊमर सारी ।
नाँय पिये कहा स्वाद लखे बिन स्वाद लखे बिन जात वृथारी ।
छाछ ही को यह घृत कहे देखो जो भूल पड़ी मन भारी ।
घृत तो देखो घृत रहे और छाछ जो देखो वो छाछ विचारी ।
घृत की होड जो छाछ करे जद छाछ ही क्यों न पिये जग सारी ।
मान तो छाछ को नाँय पिये घृत दियो हमें गुरुदेव निकारी ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

हम मस्तान है बाँके; साधो हम मस्तान हैं बांके ।
हमारी मस्ती हमी से लागी; ना हम राम खुदा के । साधो हम० ॥ टेर ॥
हम में जगत जगत में हम हैं, क्यों अब इत उत झांके ।
सभी विश्व में एक बराबर, तोल लिया बिन कांटे । साधो० ॥ १ ॥
ना कोई गया नहीं कोइ आया, ना कोई जाय कहा के ।
अपनी मस्ती आपसे जोई, अवर नहीं क्या भाखे । साधो० ॥ २ ॥
देवनाथ गुरुनाथ मान के, राग द्वेप नहीं राखे ।
मानसिंह अब किनका धोखा, है ब्रह्म मद में पाके । साधो० ॥ ३॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

रहा कुछ भी नहीं, अब कुछ भी नहीं ।
हम अपने आप ही आप रहे, रहा कुछ भी नहीं० ॥ टेर ॥

आत्मज्ञान, २—भेदभाव के उपदेश ।

जब हम ढूँढने जाते थे, तब नई नई बातें लाते थे,
कुछ घर की होत कह ध्याते थे रहा कुछ० ॥ १ ॥
औरों की मान हैरान हुवे, हम ज्ञान छले अज्ञान हुवे;
ऐसे फिर फिर मुफत परेशान हुवे। रहा कुछ० ॥ २ ॥
हम मन को मिटाने आये हैं, हम घर को जलाते आये हैं,
हम दुःख सुख पाते आये हैं। रहा कुछ० ॥ ३ ॥
हम अपने बन्ध को तोड़ा है, बन्धयातों से मुख मोड़ा है;
यह भरम का भंडा फोड़ा है। रहा कुछ० ॥ ४ ॥
मान मान मन मान गया, अब मान न कोई अपमान रहा;
जब मान ने अपना मान लिया। रहा कुछ० ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग भैरवी । तालकैरवा ॥

खूब खुशी जी खूब खुशी, अब खूब खुशी जी खूब खुशी ॥ टेर ॥
मिटना था वो मिटाय दिय, और मिलना था वो मिलाय दिया
जिसे देखना था वो दिखाय दिया। अब खूब खुशी जी० ॥ १ ॥
अब ना कोई मेरा रहा, और मैं न किसी का चेरा रहा,
अब नही फिरना नही फेरा रहा। अब खूब खुशी जी० ॥ २ ॥
नहीं बुड्ढा नहीं बाला रहा, नहीं कोई पिता नहीं लाला रहा,
अब नहीं गोरा नही काला रहा। अब खूब खुशी जी० ॥ ३ ॥
नाहिं किसी का मेला रहा; ना कोई किसी का झमेला रहा,
मैं अपना आप अलबेला रहा। अब खूब खुशी जी० ॥ ४ ॥
मान नहीं अपमान नहीं, और ना कोई खैंचा तान रही,
तू मान किसी की शान नहीं। अब खूब खुशी जी० ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

जहां के हैं हम जहां के हैं, क्या पूछो हमें हम जहा के हैं ॥ टेर ॥

सब ही देश हमारा है, हमसे कोई देश न न्यारा है,
हम वहां के हैं हम यहां के हैं। क्या पूछो हमें हम जहां के हैं॥ १॥
कौनसा देश बताऊँ मैं, और कौनसा भेष ठहराऊँ मैं,
हम सहजे रूप खुदा के हैं। क्या पूछो० ॥ २ ॥
सब में हम भर पूरा हैं, हैं निकट के निकट न दूरा हैं,
हम ना तिरछे ना बांके हैं। क्या पूछो० ॥ ३ ॥
हम ही राम खुदा ही हैं, हमसे इतर कोई नांही है,
हम रहते आदि सदा के हैं। क्या पूछो० ॥ ४॥
कबीर ने हमको पूछ लिया, बन आई सो हमने उत्तर दिया,
हम भेद न रखें छिपा के हैं। क्या पूछो० ॥ ५॥
फिर संशय हो तो कह दीजे, कहूँ जामें शंक मती कीजे,
तुम पूछो हम कहें समझा के हैं। क्या पूछो० ॥ ६ ॥
गुरु देवसाथ समझाया है, कहे मान सभी में समाया है,
हम तोके हैं न तहां के हैं। क्या० ॥ ७॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी टोडी । ताल तिताला ॥

रसिक(१) होय सोई पावे, यह रस रसिक होय सोई पावे।
बिना रसिक यह हाथ न आवे, यों ही पड़े रह जावें। यह रस० ॥ टेर ॥
बड़े बड़े उपनिषद् पढ़ पढ़, खाली खेत रहावे।
वेद के सूत्र ये नित सुरझावे; खुद अरुझे रह जावें। यह रस० ॥ १ ॥
दिन में चार चार भोग लगावत, उलटे ही जाल फंसावें।
जीमणहार तो आप कहीजे, झूठे ही और बतावे। यह रस० ॥ २ ॥
इच्छा में जगत् जगत् में इच्छा, इच्छा ही ब्रह्म कहावे।

१—विरह-प्रेमी।

श्रद्धा न होय तो इच्छा कदन की, रवि बिन तेज न आवे। यह रस० ॥३॥
रसिया होय सो मम वाक्यों को, सुनत मस्त हो जावे।
बिन रसियों को लगत अटपटे, पत्थरों ही शीश नमावे। यह रस० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, बिगड़ यो स्वाग सुधरावे।
मानसिंह इन पोल पन्थ में, भूल स्वान नहीं जावे। यह रस० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज गुजराती गरबे की। ताल कव्वाली ॥

कोई रसिया(१) होवे सो ओ रस पी सके रे जी।
दु खियां(२) रे आवे नहीं काम। कोई रसिया० ॥ टेर ॥
कोई रसियां रे भेला तो रसिया आ मिले रे जी।
रसियां ने मिले विश्राम। कोई० ॥ १ ॥
कोई मूरख क्या जाने गम बापडा रे जी।
ए तो विषयां तणां रे गुलाम कोई० ॥ २ ॥
कोई रसियां रे बिना तो ओ मद(३) कूण पिये रे जी।
काट ने देणों सिर(४) दान। कोई० ॥ ३ ॥
कोई मूवा स्वर्ग ने मैं तो क्या करूँ रे जी।
म्हारो जीवत स्वर्ग मांहि धाम। कोई० ॥ ४ ॥
कोई मान कंवे साची सही रे जी। मेरो तो मैं ही हूं निज श्याम। कोई० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "जले" की। ताल कैरवा ॥

म्हारे मन में सदाई आनन्द सुख जोया रे, दुःख रतियन होय।
म्हारे मन में सदाई आनन्द सुख जोया रे लाल ॥ १ ॥
बहुत जन्म तक भरम नींद मांय सोया रे, अब सोवे न कोय, बहुत० ॥ २ ॥
कोटि भान उजियारा (५) अन्दर होया रे, जासूं माणक(६) पोय, कोटि० ॥३॥

१-विश्व प्रेमी, २-जगत से द्वेष करने वाले, ३-आत्मज्ञान, ४-देहाभिमान, ५-ज्ञान का प्रकाश, ६-सत असत् का विवेक।

पांच(१)चार(२)ने पकड़ पकड़ ने मोया(३)रे, निज घर(४) अब जोय; पांच० ॥४॥
देवनाथ गुरु हाथ गह लिया मोय रे, सब भ्रम दिया खोय, देवनाथ० ॥ ५ ॥
मानसिंह अब नांय हँसे नहीं रोय रे, निज में निज जोय, मानसिंह० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

सइयां ए म्हारी धिन आजूणो धिन भाग, राम म्हारे उर प्रकटायो ए॥ टेर॥
दशरथ प्रेम अयोध्या तुरियें ए, सइयां ए म्हारी ब्रह्म हवन तहां कीन,
सतगुरु म्हारा आप ने करायो है ॥ १ ॥
सम सुमित्रा सुमति कौशल्या ए, सइयां ए म्हारी कुमति कैकई नार,
तीनोई मिल वर ऐसो पायो है ॥ २ ॥
सतगुरु अत्रि हवन ऐसो किनो ए, सइयां ए म्हारी शब्द हवी म्हांने पाय,
पीतां ही मदमस्त बणायो है ॥ ३ ॥
ज्ञान भरत ने वैराग्य लक्ष्मण है ए, सइयां ए म्हारी शत्रुघ्न है विवेक,
विचार सो राम कहायो है ॥ ४ ॥
ब्रह्म पुत्र यूँ विचार राम है ए, सइयां ए म्हारी जीव जीव ने छोड़,
असल निज रूप बनायो है ॥ ५ ॥
देवनाथ ऐसा राम मिलाया ए, सइयां ए म्हारी मान मिल्यो हरि मांय,
कहीं मैं गयो नहीं आयो है॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

सइयां ए म्हारी घर बैठां आयो घनश्याम, बुलावण कुण म्हारे जावे ए॥ टेर॥
फिरी मैं बुलावण जद नहीं आयो ए, सइयां ए म्हारी खोज्यो मैं आतमराम,
दूजो म्हारे निजर न आवे ए॥ १ ॥
बाहर श्याम रो मने कांई करनो ए, सइयां ए म्हारी आसी घर रो काम,

१—इन्द्रियां, २—अन्तःकरण, ३—वश किया, ४—अपना स्वरूप ।

बाहिर म्हारे कुण भटकावे ए ॥ २ ॥

कुटुम्ब(१) हमारो कह्यो नहीं माने ए, सइयां ए म्हारी करे न भौलायो(२) काम, यांने अब कौन भौलावे(३) ए ॥ ३ ॥

देवनाथ गुरु श्याम स्वरूपी ए, सइया ए म्हारी मान कियो उर में धाम, काटयो ही नहीं बाहर जावे ए ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

जो निज को जिन जान लियो निज जान लियो फिर ना भटकावे ।
न्यारो रयो निज से जन मूरख न्यारे ही न्यारे में ध्यान गमावे ।
न्यारो नहीं तू नेक कहीं सब जगत तिहारो हि रूप कहावे ।
मान कहे अभिमान तजो तब महान रूप में जाय समावे ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

हुवे नौकर के हम ठाकुर; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ टेर ॥
थे हम तो पहिले ही ठाकुर, मगर नौकर बने बैठे ।
मिला जब रूप निज मेरा, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ १ ॥
बजाये बहुत से घण्टे, करी थी सेवा उमर भर
लगे जब अपनी सेवा में; मिटी अब चाकरी मेरी ॥ २ ॥
उघाड़े पाट मन्दिर के, जो अपने रूप को देखा ।
सभी जग में मैं व्यापक हूँ, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ३ ॥
न थे हम ठाकुर के नौकर, बने नौकर पुजारी के ।
संभाला आप अपने को, मिटी अब चाकरी मेरी । ४ ॥
पुजारी थे वो माया के, पुजारी भी न सच्चे थे ।

१—मनसहित इन्द्रियों का समूह २—आत्मानुभव की अयोग्यता. ३—इ. पर निर्भर रहना ।

मिले सच्चे पुजारी तो, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ५ ॥
देव गुरु नाथ हैं मेरे, पुजारी आत्म ठाकुर के ।
मिला है मान उन ही में, मिटी अब चाकरी मेरी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

उगाया सूर अपने में; मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ टेर ॥
माया की ओट से देखा, उजाला चन्द सा दीखा ।
खोल जोया जो परदे को, मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ १ ॥
निशा मोह जाल की मेटी, भरम को दूर जा पटका ।
निकल गई गन्दगी दिल से, मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ २ ॥
रूप था सूर्य ही मेरा, मगर मैं चन्द हो दीखा ।
अविद्या शैल था बिच में, मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ ३ ॥
किया जब चूर शैलों को, तो अपने आप सा पाया ।
मैं ही था रूप वो मेरा, मिटाया द्वैत चन्द्रा है ॥ ४ ॥
मिले जब नाथजी हमको, अनाथ फिर किस लिये रहना ।
. मान सब आप अपना है, मिटाया द्वैत चन्दा है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोड़ी । ताल तिताला ॥

जो देखूँ सो मेरा, मित्रो जो देखूँ सो मेरा ।
शत्रु मित्र होय फिर किनके, दोय न रखे निवेरा ॥ टेर ॥
मैं ही तो स्वामी सेवक मैं ही हूँ, मेरा सबही तमासा ।
मैं मुझ को जब भूल गया तब, गहे अन्धविश्वासा । मित्रो जो देखूँ० ॥ १ ॥
राज करूँ और लेप न लागे, ये सब खेल हमारा ।
हमही खेल खिलारी हम हैं, विश्व हमही आधारा । मित्रो जो देखूँ० ॥ २॥

मेरे विश्व भिन्न क्या कहिये, भिन्न कहे सो कूड़ा ।
मेरी गम को जो जन पावे, काट शीघ धरे दूरा । मित्रों जो देखूं० ॥ ३ ॥
शत्रु जाय कहां मेरो लेवे, लेवे तो कहा टूटे ।
देवनाथ दिया अमर खजाना, मान कभी नहीं खूटे । मित्रो जो देखूं० । ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

मूरत सुंदर हमारी साधो, मूरत सुंदर हमारी रे ॥ टेर ॥
सभी विश्व में मूरत मेरी, ना कोई धरी न धारी रे ।
नहीं कोई खाली मन्दिर में, मो ना कोई मिले पुजारी रे । मूरत० ॥ १ ॥
मेरा घडिया में क्या पूजूं, मैं ही हूं घडनेहारी रे ।
जी चाहे सो यह दिखलाऊं, ये सब खुशी हमारी रे । मूरत० ॥ २ ॥
मैं ही जीव प्रकृति मैं हूं, मैं ही पुरुष और नारी रे ।
मैं ही मेरा खुला और बंधा, दूजो नाहिं निहारी रे । मूरत० ॥ ३ ॥
मेरा दर्शन करूं मैं हि नित, मैं ही देव अवतारी रे ।
चर और अचर सभी में मैं हूं, मैं ही एकरस सुखकारी रे । मूरत० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, भरम धूड़ को झाड़ी रे ।
मान महान रूप जब होयो तो, मिट गई द्वैत विकारी रे । मूरत० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

लीला सभी हम री मन्नो, लीला सभी हमारी रे ॥ टेर ॥
लीला करूं रहूं फिर न्यारो, ऐसो खेल खिलारी रे ।
भोग भोग सहज में सबही, फिर भी रहूं ब्रह्मचारी रे । लीला सभी० ॥१॥
हम ही देव दैत्य हम कहिये, हम सृष्टि आधारी रे ।
सृष्टि रूप हम ही फिर कहिये, है तरंग जग सारी रे । लीला सभी० ॥ २ ॥
चेतन हम हम ही जड़ कहिये, त्यागे द्वैत विकारी रे ।
ऊंच ने नीच एक नहीं मेरे, नहीं पुरुष नहीं नारी रे । लीला सभी० ॥ ३

ईश्वर जीव प्रकृति ये तीनों, झूठे ही झगड़ा डारी रे।
दोनों छोड़ एक कर दीना, नहीं प्रीतम नहीं प्यारी रे। लीला० ॥ ४ ॥
नाथ स्वरूप सकल जग कहिये, वेद और ग्रन्थ पुकारी रे।
मान कहे कोई नाथ से न्यारो, ताहि समझ मति हारी रे। लीला० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे कागलिये" की। ताल केरवा ।

मन धर्म अधर्म विचार जद सुख पावे रे ॥ टेर ॥
धर्म बीच अधर्म बने, सो कुकरम कर्म निवार। जद सुख पावे रे ॥ १ ॥
धर्म अधर्म विचार करे, कहे नीति शास्त्र पुकार। जद० ॥ २ ॥
मुनि बशिष्ठ और मनु कह यों, को कोई देखो स्मृति उधार। जद० ॥ ३ ॥
पुन्य किये कहीं पाप बने, कहीं पाप से पुन्य अपार। जद० ॥ ४॥
अन्ध कूप में नाहिं पड़ो, नहीं खाओ जम री मार। जद० ॥ ५ ॥
स्वार्थी अर्थ बिगाड़ दियो, कुछ कीजे विवेक विचार। जद० ॥ ६ ॥
मान कहे यह नीति सही, यों चलिये खाँडा धार। जद० ॥ ७ ॥

॥ कवित्त ॥

तुम हो नरेश और देत कष्ट सब ही को, कौनसा धर्म यह नीति कहा विचारी है। रात दिवस देखूँ मैं सोच कर बात यही, समझ में न आई कुछ नीति यह तुम्हारी है। दोषी को दण्ड देत बने रहो ज्ञानी फिर, उनको भी देखो एक आत्मा निहारी है। कहे कवि बांकीदास मेटो हो संशय की प्यास, कौन शास्त्र ग्रन्थ की जो नीति यह धारी है॥

॥ कवित्त ॥

रे रे सुन बंक कुछ ख्याल तो करो मन, नीति ग्रन्थ देख बात समझ में न आई है। नीति यों साफ कहत दुष्ट को दीजे दण्ड, सोई नीति कृष्णचन्द्र पारथ समझाई है। उनसे न लोपूँ पैंड कृष्णचन्द्र कही सो भरूँ, गीताने सत्य नीति मोय दरसाई है। सब कुछ करें और रहत नित अकर्ता इस

कर्त्तव्य कर्म अपनो पालन को चाई है। कहे राव मानसिंह वडन को कहनो मान, जैसी कृष्ण कही तैसी राह में बताई है। वड़न को लोपे कहनो ताकी दुर्गति होत, वेद और ग्रन्थ शास्त्र सही समझाई है॥

॥ कवित्त ॥

सज्जन को देहे दण्ड और शेर को छोड़ दे, हिंसक वो जीव कई जीवन को मारेगो। तातें यह काम है उजाड़ दे पहिले उनको, उन्हे छोड़या जीवतो तो नगर को उजारेगो। ज्ञानिन की रीति यही स्थिति नित एक रहे, नीति और अनीति हर वक्त वो विचारेगो। कहे राव मानसिंह फर्क हू न आय जामे, ऐसो ज्ञानी आप तिरे औरन को तारेगो॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

माधो भाई साचे ज्ञानी सोई हो जी।
करत व्यवहार लाचार न होवे, नहीं हँसे नहीं रोई॥ टेर॥
सब कुछ करे कर्त्तव्य लख अपनो, जिण सूँ दुःख नहीं होई हो जी।
उठत बैठत जागत सोवत, सुरत आप मांय पोई॥ १॥
सुख वाचाल बातां बहु भाखे, निज आतम नहीं जोई हो जी।
बातां करे भरम नहि खोयो, डूबत नाव डुबोई॥ २॥
भेप न धरे जगत नहीं छोड़े, दुःख दुविधा ने खोई हो जी।
मानसिंह सोई मित्र हमारा, भीख न मांगे कोई॥ ३॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग, तर्ज वाणी की। ताल कैरवा ॥

माधो भाई विगड़ी (१) लैन हमारी रे।
सबसे अलग लैन है मेरी, सबसे ही करत किनारी रे॥ टेर॥

१—अज्ञानी लोगों की समझ से बाहर।

मुर्दों(१) से बोलूँ जिन्दों (२) से नाहीं, यह उलटी मति धारी रे।
मुर्दे ही समझो मित्र हमारे, जिन्दे हैं दुश्मन भारी रे ॥ १ ॥
चोरों(३)से प्रेम अरु शाह(४)से लड़ाई, इस में ही आनन्द अपारी रे।
चोर नगर (५) में निवास हमारो; वहां न चले साहुकारी (६) रे ॥ २ ॥
शत्रु (७) जिनको मित्र जो कीना, मित्र(८) दिया ललकारी रे।
राजा (९) को पकड़ कैद मांहि मेल्यो, देखो सुमति विचारी रे ॥ ३ ॥
बाप(१०) ने भ्रात(११) सभी ने मार्या, रोने लगी महतारी (१२) रे।
हाहाकार जो मोय न सुहायो, उनको भी पकड़ निकारी रे ॥ ४ ॥
बिगड़्यां(१३)के पास बिगड़्या ही बैठे, सुधर्यां(१४)री कौन चिकारी(१५) रे।
देवनाथ गुरु बिगड़े मिलिया, मानसिंह लिया धारी रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग, तर्ज बाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो मेरे बिगड़(१६) सो योगी(१७) होईरे।
बिगड़ बिगड़ कर ऐसा बिगड़े, पास न (१८)बैठे कोई रे ॥ टेर ॥
भेष ने दरशन धरूँ नहीं सिर पर, यह सब बन्धन सोई रे।
होय निर्बन्ध आनन्द सूँ बिचरे, अलमस्ताना होई रे ॥ १ ॥
जोगी होवणो और रहणो सुधरियो(१९), बात बणे नहीं दोई रे।

१—देहाभिमान से रहित, २—देहाभिमानी, ३—आसुरी सम्पत्ति हरने वाले सद्गुरु, ४—आसुरी सम्पत्ति वाले, ५—विवेक, ६—आसुरी सम्पत्ति, ७—ज्ञान, ८—द्वैत विकार, ९—अहंकार, १०—अज्ञान, ११—मान, मोह, लोभ आदि, १२—आशा, १३—लौकिक बन्धनों से स्वतन्त्र, १४—लौकिक मर्यादाओं के बंधनों में रहने वाले, १५—ताकत, १६—अज्ञानी लोगों के माने हुए अन्ध-विश्वासों की मर्यादाओं के बंधनों से स्वतन्त्र, १७—आत्म ज्ञानी, १८—अज्ञानी जन समुदाय का परहेज, १९—लौकिक मर्यादाओं और अन्धविश्वासों में अलूझा रहने वाला।

या तो बिगड़ो या योगी न होईये, बात कहूँ शुद्ध सोई रे ॥ २ ॥
नहीं कोई कर्म क्रिया ने धरम कोई, एक आचार ने जोई रे ।
सबसे श्रेष्ठ(१) कनिष्ट(२) रहे वह, भेदाभेद न कोई रे ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु सबसे बिगड्या, उनही बिगाड़्यो सोई रे ।
मानसिंह कहे देश(३) बिगाड्यॉ रे, सुधर्‍या बसे(४) नहीं कोई रे ॥ ४॥

॥ सवैया ॥

॥ बंक वचन ॥

बंक कहे नृप मान सुनो अबतो कर यह चुप बात तुम्हारी ।
भंग शराब पियॉ बिन बावरे कैसे भये नृप होंसी यह भारी ।
आई बको बरजे न रहो यह सही न जावत शब्द कटारी ।
बंक कहे हे नरेश सुनो अस बात कहो सुधरे जग सारी ॥

॥ सवैया ॥

॥ मान वचन ॥

जग है ही नहीं सुधरे फिर को बिगड्यो हि नहीं सुधरे कहा भाई ।
यह बिगड़्यो सुधर्‍यो तोहि दीखत मेरी तो दृष्टि मे आवत नॉई ।
तेरो हि रूप यह जगत सभी और मैं ही रहूँ इस जगत के मॉई ।
तोल(५) के देखे तो जगत मैं ही हूँ जगत मो तें कछु भिन्न है नॉई ।
मान कहे मैं बिगाड़ी नहीं और नॉहि सुधारन को दुःख पाई ।
है बिगड़ी सुधरी सब कहन की ये जग ब्रह्म को रूप सदाई ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज वाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई थोड़े मे मत घबरावो होजी ।
इतने ही डरिया तो आगे क्या मिलसी, ज्यूँ के त्यूँ रह जावो ॥टेर॥

१—भेद रहित, २—निराभिमानी, ३—स्थिति, ४—रहना, ५—जाँच ।

सूर वीर चले सिंह को मारण, धाक ही से डर जावो होजी।
होय न शिकार आवो घर खाली, जग में हाँसी करवावो ॥ १॥
सिंह शिकार तो जब ही होसी, मारो श्यौर मर जावो होजी।
जिन्दा रह्या तो सिंह वर लावो, मरिया तो वीर कहावो ॥ २ ॥
सिंह(१) शिकार वोही नर खेले, सिंह(२) होय अड़ जावो होजी।
धाक(३) सूँ डरो कुतह क्या करसो, स्वाँगी साव कहावो ॥ ३ ॥
वाचक ब्रह्म करो मत वाताँ, नाहक श्वास गमावो होजी।
मानसिंह कोई सिंह बसो तो, विकट जङ्गल (४) बिच धावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावारी । ताल दीपचन्दी ॥

मत कहो न्यारो न्यारो, इण जोगिये (५) ने मत कहो न्यारो न्यारो ॥ टेर ॥
न्यारो कह्यो तो मिलसी नाँहि, जोगी आधार तिहारो।
इण जोगिये बिना कुछ भी नहीं है, जोगी जगत उजियारो ॥ १ ॥
इण जोगिये रे जोगण(६) अनादि, फिर जोगी है अखण्ड कँवारो(७)।
जोगण संग में जुगत सूँ रहवे, जगत रचायो है सारो ॥ २ ॥
जोगी कुमारो और जोगण कुमारी (८), कभी न करत व्यभिचारो (९)।
मेला(१०) रहे और भींटत(११) नाँहि, जोगी बड़ो छन्दगारो (१२) ॥ ३ ॥
जो जोगी ने देखे न जोगण, चैन न पावे लिगारो।
एक पलक भर पलडे नाँहि, दोनों में प्रेम अपारो ॥ ४ ॥
जोगण जोगी में प्रेम अखण्डित, कबहुँ न टूटे तारो।
जो यह प्रेम टूट खण्डित होवे, तो खेल बिखर जावे सारो ॥ ५ ॥

१-देहाङ्कार; २—निर्भय ३—विधि निषेध के रोचक भयानक वाक्य, ४-निन्दा स्तुति से अ'वचलित स्थिति, ५—आत्मा, ६—इच्छा या प्रकृति, ७—निर्लिप्त, ८-शुद्धप्रकृति, ९-अन्यथा भाव, १०-अनन्य भाव, ११-निर्लिप्त, १२-योगेश्वर्य्य अर्थात् जगत रचना का कौशल।

या तो बिगड़ो या योगी न होईये, बात कहूँ शुद्ध सोई रे ॥ २ ॥
नहीं कोई कर्म क्रिया ने धरम कोई, एक आचार ने जोई रे।
सबसे भ्रष्ट(१) कनिष्ट(२) रहे यह, भेदाभेद न कोई रे ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु सबसे बिगड्या, उनही बिगाड्यो सोई रे।
मानसिंह कहे देश(३) बिगाड्याँ रे, सुधर्या बसे(४) नहीं कोई रे ॥ ४॥

॥ सवैया ॥

॥ वंक वचन ॥

वंक कहे नृप मान सुनो अवनी कर यह चुप बात तुम्हारी।
भग शराब पियाँ बिन बावरे कैसे भये नृप होमी यह भारी।
भाई बको बरजे न रहो यह सही न जावन शब्द कटारी।
बक कहे हे नरेश सुनो अस बात कहो सुधरे जग मारी॥

॥ सवैया ॥

॥ मान वचन ॥

जग है ही नहीं सुधरे फिर को बिगड़यो हि नहीं सुधरे कहा भाई।
यह बिगड्यो सुधर्यो तोहि दीखत मेरी तो दृष्टि मे आवत नाँई।
मेरो हि रूप यह जगत सभी और मैं ही रहूँ इस जगत के माँई।
तोल(५) के देखे तो जगत मैं ही हूँ जगत मो ते कछु भिन्न है नाँई।
मान कहे मैं बिगाड़ी नहीं और नाँहि सुधारन को दुःख पाई।
है बिगड़ी सुधरी सब कहन की ये जग ब्रह्म को रूप सदाई॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज वाणी की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई थोड़े मे मत घबरावो होजी।
इतने ही डरिया तो आगे क्या मिलसी, ज्यूँ के त्यूँ रह जावो ॥टेर॥

१—भेद रहित, २—निराभिमानी, ३—स्थिति, ४—रहना, ५—जाँच।

सूर वीर चले सिंह को मारण, धाक ही से डर जावो होजी।
होय न शिकार आवो घर खाली, जग में हाँसी करावो ॥ १ ॥
सिंह शिकार तो जब ही होसी, मारो और मर जावो होजी।
जिन्दा रह्या तो सिंह घर लावो, मरिया तो वीर कहावो ॥ २ ॥
सिंह(१) शिकार वोही नर खेले, सिंह(२) होय अड़ जावो होजी।
धाक(३) सूँ डरो फतह क्या करसो, स्वाँगी साच कहावो ॥ ३ ॥
वाचक ब्रह्म करो मत बातों, नाहक श्वास गमावो होजी।
मानसिंह कोई सिंह बनो तो, विकट जङ्गल (४) विच धावो ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावारी । ताल दीपचन्दी ॥

मत कहो न्यारो न्यारो, इण जोगिये (५) ने मत कहो न्यारो न्यारो ॥ टेर ॥
न्यारो कह्यो तो मिलसी नाँहि, जोगी आधार तिहारो।
इण जोगिये बिना कुछ भी नहीं है, जोगी जगत उजियारो ॥ १ ॥
इण जोगिये रे जोगण(६) अनादि, फिर जोगी है अखण्ड कँवारो(७)।
जोगण संग में जुगत सूँ रहवे, जगत रचायो है सारो ॥ २ ॥
जोगी कुमारो और जोगण कुमारी (८), कभी न करत व्यभिचारो (९)।
मेला(१०) रहे और भींटत(११) नाँहि, जोगी बड़ो छन्दगारो (१२) ॥ ३ ॥
जो जोगी ने देखे न जोगण, चैन न पात लिगारो।
एक पलक भर पलटे नाँहि, दोनों में प्रेम अपारो ॥ ४ ॥
जोगण जोगी में प्रेम अखण्डित, कबहुँ न टूटे तारो।
जो यह प्रेम टूट खण्डित होवे, तो खेल बिखर जावे सारो ॥ ५ ॥

१–देहाङ्कार; २—निर्भय ३—विधि निषेध के रोचक भयानक वाक्य, ४–निंस्तुति से अविचलित स्थिति, ५—आत्मा, ६—इच्छा या प्रकृति, ७—निर्लिप्त, ८–शुद्धप्रकृति, ९–अन्यथा भाव, १०–अनन्य भाव, ११–निर्लिप्त, १२–योगेश्वर्य अर्थात् जगत रचना का कौशल।

जो जोगी ने देखणों होवे, मनोयोग चित धारो।
योग जुड़्यां बिना जोगी न मिलसी, मिटसी न भरम अन्धारो ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु देख जोगी ने, पकड़यो हाथ हमारो।
मानसिंह जद जोगी में मिल गये, जोगी रूप जग सारो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग असावारी । ताल दीपचन्दी ॥

नहीं त्यागी घरबारी, जोगी नहीं त्यागी घरबारी।
कहूं घरबारी तो घर कहूँ नाहीं, त्यागी कहूँ तो जग सारी ॥ टेर ॥
त्यागी रहे और गृहस्थ सब भोगे, जोगी जबर खिलारी।
यह बंधन में आवे न जोगी, जोगिये री कुदरत न्यारी ॥ १ ॥
कहन सुनन तो कछु न बने आ, जालम जुलमी अपारी।
घर में बैठो काम करे सगला, फेर रहे ब्रह्मचारी ॥ २ ॥
नित नवयौवन रहे ओ जोगी, कबहुँ न वृद्धपन धारी।
सबसे रसियो सुन्दर जोगी, सबसे ही सुन्दर नारी ॥ ३ ॥
नहीं है आलसी और काम करे नहीं, यह गति अगम अपारी।
सुत अरु सुता अगणित हैं इनके, गृहस्थ बडो बलकारी ॥ ४ ॥
देवनाथ मोहे जोगी बतायो, उण जोगिये री बलिहारी।
मानसिंह जद जोगी जोयो, मिट गई भ्रमना सारी ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

बंक वचन

बंक कहे भूपति सुनो, वो जोगी है कौन।
न्यारो खोल बताइये, मत रहिये तुम मौन ॥
को फिर इनकी जोगिनी, गृहस्थ कौन से कीन।
ब्रह्मचारी कैसे रह्यो, भूपति कहो प्रवीन ॥

कौन सुता और कौन सुत, कहां है भवन निवास।
भूपति भेद उघारि कहो, भगे अंधविश्वास ॥
गुप्त गुप्त कह जावोगे, तो करही अर्थ अनेक।
असली अलगो रेवसी, बढसी नकली भेष ॥

मान वचन

बंक यह बात है बांकड़ी, सभी खबर है तोय।
तो फिर तू पूछे हमें, गुप्त रही है कोय ॥

बंक वचन

बंक कहे भूपति सुनो, हमें खबर जो होय।
तो भी तुम कह दीजिये, दाम न लागे कोय ॥
जाणूँ राज स्ईस तुम, कहत परिश्रम होय।
भली होय सब जगत की, भरम भूत दो खोय ॥
गोरख और कबीर ने, यह उलझी रख दीन।
मति न्यारी खेंचन लगे, खेंच रहे मतिहीन ॥
न्यारी न्यारी बीच में, असली खबर नहीं होय।
को नकली असली कवन, जीव रहे सब सोय ॥
कृपा भवन करके कृपा, कर दो कृपा को रूप।
को न्यारो मेलो कवन, भेद कहो भू भूप ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

भेद कहूं तत् सारो, ज्ञानी भेद कहूं तत् सारो ॥ टेर ॥
सूक्ष्म इच्छा आदि ब्रह्म की, है जिनको पिव प्यारो।
इनसे ही उठत समावत इनमें, यह है खेल अपारो। ज्ञानी भेद० ॥ १ ॥
संगम करे तो यह पुत्री है इनकी, होवे बहुत बिगारो।
संगम किये छोड़ नहीं पाछो, जिण सूँ रहवे न्यारो। ज्ञानी भेद० ॥ २ ॥

आदि प्रेम सों किम कर छूटे कर उर गहन विचारो।
यह ग्रह बन्धन जग को रचना, खिलत खेल खिलारो। ज्ञानी भेद० ॥ ३॥
जड़ चेतन सब पुत्र और पुत्री, आप पिता बलकारो।
यथायोग्य सब ही को देवे, अपणो नेज उजारो। ज्ञानी भेद०। ४॥
नित है नयो वो नाँहि पुराणो, जन्मे न मरणे हारो।
इच्छा नहि है न होत पुराणी, जोड़ मिलो हद भारो। ज्ञानी भेद०॥ ५॥
ऐसो गृहस्थ कियो इण जोगी, फिर वो रह गयो क्वारो।
जोगण कुमारी कहो कब परणी, वेद कहे यूँ चारो। ज्ञानी भेद० ॥ ६॥
नहीं जग विनस्यो नहीं जग उपज्यो, अखण्ड चले इक धारो।
करण हार मौजूद खड़ो है, इण जग को आधारो। ज्ञानी भेद० ॥ ७॥
मानकहे कवि गुणि ज्ञानी, मिट गयो भरम तिहारो।
शंक न रखिये खोल कर पूछो हम और बतावन त्यारो। ज्ञानी भेद० ॥ ८॥

॥ मान ॥

॥ राग कानड़ा। ताल दीपचन्दी ॥

है कहताँ तो लाज म्हाने आवे। नहीं जो कहूँ तो कह्यो नहीं जावे॥ टेर॥
है कह दूँ तो पतो नहीं भाई। रूप रंग कछु खोजहू नाँहि।
याही ते कहताँ लछन लगावे॥ १॥
नहीं जो कहूँ तो जग मिट जावे। जो नहीं है तो कुण खेल रचावे।
जिण रो आदि अन्त नहीं पावे॥ २॥
है जद कहूँ म्हाँने न्यारो दिखावे। नहीं है कहूँ जद नहीं दरसावे।
याके मध्य अब चुप ही रहावे॥ ३॥
है नहीं है यह दोनों मिटावो। इनके बीच में हम हैं यह पावो।
अपने आपको क्या दरसावे॥ ४॥
वेदव्यास भाष्य जद कीनो। नेति कहे सुख चुप कर लीनो।
इण दे भरम सूँ जगत बही जावे॥ ५॥

ता पर कृष्ण ऐसो सहायक आयो। सर्व भूतात्मक तत्व बतायो।
जिण ने खोज्यां सूँ भरम मिट जावे ॥ ६ ॥
नहीं जो होवे तो सर्वभूतात्म नांई। है तो जब नहीं है कह्यो किम जाई।
कृष्ण वाक्य कोई मिटे न मिटावे ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु घर अवतारा। मेट्यो सकल दुःख द्वन्द्व हमारा।
मान अभय पद बीच समावे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा। ताल दीपचन्दी॥

क्यूँ बन जाऊँ और रहूं मैं उदासी। आठों पहर रूप अविनाशी ॥ टेर ॥
सुत पितु बन्धु छोड़ क्यों देऊँ। इनमें दुःख क्या क्यों दुःख लेऊँ।
सब ही तो यह मेरी राशी। क्यों बन० ॥ १ ॥
घर घर भीख काहे को मांगू। भिक्षुक हो क्यों जग को जाँचूँ।
गृहस्थ छते हूँ शुध सन्यासी। क्यों बन० ॥ २ ॥
मेरे कर्म करम तो मैं हूं। मैं ही करूँ ने फल मैं मेरा लेऊँ।
काहे को रखूँ दिल दुविधा फाँसी। क्यों बन० ॥ ३ ॥
सब में मैं और सब मेरे मांही। बन पहाड़ में मैं खाली नाहीं।
वृथा ही अरि सुन करे यह हांसी। क्यों बन० ॥ ४ ॥
मान कहे ऐसा योग मिलाया। कृष्ण कृपा कर्मयोगी बनाया।
स्वतः तेज हूं सब में प्रकाशी। क्यों बन० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज बाणी की। ताल दीपचन्दी ॥

नित्य आनन्द रहूँ सदा, क्यों मैं रहूं रे उदासी।
कर्म काठ कोयला किया, ऐसो सहज सन्यासी जो ॥ टेर ॥
कर्म करूँ और लागे नहीं, दुःख सुख व्यापे न मोई। —
सहज समाधी में हुय रयो, आतम सुख होई जो ॥ १ ॥

त्याग ग्रहण मेरे है नहीं, है सो है निज मेरा ।
आण जाण फिर कौन सो, सब मे मैं निज हेरा जी ॥ २ ॥
काम सभी करता बनूँ, फिर भी रहूँ मैं अकरता ।
आप आपको काम है, किनको दुःख भरता जी ॥ ३ ॥
बाहर ढूंढ्यो क्या मिले, मिलसी घर माँई ।
घर में खोजे बिन क्यों फिरे, पायो निज माँई जी ॥ ४ ॥
कबहूँ राम कब कृष्ण कहे, कबहूँ ब्रह्मा महेशा ।
वेश्या सुत ज्यों वे रेवसी, किनको बाप मनेशा जी ॥ ५ ॥
कबहूँ बदरी और द्वारका, रामेश्वर काशी ।
वेश्या के पति कौन है, ऐसो हाल हो जासी जी ॥ ६ ॥
कबहूँ गंगा जमुना नहावे, अड़सठ तीरथ धावे ।
एक एक की आश में, घर को देव गमावे जी ॥ ७ ॥
गोकुल गयो मथुरा गयो, फिरियो कोस चौरासी ।
जन्म मरण तो ना मिट्यो, लागी अमड़े री फाँसी जी ॥ ८ ॥
चार धाम अड़सठ तीर्थां, सब में टांट कुटाई ।
आगे सूँ आगे कहता रह्या, आगो किणी ना मिटाई जी ॥ ९ ॥
सब में धक्का हम खाविया, कर कर बन उदासी ।
देवनाथ समरथ मिल्या, देख्यो ब्रह्म प्रकाशी जी ॥ १० ॥
मानसिंह जद ओलख्यो, उरजी मन हाँसी ।
नजर किये दुःख पावियो, मेरो मैं सुख रासी जी ॥ ११ ॥

बंक वचन

॥ दोहा ॥

बंक कहे सुन मानसी, मत कर "मैं" अहंकार ।
हिरण्यकश्यपु और रावण से, गये थे इण मे मार ॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

भूलो रे भूलो बंक नाम को लजावे यार, बाँकी बात सोच क्यों तू बात करे गैली है। रावण और हरिण्यकशपु देह अभिमानी थे, उनकी और ऐसी देख एक कहा शैली है। कृष्ण कह्यो "मैं हूँ मैं" उनको न मारे कोई, मैं तो वही कृष्णचन्द्र की मत ले ली है। कहे राव मानसिंह बाँके विचार देख, तैंने जो कही यह तो बात रही पहली है॥

॥ दोहा ॥

नाश करण सो ना कियो, कियो आपनो नाश।
मानसिंह सुख बेच के, दुःख में कियो निवास॥

॥ दोहा ॥

लेख लेख सबही कहे, पण लिखिया मिल्या न कोय।
किण लिखिया किण वाचिया, याकी संशय मोय॥

॥ कवित्त ॥

केते मतिमंद अन्ध ऐसी बनाय कहत, कुंकुम के अक्षर जो लिलाट में लिखाये हैं। पर काहू न बाच जोयो कहन ही कहन कहत, गप्प को चलान और बात कुछ बनाये हैं। अजब सी भाषा अटपटी न जात पढ़ी, ऐसी कहे कह करके पोल को छिपाये हैं। कहे राव मानसिंह लिखिया न पढ़िया कोऊ, पुरुषार्थ से करे जो कुछ भी बन जावे हैं।

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी रेखता । ताल कवाली ॥

उड़ाये बन्ध सब दिल के, हुवे निर्बन्ध सब लायक॥ टेर॥
पूर्व कर्मों के बन्धन को, पढ़ पढ़ के हार दी हिम्मत।
सुना कि मेट सकता है, मिटा के हुवे सब लायक॥ १॥

प्रभ के आसरे रहते, तो कुछ भी कर न सकते थे।
दिखाया काम कर अपना, दिखा के हुवे सब लायक ॥ २ ॥
सुना है वेद शास्त्रों मे, पूरब कर्मों की कर ज्वाला।
जला के खाक कर दीया, जला के हुवे सब लायक ॥ ३ ॥
लिखा है भाल मे अपने, पूर्व कर्मों का कुछ लेखन।
मिटाया धोखा सब येही, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ४ ॥
इधर तो कर्म करते है, इधर वो पूर्व होता है।
लिखेंगे अब क्या होकर वो, मिटाकर हुवे सब लायक ॥ ५ ॥
अभी जो चोरी करते हैं, करी और हो चुकी पूरब।
कैद क्यों आज जाता है, मिटा कर हुए सब लायक ॥ ६ ॥
अगर संशय रही है तो, देख लो आज ही करके।
इधर विष खाय और मर जाय, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ७ ॥
अगर जो पूर्व में होता, जहर विष का ही क्यों आता।
मिटाए बन्द सब दु:ख के, मिटा कर हुवे सब लायक ॥ ८ ॥
मान यह जान ले दिल मे, लिखा नहीं लिखते हैं वहीं पै।
सर्व मे है प्रभू व्यापक, देख के हुवे सब लायक ॥ ९ ॥

बंक वचन

॥ सवैया ॥

बंक कहे नर राज सुनो तुम पूर्व काल मे क्या बतलाई।
रोम ही रोम अ जनो सुत के फिर रामको अंकित कैसे लिखाई
लिखे पढ़े तुम मिथ्या करो तब झूठ है बात यह कैसे सुनाई।
हमको भरम फसावन हो यह जाली ने जाल जो कैसे बिछाई॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

मेरी संग करी तुमने कवि गहरे पानी मे पैठ न न्हायो।
उपर अर्थ को देख लियो है अंतर नांय कछु समुझायो।

शस्त्र से चीरो नहीं हृदय नहीं रोम उखाड़ के रूप दिखायो।
मान कहे कवि बंक सुनो उन बुद्धि प्रकाश से तेज दिखायो ।।

मान वचन

। कवित्त ।।

हृदय में संकुचित हतो कह्यो न प्रकट उन, आज सबे विस्मित जान प्रगट सुनायो है। कह्यो हनुमान समर्थन कियो रामचन्द्र, बन्दर और भरत आदि सबको समझायो है। ऐसो मत जान बंक हनुमान चीरयो हृदय, अरे हृदय जो चीरत तो प्राण कस रह्यो है। कहे राव मानसिंह सिंहन की करी संग, भारी तैं जुल्म कीनै भेड़ सो रह्यो है।।

शिक्षा और चेतावनी

।। दोहा ।।

मान(१) मान सखी मान कहे, मान(२) करो मत कोय।
इसी मान के बीच में, दीन्ह रोकड़ा(३) खोय ।।

।। कुण्डलियां ।।

मान मान को मेट के, मान मान कुछ मान।
मानसिंह मान्यो नहीं, तो होसी मोटी हान।
होसी मोटी हान, खबर करलो घर मांही।
कहां खोजण ने जाय, खोज्यां कद बाहर पाई।
अजहू मन में मान ले, मत तू करडी तान।
मान मान को मेट के, मान मान कुछ मान।।

।। सवैया ।।

मान(४) में ब्राह्मण क्षत्री बन्यो और मान में वैश्य और शूद्र कहायो।
मान में आप जो ऊँचो चढ्यो और मान हि मान में नीचो गिरायो।

१—समझ, २—अभिमान, ३—आत्मानुभव, ४—देहाभिमान।

जो इस मान को दूर करे तो मान(१) महान(२) को रूप लखायो।
मान मिट्यो तो महान् भयो फिर मान(३) कहीं नु गयो नहीं आयो॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

अब अभिमान निवारो प्यारी(४), अब अभिमान निवारो॥ टेर॥
रूठे श्याम(५) होयगी खोटी, कोई भाव(६) न पूछे तिहारो।
कब की खड़ी यों गरज(७) करें हम(८), उतरे न मान(९) अपारो। प्यारी० ॥ १॥
मान मान में महान (१०) हारसी(११), पड़त जन्म में छारो।
तान तू अभिमान छोड़ दे, परम लहे पिव प्यारो। प्यारी० ॥ २॥
तेरे मान में मान(१२) उतरसी, करले समझ विचारो।
इतनो मान काम को नाँहि, लागत अवगुन कारो। प्यारी० ॥ ३॥
सतगुरु कृष्ण मान को पाये, अब धूल मान पै डारो।
मानमिट निर्मान होय के, महान रूप निहारो। प्यारी० ॥ ४॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

खटके मान(१३) तिहारो राधे(१४), खटके मान तिहारो ए॥ टेर॥
मान मान में कही न मानी, काम बिगाड्यो सारो ए।
यह तेरो मान काम क्या आवे, रूस(१५) गयो पिव प्यारो ए। खटके० ॥ १॥
जा दिन से तै मान न छोड्यो, मान उतर (१६) गयो सारो ए।
माधव(१७)तो मथुरा(१८) को धाये, क्या अब हाल हमारे(१९)ए। खटके० ॥२॥

१—निश्चय मान कर, २—आत्मा, ३—कविताकार,४—मान की वृत्ति, ५—आत्म विमुखता, ६—सत्ता, ७—समझावें, ८—बुद्धि, ९—देहाभिमान, १०—आत्मा ११—विमुख होगी, १२—सतअहङ्कार, १३—दूसरों से पृथकता का व्यक्तित्व का अभिमान, १४—वृत्ति, १५—आत्म विमुख हो गई, १६—अधोगति हो गई, १७—आत्मा, १८—अज्ञान अवस्था, १९—मन और इन्द्रिय आदि सूक्ष्म शरीर के अवयव।

बहुत जतन से पाये गिरधर(१), फिर यह काम बिगारो(२) ए।
प्रेम(३) हार सो टूट्यो सजनी, बिखर गयो रत्न(४) न्यारो ए। खटके० ॥ ३ ॥
ऐसो मान कभी नहीं कीजे, देखो समझ विचारो ए।
ऐसो पीव फेर कब मिलसी, हाल सुने को थारो ए। खटके० ॥ ४ ॥
नाम तेरो वृषभानु सुता(५) है, तो पण रह्यो अन्धारो ए।
प्रेम छोड़ तैं मान गह्यो क्यों, पड़ी अकल में छारो ए। खटके० ॥ ५ ॥
वह तो वक्त(६) मान में खोई, अब न मिले पिव प्यारो ए।
अब पछताये क्या हो प्यारी, काम उलट गयो सारो ए। खटके० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु हाथ गह्यो जब, परगट कीन उजियारो ए।
मान कहे अब भूल मान पर, मदान(७) मिल्यो हमारो ए। खटके० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

उठ सखी (८) क्या सोवे आली, घर आये गिरधारी (९) रे। टेर ॥
क्या वृन्दावन के बन ढूंढे, यहां ही खड़े बिहारी रे।
नीन्द(१०) उड़ाय मिलो गिरधर से, लेवहु छवी निहारी रे। उठ सखी० ॥ १ ॥
जब तू जावे (११) वह नहीं आवे, रह न्यारी की न्यारी रे।
अब वह (१२) आये तू नहीं उठे, कैसी भूल तुम्हारी रे। उठ सखी० ॥ २ ॥
या अवसर(१३) में जो नहीं मिलसी, विकट पन्थ है भारी रे।
और तो अवसर कोई न दीखे, फिर वहसी भवधारी (१४) रे। उठ सखी० ॥ ३ ॥
इतनो मान(१५) करे तू काहे, देखले समझ विचारी रे।

१–ज्ञान के साधनों से परमात्मा को जानना, २–देहाभिमान के कारण फिर से गिरावट, ३–सर्वात्म भाव, ४–आत्मानन्द, ५–आत्मा रुपी सूर्य की इच्छा रुपी पुत्री, ६–ज्ञान प्राप्त करने की अवस्था, ७–आत्मा, ८–वृत्ति, ९–आत्मानन्द, १०–मोह निन्द्रा, ११–विषयों की तरफ दौड़ना, १२–आत्मज्ञान देने वाले सद्गुरु, १३–मनुष्य जन्म, १४–बार बार जन्म मरण के चक्कर, १५–देहाभिमान।

अपने पीव(१) मे मान क्या सजनी(२), पीव मिल्यो ब्रह्मचारी(३) रे ॥ ४ ॥
मान मान मैं महान(४) गमास, कोई पूछ न करे निहारी रे।
मान कहे री मान सुन्दरी, देखो मान निहारी रे। घूंघट सखी० ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

हरि तो जागे तूं ही सोवे, जिण सूं दुःख पावे ।
आप हू न जाने मूढ, भूल में रहावे ॥ टेर ॥
अपनी नींद नांय खुले, घण्टा कहा बजावे ।
अपनी नीन्द उड़ाय दे तो, प्रगट दरश पावे । हरि० ॥ १ ॥
औरां दोष मुफ्त देत, अपनो छिपावे ।
विश्वपति व्यापक सदा, उन्हें कहा जगावे । हरि० ॥ २ ॥
अन्तरपट खोल जरा, दूर ना रहावे ।
मन के मन्दिर सुन्दर श्याम, क्यों ढूंढण जावे । हरि० ॥ ३ ॥
देवनाथ हाथ गहे, भूल को मिटावे ।
मान कहे मान जरा, भूल के विष खावे । हरि० ॥ ४ ॥

॥ मान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

घूंघट(५) पट खोल राधे(६), मोहन(७) मन्दिर (८)आयो ॥ टेर ॥
बाहिर मन्दिर खोज हारी, कछु न थाह पायो ।
मन्दिर के पट(९) खुले पडे, म्हालो दे बुलायो । घूंघट पट० ॥ १ ॥
वृत्ति मेरी राधे बनी, भ्रम सब भगायो ।
मान यूं आनन्द भयो, कृष्ण को रिझायो । घूंघट पट० ॥ २ ॥

१—आत्मा, २—वृत्ति, ३—निर्लिप्त, ४—आत्मा का आनन्द, ५—अज्ञान का पड़दा, ६—वृत्ति, ७—आत्मा, ८—घट मे, ९—शरीर के नव दरवाजे ।

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती ताल दादरा ॥

वाह वाह प्रेम (१) तेरो राधे (२), वाह वाह प्रेम तेरो ॥ टेर ॥
भलो प्रेम कीन प्यारी, पीव (३) अपनो हेरो ।
पिया पाय कहीं न जाय, मिट्यो सब यह फेरो (४) । वाह वाह० ॥ १ ॥
राखे पिया को जतन करके, नैनन (५) के नेड़ो ।
आठ पहर पास रहे, अन्तर्गत (६) हेरो । वाह वाह० ॥ २ ॥
सब (७) ब्रजनारी मिली प्यारी, पीव के संग (८) घेरो ।
राग (९) रागिनी सुन्दर गावे, स्वर है चहूँ फेरो । वाह वाह० ॥ ३ ॥
देवनाथ हाथ गह्यो, मान चरण चेरो ।
दरसण दुःख दूर कीन, मिल्यो कृष्ण (१०) मेरो । वाह वाह० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल दादरा ॥

लाज (११) तणो लाज सजनी, साँवरे (१२) निभायो ॥ टेर ॥
घणा दिवस लाज खोई, कछु न हाथ आयो ।
साथय विहारी (१३) मिले, दुःख यह मिटायो । लाज तणो० ॥ १ ॥
मैं तो जान्यो दूर मिलहिं, बहुत निकट पायो ।
भूल करके नहीं जोयो, पास में बतायो । लाज तणो० ॥ २ ॥
मैं कुमारी (१४) वह ब्रह्मचारी (१५), योग क्या मिलायो ।
ऐसो योग (१६) अबके मिल्यो, जियरा सुख पायो । लाज तणो० ॥ ३ ॥

१—सर्वात्म भाव, २—वृत्ति, ३—आत्मा, ४—बार बार जन्म मरण, ५—विचार रूपी नेत्र, ६—अपने में, ७—इन्द्रियों का समूह, ८—निजानन्द में मग्न होना, ९—सोहंशब्द, १०—अपना स्वरूप, ११—देहाभिमान की फजीहत से बचना, १२—आत्म स्थिति, १३—सर्वव्यापक आत्मा, १४—ब्रह्म की आदि इच्छा, १५—निर्लिप्त, १६—एकत्व भाव में जुड़ना ।

बहुत बहुत जन्म धरे, यौवन (१) यों गुमायो ।
मिले सो व्यभिचारी(२) मिले, पीव ना बतायो । लाज तणो० ॥ ४ ॥
देवनाथ हाथ गह, पीव को पकड़ायो ।
मान कहे मान्यो मन, मान(३) को मिटायो । लाज तणो ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉंड–आसावरी । ताल कैरवा ॥

घट के कपट पट तोड़ो ए, म्हारी सुरता प्यारी; घट के कपट पट तोड़ो ए ॥ टेर
यह जो कपट पट दूर न करहो, कदेय न मिलसी थारो जोड़ो (४) ए । म्हारी० ॥ १
जो गिरधर सूँ मिलणो हुवेनो, पांच(५)पचीसॉ(६) सूँ मुख मोड़ो ए । म्हारी० ॥ २
घट पट टूट मैदान होयकर, सब मिट जावेला फोड़ो ए । म्हारी ० ॥ ३ ॥
मान कहे घर मे लख गोविन्द, इत उत काहे को दौड़ो ए । म्हारी ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग श्याम-कल्याण । ताल तिताला ॥

काहे को सोती राधे (७) गोरी, अब घर खोल (८) ॥ टेर ॥
सूती तोय अब नींद (९) कैसे आवे, बाज रह्यो है ढोल(१०) । काहे को० ॥ १ ॥
हेरो आपरो मान (११) किया क्यों, हॅंस गिरधर से बोल (१२) । काहे को० ॥ २ ॥
यों सोते तेरो मान घटत है, निकल जायगी पोल । काहे को० ॥ ३ ॥
मानसिंह कहे प्रेम रस ऐसो, क्यों नहीं पीवत अतोल । काहे को० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग श्याम-कल्याण । ताल तिताला ॥

गिरधारी प्यारे वारी तोपे, वारी घनश्याम ॥ टेर ॥

१—ज्ञान प्राप्त करने की अवस्था, २—भेद भाव के साम्प्रदायिक लोग, ३—देहाभिमान, ४—आत्मा, ५—विषय, ६—प्रकृतियाँ, ७—वृत्ति, ८—विचार का, ९—मोह-निद्रा, १०—आत्मज्ञानी पुरुषों के सदुपदेश, ११—व्यक्तित्व का अहङ्कार, १२—एकता का अनुभव कर ।

वारी वेद व्यास को वारी सुखदेव को, जिन लियो है तत्त्वज्ञान। गि० ॥ १ ॥
विश्वगिरी हम ग्वाल और गोपी, तुम ही बचाये तमाम। गिरधारी० ॥ २ ॥
आदि इच्छा वृत्ति राधिका, व्यापक सुन्दर श्याम। गिरधारी० ॥ ३ ॥
नर्सिह लख भाव ध्रो ऐसो, कर प्रभु में विश्राम। गिरधारी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खम्माच । ताल दादरा ॥

जाग एरी जाग सखी(१), सोयाँ पिया(२) जात(३) है ॥ टेर ॥
ऐसे मौके नाँय सोय, देगी रतन(४) हाथ खोय।
पीछे ही सिर धुन के रोय, आत नहीं पिया हाथ है। जाग एरी० ॥ १ ॥
देख दिवस चढ़(५) आय, बावरी रही लिटाय(६)।
पोल बीच रही फँसाय, उठ न अब तो रात(७) है। जाग एरी० ॥ २ ॥
जिनको अपने समझे सैन(८), वो न तुम्हें देंगे चैन।
मुफ्त में लगायें नैन(९), ये ठगके तुमको खात है। जाग एरी० ॥ ३ ॥
कहते तुमको जगत त्याग, इनकी मत सीख लाग।
खेलें ये तो स्वार्थ फाग, तू ही मारी जात(१०) है। जाग एरी० ॥ ४ ॥
देवनाथ हाथ गहे, तेरो रूप तोय दहे।
मान सुख क्यों न लहे, जान जहर खात है। जाग एरी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खम्माच । ताल दादरा ॥

देखो हाय(११) हाय बीच, यार(१२) हू को खोय(१३) बैठे।
भूल के भरम जाल, खोयो सब अपनो माल(१४)।

१—मन की वृत्ति, २—आत्मा, ३—आत्मज्ञान शून्य रहना, ४—उमर, ५—मनुष्य-जन्म, ६—मोह-निद्रा में पड़े रहना, ७—पशु-पक्षी आदि मूढ योनि ८—साम्प्रदायिक उपदेश देकर शुभचिन्तक बनने वाले स्वार्थी लोग, ९—प्रेम किया, १०—अज्ञान में जीवन गुमाना, ११—हैंचातानी, १२—आत्मा, १३—भूल गये, १४—उमर।

भूल गई घर को ख्याल (१)। यार ह को खोय० ॥ टेर ॥

जोवे जाको जोयो नाँय, मोती (२) मेरो पायो नाँय।
विश्वास हु जो होयो नाँय। यार हु को खोय बैठे। देखो हाय हाय० ॥ १ ॥
टन है जग की हाय हाय, यामें सुणने देहे नाँय।
इन हाय स्वार्थी यह। यार हू को खोय बैठे। देखो हाय हाय० ॥ २ ॥
मान को अज्ञान दूर, होयो जब ऊगो सूर (३)।
मिले जब अपनो नूर। यार हू को खोय बैठे। देखो हाय हाय० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "लाल केस्या" की। ताल धीमा केरवा ॥

म्हारी सुरत सुहागण जाग जाग अब जाग है।
ए म्हारी सुरता प्यारी, पीयोजी बुलावे अमर (४) महल में है ॥ टेर ॥
सैयाँ (५) म्हारी नहीं जाणाँ म्हे प्रीतम केरो गाव है। हे मैयाँ म्हारी,
किमडे मारग सूँ उण घर जावसाँ है ॥ १ ॥
सुरता प्यारी अगम (६) निगम(७) है प्रीतम केरो देश है। हे म्हारी सुरता प्यारी
चाले तो ले चालूँ उण देश में है ॥ २ ॥
सैयाँ म्हारी कितनो चलणो कोस एक दस कोस है। हे सैयाँ म्हारी,
किती रे मजलाँ पर उण रो गाँव है है ॥ ३ ॥
सुरता प्यारी नहिं कोई कहिये कोस एक दस कोस है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
खोजे तो मिलसी थाँ प्रीतम पास में है ॥ ४ ॥
सैयाँ म्हारी बिन जाण्याँ म्हे कैसे करसाँ प्रीत है। हे सैयाँ म्हारी,
म्हाँने कोई ने मिलावे अमर पीव (८) सूँ है ॥ ५ ॥
सुरता प्यारी चाले तो ले चालूँ म्हारे साथ है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
पड़दो तोड़ ने भेटो पीव सूँ है ॥ ६ ॥

१—अपना स्वरूप, २—विचार, ३—ज्ञान, ४—आत्म स्थिति, ५—निश्चयात्मिका बुद्धि, ६-७—इन्द्रियां और मनकी पहुँच से परे, ८—आत्मा।

सुरता प्यारी पहुँची पहुंची सन् गुरुजी रे पास है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
खोली तो किवाड़ी अमर महल री है ॥ ७ ॥
सैयाँ म्हारी मिलिया मिलया देवनाथ गुरूदेव है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
मान जो निरखे रे अपणे पीव ने है ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "लाल केस्या" की। ताल धीमा केरवा ॥

सुरता प्यारी मत डरपो थे अपणे मन माँय है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
आवो नी आवो थे अमर (१) महल में है ॥ टेर ॥
लाल केस्या[२] थाँसू म्हारे कहो कदरी आ प्रीत रे। हो म्हारा लाल केस्या,
साधुड़ाँ (३) साथे थे इण घर आवीया हो ॥ १ ॥
सुरता प्यारी थारे म्हारे घणा दिना सूँ प्रीत है। हे म्हारी सूरता प्यारी,
तू ही तो छोड़ने मिल गई जगत में है ॥ २ ॥
लाल केस्या म्हे तो थाने सुपने जाणों नाय रे। हो म्हारा लाल केस्या,
किसड़ी जागा में दोई आपाँ मिल्या हो ॥ ३ ॥
सुरता प्यारी प्रीत आपणी आज काल री नाँय है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
अनन्ता जन्माँ सू थारे साथ में है ॥ ४ ॥
लाल केस्या टल्या साथ सूँ आपां कहो किण काज रे। हो म्हारा लाल केस्या,
किणने छुड़ाया आपों ने संग सूँ हो ॥ ५ ॥
सुरता प्यारी कियो कियो थे विषय भोग सूँ प्यार है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
इसड़े रे कारण सूँ थाने छोड दी है ॥ ६ ॥
लाल केस्या अब मैं थाँ सूँ प्रीत लगाऊँ नाँय रे। हो म्हारा लाल केस्या,
प्रीत करूँ ने फिर थे छोड़ दो हो ॥ ७ ॥
सुरता प्यारी आव आव अब थाँ ने छोड़ूँ नाँय है। हे म्हारी सुरता प्यारी,
आदि प्रीत ने पाछी जोड़सों है ॥ ८ ॥

१—आत्म-स्थिति, २—आत्मा, ३—ज्ञानी पुरुष।

लाल केस्या कुण अब थॉरो मानेला इतबार रे। हो म्हारा लाल केस्या;
पुरुषॉ सूँ प्रीत में करती डर रही हो ॥ ९ ॥

सुरता प्यारी ऐड़ा म्हॉने पुरुष मूढ मत जाण हे। हे म्हारी सुरता प्यारी,
में ही तो रचायो सारे जगत ने हे ॥ १० ॥

लाल केस्या थॉरो म्हॉने नहीं आवे विश्वास रे। हो म्हारा लाल केस्या,
पहला छोड़ी ज्यूँ फिर म्हॉने छोड़ दो हो ॥ ११ ॥

सुरता प्यारी नही मैं छोड़ी फिर भी छोड़ूँ नॉय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी,
तू ही ने अलूजी जाय ने जगत मे हे ॥ १२ ॥

लाल केस्या जद म्हाँ ने थारो होवे इतबार रे। हो म्हारा लाल केस्या,
सतगुरु आवे ने देवे साकशी(१) हो ॥ १३ ॥

सुरता प्यारी सतगुरु मिल गया आय ने म्हारे मॉय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी,
म्यारा तो नहीं फिर किण री साकशी हे ॥ १४ ॥

लाल केस्या कॉई है आ थारी आदू जात रे। हो म्हारा लाल केस्या;
किसड़े रे गढॉ रा थे हो राजवी हो ॥ १५ ॥

सुरता प्यारी आदि अनादि ब्रह्म है म्हारी जात हे। हे म्हारी सुरता प्यारी,
अखिल ब्रह्मण्ड रा म्हे तो राजवी हे ॥ १६ ॥

लाल केस्या कुण है थारा माय बाप भाई बन्धु रे। हो म्हारा लाल केस्या,
किसड़ी न्याती रा कहीजो सारला(२) हो ॥ १७ ॥

सुरता प्यारी माय बाप सब जग है भाई बन्धु हे। हे म्हारी सुरता प्यारी,
अखिल जगत तो म्हारी न्यात है हे ॥ १८ ॥

लाल केस्या इसड़ो वर म्हारे मन में दाय न आय रे। हो म्हारा लाल केस्या;
जाति पांति सूँ ठीण ने क्या करॉ हो ॥ १९ ॥

सुरता प्यारी विश्व जिको है सगलो म्हारी जात हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;

१—गवाही, २—शामिल।

आवे तो मिलाऊँ म्हारी जात में हे ॥ २० ॥

लाल केस्या साच कहो म्हांने सार सार समझाय रे। हो म्हारा लाल केस्या;
थारी बोली में मैं समझी नहीं हो ॥ २१ ॥

सुरता प्यारी आतम है ओ सबी जगत रे माँय हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
आतम तो केवे सो म्हाँने जाणले हे ॥ २२ ॥

सुरता प्यारी भेद बतायो देवनाथ मस्तान हे। हे म्हारी सुरता प्यारी;
ओई रे अमरपुर रो महल है हे ॥ २३ ॥

लाल केस्या जाणी जाणी असल आपरी जात रे। हो म्हारा लाल केस्या;
बाहर जावत ने घर में आ मिल्या हो ॥ २४ ॥

लाल केस्या अब नहीं है थाँने बाहर ढूँढण री काम रे। हो म्हारा लाल केस्या;
घर में मिलिया अब बाहिर कुण फिरे हो ॥ २५ ॥

सन्तो म्हारा छोड़ो छोड़ो जग री झूठ दुकान (१) रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
सूको(२) ने ओ ब्रह्म थाँरो फेंक दो हो ॥ २६ ॥

सन्तो म्हारा लाल केसियो प्राणों रो अधार रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
नीरस ब्रह्म थाँरो अलगो राखजो हो ॥ २७ ॥

सन्तो म्हारा लाल केसियो रसमय(३) जगरो आधार रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
सूके लकड़े रो म्हे तो क्या करां हो ॥ २८ ॥

सन्तो म्हारा नहीं ओ भावे लकड़(४) सो वेदान्त रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
म्हारो तो ब्रह्म ओ जग में खेल रयो हो ॥ २९ ॥

सन्तो म्हारा मिलिया मिलिया देवनाथ मस्तान(५) रे। हे कोई सन्तो म्हारा;
जिण ने मिलाया असली पीव ने हो ॥ ३० ॥

१—वाचक ब्रह्म की सम्प्रदाय, २—जगत से अलग निर्गुण, ३—सगुण अथवा सब रसों और गुणों का भोक्ता पुरुष, ४—सूखा, नीरस जगत का त्याग कराने वाला, ५—आत्मज्ञानी।

सन्तो म्हारा गावे गावे मानसिंह राठौड़ (१) रे । कोई मन्तो म्हारा,
राह (२) ने लाधिया (३) म्हे 'रणछोड़ी' (४) भगा हो ।। ३१ ।।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "लाल केस्या" की । ताल धीमा केरवा ॥

लाल (५) केस्या समझ समझ नू अपणो मन रे माँय रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, समझे जिकेई नर मूरखाँ रे ॥ टेर ॥

लाल केस्या अणसमझ्याँ ने होसी कष्ट अपार रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, समझ्या जिके तो पार हो जासी रे ॥ १ ॥
लाल केस्या अदरस्या मेर नर रह गया अधबिच माँय रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, अपणे तो सीधे मग सूँ चालणो रे ॥ २ ॥
लाल केस्या समझे ज्याँ ने देवो सही समझाय रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, नहीं तो समझे ज्याने अलगा जाणदो रे ॥ ३ ॥
लाल केस्या जब तक रहणो इण जगड़े रे माँय रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, चाले जिकाँ ने संग ले चालणो रे ॥ ४ ॥
लाल केस्या हर दम रहणो मन मे लाल गुलाल रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, काले ने करसी रे नेडो न जावणोरे ॥ ५ ॥
लाल केस्या ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र कोई होय रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, आवे जिकाँ ने तो करलो आपस्या रे ॥ ६ ॥
लाल केस्या करदो करदो असल गाय रो सिंह रे ।
हो म्हारा लाल केस्या, शस्त्र बाँधे रे जम रे बारणो रे ॥ ७ ॥
लाल केस्या कदे न आवे जम दूतों सूँ हार रे ।
हो म्हारा लालकेस्या, शीश उतार ने लड़े चौक में रे ॥ ८ ॥

१—राठौड़ राजपूत अथवा सत्य मारग को जानने वाला, २—सत्य मारग ३—जाना, ४—सत्य मारग में स्थित, ५—जिज्ञासु मन ।

लाल केस्या लड़िया लड़िया जनक और शुकदेव रे।
हो म्हारा लाल केस्या, गोरख लड़िया ने लड़िया भरथरी रे ॥ ६ ॥
लाल केस्या लड़िया लड़िया कबीर और रविदास रे।
हो म्हारा लाल केस्या, पीपे मारयो रे पैलो मोरचो रे ॥ १० ॥
लाल केस्या आई आई अबके अपणी बार रे।
हो म्हारा लाल केस्या, अबके हारया तो फिर नहीं जीतणों रे ॥ ११ ॥
लाल केस्या ऊभा ऊभा आपां मोक्ष रे द्वार रे।
हो म्हारा लाल केस्या, अबके चूका तो फिर कब आवसाँ रे ॥ १२ ॥
लाल केस्या तोड़ो तोड़ो हद बेहद रो मोड़ रे।
हो म्हारा लाल केस्या, चढ़ ने शिखर गढ़ ने मेल दो रे ॥ १३ ॥
लाल केस्या फिरताँ फिरताँ हुई मोकली बार रे।
हो म्हारा लाल केस्या, अबके आया रे असली मोरचे रे ॥ १४ ॥
लाल केस्या काम क्रोध मद लोभ ने राखो त्यार रे।
हो म्हारा लाल केस्या, ज्ञान होली में इणने बाल दो रे ॥ १५ ॥
लाल केस्या ऊगे ऊगे शम समता रो सूर रे।
हो म्हारा लाल केस्या, जिणने जाणो होली परभात सो रे ॥ १६ ॥
लाल केस्या पायो पायो देवनाथ सूँ ज्ञान रे।
हो म्हारा लाल केस्या, नाथ न मिलता तो यूँ ही रह जावता रे ॥ १७ ॥
लाल केस्या मानसिंह यूँ हरदम लाल सुरंग रे।
हो म्हारा लाल केस्या, फिर कोई आवे तो करलूँ म्हाँ जिसा रे ॥ १८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "गूजर" की। ताल कैरवा ॥

हाँ ए सुरता सूताँ सरसी नाँय, अब उठ जाग ए ॥ टेर ॥
सूती रही तू जन्म अनेक। अब तो कीजे समझ विवेक।
हाँ ए सुरता भरम कूप ने त्याग: अब उठ जागो ए ॥ १ ॥

मनुष्य देह मो यह आनन्द । इनमें रहणो होय निर्बन्ध ।
हाँ ए सुरता बन्ध ने तोड़ बगाय, अब उठ० ॥ २ ॥
बहुत जन्म नैं लीवी नींद । अब क्या सोवे मुढ मति हीन ।
हाँ ए सुरता मौज अमोल ना गुमाय, अब उठ० ॥ ३ ॥
देवनाथ सत् गुरु समझाय । मनुषा तन के मोरचे आय ।
हाँ ए सुरता भाग हीन सोई लाय, अब उठ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "गूजर की । ताल कैरवा ॥

हाँ ए सुरता भल भल जागी(१) तू तो आन, पिया भल पायो ए ॥ टेर ॥
हाँ ए सुरता भेद भरम ने भाग, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता रही रे भलाई तू जान, पिया भल पायो ए ॥ १ ॥
हाँ ए सुरता प्रेम पियालो मस्तान, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता पीने ही पिया जियो जान, पियो भल पायो ए ॥ २ ॥
हाँ ए सुरता तोड़्यो तोड़्यो द्वैत विकार पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता उपजो ब्रह्म विचार, पिया भल पायो ए ॥ ३ ॥
हाँ ए सुरता दूर गयो है अभिमान, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता जद भयो उर निज ज्ञान, पिया भल पायो ए ॥ ४ ॥
हाँ ए सुरता गावे नृपति यूँ मान, पिया भल पायो ए ।
हाँ ए सुरता दियो अमो(२) खूब छाण, पिया भल पायो ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मारवाड़ी "गूजर" की । ताल कैरवा ॥

हाँ ए सुरता निज आतम थारो पीव, ज्याँ ने क्यूँ भूली ए ॥ टेर ॥
हाँ ए सुरता गावे ज्याँने वेद पुराण, ज्याँ ने क्यूँ भूली ए ।

१—सँभली, २—ज्ञानामृत ।

हाँ ए सुरता रट रया गुणीजन महान, ज्याँ ने क्यूँ भूली ए।। १ ।।
हाँ ए सुरता अरध(१) उरध(२) बिच जोय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता मन ममता ने परी खोय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।। २ ।।
हाँ ए सुरता अष्ट कमल(३) को छेद; ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता निज मन करले भेद, थाँने क्यूँ भूली ए।। ३ ।।
हाँ ए सुरता बाहर क्यूँ भटकाय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता घर में ओलख मिल जाय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।। ४ ।।
हाँ ए सुरता दियो सत्गुरु प्यालो पाय, ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता फिर क्यूँ रही उलझाय; ज्याँने क्यूँ भूली ए।। ५ ।।
हाँ ए सुरता मिल्या गुरुदेव मस्तान; ज्याँने क्यूँ भूली ए।
हाँ ए सुरता निमय ओलख पद मान; ज्याँने क्यूँ भूली ए ६ ।।

॥ गान ॥

॥ राग सारग, तर्ज "बीजा सोरठ" की। ताल दीपचन्दी ॥

भई है सुरता बावरी(४) रे इणने निज पिया(५) सूझत नाँय ॥ टेर ॥
मद(६) में छकी(७) सुरता सुन्दरी रे बाला निज पिया दियो बिसराय।
आवराँ ने पूछत फिरे रे म्हारो कोईयक पीव बताय। भई है० ॥ १ ॥
एक अविद्या छाकटी(८) रे इणने बाताँ(९) में लिवी विलमाय।
पाँच(१०) पचीसों(११) रे मेल सूँ रे आतो छक रही मदड़े रे माँय। भई है० ॥ २ ॥
मदड़ो विषय रो पावियो रे इणने दियो रे होश बिसराय।
प्रीत करी मनड़े तणी आतो दिन दिन कर्म कमाय। भई है० ॥ ३ ॥
मनवे रे सँग सैलाँ(१२) करे रे आतो घड़ी पल ठहरे नाँय।
इण साकट(१३)रे पाने(१४)पड़ी रे अबतो दियो है रतन(१५)लुटाय। भई है० ॥ ४ ॥

१-२—ऊपर, नीचे सर्वत्र, ३—अष्ट प्रकार की प्रकृति, ४—मोहित, ५—आत्मा, ६—विषय, ७—भरी, ८—चालाक, ९—रोचक, भयानक वचन, १०—इन्द्रियाँ, ११—प्रकृतियाँ, १२—दौड़ती रहे, १३—बदमाश, १४—सङ्ग किया, १५—अमर।

जावन (१) थकाँ तो मुरता नहीं लखी रे आतो रही रे विषय में लिपटाय।
पिञर (२) हो गया जोजरा (३) रे इणने तोई मन छोड़े नाँय। भई है० ॥ ४ ॥
मरे जनमे और फिर मरे र आवो भटक भटक दुःख पाय।
नाकट रे पाने पड़ी रे इणने मुखड़ो फटा सूँ आय। भई है० ॥ ५ ॥
जन्म अनताँ भोगिया रे इणने अजहूँ तृप्ती नहिं पाय।
किणसू ही हटकी ना रहे रे आतो दौड़ी विषय बिच जाय। भई है० ॥ ७ ॥
मात पिता ने छोड़ियो इणतो चारों भ्रात (४) छिटकाय।
किशा उर मे है नहीं रे इणने किण विध श्याम मिलाय। भई है० ॥ ८ ॥
मन गुरु मिलिया सूरमा रे इणने कर ललकार बुलाय।
बात (५) कहे दोरी लगे इणरे बात समझ नहीं आय। भई है० ॥ ९ ॥
भिन्न भिन्न कर समझा रह्या रे इणने कई परमाण सुणाय।
लाय जतन किया मान रे रे थाँ तो लिवी है सुरत समझाय। भई है० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी " रुण भुणिये " की। ताल केरवा ॥

प्यारी (६) सूताँ सरसी नाँय, नींद (७) उड़ाय परी।
प्यारी सूताँ दूर (८) रह जाय, नीद उड़ाय परी ॥ टेर ॥
प्यारी रही घणा दिन नीद में तैं मानी नहीं।
तू अबे ही समझ मन माँय, नीन्द उड़ाय परी ॥ १ ॥
प्यारी एक बार तने क्या कहूँ कहूँ घड़ी घड़ी।
ओ वक्त अमोलक जाय, नीद उड़ाय परी ॥ २ ॥
प्यारी क्यों विष खावे बावरी तज अमर (९) जड़ी।
ज्याने लेत अमर होय जाय, नीद उड़ाय परी ॥ ३

प्यारी आँख(१) खोल के देख जरा क्या खड़ी खड़ी।
तू प्रीतम रूप समाय, नीन्द उड़ाय परी ॥ ४ ॥
प्यारी देवनाथ को सङ्ग कियाँ नित हरी हरी।
तू सबहू सूखे नाँय, नीन्द उड़ाय परी ॥ ५ ॥
प्यारी मान कहे री बावरी अभिमान भरी।
तने फिर कोई मिलसी नाँय, नीन्द उड़ाय परी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "रुण झुणिये" की । ताल कैरवा ॥

आओ आओ म्हारी सुरता नार; पिया से मिल रहणो।
अब करो चौगणो प्यार; पिया से मिल रहणो ॥ टेर ॥
प्यारी स्वार्थियों(२) रे फन्द में अब क्यों घेरणो।
थाँने दूर करो धिक्कार(३); पिया से मिल० ॥ १ ॥
प्यारी मारग मिलियो आछो(४) ऊजड़(५) क्यों बहणो।
क्यों वहो काँटा री धार; पिया से मिल० ॥ २ ॥
प्यारी ओ दुःखड़ो स्वारथ तणो सिर क्यों सहणो।
अब तुरत उतारो भार; पिया से मिल० ॥ ३ ॥
प्यारी पन्थापन्थ री पोल में सिर क्यों देणो।
प्यारी क्यों डूबे मझधार; पिया से मिल० ॥ ४ ॥
प्यारी भलो समागम नाथ रो सो क्या कहणो।
ए तो मिल्या कृष्ण अवतार; पिया से० ॥ ५ ॥
प्यारी मान कहे एरी मान परी चित्त में लेणो।
फिर मरे न दूजी बार; पिया से० ॥ ६ ॥

१—विचार रूपी नेत्र, २—भेदवादी साम्प्रदायिक लोग, ३—धिक्कार;
—ज्ञान मारग, ५—साम्प्रदायिक अन्धविश्वास।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "रुण झुणिये" की। ताल कैरवा ॥

प्यारी(१) अब तो पीहर(२) ने त्याग, चालो सासरिये(३) ॥ टेर ॥
प्रेम प्याला यहाँ ना मिले; मिले सासरिये।
प्यारी धर उर में वैराग, चालो सासरिये ॥ १ ॥
खैंच तार में वहुत करया, चालो सासरिये।
उठे कबहु न होय दुहाग(४); चालो सासरिये ॥ २ ॥
पर पुरुषों(५) प्रीति नाँय करो, चालो सासरिये।
उठ होवे अमर सुहाग(६); चालो सासरिये ॥ ३ ॥
करम करम तू क्या रोवे; चालो सासरिये।
अब मेट करम रो दाग(७), चलो सासरिये ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु आन मिल्या; चालो सासरिये।
अब जगे मान के भाग. चालो सासरिये। ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "रुण झुणिये" की। ताल कैरवा ॥

मन भावे मदनगोपाल, गिरधर बनवारी ॥ टेर ॥
सब वन माँये खेल रयो श्री बनवारी। श्री कर रयो खेल अपार, गि० ॥ १ ॥
अन्तर्यामी भुल न जाणे बनवारी। श्री सबको है करतार, गि० ॥ २ ॥
विश्व गिरि कर पै धारयो इन बनवारी। श्री खिल रयो संसार, गि० ॥ ३ ॥
भुल भरम सूँ न्यारो रहे श्री बनवारी। श्री सब में मेरो लाल, गि० ॥ ४ ॥
विश्व बगीचो लाय रयो श्री बनवारी। ज्या में क्यारा खुल्या अपार, गि० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु साँची बही मिल्यो बनवारी। अब मान एक आधार, गि० ॥ ६ ॥

१—मन की वृत्ति, २—देहाध्यास, ३—आत्मज्ञान, ४—दुःख, ५—भेदभाव कर्मकाण्डी लोग, ६—नित्यानन्द, ७—कर्मों का मैल।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

मान मान म्हारी सुरत सुहागण मती विषय बिच भूल,
इण घर चाल परी ॥ टेर ॥
तीन लोक में फिरी भटकती किण ही न तोय मिलायो हरी ।
जो तू म्हारे कह्यो करले तो जेज न एक घड़ी । उण घर चाल परी ॥ १ ॥
जिण जिण पास गई तू सुरता, उण उण थाँ में कुपथ करी ।
म्हारे साथ अब आवे तो थाँने पाऊँ अमर जड़ी । उण घर चाल परी ॥ २ ॥
नहीं तो सच्चा सत्गुरु मिलिया, नहीं वृत्ति थारी सुधरी ।
जाण्याँ बिना कैसे मारग पावे, फिर रही गली गली । उण घर चाल परी ॥ ३ ॥
खान विषय रो पान विषय रो, चाल विषय री मान परी ।
सतगुरु बिना अब कौन छुड़ावे, उलटी बँधी पड़ी । उण घर चाल परी ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु सज्जन मिलिया, बात सुधार दिवी बिगरी ।
मान कहे कोई आवो तो तारूँ, देऊँ प्रेम डगरी । उण घर चाल परी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार तर्ज "थाणी" की । ताल दीपचन्दी ॥

चाल सुहागण सुन्दरी(१), थाँने पीव(२) बुलावे ।
रही तू घणा दिन बाप(३) रे, अब क्यूँ श्यान गुमावे जी ॥ टेर ॥
चंचल चपलता ने छोड़ दे, नार बण जा तू सैणी ।
कटु(४) वचनाँ ने परहरो, होय तू कोकिल(५) वैणी जी । चाल० ॥ १ ॥
असली आनन्द उण देश(६) में, जठे थारो प्रीतम प्यारो ।
पीहर(७) रयाँ सूँ मिलसी नहीं, रहसी थाँ सूँ न्यारो जी । चाल० ॥ २ ॥
बेहद मङ्गल होय रया; तू क्यों आनन्द खोवे ।

१—मन की वृत्ति, २—आत्मा, ३—अज्ञान में, ४—राग-द्वेष, ५—प्रेम में पगी हुई, ६—आत्म-ज्ञान, ७—अज्ञान की दशा ।

चाल पीयाजी री सैज(१) मे, क्यों तू अकेली(२) सोवे जी। चाल० ॥ ३ ॥
देवनाथ मिलिया पारखी, थाँने निज परखावे(३)।
पर थाँ रो तो हिम्मत नहीं, परख्यौड़ा(४) नाँय उठावे जी। चाल० ॥ ४ ॥
मन कहे री मान बावरी, फेर मौको नहीं आवे।
आयाड़ो अवसर जो चूकसी, भवजल गहरो कहावे जी। चाल० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सजनी(५) ए प्यारी समता रो प्यालो पीव, जिके सूँ थाँ ने आनन्द आवे है ॥ टेर
द्वैत विकार घणा दिन पीयो ए। सजनी ए थाँरो दुःख पावे जासूँ जीव,
करमाँ सूँ कोई न छुडावे है ॥ १ ॥
हरष शोक सब सम कर जाणो ए। सजनी ए म्हारो अद मिजमी थाँरो पीव(६),
पिया बीच सहज समावे है ॥ २ ॥
थारो तत्त्व(७) तत्त्व मे तू है ए। सजनी ए म्हारी होय जावो तत्त्व के रूप,
काल फिर नाँय सतावे है ॥ ३ ॥
नारी न पुरुष पुरुष नहीं नारी ए। सजनी ए म्हारी देह तणो तज भाव,
एक रस सबने खेलावे है ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मतवा(८) रसिया ए। सजनी ए म्हारी मान के मन घणो चाव,
मान ने दूर हटावे है ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सईयाँ ए म्हारी चालो चालो जमना रे तीर, माधवजी सूँ प्रेम लगास्याँ ए ॥ टेर ॥
गम केरी गोकुल सुरधनी मथुरा ए। सईयाँ ए म्हारी खेलत श्याम शरीर,
जिकाँ रो थाँने दरस दिखास्याँ ए ॥ १ ॥

१—एकता का ज्ञान, २—पृथकता का भाव, ३—अनुभव करावे, ४—आत्मानुभवी ज्ञानी पुरुषों के वचन, ५—मन की वृत्ति, ६—आत्मा, ७—आत्मा ८—आत्मज्ञानरूपीमद पिलाने वाला।

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ग्वालिया ए। सईयाँ ए म्हारी श्याम हरे भव पीर,
जिकाँ थाँने वैण सुणास्याँ ए॥ २ ॥
जरणा केरी जमना नदी है ए। सईयाँ ए म्हारी, बेवे बेवे समता रो नीर,
माधव सङ्ग हिल मिल न्हास्या ए॥ ३ ॥
सतगुरु चतुर मिल्या मोये ऐसा ए। सईयाँ ए म्हारी पलट पलट कराँ बात,
ज्ञान रस माल उड़ास्याँ ए॥ ४ ॥
मान केवे म्हारो कहणो मानो ए। सईयाँ ए म्हारी पाऊँ मैं ब्रह्म रस खीर,
पोल से पृथक बचास्याँ ए॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "निहालदे" की। ताल दीपचन्दी ॥

सुरता गोरी अब तो जगाले(१) थारे पीव(२) ने हो राज ॥ टेर ॥
क्या जोवे सुरता सुन्दरी ए, थारो पिया सूतो(३) घर माँय।
तू तो फिरे बाहर भटकती ए, थारे कहो किम निजराँ आय।
कहो किम निजराँ आय; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज॥ १॥
पन्थापन्थ री झौड़ में ए, रही निज पिया ने भूल।
आनन्द हिन्डोरो छोड़ियो ए, दुःख झूले रही झूल।
दुःख झूले रही झूल; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज॥ २॥
जो तू चाहे ब्रह्म भूतणो ए, तो साचो सतगुरु भेट।
पन्थापन्थी थाँने मारसी ए, ए कदे न ले जावे थाँने ठेठ।
कदे न ले जावे थाँने ठेठ; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज॥ ३॥
देवनाथ निरपख है ए, म्हारो कर पकड़यो मजबूत।
मान बुरी नहीं तो होवती ए, पकड़ लेता जमदूत(४)।
पकड़ लेता जमदूत, सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज॥ ४॥

१—जानले, २—आत्मा, ३—अदृश्य, ४—कर्मों के बन्धन।

चाल पीथजी री सैज(१) में, क्यों तू अकेली(२) मोवे जी। चाल० ॥ ३ ॥
देवनाथ मिलिया पारखी, थाँने निज परखावे(३)।
परवश री तो हिम्मत नहीं, परख्योड़ा(४) नाँय उठावे जी। चाल० ॥ ४ ॥
मान कहे री मान बावरी, फेर मौको नहीं आवे।
आयोड़ो अवसर जो चूकसी, भवजल गहरो कहावे जी। चाल० ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सजनी(५) ए प्यारी ममता री प्यालो पीव, जिके सूँ थाँने आनन्द आवे है ॥ टेर
द्वैत विकार घणा दिन पीयो ए। सजनी ए थाँरो दुख पावो जासूँ जीव,
करमाँ सूँ कोई न छुडावे है ॥ १ ॥
हरष शोक सब सम कर जाणो ए। सजनी ए म्हारी जद मिलसी थाँरो पीव(६),
पिया बीच सहज समावे है ॥ २ ॥
थारो तत्त्व(७) तत्त्व में तू है ए। सजनी ए म्हारी होय जावो तत्त्व के रूप,
काल फिर नाँय सतावे है ॥ ३ ॥
नारी न पुरुष पुरुष नहीं नारी ए। सजनी ए म्हारी देह तणो तज भाव,
एक रस सबने खेलावे है ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मधवा(८) रसिया ए। सजनी ए म्हारी मान के मन घणो चाव,
मान ने दूर हटावे है ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

सईयाँ ए म्हारी चालो चालो जमना रे तीर, माधवजी सूँ प्रेम लगास्याँ ए ॥ टेर ॥
गम केरी गोकुल सुरधनी मथुरा ए। सईयाँ ए म्हारी खेलत श्याम शरीर,
जिकाँ री थाँने दरस दिखास्याँ ए ॥ १ ॥

१—एकता का ज्ञान, २—पृथकता का भाव, ३—अनुभव करावे, ४—आत्मानुभवी ज्ञानी पुरुषों के वचन, ५—मन की वृत्ति, ६—आत्मा, ७—आत्मा ८—आत्मज्ञानरूपीमद पिलाने वाला।

मन बुद्धि चित्त अहङ्कार ग्वालिया ए। सईयाँ ए म्हारी श्याम हरे भव पीर,
जिकरा थाँने बैरा सुणास्याँ ए ॥ २ ॥
चरणा केरी जमना नदी है ए। सईयाँ ए म्हारी, बेवे वेचे समता री नीर,
माधव सङ्ग हिल मिल न्हास्या ए ॥ ३ ॥
सतगुरु चतुर मिल्या मोये ऐसा ए। सईयाँ ए म्हारी पलट पलट करा बात,
ज्ञान रस माल उड़ास्याँ ए ॥ ४ ॥
मान केवे म्हारो कहणो मानो ए। सईयाँ ए म्हारी पाऊँ मैं ब्रह्म रस खीर,
पोल से पृथक बचास्याँ ए ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "निहालदे" की। ताल दीपचन्दी ॥

सुरता गोरी अब तो जगाले(१) थारे पीव(२) ने हो राज ॥ टेर ॥
कब्रा जोवे सुरता सुन्दरी ए, थारो पिया सूतो(३) घर माँय।
तू तो फिरे बाहर भटकती ए, थारे कहो किम निजराँ आय।
कहो किम निजराँ आय; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पोव ने हो राज ॥ १ ॥
पन्थापन्थ री झोड़ में ए, रही निज पिया ने भूल।
आनन्द हिन्डोरो छोड़ियो ए, दुःख झूले रही झूल।
दुःख झूले रही झूल; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ २ ॥
जो तू चाहे ब्रह्म झूलणो ए, तो साचो सद्गुरु भेट।
पन्थापन्थी थाँने मारसी ए, ए कदे न ले जावे थाँने ठेठ।
कदे न ले जावे थाँने ठेठ; सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पीव ने हो राज ॥ ३ ॥
देवनाथ निपरख है ए, म्हारो कर पकड़्यो मजबूत।
मान बुरी नहीं तो होवती ए, पकड़ लेता जमदूत(४)।
पकड़ लेता जमदूत, सुरता गोरी अब तो जगाले थारे पोव ने हो राज ॥ ४ ॥

१—जागले, २—आत्मा, ३—अदृश्य, ४—कर्मों के बन्धन।

गावो म्हारी सैयाँ, ब्रह्म आनन्द गुण गावो रे ॥ टेर ॥
मन सुख पावे, प्रीतम आवे, गले(१) लगावे,
जन्म मरण सूँ छूट जावो रे। आवो म्हारी० ॥ १ ॥
सब में बोले, हँसता(२) डोले, पड़दे ने खोले,
गुरुमुख होय मिल जावो रे। आवो म्हारी० ॥ २ ॥
पिया रसीलो, अजब रँगीलो, सब गुण शीलो,
सबही के माँय समावो रे। आवो म्हारी० ॥ ३ ॥
मीठी(३) गावो, राम रिझावो, पिया मिलावो,
अजर अमर हुय जावो रे। आवो म्हारी० ॥ ४ ॥
देवरनाथा, पकड़यो हाथा, कियो सनाथा(४),
राख्यो बहुजाना गुण गावो रे। आवो म्हारी० ॥ ५ ॥
मान नवेली(५), रही न अकेली(६), निज अलबेली(७),
अमर सुहाग(८) सजावो रे। आवो म्हारी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी गाली के ढंके" की। ताल कैरवा ॥

रे मन मेरा, आतम तत्त्व पछाणो रे।
जिण सूँ, मिट जाय आणो ने जाणो रे॥ टेर ॥
आतम पावो, भरम मिटावो, मौज उड़ावो;
मिट जावे जम रो धींगाणो(९) रे। मन मेरा० ॥ १ ॥
निर्भय हो जावो, जन्म न पावो, सहज समावो,
अपनो ही रूप जग जाणो रे। मन मेरा० ॥ २ ॥
यह संसार, रूप तुमारा, नहीं कोई न्यारा,

१—एकता का अनुभव करना, २—आनन्द-स्वरूप, ३—प्रेम-युक्त, ४—अपना आप, अंतःकरण आदि का स्वामी, ५—नित्य शुद्ध, ६—अलग, ७—मस्त, ८—आत्माकार, ९—जबरदस्ती।

मूल के सूठी हठ ठाणो रे। मन मेरा० ॥ ३ ॥
मत मन मोवो, दुविधा खोवो, ब्रह्म में सोवो;
जब निज रुप ओलखानो रे। मन मेरा० ॥ ४ ॥
सतगुरु साथा, भयो सनाथा(१), पकड्यो हाथा;
भव जल वहत बचानो रे। मन मेरा० ॥ ५ ॥
कहे यों मानं, उड्यो अभिमानं, भयो विज्ञानं;
पियो अमी(२) निज ज्ञानो(३) रे। मन मेरा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के ढंके "सगीजी ने बरजण आया" की ॥

॥ ताल कैरवा ॥

हाँ चलो सखी देश हमारे। जहाँ मिले निज प्रीतम प्यारे।
घणा दिवस रही दूर पिया से, माल मुफ्त में हारे; चल देश हमारे ॥ टेर ॥
चार चकोर ले अपने साथ। सतगुरु अपने सिर धर हाथ।
पार करे या में संशय न करनो, लाखो ही पार उतारे; करदे भव पारे। हाँ० ॥ १ ॥
अजब खिलारी है घनश्याम। सब में पूरण आतमराम।
पास रह्यो पण भूल गई तू, बाहर पड़ी झख मारे; सिर मार तुम्हारे। हाँ० ॥ २ ॥
छोड़ो करे तू देह अहंकार। तुम्हसी है को मूढ़ गँवार।
जीवन रतन ने खोय विषयन में, पीछे कहा सिर मारे; माणिक को हारे हाँ० ॥ ३ ॥
करो सतगुरु शब्दों विश्वास। तजदे प्यारी विषय की आस।
मान कहे री मान बावरी, क्यों नहीं नैन निहारे; ब्रह्म नैंहि विचारे। हाँ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के ढंके "सगीजी ने बरजण आया" की ॥

॥ ताल कैरवा ॥

हाँ निरख निज रुप तिहारो। सब घट सुन्दर श्याम पियारो।
भरम नींद देवो खोय बावरी, जनम सुफल होवे थारो। निज रूप ति० ॥ टेर ॥
आदि अमर अविनाशी देव। जिणरी करत जगत सब सेव।

१—अपना आप, अंतः करण आदि का स्वामी, २—ज्ञानामृत, ३—विचार पूर्वक।

इमड़ी बात थे क्या केवो म बाला म्हाँने अचरज आय हाँ हाँ इमड़ी बात थे० ।
नेडो घणो बतावियो स वाला पहले जाण्यो नॉय, हाँ हाँ नेड़ो घणो० ।
भटक भटक में हारगी मरे, जिण सूँ डर मन आय, हो नहीं चालूँ० ॥ ४ ॥
अब समझो तो डट चलो म प्यारी जागी जभी परभात, हाँ हाँ अब समझ० ।
अब तो नींद जगाय दीम प्यारी फिर क्यों वख्त गमात, हाँ हाँ अब तो नींद० ।
अब जागन सुतो रही तो थाँने, ओ आनन्द नहीं आत, हे अब मान० ॥ ५ ॥
चट से सुरता जाग गो मरे जागत ही मन तोन; हाँ हाँ चट से सुरता जाग० ।
पीव देख राजी भई स उण प्रेम पियालो पीन, हाँ हाँ पीव देख राजी० ।
देखत ही आनन्द भया स उठे, बाजी अनहद (१) बीन, हे अब मान० ॥ ६ ॥
देख पिया रे रूप ने म इण दियो होश (२) बिसराय, हाँ हाँ देख पिया रे० ।
पिव प्यारी की गम नहीं सरे रगी प्रेम रंग मॉय, हाँ हाँ पिव प्यारी को० ।
पीव जीव भया एकसा स वहाँ, दूजो दीखे नॉय हे अब मान० ॥ ७ ॥
देवनाथ सा गुरु मिले म जद देवे पीव मिलाय, हाँ हाँ देवनाथ सा० ।
इण विध देखे पीव ने स ज्याँरे काल निकट नहिं आय, हाँ हाँ इण विध० ।
मानसिंह निर्भय भयो स म्हारे, भरम रयो कछु नॉय; हे अब मान बावरी० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह वो रट (३) रटे सो रटन्यारी होय ।
उण रट ने जो कोई रटे, सौ रट (४) देवे खोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

मिले थाँने रंगीलो(५)जतो(६).चाल्जो(७)रो म्हलो(८)मिले थाँने रंगीलो जतो । टेर
तू तो फिरे आजो विषया रस में । पियो थारो रहे एकतो(९)। चाल्जो तो० । १॥

१—सोहं ध्वनि, २—भेद भाव-रहित ३—आत्मज्ञान की जिज्ञास, ४—अन्य सब उपासना कर्मकाण्डादि, ५—जगत का खिलारी६, —आत्मा,७ —विचार कर, ८—मन की वृत्ति, ९—इन्द्रियातीत ।

उण तो विषय में आती दुःख पावेजी । नहीं थारो होवेलो भलो । चालो० ॥२॥
मूल मत बावरी प्रीतम मिलसी । देखी देवो निज बंगलो(१) । चालो० ॥३॥
मानसिंह गुरु देवनाथ कहे । अब तुम एक हो मिलो । चालो तो आदि० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

प्यारी ए चाल सखी उण देश(२), अठे तू क्या करे ।
प्यारी ए कर सतगुरुजी रो साथ, जगत सूँ क्या डरे ॥ टेर ॥
प्यारी ए नहीं कोई कोस दस कोस, मजल पर चालणो ।
प्यारी ए मन सीधो कर लेय, पिया(३) संग मालणो(४) ॥ १ ॥
प्यारी ए कहे तोहे जग ने छोड़, थाँरी मानो मती ।
प्यारी ए घर ही में घर हेर, जीवत करले गतो(५) ॥ २ ॥
प्यारी ए बिन पग चलणो है पन्थ, देह बिना(६) मिल रहो ।
प्यारी ए जब प्रीतम(७) मिल जाय, बात मन री कहो ॥ ३ ॥
प्यारी ए नहीं धरणो संन्यास, भेष करणो नहीं ।
प्यारी ए गृहस्थ रहताँ संन्यास, जम सूँ डरणो नहीं ॥ ४ ॥
प्यारी ए पग सूँ चलाय ले जाय, ज्याँने गुरु ना मानिये ।
प्यारी ए देवे त्याग उपदेश, पाखण्डी जानिये ॥ ५ ॥
प्यारी ए देवनाथ को साथ, संन्यास ऐसो लियो ।
प्यारी ए मान लखी गम(८) गुंज, पियाजी सूँ मिल रयो ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मङ्गल । ताल दीपचन्दी ॥

प्यारी ए अवर न दूजा कोय, विनय अपनी आप से ।
प्यारी ए अपणो ही आप विचार, बचो तिहूँ ताप से ॥ टेर ॥

१—अन्तर्मुख वृत्ति, २—आत्मस्थिति, ३—आत्मा, ४—एकता का अनुभव, ५—जीवन-मुक्ति, ६—सूक्ष्म-विचार से, ७—आत्मज्ञानी गुरु, ८—गुप्त रहस्य ।

प्यारी ए अपणो आप गई भूल, अमंगल होत है ।
प्यारी ए सुख तो रह गयो दूर दुःख मे रोत है ॥ १ ॥
प्यारी ए अपणो आपको जोय के मंगल गाइये ।
प्यारी ए कभी न अमगल होय, सोई सुख पाइये ॥ २ ॥
प्यारी ए यह जग मगल रूप, अमगल ना कोई ।
प्यारी ए आप अमंगल होय, नींद मांहे तू सोई ॥ ३ ॥
प्यारी ए अब परी नीन्द उडाय, पिया ने देखिये ।
प्यारी ए करम रेख ने मेट, अलख उर पेखिये ॥ ४ ॥
प्यारी ए मानसिंह कहे नार, भूल तज दीजिये ।
प्यारी ए सब घट आतमदेव, पूजा यही कीजिये ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूआ रे" की । ताल कैरवा ॥

आवो आवो म्हारी सुरता, पियाजी(१) बुलावे अमर महल(२) मे ॥ टेर ।
घाटी पैड चढणो नहीं सरे नहि उडणो आकाश ।
जो तूं मिलणो पीव सूं सरे तोड अन्धविश्वास ।
अपणो रूप विचारसी स जद मिटसी जग री आस रे । आवो आवो० ॥ १ ॥
एक ज्ञान वैराग दूसरो तीजो समझ विचार ।
चौथो जेवो विवेक ने सरे नौकर कहिये चार ।
मोक्ष आप मे आपरी सरे यह भ्रम दूर निवार रे । आवो आवो० ॥ २ ॥
वो प्रीतम इसड़ो नहीं स जासे मिल न्यारी रह जाय ।
जो मिलसी तू पीव सूं स जद एकोएक समाय ।
जीव ब्रह्म दोऊ एक हुवा जद दूजो दीखे नाय रे । आवो आवो० ॥ ३ ॥
अपनो पड़दा तोडदे सरे दूर करो अज्ञान ।

१—आत्मा, २—निज स्वरूप

इण अज्ञान के बीच में स तुम खोयो रतन(१) महाँन(२) ।
सबही जग में भटकती सरे नहीं पायो कल्याण रे । आवो आवो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरुदेव ने सरे मोक्ष मोय विच दीन ।
मान जभी मन मानियो स जद वृत्ति को स्थिर कीन ।
आनन्द जद मोको भयो सरे भयो काल आधीन रे । आवो आवो० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

क्यों भई बावरी(३), पी (४) पा(५) पा पी(६) सो पापी(७) होय है ॥ टेर ।
पापी(८) ढूँढ़त मैं फिरयो स कोई पापी(९) मिल्यो न कोय ।
पापी(१०) सूँ मिलनो मुझे स कोई पाप(११) करम न जोय ।
बन पापी(१२) बोलूँ नहीं स कोई मुँह न लगाऊँ कोय रे । क्यों भई बावरी० ॥१॥
सब जग यूँ पापी(१३) कहे सरे म्हाँने अचरज आय ।
पापीयाँ(१४) सूँ म्हारे प्रीत घणी सरे पापी(१५) मिले जो नाँय ।
जो कोई पापी(१६) मिले तो मोये पाप(१७) करण समझाय रे । क्यों भई बावरी० ॥२॥
जो कोई पापी(१८) मिलाय दें स मैं गुण बाँरो भूलूँ नाँय ।
पाप(१९) माँहि वे पुन(२०) करे सरे ऐसे बीर मिलाय ।
बाँ बीराँ सूँ जा मिलें म्हाँने असली पाप(२१) कराय(२२) रे । क्यों भई बावरी० ॥३॥
पापी (२३) गोरख कबीर है सरे पापी(२४) भरथरी होय ।
देवनाथ पापी(२५) मिल्या सरे कीनो पापी(२६) मोय ।
मानसिंह पापी(२७) भयो स जद जीवत स्वर्ग में सोय रे । क्यों भई बावरी० ॥४॥

१—मनुष्य जन्म, २—उत्तम, ३—मन की वृत्ति, ४—ज्ञानामृत स्वयं पी, ५—दूसरों को भी पिला, ६—ज्ञानामृत प्राप्त कर के, ७-८-९-१०-१२-१४-१५-१६—अज्ञान का नाश करने रूपी पाप करने वाला अथवा ज्ञानामृत दूसरों को पाकर स्वयं पीने वाला, ११—अज्ञान का नाश करना, १२—बुरे कर्म करने वाला, १७—अज्ञान का नाश करना, १८-२३-२४-२५-२६-२७—अज्ञान का नाश करने रूपी पाप करने वाला अथवा ज्ञानामृत दूसरों को पाकर स्वयं पीने वाला, १९—दूसरों के अज्ञान का नाश करके, २०—हित करना, २१—परमात्मा, २२—अनुभव करना ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सूवा रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हाने कोण जगाई रे, सूती होती मैं सारंग[१] नींद मे ।। टेर ।।
सूती सारंग नींद मे सरे सारंग[२] दिवी जगाय ।
सारंग[३] सूँ सारंग [४] सुणी मरे सारंग[५] निजर न आय ।
सारग [६] ढूँढ सारंग[७] थकीम म्हॉने सारंग[८] कोई मिलाय रे । म्हॉने० ॥
सारंग[६] ध्वनि सारंग[१०] सुणी मरे दियो हृदय[११] ने तोड़ ।
सारंग[१२] सूँ मोय मारके सरे[१३] सारंग गयो सुख मोड़ ।
अब कोई सारंग[१४] मिलाय दे मरे सारंग[१५] कह कर जोड़ [१६] रे । म्हॉने० ॥
इण सारंग[१७] के प्रेम मे म सखी मोय स्याहरंग कीन ।
ओ सारंग[१८] कैसे मिले मरे सारंग[१६] ने तज दीन ।
तज के सारंग[२०] गात है स ओ मधुर बजावे बीन रे । म्हॉने० ॥३॥
सारंग[२१] की सुन बीनती म पिया सारंग[२२] मिलिये आय ।
बिछड़यों सारंग[२३] सुख नहीं म म्हॉसूँ मिलकर सारंग(२४) गाय ।
मानसिंह कहे आप बिना म्हॉने जग ओ नोंच सुहाय रे । म्हॉने० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की । ताल दीपचन्दी ॥

चालो ए सुरता सुन्दरी, पिया सूँ प्रेम लगास्यॉं ए ॥ टेर ॥
काल फौज आवे नहीं, निर्भय मौज उडास्यॉं ए ।
अमर पियाजी ने पावस्यॉं, नित मगल गास्यां ए । चालो ए० ॥ १ ॥
जीव जीव मे अटकिया, अब जीव मिटास्यॉं ए ।

१—अज्ञान रूपी रात, २-३—सद्गुरु रूपी ईश्वर, ४—सद्गुरु के उपदेश रूपी सारंग राग, ५-६-८-१३-१४-१७-१८-२२-२३—परमात्मा, ७-१०-१५-१६-२१—वृत्ति रूपी स्त्री, ६—ओंकार रूपी शंख-ध्वनि, ११—दिल, १२—शब्द रूपी बाण १६—अति नम्र [illegible] २०—ओंकार रूपी शब्द २४—सोऽहं शब्द रूपी [illegible]।

रूप देख निज आपरो, सहजे हि सहज समास्याँ ए । चालो ए० ॥ २ ॥
जीव ब्रह्म जब एक भया, फिर आस्याँ न जास्याँ ए ।
प्रीतम प्यारी न्यारी नहीं, जल में तरंग रलास्याँ ए । चालो ए० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरुदेव है, ज्याँ ने अर्ज सुणास्याँ ए ।
मान मिल्या निज रूप में, ऐसो नेह दिखास्याँ ए । चालो ए० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "पन्ने" की । ताल दीपचन्दी ॥

सुरता म्हारी बावरी, पिया(१) पुत्र[२] कैसो कीनो ए ॥ टेर ॥
उपजी आदि तू ब्रह्म सूँ, ब्रह्म अजहू न चीनो ए ।
जीव जीव के झौड़ में, ब्रह्म खोय कैसे दीनो ए । सुरता म्हारी० ॥ १ ॥
सुनो सत्गुरु सोहना, नहीं म्हाँने भेद बतायो हो ॥ टेर ॥
मैं जिण जिण ने पूछियो, जीव हि जीव सुनायो हो ।
ईश्वर थाँ सूँ दूर है, येही भेद जनायो हो । सुनो सत्गुरु० ॥ २ ।
तू ही जीव तू ही ब्रह्म है, और तू ही है माया ए ।
थाँ सूँ ब्रह्म कोई भिन्न नहीं, यह वेदों में गाया ए । सुरता म्हारी० ॥ ३ ।
मो ईश्वर में भेद हैं, क्यों कर एक कहावे हो ।
एक है तो फिर न्यारो क्यूँ, म्हाँने हाँसी ये आवे हो । सुनो सत्गुरु० ॥४
अपने भरम सूँ न्यारो कहे, थाँ ने अवर बहकाई ए ।
जीव समझ पुत्र आपणो, इण सूँ बात गमाई ए । सुरता म्हारी० ॥ ५
जीव तो म्हारे साथ में, ईश्वर म्हाँ सूँ न्यारो हो ।
थे कहो दोनों एक है, कैसे होय उजारो हो । सुणो सत्गुरु० ॥ ६
गीता भागवत् सब सुणी, ईश्वर ही गायो हो ।
आप मिल्या म्हाँने इसा, ईश्वर एक बतायो हो । सुणो सत्गुरु० ॥ ७
जीव और ब्रह्म जो कृष्णजी, सब एक बतायो ए ।

१ब्रह्म, २—जीव ।

अर्थ बिगाड़यो इण स्वारथियाँ, मगलो जगत डुबायो ए। सुरता म्हारी० ॥८॥
गीता सूँ पहिले वशिष्ठजी, जिन नित्य ही गायो ए।
एक तू एक तू एक है, नहीं दोय बतायो ए। सुरता म्हारी० ॥९॥
ब्रह्म वाक्य चारों कहे, तेरो तू ही कहायो ए।
शंकर लिख्यो निज भाष्य में, अपनो आप बतायो ए। सुरता म्हारी० ॥१०॥
जनक लख्यो शुकमुनि लख्यो, और व्यास लख लीनो ए।
गोरख कबीर और भरथरी, जिन ब्रह्म मद पीनो ए। सुरता म्हारी० ॥११॥
नाथ कहे सुण बालका, यह भ्रम दूर भगावो हो।
तोड़ अज्ञान की भीत को, मैदान में आवो हो। सुरता म्हारी० ॥१२॥
इतनो कयो ने मान चमक्यो, ब्रह्म अग्नि जागी हो।
ब्रह्म तेज उर जागियो, भ्रमना सब ही भागी हो। सुरता म्हारी० ॥१३॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "एली" की । ताल कैरवा ॥

रावल (१) रम (२) रयो माँय, खोज्याँ (३) बिना कैसे मिले म्हारी एली ॥टेर॥
बाहर रावल फिरे पूछती, घर (४) में जोवे नाँय।
जो तू अपने घर में जोयले, बाहर क्यूँ भटकाय। खोज्याँ बिना० ॥१॥
इण रावल ने जुगत (५) सूँ जोवे, तो घर में ही मिल जाय।
ओ रावलियो सच सूँ जबरो, मरगट में नहीं आय। खोज्याँ बिना० ॥२॥
गहरा तंबूर मंजीरा बजावे, रावल मिले न कोय।
बिन रावल री निश्चय कीयाँ, चाहे तो गाय चाहे रोय। खोज्याँ बिना० ॥३॥
सारी रात भर जुमा जगावे, चूरमियाँ रा चोर।
विषय वासना गई न मन से, कर रया पाप करोड़। खोज्याँ बिना० ॥४॥
सुन्दर नारी देखत प्यारी, गावत गला मरोड़।
यूँ गायाँ सूँ नफो न होसी, मिलसी नरकपुर दौड़। खोज्याँ बिना० ॥५॥

१—आत्मा, २—व्याप रहा, ३—जिज्ञासा, ४—अपने आप में, ५—विचार से।

देवनाथ गुरु दया करी जद, मन समझायो मोर।
मानसिंह मन मान गयो रे, पिव पायो एक ही ठौड़। खोज्याँ बिना० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "एली" की। ताल कैरवा ॥

ओ रावल (१) अनन्त अपार, सकल घट रम रयो रे वाला ॥ टेर ॥
अन्दर रावल बाहिर रावल, रावल सब घट सोय।
इण रावल ने जो नर परखे, रावल रूप ही होय। सकल घट रम रयो० ॥१॥
कपर (२) रावल उर नहिं रावल, किम कर रावल पाय।
रावल (३) होय रावल ने खोजे, रावल में मिल जाय। सकल घट० ॥२॥
हम भी रावल तुम भी रावल, रावल विश्व स्वरूप।
इण रावल सूँ न्यारो कोई, दीखत है नहीं रूप। सकल घट० ॥३॥
देवनाथ गुरु पूरा रावल, रावल दियो दिखाय।
मान मोन अभिमान गयो जद, रावल बीच समाय (४)। सकल घट० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग सिन्धवी, तर्ज "हेली" की। ताल कैरवा ॥

छाँण छाँण (५) अमी (६)पीवणो; अण छाण्यो (७) मत पीव; म्हारी हेली ए।
छाँण छाँण० ॥टेर॥
गोरख कबीरा संत सो; छाँण ने दियो है पिलाय; म्हारी हेली ए।
भाग्य हीन सो नहीं पिये; अण छाण्याँ पर जाय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥१॥
जनक पियो अमी छाँण के; सुखदेव छाँण के पाय; म्हारी हेली ए।
पियो वशिष्ठ मुनि छाँण के; रामचन्द्र को पाय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥२॥
व्यास जुगती (८) कर छाणियो; कचरो (९) रती न रहाय; म्हारी हेली ए।
कृष्ण पायो अर्जुन पियो; साफ पियो मल नाँय; म्हारी हेली ए। छाँण० ॥३॥

१—आत्मा, २—स्वांगी साधु ३—ज्ञानवान्, ४—स्वरूप की एकता, ५—गहरे विचार पूर्वक, ६—ज्ञानामृत, ७—अन्ध-विश्वास, ८—अच्छी तरह, ९—द्वैतभाव।

उण मनवादी झकोलियो(१), कड़दो(२) कियो निवड़(३), म्हारी हेली ए।
जीव असंख्य डुबोईया, नायो कीच अथट्ट(४) म्हारी हेली ए। छांण० ॥ ४ ॥
कई विष्णु मत चालिया, केता देवी मत जान, म्हारी हेली ए।
केताक जैन और बौद्ध है, कर कर खैचा तान; म्हारी हेली ए। छांण० ॥ ५ ॥
देवनाथ सर्वज्ञ है, दियो सर्वज्ञ बनाय, म्हारी हेली ए।
मान जगत जग मान में, पड़दो दीखे नांय; म्हारी हेली ए। छांण० ॥ ६ ॥
॥ मान ॥

॥ राग मिन्धवी, तर्ज "हेली" की । ताल कैरवा ॥

छांण(५) अमी(६) जुगती देऊं; वेदी उज्वल बताय, म्हारी हेली ए। छांण अमी० ॥टेर
तन केरी मटकी करो, बुद्धि गलना होय; म्हारी हेली ए।
प्रेम अमीरस छांण लो मल(७) फिर आय न कोय, म्हारी हेली ए। छांण० ॥१॥
आतम भाव जल छांणियो; प्रेम री होसी तलाश, म्हारी हेली ए।
वृत्ति पणिहारी भर रही, कर कर समझ प्रकाश, म्हारी हेली ए। छांण० ॥ २ ॥
जगत ताल सरवर भर्यो, कमी है नीर की नांय; म्हारी हेली ए।
अन्धविश्वासी जाणे नहीं, भूल के खाली जाय, म्हारी हेली ए। छांण० ॥३॥
औ अमी पिवे सोई अमर है, जिनके यम डर नाय, म्हारी हेली ए।
नित्य अमर फिर क्या मरे, कर निश्चय मन मांय, म्हारी हेली ए। छांण ॥४॥
देवनाथ गुरु भेटिया, समझ ने दियो है छणाय; म्हारी हेली ए।
मान पिये अमी छांण के, कचरो(८) पिये रे बलाय, म्हारी हेली ए। छांण० ॥५॥
॥ मान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

अब तुम मौज करो री(९)। काहु के डर नांहि डरो री; अब तुम० ॥ टेर ॥
नाथ(१०) को साथ कियो मैं सुन्दर(११), दूर गई झकझोरी(१२)।

१—मैला किया, २—भेदवाद की सम्प्रदायों के कर्म काण्ड, ३—अत्यंत, ४—गहरा; ५-६—पूर्ण विचार पूर्वक ज्ञान प्राप्त कर, ७—द्वैत भाव, ८—भेदवाद के साम्प्रदायिक कर्मकाण्ड, ९—सुरता को उपदेश, १०—सद्गुरु, ११—सुरता, १२—जन्म-मरण ।

और रंग अब कछु न चढ़ेगो; पक्के (१) रंग बिच बोरी,
करे अब कौन ठठोरी । अब० ॥१॥
कच्चे (२) रंग से बच गई सुन्दर, बिन बिन सूर (३) ऊगो री ।
अब तो रंग असल आय लागो; पिया (४) प्रेम बिच बोरी,
मची जम (५) सूँ बरजोरी । अब० ॥२॥
जब नादानी (६) समझी नाहीं, होती अज्ञान में छोरी ।
अब पतिवरता नार भई सैणी; जैसे चन्द्र चकोरी;
असल प्रीतम की गोरी । अब० ॥३॥
देवनाथ को साथ कियो तब, मिट गई दुविधा (७) मोरी ।
हम ही पीव हमी अब नारी; दूजो भाव मिस्योरी,
मान अस होरी (८) होरी । अब० ॥४॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

देख्यो जोगीड़े(९)रो रूप; बिलमी(१०)ए गुरता, देख्यो जोगीड़े रो रूप(११)॥टेर॥
ओ जोगी सब जग सूँई न्यारो, सगलो जग रो स्वरूप ।
चारूँ वेद ही थकिया रे वाला, ओ है भूपन को भूप । बिलमी ए० ॥१॥
इण जोगीड़े रो देश [१२] निरालो, नहीं छाया नहीं धूप ।
जो जावे सोई अमृत [१३] पीवे, भरिया अमी [१४] रा कूप । बिलमी ए० ॥२॥
महिमा अनंत अन्त कब आवे, महिमा ही अजब अनूप ।
मानसिंह ऐसो जोगियो रे वाला, मिल गयो उनके स्वरूप । बिलमी ए० ॥३॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

अब तुम उठो उठो रे लाल; नींदड़ली [१५] सूँ, उठो उठो रे म्हारा लाल ।

१—स्वरूप की एकता, २—देहाभिमान, ३—ज्ञान, ४—आत्मा, ५—कमेव-धन, ६—अज्ञानावस्था, ७—अविद्या, ८—स्वरूप में स्थित, ९—आत्मा, १०—आनन्दित, ११—जगत् ब्रह्म की एकता, १२—स्थिति, १३—आत्मानन्द, १४—आनन्दामृत, १५—मोह निद्रा ।

थांरे सिर पर नाचे वैरी काल, नींदड़ली सूँ उठो उठो रे लाल ॥ टेर ॥
पुरुषारथ ने हारियो रे, नहीं मिलसी गोपाल ।
जो भली चाहो आपणी थे, राखो सिज रो ख्याल । नींदड़ली सूँ० ॥ १ ॥
दीन जनाँरी सेवा कीजे, छोड़ो मन सूँ कुचाल ।
मन्दिर जाय वृत्ति विषय बिच, पडेला जम रा भाल । नींदड़ली सूँ० ॥ २ ॥
जड सेवा में जड होय उलझ्या, कूड़ी बजाई ताल ।
चेतन सेवा कीन नहीं तुम, पड़सी ऊँड़ी गाल(१) । नींदड़ली सूँ० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु महर करी यह, मोको कियो निहाल ।
मानमित्र कोई आछा दिन आया, यों सूँ दियो चित टाल । नींदड़ली सूँ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड-मलार, तर्ज मारवाड़ी "सूरिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

अब मन होय सचेत; मना रे मेरा पाखण्ड पणो ने छोड़ ॥ टेर ॥
बहोत दिवस यामें शीश कुटायो, अब इण सूँ मुख मोड ।
नहीं तो इण में मार्‍यो जासी, लूटेला काल मरोड । मना रे मेरा० ॥ १ ॥
वार वार इण संग में भटक्यो, रह्यो नित दौड़ादौड़ ।
अब तो इणने दूर कर प्यारे, भरम हँडिया ने फोड़ । मना रे मेरा० ॥ २ ॥
जप तप मंत्र बहुत सा जपिया, अब दूर ही सूँ कर जोड़ ।
मान कहे रे बहुत दिन लूट्यो, अब कोई पकड़ो और । मना रे मेरा० ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

राग आसावरी जब करे, वरीय रूप जब होय ।
भ्रम अरि अपनो मारले, सुख सज्या में सोय ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

आस(२) दूर कर कीजे; आसावरी आस(२) दूर कर कीजे ।

१—खाड, २—अपने आपसे भिन्न दूसरों पर निर्भर रहना ।

जो यह आसा माने नहीं तो, घोट(१)छान(२)कर पीजे। आसावरी आस० ॥ टेर।।
चूर चूर आसा को होवे, फिर न कभी उलझीजे।
आस मिटी निरास भये जब, निर्भय पिया सूँ मिल लीजे। आसावरी० ॥ १ ॥
आसा मद को उलट(३) कर पीजे, सुख भर सदा रहीजे।
उल्टी आस सीधी कर लेवे, सब दुःख दूर हरीजे। आसावरी० ॥ २ ॥
कोमल तीव्र छाँट कर न्यारे, समझ समझ स्वर दीजे।
अर्ध तीव्र मधु स्वर करके, तार बजे सुन लीजे। आसावरी० ॥ ३ ॥
किसकी आस कौन रह्यो न्यारो, जग मम रूप लखीजे।
मानसिंह यह सुन्दर रागिनी, ज्ञान प्रभात उचरीजे। आसावरी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

आसावरी गाय न जाने कोई।
जो आसा(४)को अरि(५) बन गावे, वह नर सुख से सोई(६)। आसावरी ॥टेर॥
बिन अरि भयाँ बिन अरि(७) नहीं डटसी, कर युद्ध देखो कोई।
मारे अरि और आप न मारे, जड़ा मूल देवे खोई। आसावरी० ॥ १ ॥
कोई जोगिया कोई माँड कर, आस किसी नहीं खोई।
स्वर तारन बिच अर्थ भूल गये, गाय गाय उमर बिगोई। आसावरी० ॥ २ ॥
जो आसा को अरि बन जावे, फिर आसा नहीं होई।
मानसिंह मैं मेरा हूँ नित, जड़ चेतन रह्यो पोई। आसावरी० ॥ ३ ॥

१—बुद्धि रूपी शिला पर घोटना, २—विचार रूपी गलने से छानना, ३—अपने आपको परिपूर्ण समझ कर आत्म-निर्भर होना, ४—अपने से भिन्न दूसरों पर निर्भर रहना व दूसरों की आस करना, ५—आत्म-निर्भर, ६—आनन्द माने, ७—काम क्रोधादि विकार।

॥ गान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

साधो म्हाने नार (१) मिली अलबेली (२)।
पास पिया (३) पहिचाणया नाही, भोदू रही है अकेली (४) ॥टेर।
भोंदू आप मनी(५) मतलबिया, भूल लुटाई है थैली (६)।
बरजाँ बहुत बरजी नहीं माने, होय रही मद(७)माँहे गैली। साधो० ॥ १ ॥
खावे मार नहीं पण चेते, दूणी मार सहेली।
यहाँ भी मार मार पड़े वहाँ भी, पीछे ही गेरेली। साधो० ॥ २ ॥
माल ससखरा (८) खाय मौज सूं, ऐसी कौन मिलेली।
भरम भाँग मे खबर पड़े नहीं, पीछे खबर पड़ेली। साधो० ॥ ३ ॥
देवनाथ समझाई साधो, अजहू ना समझेली।
मान कहे री मान बावरी, पीछे विपत पड़ेली। साधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ गजल । ताल रूपक ॥

पास जिसको ढूंढना, कैसी हँसी की बात है।
जागते सोये पड़े, कैसी हँसी की बात है ॥ १ ॥
जो कोई सोते पड़े, उनको जगावे आय कर।
जागते धुर्रा रहे, कैसी हँसी की बात है ॥ २ ॥
रात दिन पढने पढ़ाते, "ब्रह्मास्मि" मंत्र को।
तोते ज्यो पढ़ कर रहे, कैसी हँसी की बात है ॥ ३ ॥
कहते जो करते नहीं, सब ही मिलावे धूल मे।
मिसरी भाखे खाता कङ्कर, क्या हँसी की बात है ॥ ४ ॥
इस तरह काजी भी कहते, खुदा है सबके जिस्म मे।

१—बुद्धि, २—बेसमझ, ३—आत्मा, ४—अजग, ५—पाखण्डो मस्तगी
६—आयु, ७—विषय-सुख, ८—पाखण्डी गुरु।

फिर बताते चौथे आस्माँ, क्या हँसी की बात है ॥ ५ ॥
मान कहे अब तक भी मानो, कहदो अनलहक मुँह से तुम ।
दीपक छते रहना अन्धेरे, क्या हँसी की बात है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "राजन का सुआ रे" की । ताल कैरवा ॥

म्हाँने घणी सुहावे रे, बाजे मोहन (१) री मीठी बंसुरी (२) ॥ टेर ॥
राग छतीसूँ गा रह्यो स ज्याँरी न्यारी न्यारी तान ।
कब तक कहें हम थक गये सरे थक गये वेद पुरान ।
पार कोई पावे नहीं सरे खोज रह्यो गुणवान रे । म्हाँने घणी सुहावे० ॥ १ ॥
मालकोश और दीपक भैरव गात राग हिंडोर ।
श्री राग स्वर सब में बोले मेघ राग मुख जोर ।
आप बजावे ना रह्यो सरे तान उपज कर शोर रे । म्हाँने घणी सुहावे० ॥२॥
कुण गोकुल री गलियाँ भटके कुण म्हारे मथुरा जाय ।
वृन्दावन की कुँज गली में कुण म्हारे गोता खाय ।
सभी रुप गिरधारी दीखे सब ही बैन बजाय रे । म्हाँने घणी० ॥३॥
पंच धातु (३)की बंसुरी सरे दश (४) स्वर हैं इण माँय ।
समझ होय तो परख लो सरे नहीं तर सब भटकाय ।
भटक भटक दुःख पावसो सरे कृष्ण मिलेला नाँय रे । म्हाँने घणी० ॥४॥
वो तो मिट गये कृष्णजी स वो रास भी गयो मिटाय ।
कृष्ण ब्रह्म को रूप है सरे अखण्ड रयो जग माँय ।
खेले खेल खिला रयो स कोई न्यारो ना दरसाय रे । म्हाँने घणी० ॥५॥
देवनाथ गुरु मेहर करी मैं भूलूँ नहीं अहसान ।
भर्म सूँ बाहर निकालियो सरे कहे भूप यूँ मान ।
मनड़े रा धोखा(५)मिट्या स कोई लियो रूप पहचान रे । म्हाँने घणी० ॥६॥

१—आत्मा, २—शरीर, ३ पाँच तत्त्व, ४—दश इन्द्रियाँरूपी द्वार, ५—भ्रम ।

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

मना रे मेरा अब तो जूने घर चाल, उठे गयाँ आनन्द आवे रे ॥टेर॥
तू जाने जग घर है मेरो रे, मना रे मेरा कवल पुरो होय जाय,
घड़ी एक रहन न पावे रे। मना रे० ॥ १ ॥
ज्यांने तू अपना करी जाणे रे, मना रे मेरा कोईयन करसी साथ,
पेलाई यांने क्यों न छिटकावे रे। मना रे० ॥ २ ॥
शत्रु ने मित्र दोनों ने तज दे रे, मना रे मेरा जुग सब आतम रूप,
ओलखियाँ दुख मिट जावे रे। मना रे० ॥ ३ ॥
शत्रु मित्र कर दिन दिन बंधियो रे, मना रे मेरा बन गयो ब्रह्म सूँ जीव,
दिनों दिन नीचो जावे रे। मना रे० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कर तेरो पकड़्यो रे, मना रे मेरा मान त्याग अज्ञान,
नाथ जी नित समझावे रे। मना रे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

मनारे मेरा मग(१) लूटे ठगनी पाँच(२), जिन्हों सूँ अपनो माल बचावो रे॥टेर॥
मोह सारंग( ) उन अञ्जन कीनो रे, मना रे मेरा सारंग(४) सुन्दर होय,
सारंग(४) सूँ मुखड़ो ल्लावो रे। मना रे० । १ ॥
तीन गुणाँ की नथली पैरी रे, मना रे मेरा दम्भ दधि सुत(६) नथ माँय
देखने सती लुभावो रे। मना रे० ॥ २ ॥
कश्यप सुत(७) दधि सुत(८) सब हारया रे, मना रे मेरा रवि सुतापति(९) गयो हार,
तेरी अब कौन कहावो रे। मना रे० ॥ ३ ॥
हिमसुता पति(१०) हारयो इनसे रे; मना रे मेरा शक्र(११) रयो जो मुलाय,

१—मारग, २—इन्द्रियाँ, ३—काजल, ४—इन्द्रिय रूपी स्त्री
५—परमात्मा, ६—मोती, ७—सूरज, ८—चन्द्रमा, ९—कृष्ण, १०—महादेव ११-इन्द्र।

जिको इनसूँ ऊँचो न आवो रे। मना रे० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु शर(१) मोंने दीनो रे मना रे मेरा पाणि(२) जो सारंग(३)
पकड़, मान यूँ तीर चलावो रे। मना रे० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार, तर्ज "वाणी" की। ताल दीपचन्दी ॥

सोच समझ मन बावरे, निज सात्विक गुण धारो।
दुर्गुण दूर निवारिये, केवल ब्रह्म विचारो जी ॥ टेर ॥
बातों तजो रे परब्रह्म री, करणी सोई कीजे।
बातों सूँ आनन्द नहीं ऊपजे, साची सुन लीजे जी ॥ १ ॥
कौन करे कुण भोगवे, खेल बातों री माँही।
करणी रा फल त्यार है, समझो मन रे माँही जी ॥ २ ॥
कुकर्मो सूँ वंचित रहे, शुभ कर्म करावे।
सो ज्ञानी साचा जाणिये, सुपने दुःख नहिं पावे जी ॥ ३ ॥
इसड़े आनन्द ने छोड़ियो, जद भारत दुःख पावे।
पोल पुराण में पच रया, देश रसातल जावे जी ॥ ४ ॥
मान कहे अजहूँ मान लो, डूबत नैया ने तारो।
मृत संजीवनी(४) पीयलो, मरता प्राण उबारो जी ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मूँदड़ी के डंके" की। ताल कैरवा ॥

कर मन दुष्कर्मों को त्याग, यही निज त्याग है रे। टेर ॥
पहिले कर्म कुकर्म को ज्ञान, इनमें सत्य असत्य है कौन;
जो कुछ सत्य दिखे सोई मान। यही निज त्याग है रे ॥ १ ॥
मेटो विषय वास की राग, करले कुकर्मों सूँ वैराग;

१—शब्द रूपी तीर, २—निश्चय रूपी हाथ, ३—विचार रूपी धनुष, ४—आत्म-ज्ञान।

मिट जावे जन्म मरण को दाग । यही निज० ॥ २ ॥
जाणो बन पहाड नहिं कोय, त्याग यह घर बैठाँई होय,
सहज में बीध के मोती पोय । यही निज० ॥ ३ ॥
जो कोई यूँ सन्यासी होय, उनको कर्म लगे नहीं कोय,
वो तो नहीं हँसे ना रोय । यही निज० ॥ ४ ॥
पहिले हम भी लेत सन्यास, करते खूब जगत की हास,
देखत दुश्मन खूब तमास । यही निज० ॥ ५ ॥
मिले गुरु देवनाथ भगवान, दिया मोय असली आतम ज्ञान,
जीत लिया सहजे पद निर्वाण । यही निज० ॥ ६ ॥
गुरु से ज्ञान अमीरस पाय, दियो है मन को भरम मिटाय;
मान थो महान के बीच समाय । यही निज० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

प्रश्न

बंक कहे हो मानसी, कैसी कही यह बात ।
ज्ञानी के अरि मित्र को, यह मोहे हाँसी आत ॥

उत्तर

कृष्ण जिसे ज्ञानी नहीं, शिष्य न पारथ समान ।
अरिन हिसन के कारणे, हरी दियो तत्व ज्ञान ॥
अर्जुन तो तैयार था, लेने को संन्यास ।
कृष्ण नहीं लेने दियो, फेर बटायो साहस ॥
शत्रु मित्र नहीमानते, तो किये क्यों अठारह अध्याय ।
भगज पचाई क्यों करी, क्यों दियो जगत बहकाय ॥
पापी सो है अरि सदा, साम्यवादी है मित्त ।
बंक तजो चोंबाई अब, राह करो मन नित्त ॥

मैं ऐसा भोंदू नहीं, कि कुछ कह कुछ कह देय।
कृष्ण वाक्य ही जानिये, इनमें ना सन्देह॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो भाई हिंसा अहिंसा निहारो होजी ।
अहिंसा बिच होत है हिंसा, तिनको दूर निवारो रे । साधो भाई० ॥ टेर ॥
पुन बिच पाप पाप बिच पुन है, करलो समझ विचारो होजी ।
पुन और पाप एक मन जाणो, बिलग बिलग कर डारो रे । साधो भाई० ॥ १ ॥
मर मर भूख ताप देवो तन को, वह रयो पाप अपारो होजी ।
सुकृत करण मनुष्य तन लीनो, क्षुधा तृषा बिच हारो रे । साधो भाई० ॥ २ ॥
इन्द्री धर्म रुके नहीं रोक्या, इनकी गरदन मारो होजी ।
रोम रोम बिच है निज आतम, सूत्र ही खोज निहारो रे । साधो भाई० ॥ ३ ॥
रायो मौन छाण जल पीवो, मन साँवलो न पधारो होजी ।
पक्षापक्ष मिटी नहीं मन से, मिट्यो न भर्म अन्धारो रे । साधो भाई० ॥ ४ ॥
हेतु विचार काज करे जग में, होवे पुन अपारो होजी ।
जीव अनन्त तमर भर तारे, सद्‌उपदेश प्रचारो रे । साधो भाई० ॥ ५ ॥
सुगति सूँ जोय जैन मत झीणो, मत आडम्बर धारो होजी ।
बिन जोयाँ बिन यों ही रह गये, रतन जन्म ने हारो रे । साधो भाई० ॥ ६ ॥
मेरे तो सब ही बरोबर कहिये, नहीं मीठो नहीं खारो होजी ।
पक्षापक्ष में वह जावोगे, जिनसे फिकर तुम्हारो रे । साधो भाई० ॥ ७ ॥
सब ही मत में मैं हूँ व्यापक, सब ही मत है हमारो होजी ।
मानसिंह सर्वज्ञ सबी में, जड़ चेतन इक सारो रे । साधो भाई० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग, तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

बीरा म्हारा, थाँ सू नरम क्यूँ रहिये ।
निवे जिकाँ सूँ दूणो निवणो, दुष्टाँ ने दण्ड दईये । बीरा म्हारा० ॥ टेर ॥

परहित करे डरे श्री हरि सूँ, ज्याँने दुःख नहीं दईये ।
अवर बिगाड़ सुधारे अपनो, ज्यांरो विश्वास न लईये ॥ १ ॥
आप तो रेवे वज्जर सूँ करड़ा, कड़वा वचन कहीजे ।
मूरख अन्ध कदेई नहीं माने, ज्यांरो दुःख क्यों सहिजे ॥ २ ॥
हरिण्याक्ष हरिण्यकश्यप रावण कंस, दुष्ट आत्मा कहिये ।
ज्याने दण्ड देव खुद दीयो, अकल ठिकाणे अई है ॥ ३ ॥
राम और कृष्ण दुःख नहीं सहियो, आपे क्यों दुःख सहिये ।
दुष्टों ने दण्ड सेवा सज्जनों री, इण में दोष नहीं है ॥ ४ ॥
पर दुःख हर्ष शोक होय सुख में, कामी ने क्रोधी कहिये ।
मानसिंह इसड़ा दुष्टों ने, खाली न जावण दईये ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

वक्त जिसा जन झुकत रहे पर अन्त में और ही और कहावे ।
वे निवता सबही सूँ बुरा ज्यांरे अन्तर को कोई भेद न पावे ।
वाँ निवतों सूँ ऐसा निवो कि जाय उन्हीं के माँय मिलावे ।
मान कहे जस काम पड़े है मरद वही करके दिखलावे ॥

॥ सवैया ॥

वक्त पड़े जद खूब निवे और फेर इसी मत में करड़ाई ।
वो नर समझो मरद नहीं जिनके मन में हो इसी खिटलाई ।
देख लेवो उनको दिल में कोई काम पड़े उनसे जब भाई ।
मान कहे रे मरदन की तो पारख हो इक बोल के माँई ॥

॥ मान ॥

॥ राग गौरी । ताल कैरवा ॥

मान्यो गृहस्थ संभावो, समझ कर; साचो गृहस्थ संभावो ॥ टेर ॥
गिरह बन्धी छोड़ मगरूरी, निज घर अपने आवो ।
पर धन भूल पाप पर नारी, पोल पन्थ मत जावो । समझ० ॥ १ ॥

पर पीड़ा अपनी सी जानो, बस कछु रहे तो मिटावो ।
पेट तो भरे जो खर कूकर भी, ऐसे मत रह जावो । समम० ॥ २ ॥
खर और श्वान विषय यही भोगत, तुम कहा अधिक कहावो ।
एक नारी और धन दोऊँ में, मत तुम श्यान गमावो । समम० ॥ ३ ॥
अजगर मगर मजूरी करे कहा, पड़े पड़े अन्न पावो ।
अजगर मगर में कौन कसर है, क्यों नहीं सुकृत कमावो । समम० ॥ ४ ॥
घर घर में सहयोग योग रहे, जीते ही स्वर्ग कमावो ।
मानसिंह मैं गृहस्थ कह्या साचो, मरजी होय तो आवो । समम० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

सेवा से जो मिले अमर फल सब कोई पावो रे; करन सेवा चित चावो ॥ टेर ॥
सेवा जग की थी हनुमान । उसने पाया उत्तम ज्ञान ।
ऐसी सेवा कर करके भव से तिर जावो रे । करन सेवा चित चावो० ॥ १ ॥
सेवा में अर्जुन था सुजान । जिसके कृष्ण बन गये रथवान ।
मत सोवो अब जान के सेवा सुकृत कमावो रे । करन सेवा० ॥ २ ॥
या सेवा ज्ञानिन की होय । पोल पन्थिन की करो न कोय ।
सेवा सेवा के माँय मुफ्त मत माल लुटावो रे । करन सेवा० ॥ ३ ॥
मन्दिर मन्दिर में सिर मार । हो जावोगे तुम लाचार ।
चाहे ऊमर भर पड़े यूँ ही तुम घण्टे बजावो रे । करन सेवा० ॥ ४ ॥
गो विप्रों की सेवा होय । ब्रह्म निष्ठा लो विप्र कोई जोय ।
मीन मेख मक्र कुंभ बतावे उन्हें दूर हटावो रे । करन सेवा० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु मिले गुणवान । जिसने दिया सेवा का विधान ।
मान मान को छोड़ सच्चे सेवक बन जावो रे । करन सेवा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोस । ताल तिताला ॥

मन सुमरन कर चित स्वर रे ।
स्वर वाणी से होय परे नित, तो तू रहत निडर रे ॥ टेर ॥

जहाँ देखो मैं वारापार । नाम रटे० ॥ ८ ॥
कोई रटते हैं शंभु महेश । सब भूतों में सम हूँ हमेश ।
यूँ कल्याण स्वरूप निहार । नाम रटे० ॥ ६ ॥
कई दत्त गोरख धरते ध्यान । गो अतीत मैं हूँ गुणवान ।
दत्तचित्त को हूँ प्रेरणहार । नाम रटे० ॥ १० ॥
कई रटते हैं नाम अरिहन्त । मन अरि जाको लखे न पंथ ।
मन बुद्धि चित पर है असवार । नाम रटे० ॥ ११ ॥
देवनाथ को कीनो साथ । अर्थ बतायो हाथो (१) हाथ ।
मान निकल मगड़े से बार । नाम रटे० ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

दूर करो दिल द्वैत विकार । जद पावो दिल में दीदार (२) ॥ टेर ॥
दौड़ दौड़ मत बाहिर जाय । दिल को पकड़ ठिकाने लाय ।
मिट जावे कर्मों री मार । जद पावो० ॥ १ ॥
माला हजार चाहे फेर लो लाख । इण सूँ न मिलसी आतम साख ।
आखिर फेरत बैठोला हार । जद पावो० ॥ २ ॥
निज में वृत्ती देवो लगाय । वो माला फिर छूटे नाँय ।
मिट जावे सगलोई घोर अन्धार(३) । जद पावो० ॥ ३ ॥
निज वृत्ती का धागा होय । श्रुति स्मृति मणका पोय ।
तत्त्वमसि यह शब्द उचार । जद पावो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कीन सहाय । जिन निज माला दिधी बताय ।
मान यह फेर रह्यो हर बार । जद पावो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की । ताल-कैरवा ॥

रट गो रक्षक(४) गोपाल, किसको ध्यावे रे ॥ टेर ॥

१—साक्षात्कार, २—आत्म-दर्शन, ३—अज्ञान, ४—इन्द्रियों का स्वामी।

छोटा बड़ा नहीं कोई सब ही रूप एक होई।
यह त्याग भूठ को ज्ञान। किसको ध्यावे रे ॥ १ ॥
मथुरा वृन्दावन भटक्यो, तो भी मन यह ना हटक्यो।
कर खरच नूं भयो कंगाल। किसको ध्यावे रे ॥ २ ॥
तेरो तैं जोयो नहीं जब तूं तेरो होयो नहीं।
तैं तो खोई मुफत मे लाल(१)। किसको ध्यावे रे ॥ ३ ॥
गो इन्द्रिय मे व्यापक है एक पलक नहीं दूर रहै।
श्रो रे सबन की पाल। किसको ध्यावे रे ॥ ४ ॥
मान अज्ञान को दूर करो, गुरुजन गोज में मती मरो।
श्रो ढोडश्रो आवे काल। किसको ध्यावे रे ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

कोई कहे यह गौवन की श्रोर ग्वालन की प्रतिपाल करावे।
अन्य कहा कोई पशु व मनुष्य कहा उनसे कुछ चैर कमावे।
दोयन की वह सहाय करे तो ईश्वर को क्यों नाम धरावे।
ईश पणो तो निभे जब ही सामान्य सभी को सहायक आवे।
कहा तो गाय श्रौर अश्व कहा चींटी परवत जो एक दिखावे।
मान कहे तब ही हम माने वरना ईश इसो नहीं भावे॥

॥ मान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की। ताल कैरवा ॥

बंद वचन

नृप कहिये बात सँभार, नहीं तो अटकोगे॥ टेर॥
चोर माह मे एक रह्यो, क्यों थाय चोर है मार। नहीं तो० ॥ १ ॥
चोर करे चोरी जभी; जब पकड़े क्यों सहुकार। नहीं तो० ॥ २ ॥
फल दोयन के क्यों है जुदा, यह अचरज थाय अपार। नहीं तो० ॥ ३ ॥

१—आत्मा।

हंस सिंह है जीव इसा; फिर इसमें क्यों द्वैकार । नहीं तो० ॥ ४ ॥
हंस सोई मोती चुगे; सिंह खाय जीव क्यों मार। नहीं तो० ॥ ५ ॥
यक कहे हो नराधिपति; हम क्यों नेरे भिखियार। नहीं तो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये की" । ताल कैरवा ॥

मान वचन

कवि चातुर चपल प्रवीन, कब तक हम कहवें ॥ टेर ॥
देह के हैं व्यवहार यही; मुझ में लेश विकार नहीं।
यूँ मूरख होत आधीन कब तक० ॥ १ ॥
ब्रह्म सुख यह नहीं कह्यो; कार्य कर्ता कह दियो।
जस साज बजी तस बीन। कब तक० ॥ २ ॥
ठाम ठाम तस भयो गुण है; या में ब्रह्म को दोष कुण है।
यह नहिं जाने मति हीन। कब तक० ॥ ३ ॥
यह तो बात जबही बने; अपने स्वरूप को रूप ठने।
हो एकता बीच में लीन। कब तक० ॥ ४ ॥
देवनाथ को साथ कियो; उण अपने समान सनाथ कियो।
लियो मान सत्य निज चीन। कब तक० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये की" । ताल कैरवा ॥

मन चेत चेत अब चेत, दिन एड़ा जावे ॥ टेर ॥
मनुष्य जन्म सो दिन ऊगो; ओ लेश नहीं ऊगो पूरो।
ओ खाली रहसी खेत। दिन एड़ा जावे ॥ १ ॥
आतम दरसण कर भाई; ऐसो अवसर फिर नाँई।
मत नाँख केसर में रेत। दिन एड़ा जावे ॥ २ ॥
अपनी भली जो तू चावे; तो आतम तत्त्व क्यों नहीं पावे।
कर अपणे आप सूँ हेत। दिन एड़ा जावे ॥ ३ ॥

मन समता कर सुख पावे, साची बात हिरदे लावे ।
औ मानें जद मन प्रेत । दिन पड़ा जावे ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी द्वन्द्व जगत की दूर हरी ।
अब मान भयो रंग रवेत । दिन पड़ा जावे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

मन सोवो रे भरम केरी नींद (१); अब उठ जागो रे ॥ टेर ॥
नींद नींद में ऊमर खोई, जाण ने आल बिछायो रे ।
रतन(२) हाथ में आयोड़ो खोयो, तुम सम मूर्ख न पायो रे ।
ऐसो रतन ने दियो गमाय । तो अब फिर वो कैसे पाय ।
अजहू भूल ने त्याग, अब उठ जागो रे ॥ १ ॥
बातों ब्रह्म हाथ नहीं आवे, कर निश्चय जद पावो रे ।
निश्चय कीवी भरम सब भागा, मन गाँफले ने समझावो रे ।
मन समझाय ने आतम पाय । भेद भरम ने देवो मिटाय ।
अपने आप सूं लाग; अब उठ जागो रे ॥ २ ॥
घर बन मॉय एक सो दीसे, इतर नजर नहीं आवे रे ।
गृहस्थ सन्यस्त भेद नहीं जाणे, वे नर ब्रह्म पद पावे रे ।
जिन ब्रह्मपद ने लियो है पाय । निज स्वरूप ओलख्यो उर मॉय ।
उनको है अमर सुहाग; अब उठ जागो रे ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, सूताँ सोय जगायो रे ।
प्यारी प्रीतम प्रीतम प्यारी, एको एक लखायो रे ।
पिव प्यारी दोऊँ एक मिलाय । मान भर्म सब दियो है भगाय ।
खेल रह्यो है ब्रह्म फाग; अब उठ जागो रे ॥ ४ ॥

१—मोह-निद्रा, २—मनुष्य-जन्म ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

पियो पियो रे अमीरस (१) आय; फेर कद पीसो रे ॥ टेर ॥
भाग जगे कोई हरिजन पाय। निस्नेही होय अमी पिलाय।
अब तुम होवो रे अचाय (२); फेर कद पीसो रे ॥ १ ॥
सबसे ऊँचो आतम ज्ञान। जिनको धरो सभी जन ध्यान।
अमर होय पद पाय; फेर कद पीसो रे ॥ २ ॥
जग में जीणो है दिन चार। मत तुम खावो विषय की मार।
इण माँहे श्वास समाय; फेर कद पीसो रे ॥ ३ ॥
खर कूकर में पियो न जाय। ऐसी स्वतन्त्रता वहाँ न पाय।
परवश मार जो खाय; फेर कद पीसो रे ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु तोय पिलाय। फिर है मूरख पियो न जाय।
मान अजहू शर्माय; फेर कद पीसो रे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

करदो करदो भरम ने दूर; पीया निज पावोगे ॥ टेर ॥
भरम कूप में उलझो नाँय। इसमें उलझया नहीं सुख पाय।
पहिले से रहिये यासे दूर; पीया निज पावोगे ॥ १ ॥
पोल पन्थ को अन्त भी नाँय। दुगुना तिगुना जाल बिछाय।
छिप जावे अपनो नूर; पीया निज पावोगे ॥ २ ॥
जतर मतर तंतर माँय। ग्रह गोचर और राशी दिखाय।
पहले ही करदे मग दूर; पीया निज पावोगे ॥ ३ ॥
मुनि वशिष्ठ और व्यास महान्। शुकमुनि से पूजो गुणवान्।
कर्पटन के द्वारा दूर से धूर; पीया निज पावोगे ॥ ४ ॥

१—आत्म-ज्ञान, २—कामना से रहित।

देवनाथ गुरु संत सुजान । पाये ब्रह्मनिष्ठा गुण खान ।
मान लख्यो है हाल हजूर, पीया निज पावोगे ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

तोड़ो तोड़ो रे भरमना रो बन्ध, निज प्रभु ध्यावो रे ॥ टेर ॥
क्यों काशी मथुरा मे जाय । दिल मे देखो देव मिलाय ।
अपने आप बिच खोज, सहजे हि पावो रे । तोड़ो तोड़ो० ॥ १ ॥
बन्ध तोड़ प्रहलाद बुलायो । आतम रूप खंभ मे आयो ।
अन्धविश्वास ने छोड़, प्रकट दिखावो रे । तोड़ो तोड़ो० ॥ २ ॥
निर्बन्ध होय रटे केई साध । जिनके मिट गये वाद विवाद ।
हो गये आतम रूप, सहज समावो रे । तोड़ो तोड़ो० ॥ ३ ॥
मानसिंह निर्बन्ध फल जान । देवनाथ मिले कृष्ण समान ।
जीवन मोक्ष पहिचान; आय नहीं जावो रे । तोड़ो तोड़ो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

चालो चालो अमर घर आय, दरसण पास्याँ ए ॥ टेर ॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल में नाँहि । अमरपुरी है अपने माँहि ।
ब्रह्म पद माँहि कीजे वास; दरसण ॥ १ ॥
कोई कहे क्षीर सागर के माँय । कोई तीजे चौथे बतलाय ।
ए तो झूठो देवे विश्वास; दरसण० ॥ २ ॥
जगन्नाथ रामेश्वर जाय । बद्रीनाथ द्वारिका धाय ।
भटक बहुत देखी आस; दरसण० ॥ ३ ॥
साची निश्चय जिनके होय । इत उत को भटके नहिं कोय ।
टूट जाय सब आस; दरसण० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले सुजान । ज्ञान गंग न्हाये निर्वाण ।
मान निज रूप प्रकाश; दरसण० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पी प्याला नित प्रेम का, पियो न प्याला भंग।
उण सूँ तो मस्तान हो, इण से बावरो अंग॥
शिव बूँटी मुख से कहो, कहताँ शरम न आय।
नहीं बूँटी कल्याण की, बूँटी है दुःखदाय॥
शिव(१) बूँटी सज्जन पिये, जो मरे न जन्मे कोय।
ये तो घास बन को पियो, मूढ़ मति दी खोय॥
मानसिंह कहे मानलो, शिव बूँटी दूँ पाय।
फेर जन्म धरसो नहीं, शिव(२) में शुद्ध समाय॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैती रसिये" की। ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे जहर(३) रस पीओ रसिया(४) ॥ टेर ॥
हो रसियाजी म्हारे(५) संग अब चालो।
गुरु गम(६) मगन होय मग(७) झालो। काँई रे० ॥ १ ॥
हो रसियाजी थाँने मझ रस पाऊँ।
विषया रस सूँ मरत बचाऊँ। काँई रे० ॥ २ ॥
विष ने अमी रस दोई घर माँही।
विष रस पीयो अमी छेड़यो ही नाँही। काँई रे० ॥ ३ ॥
अमृत रस री तो कूँची(८) गमाई।
जहर पियो मौत सिर पर आई। काँई रे० ॥ ४ ॥
कूँची ना मिले तो अब ताला(९) तोड़ाओ।
छताँ अमी जहर मत खावो। काँई रे० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु ताला खुलाया। मानसिंह रस री सुख पाया। काँई रे० ॥ ६ ॥

१—आत्मज्ञान, २—आत्मा, ३—विषय, ४—जीव, ५—निश्चयात्मिका बुद्धि
६—उपदेश, ७—ज्ञान-मार्ग, ८—पहिचान, ९—साम्प्रदायिक हठधर्मी।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

कांई रे कुपन्थ पन्थ जावो रसिया ॥ टेर ॥

पन्थ कुपन्थ ने दूर हटावो । मोक्ष शिखर री पैंडी आवो ।
कुमता रे घर कांई नित जावो । कांई रे कुपन्थ० ॥ १ ॥
कुमता नारी कदेई नहीं थांरी । बालम मानो कही अब म्हारी ।
मानो कही तो सहज तिर जावो । कांई रे कुपन्थ० ॥ २ ॥
सुमता नार कहे पतिव्रता । तोड़ दिवो थे कुमत सूं रता ।
मैं डीनो बालम फिर जोड़ मिलावो । कांई रे कुपन्थ० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु चतुर विज्ञानी । मान कहे पिया जो नहीं मानी ।
इनके चूका तो फेर पिछतावो । कांई रे कुपन्थ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

कांई रे ईसो हठ लियो रसिया ॥ टेर ॥

इण हठ मे तो सकल गुमाई । रतन खान थांरे हाथ न आई ।
सुख ने तज्यो दुःख लीयो जी रसिया । कांई रे इसो० ॥ १ ॥
अजू हठ छोड़ो तो भव तिर जावो । ब्रह्म आनन्द मे सहजे समावो ।
रात दिवस जहर पीयोजी रसिया । कांई रे० ॥ २ ॥
मनुष्य जन्म मांय थे अब आया । जीवन अजहू वृथा ही गमाया ।
शूल जिसो जग मे जीयोजी रसिया । कांई रे० ॥ ३ ॥
पक्षापक्ष को दूर परावो । अपनो आनन्द आप मांय पावो ।
सुख तज दुःख क्यों सीयोजी रसिया । कांई रे० ॥ ४ ॥
मानसिंह आनन्द निज मेरो । नाथ कृपा सूं अंतःकरण हेरो ।
मान अभय पद लीयोजी रसिया । कांई रे० ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय।
वक्त विचारन को यही, अवर न मिलसी कोय।
अवर न मिलसी कोय जन्म सब नीचा पावे।
इन्द्र सुरेन्द्र ही होय, तभी यह सुख नहिं आवे।
बीज झाबूके देखने, झट पट मोती पोय।
कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की। ताल कैरवा ॥

घणा जतन सूँ मिल्यो है मौको(१) भूल न जावो रे; रूप निज पावो रे ॥टेर॥
जगत विषय तो बहुत दिन भोगे तत्त्व(२) विषय दरसावो रे।
जगत विषय ने जग कर राखो निज में आवो रे। रूप० ॥ १ ॥
जगत विषय तो फिर भी त्यार है खर कूकर जहाँ जावो रे।
मनुष्य जन्म देवाँ ने दुर्लभ मती गमावो रे। रूप० ॥ २ ॥
और सन्तों री दे दे ओपमा अपणो माल गुमावो रे।
दूजा कमायो ज्याँरो थाँने काँई थे ही कमावो रे। रूप० ॥ ३ ॥
वे तो सन्त हुशियार रया ने थे क्यूँ घर(३) ने लुटावो रे।
वाँ तो चोराँ(४)ने पकड़ कूटिया थे शस्त्र संभावो रे। रूप० ॥ ४ ॥
और सन्ताँ रो जीवन पढ़ पढ़ भोला मत रह जावो रे।
वाँ जो कमाया सुख सूँ खाया थे भूखा रहावो रे। रूप० ॥ ५ ॥
स्वर्ग और अपवर्ग फिरो चाहे देवलोक फिर आवो रे।
मनुष्य जन्म में तत्त्वज्ञान ऐसो कहीं न पावो रे। रूप० ॥ ६ ॥
मान कहे अब कही मानलो सदा सुखी बन जावो रे।
इण पर भी इणरी मरजी तो शिला बन्धावो रे। रूप० ॥ ७ ॥

१—मनुष्य-जन्म, २—आत्मा, ३—आत्मानन्द, ४—काम-क्रोध आदि।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे कुपन्थ पन्थ जावो रसिया ॥ टेर ॥

पन्थ कुपन्थ ने दूर हटावो । मोक्ष शिखर री पैडी आवो ।
कुमता रे घर काँई नित जावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ १ ॥
कुमता नारी कदेई नहीं थाँरी । बालम मानो कही अब म्हारी ।
मानो कही तो सहज तिर जावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ २ ॥
सुमता नार कहे पतिव्रता । तोड़ दियो थे कुमत सूँ डरता ।
केड़ी तो बालम फिर जोड़ मिलावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु चतुर विज्ञानी । मान कहे पिया जो नहीं मानी ।
हमके चूका तो फेर पिछतावो । काँई रे कुपन्थ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे ऐसो हठ लियो रसिया ॥ टेर ॥

इण हठ में तो सकल गुमाई । रतन थान थाँरे हाथ न आई ।
सुख ने तज्यो दुःख लीयो जी रसिया । काँई रे ऐसो० ॥ १ ॥
अजू हठ छोडो तो भव तिर जावो । ब्रह्म आनन्द मे सहजे समावो ।
रात दिवस जहर पीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ २ ॥
मनुष्य जन्म माँय थे अब आया । जीवन अजहू वृथा ही गमाया ।
भूल जिसो जग में जीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ ३ ॥
पक्षापक्ष को दूर परावो । अपनो आनन्द आप माँय पावो ।
सुख तज दुःख क्यों लीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ ४ ॥
मानसिंह आनन्द निज मेरो । नाथ कृपा सूँ अंतःकरण हेरो ।
मान अभय पद लीयोजी रसिया । काँई रे० ॥ ५ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय।
वक्त विचारन को यही, अवर न मिलसी कोय।
अवर न मिलसी कोय जन्म सब नीचा पावे।
इन्द्र सुरेन्द्र ही होय, तभी यह सुख नहिं आवे।
बीज भभूके देखने, झट पट मोती पोय।
कीजे मान विचार नित, पलक न खाली खोय॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की। ताल कैरवा ॥

घणा जतन सूँ मिल्यो है मौको(१) भूल न जावो रे; रूप निज पावो रे ॥टेर॥
जगत विषय तो बहुत दिन भोगे तत्त्व(२) विषय दरसावो रे।
जगत विषय ने जग कर राखो निज में आवो रे। रूप० ॥ १ ॥
जगत विषय तो फिर भी त्यार है खर कूकर जहाँ जावो रे।
मनुष्य जन्म देवाँ ने दुर्लभ मती गमावो रे। रूप० ॥ २ ॥
और सन्ताँ री दे दे ओपमा अपणो माल गुमावो रे।
दूजा कमाये ज्याँरो थाँने काँई थे ही कमावो रे। रूप० ॥ ३ ॥
ये तो सख्त हुशियार रया ने थे क्यूँ घर(३) ने लुटावो रे।
याँ तो चोराँ(४) ने पकड़ कूटिया थे शस्त्र संभावो रे। रूप० ॥ ४ ॥
और सन्ताँ रो जीवन पढ़ पढ़ भोला मत रह जावो रे।
याँ जो कमाया सुख सूँ खाया थे भूखा रहावो रे। रूप० ॥ ५ ॥
स्वर्ग और अपवर्ग फिरो चाहे देवलोक फिर आवो रे।
मनुष्य जन्म में तत्त्वज्ञान ऐसो कहीं न पावो रे। रूप० ॥ ६ ॥
मान कहे अब कही मानलो सदा सुखी बन जावो रे।
इण पर भी डूबण री मरजी तो शिला बन्धावो रे। रूप० ॥ ७ ॥

१—मनुष्य-जन्म, २—आत्मा, ३—आत्मानन्द, ४—काम-क्रोध आदि।

॥ गान ॥

॥ तर्ज "पनजी मुखड़े बोल" की । ताल कैरवा ॥

मोय मती मन मूढ नीन्द(१) अब चालो आतम देश, चुपके चाल परो ॥ टेर ॥
पग(२) बिन पन्थ(३) माग(४) बिन मारग बिना पंख बिन उड़गो(५) रे ।
धर(६) बिन अधर आकाश नहीं जहाँ निर्मल सुन्दर भेष(७) । चुपके० ॥ १ ॥
मारग मे है डाकू(८) घणेरा लूट लूट धन(९) खावे रे ।
वाँरे जाल फँस्यो क्यों मूरख ले सतगुरु उपदेश । चुपके चाल० ॥ २ ॥
हरदम राख वैराग बोलाऊ(१०) जिणसूँ चोर न आवे रे ।
ओ घर(११) आपणो कदे न समझो ओ सगलो परदेश(१२)। चुपके चाल० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के निज घर मोय बतायो रे ।
मानसिंह निज रूप मिल्यो जब मिट गयो राग और द्वेष । चुपके चाल० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "सैन म्हारा रे" की । ताल कैरवा ॥

सजनो म्हारा रे चालो रे चालो निज देश(१३) मे रे ।
सजनो म्हारा रे सूताँ सूताँ सरसी नाँय, लाल म्हारा रे,
समझ लेवो नी मन माँयने रे ॥ टेर ॥
सजनो म्हारा रे समझया जिकेई नर सूरवाँ रे ।
सजनो म्हारा रे पाँच(१४)पचीस(१५)किया चूर, लाल म्हारा रे समझ० ॥ १ ॥
सजनो म्हारा रे पञ्चम(१६) पुरी सूँ घोडो(१७) छोडियो रे ।

१—मोह-निद्रा, २—स्थूल कर्म-काण्ड, ३—ज्ञान मारग मे चलना, ४—पग-डण्डी रूप साम्प्रदायिक रीति-रिवाज, ५—स्थूल इन्द्रियो की पहुंच से परे, केवल सूक्ष्म और कारण का विषय, ६—किसी प्रमाण पर निर्भर न रहने वाला-स्वयं सवेद्य, ७—सच्चिदानन्द स्वरूप, ८—द्वैत भाव के विकार, ९—आयु, १०—रख-वाला, ११—अज्ञानावस्था, १२—आत्म-विमुखता, १३—आत्म-स्थिति, १४—विषय, १५—प्रकृतियाँ, १६—अज्ञानावस्था, १७—मन ।

सजनो म्हारा रे मारी मारी प्रारब्धाँ री सेन(१), लाल म्हारा रे; समझ० ॥ २ ॥
सजनो म्हारा रे चालोनी पूब(२) पुर रे गाँव में रे ।
सजनो म्हारा रे रेवोनी पूरबिया(३) होय, लाल म्हारा रे; समझ० ॥ ३ ॥
सजनो म्हारा रे ज्ञान उजालो घट में करो रे ।
सजनो म्हारा रे करदो करदो सचित(४) ज्याँरो नाश, लाल म्हारा रे; समझ० ॥ ४ ॥
सजनो म्हारा रे मन मजबूती ने झेलिये रे ।
सजनो म्हारा रे कीजे कीजे शुद्ध क्रियमाण (५), लाल म्हारा रे; समझ० ॥५॥
सजनो म्हारा रे नहीं तो करो नहीं भोगवो रे ।
सजनो म्हारा रे रहणो रहणो कर्म अकर्म सूँ बार, लाल म्हारा रे; समझ० ॥६॥
सजनो म्हारा रे देवनाथ गति देवना रे ।
सजनो म्हारा रे ज्याँरे संग मान भयो देव, लाल म्हारा रे; समझ० ॥७॥

॥ गान ॥

॥ राग पूरवी । ताल तिताला ॥

मत हो तू जग ते हैरान ॥ टेर ॥
तेरो कहा बिगारत जग यह, अपनो रूप सब जगत जान । मत० ॥ १ ॥
जग ते हार कहाँ जायगो, ठौर न दीखत कोई और आन । मत० ॥ २ ॥
मिथ्या ही मिथ्या कहे उन्हें पूछो, तुम जगते कब बार जान । मत० ॥ ३ ॥
भिन्न कहे तो अलग क्यों न जावे, बसे आय क्यूँ जग में ठान । मत० ॥ ४ ॥
मानसिंह तू आप जगत है, तेरे सिवा फिर जगत कौन । मत० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मुलतानी । ताल ध्रुपद ॥

श्रुति जन गुन गाय गाय, गाय नाँय रहिये;
गाय रहे दुःख होय, दुर्मति त्याग दहिये ॥ टेर ॥
आदि सिद्ध वनत गाय, सोच तो यही है;

१—प्रारब्धों के भोग, २—आत्म-ज्ञान, ३—आत्म-ज्ञानी, ४—पिछले किये हुए संचित कर्म, ५—वर्तमान में होने वाले कर्म ।

जान बूझ दु:ख सेत, सोचत नहीं है। गुनि जन० ॥ १ ॥
मानसिंह गाय त्याग, एक रस सहज लाग,
मूढ़ नींद सेति जाग, मुलके होय रहिये। गुनि जन० ॥ २ ॥
माने मन जीव होय, मन्न मान जीव खोय,
मान न महान जोय, सीधे मग बहिये। गुनि जन० ॥ ३ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मान कहे अब मान मन, बिन माने सुख नाँय।
मन माने निज मन बने, फेर काल नहीं खाय।
फेर काल नहीं खाय, काल को काल कहावे।
काल विचारो कौन, जिको फिर खावन आवे।
मरण मारण से रहे परे, सो निज रूप समाय।
मान कहे अब मान मन, बिन मान्याँ सुख नाँय॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत "बामण का नन्दलाला" की। ताल केरवा।

कही मानो रे कही मानो, अपने रूप ने आप जानो ॥ टेर ॥
बहुतक बेर कही समझाय। फेर कहूँ जो बुद्धि में आय।
छान छान के फेर छानो। अपने रूप ने आप जानो ॥ १ ॥
दीसत मात्र यह है संसार। ईनको जरा कुछ करो विचार।
तत्त्व दृष्टि मन में आनो। अपने रूप० ॥ २ ॥
एकमें मिल कर करो व्यवहार। एक रूप लख आरोपार।
वृथा ही बाद हठ मत ठानो। अपने रूप० ॥ ३ ॥
तत्त्व दृष्टि से बरतो ध्यान। जद उग दीसे आप समान।
बीज करो तो अन्तर जानो। अपने रूप० ॥ ४ ॥
रूपनाथ गुरु कही सुजान। मान सही कर लीवी मान।
गाई है जैसे वेद पुरान। अपने रूप० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज चैत के गीत "बामण का नन्दलाला" की । ताल कैरवा ॥

हद रंग आयो रे हद रंग आयो । खुद मस्ती प्यालो पायो ॥ टेर ॥
मदवा सतगुरु मिल गया नाथ । भलो कियो मदवाँ रो साथ ।
प्रेम राग सूँ सदाई गायो । खुद मस्ती प्यालो पायो ॥ १ ॥
समकी वृत्ति सुरत कलार । शब्द छाँण मद करत तैयार ।
पीताँ ही अखण्ड तत्त्व दरसायो । खुद मस्ती० ॥ २ ॥
पहिले प्याले पड़ी पिछाण । धरयो पावड़ी पर पग जाण ।
गुण प्रीतम रो हद गायो । खुद मस्ती० ॥ ३ ॥
दूजे प्याले ऊगो चन्द । तत्त्व शब्द रो मिल्यो आनन्द ।
जग रो रंग सब बिसरायो । खुद मस्ती० ॥ ४ ॥
तीजे प्याले उपज्यो सार । प्यारी कीन पिया सूँ प्यार ।
आनन्द चौगणो सो दरसायो । खुद मस्ती० ॥ ५ ॥
चौथे प्याले माग्या क्यार । चोर जिके हो गया साहूकार ।
गुम गयो धन अब पायो । खुद मस्ती० ॥ ६ ॥
प्याले पाँचवें निर्भय कीन । पाँच पचीस भया आधीन ।
बेखटके डर बिसरायो । खुद मस्ती० ॥ ७ ॥
छट्ठे प्याले मद छक होय । शंक काल री रही न कोय ।
काल बिचारो मुझ से घबरायो । खुद मस्ती० ॥ ८ ॥
प्याला सातवाँ पीवत सोय । जिणसूँ पिये रा दरसण होय ।
ओ तो अवसर अब के ही आयो । खुद मस्ती० ॥ ९ ॥
प्यालो आठवों पियाजी रे हाथ । भलो बण्यो है अधिको साथ ।
(सड़ो आनन्द किम जाय गायो । खुद मस्ती० ॥ १० ॥
पीते ही प्याला हुवा गलतान । नहीं मान और नहीं अपमान ।
पिव प्यारी एक रूप ध्यायो । खुद मस्ती० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी । ताल तिताला ॥

जिसे ढूँढने को गये वही हम पाया है ॥ टेर ॥
काशी केदार गये, गया हरद्वार गये ।
चारु धाम फिरे पर कहीं न मिलाया है ॥ १ ॥
पण्डितन को खूब बूझा, तो भी नहीं मारग सूझा ।
स्वार्थ के लिये हमें और ही बताया है ॥ २ ॥
प्रेत जो शिला मराई, ब्रह्म कपाली मराई ।
पोल के विप्रन को खूब दान जो दिलाया है ॥ ३ ॥
जैसे हैं विप्र यह, तैसे ही सन्यासी सोई ।
त्याग त्याग कहके लाखों भिक्षुक बनाया है ॥ ४ ॥
सन्यासी न समझो इन्हें, समझो सत्यानासी तुम ।
एक दो नहीं ये लाखों घर, जो डुबाया है ॥ ५ ॥
देवनाथ कृष्ण मिले, हुए हम पारथ के रूप ।
मान कौड़ी के जो बदले, मन को रंगाया है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग झिंझोटी । ताल तिताला ॥

अब न ठगायेंगे हम, सुन ब्रह्माणी के ॥ टेर ॥
पहिले नहीं जानते थे, तब हम इनकी मानते थे ।
अब तो हुए हैं हम पूरब राजधानी के ॥ १ ॥
भला है अच्छा है यह, पास में न आवो मेरे ।
अब न चलेंगे तुमारे चक्र यह दिवानी के ॥ २ ॥
उल्टे अर्थ वेदों के, और सूत्र अर्थ उल्टे करो ।
अब रहो चुप वरना करें बिन जुबानी के ॥ ३ ॥
जितनी चली सो चली, अब न चलेगी यहाँ ।

हम भी तो आगे हैं कोई सिंहनी जवानी के ॥ ४ ॥
चाहे रूठो देवी या, देवता भी रूठो तुम ।
अब न देने वाले हैं हम आत्म कुरबानी के ॥ ५ ॥
नाथ हू को साथ कियो, आप सो सनाथ कियो ।
मान छोड़ पोला पन्थ ज्ञाता वेद बानी के ॥ ६ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

मानसिंह संसार में, सत्पुरुषाँ रो संग ।
भेटत करले आपसा, पलट देत है रंग ।
पलट देत है रंग, अंग ज्यों त्यों ही रहावे ।
बदल जात है भाव, जबे वे भृङ्ग कहावे ।
करम काठ सबही जले, जैसे जले पतंग ।
मानसिंह संसार में, सत्पुरुषाँ रो संग ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, हंस स्वरूपी सन्त ।
इण हंसन के भेष में, बुगला बसत अनन्त ॥

॥ कवित्त ॥

ज्ञान और विचारशील अन्तर विवेक भरयो, मिथ्या विषयन को नि करत रहत त्याग है। मरने को डर न कोय कर्त्तव्य आरूढ़ होय, उणाँरो संसार बीच सत्य वैराग है। आतम स्वरूप सोय अवर नहीं जाने कोय, देह अभिमान ताको कियो सत्य त्याग है। मान यूँ विचार करे ऐसे सही पार करे, ज्याँरे आतम तत्त्व बीच साचो अनुराग है ॥

॥ गान ॥

॥ राग गौरी । ताल कैरवा ॥

लीजे अमर फल लीजे, सत्संग माँय लीजे अमर फल लीजे ॥ टेर ॥
तीरथ व्रत को तो गुप्त ही फल है, ज्या सूँ मन न पतीजे ।

पतन फल ओ सत्सग देवे, कर हिम्मत ले लीजे । सत्संगत० ॥ १ ॥
चोरॉ री कही कणी नहीं सुनिये, तर्क आपणी कीजे ।
देवे जवाब प्रमाण सहित जो, सेवा जिणाँरी कीजे । सत्संगत० ॥ २ ॥
कर सत्सग कुसंग त्याग दे, मन ममता हर लीजे ।
एक रंग सूँ रहे नित रँगिया, ज्ञान अमीरस पीजे । सत्संगत० ॥ ३ ॥
कर सत्सग खाली मन रहीजो, करो जिणनी समझीजे ।
हरख विचार धार उर अन्दर, जीवन मोक्ष कर लीजे । सत्संगत० ॥ ४ ॥
बाँधे भग और चरस चौगुणो, धूओं धोर मचीजे ।
वे तो बापड़ा आप जलत है, थाँने शीतल किम कीजे । सत्संगत० ॥ ५ ॥
भग तमाखू और सुलफा पलीता, दोय दोय हाथ उठीजे ।
अपनी तो बुद्धि उण आग मे होमदी, ज्यॉरो संग नही कीजे । सत्संगत० ॥ ६ ॥
शीतल सदा हृदय ज्यॉरे समता. ज्याँ सूँ राम पतीजे ।
कनक कामनी मे लम्पट लोभी, ज्यॉ सूँ राम नही रीझे । सत्संगत० ॥ ७ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, सन्मुख दर्शन कीजे ।
जगत ब्रह्म और ब्रह्म जगत है, मान आन तज दीजे । सत्संगत० ॥ ८ ॥

॥ सवैया ॥

लोक कहे सत्सङ्ग करो सतसंङ्ग को ढङ्ग तो और है भाई ।
सत्सङ्ग के रंग मे आन फँसे तब छूट पडे सबही चतुराई ।
सत्सङ्ग को रंग तो बहुत कड़ो यह सहजहू मे तो लागे ही नाँही ।
जो यह कदाचित् लाग गयो तो सोय गयो फिर जागे ही नाँही ।
सान अजान ने आयो मैं मेरो लागो मना अब भागे ही नाँही ।
सत्सङ्ग के रस को चाख लियो अब और रसादि को चाखे ही नाँही ।

॥ सोरठ ॥

कर कर के सत्सङ्ग, जो रङ्ग उर लाग्यो नहीं ।
खाली गयो निसङ्ग, पाहन कूड़ो मारियो ॥

नुश करी सत्सङ्ग, ऊमर सब भटकत फिरयो।
लग्यो न शब्द को रङ्ग, शब्द विहूणा रह गया॥

कर सत्सङ्ग मन ओट, जाति वरण की रह गई।
चुपड़े घड़े जो छाँट, सुपने न लागे मानसी॥

नहीं पारस में दोष, दोष पड़्यो लोहे मँही।
वृथा करे क्यूँ रोष, कर्म काठ काट्यो नहीं॥

जितनो कट गयो काठ, तितनो सब कंचन भयो।
रह गयो लोह निराठ, काठ जठा सूँ ना कट्यो॥

इण सूँ जन्म अनेक, धार धार फिरता फिर्या।
मिले न आतम एक, मति शुद्ध बिन मानसी॥

लगी ज्ञान की बेल, जड़ा मूल जावे नहीं।
कोई दिन देसी पेल, ब्रह्म रूप आ मानसी॥

ज्ञान बीज दियो बाय, प्रेम नीर सूँ सींच दी।
आ जन्म अनन्ताँ न जाय, फल तो लागे वक्त पर॥

ज्यो तरव फल लाग, चाखत चित में चेतिया।
लगी करम पर आग, कौन बुझाये मानसी॥

ज्ञान बीज दे बाय, मत डर रे मन माँयला।
प्रेम नीर सूँ पाय, धूप पड़्याँ जलसी नहीं॥

सगलाँ री जड़ जाय, इणरी जड़ जावे नहीं।
औरों री बेल गमाय, आ मन मूँ करले मानसी॥

मान मान रे मान, बिन मान्याँ फिर मारसी।
अब तो शुभ फल जान, मिथ्या फल तज मानसी॥

उठ उठ साँभल रात, आप अजपा सब ही करे।
फेरण स्वर्ग पर हाथ, औ माँग्याँ मिले न मानसी॥

ज्याँरो मन वश होय, तो स्वर्ग बिचारो कौन है।

हमें न चाहिए कोय, म्हारी कल्पना मानमी ॥
आज है कल मिट जाय, इसे स्वर्ग रो क्या कराँ ।
थिर तो रहवे नाँय, थिर निज मेरो रूप है ॥
स्वर्ग और अपवर्ग, जेता सब मन माँय है ।
मन को करो विसर्ग, मिथ्या तज मन मानमी ॥
सिन्धु न बून्द कोय, चाहे सो जावो स्वर्ग में ।
आखिर रहसो रोय, वहाँ पर स्थिरता है नहीं ॥
ज्याँरो नाम और रूप, वो तो अवश्य ही बिखरसी ।
मेरो शुद्ध स्वरूप, अमर हमेशा मानमी ॥

॥ सोरठा ॥

मरे न लाखों बात, प्रेम पय पीवण लग्याँ ।
ऊगे ज्ञान प्रभात, मिटे अन्धारो मानमी ॥
पड़्या अन्धारी रात, साथ कियो धू धू तणो ।
पकड़ अन्ध को हाथ, दोरो मरसी मानमी ॥

॥ दोहा ॥

कहने को ब्रह्मज्ञान सो, कीनो नहीं विचार ।
कागद की सी नाव है, डूबेगी मझधार ॥
जो कह कह कर जात है, सो सेवे ब्रह्मज्ञान ।
आप तिरे और तारले, साचे पूज्य महान ॥
उन सन्तों की सेव से, नहीं डूबे मझधार ।
आप खिवइया है खरा, खेके करदे पार ॥

॥ सवैया ॥

नाव को छोड़ उठायो नहीं कर कूर खिवैये की बातें बनावे ।
उनको कछु न भरोसो मेरे मन जहाज कहीं अधबीच डुबावे ।
मान विद्वान करो उर में यदि कोई खिवैया हाथ परावे ।
पहिले परिक्षा करो चित में यह कहाँ तक हमको पार लगावे ॥

मिले खेवैया जब नाव को ले जावे खेय, देरी न लगात तुरत करत किनारे हैं।
आप गये पार अब औरन को पार लेत, क्या है मजाल कोई डूबे मझधारे हैं।
कोनो प्रकाश बिना दीप अन्तरंत ऐसो, जिनके प्रकाश भये कछु ना अन्धारे हैं।
कहे राव मानसिंह अब है डर कौन यार, नाथजी तो साथ हर वक्त जो हमारे हैं॥

॥ दोहा ॥

आये बन्ध छुड़ावने, बाँध दिये चहुँ ओर।
ना कोई गया न आविया, रहे ठौर के ठोर॥

॥ सोरठा ॥

जिन्हें न पूरो भाव पोला पन्थ वातॉं करे।
मन में रति न चाव, ए चित हीला चोर रा।
पण्डिताई रे पाण, ए सब ही सूँ करड़ा रहे।
पड़े न उर में निशाण, करड़ा बजर ज्यूँ मानसी॥
पोथी पढ़ी अनेक, कई शिष्य और पढ़ाविया।
पण पड़्यो न उर में छेक, मन माने बिन मानसी॥
रोय करम री रेख, करम अजू छूटो नहीं।
अलगो रह गयो एक, मन मान्याँ बिन मानसी॥
ज्याँरो हिरदो छेक, कोमल होय कागद जिसो।
ज्याँरा उलटा पड़ गया लेख, मन मान्याँ यूँ मानसी॥
हृदय बज्र सो होय, कलम बिचारी क्या करे।
वे यूँ रहसी रोय, मन मान्याँ बिन मानसी॥
वातॉं रा वाचाल, श्रुति स्मृति छेड़दे।
निरख सके नहिं लाल, पढ़ पोथा थोथा रया॥
आवे आखर माँय, समझया जिके तो समझग्या।
चारूँ नैन [illegible]

हंस कहे नहीं बैन, मुक्ता लेन अमोलमा ।
कौवा पडे न चैन, जिके चौंच धरे विष्ठ मेंही ॥

रह्यो न काग समान, काग पलट हंसा बनो ।
सही शब्द के बाण, कहे ज्यूं कीजे मानसी ॥

तज तोते री चाल, लाल लखो घट बीच में ।
माल थकां कँगाल, हँसी शिकारी मानसी ॥

गुप्त खजानो मांय, देश विदेशां क्या फिरे ।
गुप्त ही गुप्त रह जाय, मन मान्यां बिन मानसी ॥

इण दिल ने कर साफ, उजलो कर कागद जिसो ।
तो तू अपणो आप, ब्रह्म लेख लिख मानसी ॥

कूड़ी बकिया बात, हाथ कुछ आवे नहीं ।
मिटे न तिरगुण रात, मांय लग्यां बिन मानसी ॥

कुकरम करे अपार, ऊपर सूं बातां करे ।
दूणी पड़सी मार, जाण जहर लियां मानसी ॥

खावे जहर अजाण, वैद्य औषधी कर दहे ।
पण जिण नर खायो जाण, मरणो तेवड़ मानसी ॥

बक रया ज्ञान अटूट, बक बक बुगले ज्यूं रया ।
ज्यो जङ्गल रो ठूंठ, काम न आवे मानसी ॥

॥ बंक वचन ॥

यों मत कहो महाराज, ठूंठ भी आवे काम मे ।
कई सरत है काज, निकमो तो वो भी नहीं ॥

जितनो कष्ट को काम, ओ मगलो ठूंठां सूं बण्यो ।
क्यों कर कह्यो निकाम, सोच विचारो भूपति ॥

॥ मानसिंह जी वचन ॥

मगलो ले लियो काम, केवल जड़ बाकी रही ।
वा आवे नहीं किण काम, इण से कह्यो कविराज जी ॥

ज्ञान रहे सब बाँट, आप तो कोरा ही रया।
निकली न मन री आँट, जिण सूँ हूँठ सा कया ॥

॥ दोहा ॥

को नहीं जीते भूपति, चातुर चपल प्रवीण।
इमें उबारण कारणे, भू तन विधि धर लीन ॥

॥ सोरठा ॥

ना कथनी सूँ काम, और कविता मूँ राजी नहीं।
वह आतम निज धाम, मन समभयाँ मिले मानसी ॥
कविता करो अनेक, शब्द कोप के जोड़ कर।
पण पड़े न उर में छेक, मन सुलभयाँ विन मानसी ॥
कविता री नहीं जोड़, छन्द मात्रा देखी नहीं।
करी न किणरी होड़, मिली सो भाखी मानसी ॥
कथ गया कवि अनेक, काली केशव सूरसा।
जामें कसर न नेक, मन अनुभव सो ना रुक्यो ॥
अजब रंगीली बात, जग में सब मुड़दा फिरे।
जीव पणो नहीं जात, मन सूँ ज्याँरे मानसी ॥
भया जीव सूँ ब्रह्म, कोई कोई दीखे ओपता।
ज्याँरा वचन है रम्य, लख महरम नित मानसी ॥
नहीं रहणो मतिहीन, मन मायलो समभायलो।
बजे प्रेम की बीण, मन सूँ समभयाँ मानसी ॥
पाँच तत्त्व गुण तीन, दस ले तार चढ़ाविया।
लिया सरस्वती बीण, मधु गुण गावे मानसी ॥
वृत्ति सरस्वती नार, तार और तुरप मिलाय के।
ब्रह्म दिया दरबार, यूँ मधु गुण गावे मानसी ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मन समझ विचारो, साची धारो, कर सत पुरुषाँ रो सङ्ग ॥ टेर ॥
ग्निा जन ज्याँरी सङ्गत कीजे, क्रोध न व्यापे अङ्ग ।
स्वत सिद्धाई होय जिकाँरे, काल भी होवे तङ्ग रे, मन समझ० ॥ १ ।
जन्तर ने मन्तर ने तन्तर सिद्धाया, ये सब जाणो पाखण्ड ।
आतम निष्ठा सदाई सुखी रहे, निशि दिन रहत आनन्द रे, मन समझ० ॥ २ ।
जन्तर लिखे और मन्तर साधे, जगत जमाई रा रङ्ग ।
माल मुफत मे खात मसखरा, नाना विधि कर ढङ्ग रे, मन समझ० ३ ।
गोरख कबीर न मन्तर साध्या, कीनी सदा सत्‌सङ्ग ।
मान कहे म्हाँने वे ही सुहाया, वाँरो लाग्यो म्हाँने रङ्ग रे; मन समझ० ॥ ४ ।

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

जिकाँ आतम पाई, रलत सिद्धाई, वाँ पुरुषाँ रे पाँय ॥ टेर ॥
आतम शक्ति में यह बल देखो, अखिल ब्रह्माण्ड समाय ।
अष्ट सिद्धि सब हाथ जो जोड़े, पण वो न करे वाँरी चाय रे, जिकाँ० ॥ १ ॥
कोण सईका ने कोण हजारी, कुण वाँरे लाख अपाय ।
आतम इष्ट जो एक ही पकड्यो, सब होय उणरे माँय रे; जिकाँ० ॥ २ ॥
मन्तर ने जन्तर करे सिद्ध नाँही, जगत ठगाई रो भाव ।
स्वत सिद्धि ज्यारी महा मन्तर है, देख्याँ सूँ दुख जाय रे, जिकाँ० ॥ ३ ।
गोरख कबीर रविदास जिसा रे, नहिं कोई मन्त्र पढाय ।
धरताँ ही हाथ कई शिष्य तार्‌या, ज्याँरी दृष्टि सूँ मृतक जिवाय रे, जिकाँ० ॥ ४ ॥
देवहुनाथ कृपा कर हमको, दीनो भेद बताय ।
मान कहे तुम जावो घर अब, सोऊ चहिये नाँय रे; जिकाँ० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मैं हूँ वीर सयाना(१), सिंह(२) समाना, भेडाँ(३) सूँ भिड़कूँ(४) नाँय ॥ टेर ॥
भेडाँ सूँ वे ही भिड़कसी रे, घास(५) जिके जन खाय।
सिंह को भख वह मरी(६) नहीं खावे, सो किम कर वो(७) खाय रे; मैं हूँ० ॥१॥
सिंह की सी मेरी गाज(८) है रे, भेड़ी देख भगाय।
सिंह से सिंह होवे सोई अड़सी, भेड़ की ताकत नाँय रे; मैं हूँ० ॥२॥
जन्त्र ने मन्त्र ने कंकरी तुम्हारी, मुझ पे देखो चलाय।
मन निर्बल ज्याँरे मूठ जो लागे, म्हारे तो नेड़ी न आय रे; मैं हूँ० ॥३॥
आतम मूठ(९) मैं आप चलाऊँ, लाखों को देऊँ गिराय(१०)।
मैं हूँ मुड़दा(११) जो ऐसा ही करलूँ, क्या मोपे जादू आय रे; मैं हूँ० ॥४॥
जितना मंतर जंतर तंतर, मुझ बिना कोई नाँय।
ओऽहं(१२) मन्त्र निकाल देवो तो, फिर तुम देखो चलाय रे; मैं हूँ० ॥५॥
देवहुनाथ जभी मोहे छोड़्यो, पूरो सिंह(१३) बनाय।
मान कहे कोई सिंह हो आवे तो, देखूँ मैं हाथ चलाय(१४) रे; मैं हूँ० ॥६॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

सब (१५) भेड़ी(१६) डरावे, थाँने बहकावे, सिंहाँ(१७) रे पास न आय ॥टेर॥

१—बुद्धिमान, २—स्वतन्त्र, निडर ३—अंधविश्वासी डरपोक लोग; ४—चमकूँ या डरूँ, ५—पंथापंथ या साम्प्रदायिक अंधविश्वास, ६—दूसरों पर निर्भर रहना, ७—अंधविश्वास रूपी घास,८—संशय रहित निडर होकर बोलना, ९—आत्मज्ञान, १०—हरा देना,११—देहाभिमान से रहित,१२—सब का आधार बीजमंत्र, १३—पूर्णज्ञानी, निडर, १४—विचार विनिमय, ज्ञानचर्चा, १५—मजहबी पोला पन्थी धूर्त लोग,१६—विचारहीन अन्धविश्वासी जनता, १७—विचारवान ज्ञानी लोग।

जो वे सिंहा के पास में आवे तो, तालू में जीभ(१) रह जाय।
सिंह री धाक(२) बुरी है सबसे, सुणता मन घबराय रे: सब भेड़ी॰ ॥ १ ॥
सिंहों रे पास तो वोही ज आवे, सिंहनी(३) को सुत पाय।
नाहरी को दूध(४) पियो सोई आवत, ज्यारे कलेजो(५) नाय रे, सब भेड़ी॰ ॥ २ ॥
मंतर ने तंतर मूठ चलावे, देवे जंतर बनाय।
सिंहनी के सुत एक न माने, सिंहा ने काल न खाय रे, सब भेड़ी॰ ॥ ३ ॥
गोरख कबीर रविदास मन्सूरा, याने कोई मार्या नाय।
जो वे मंतर साचा ही होता, तो वाँ पर क्यों न चलाय रे, सब भेड़ी॰ ॥ ४ ॥
देवदूनाथ है सिंह हमारे, उनके सुत कहलाय।
मान कहे सिंह के सुत सिंह है, भेड़ सूं क्यों घबराय रे सब भेड़॰ ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिलावल, तर्ज "सत्गुरु मायन एक है" की । ताल धीमा कैरवा ॥

परतक परचो देखियो होजी: परचे सूं क्या कामा।
परचे परचे में फंस रया होजी, दूर रयो निज धामा ॥ टेर ॥
तन बस मन बस कर रया होजी, परचाँ में उलझाया।
इतने परचो आवे काल रो होजी, सब रुल जावे सिद्धार्थां। ॥ १ ॥
गोरख परचा ना दिया होजी; नहीं इण कीन सिद्धायाँ।
हासण से दुःख मेटता होजी: मन निग्रही वैराग्या ॥ २ ॥
भन सुत कारण दौड़ता होजी, जगत सिद्धाँ पर जावे।
जो वे सिद्ध साचा हुवे होजी, तो क्यों नहीं जगत रचावे ॥ ३ ॥
जो वे सिद्धायाँ सूँ सुत रवे होजी, हमको कष्ट क्यों आवे।
क्यों ब्रह्मचर्य खण्डन करे होजी, क्यों ब्रह्म तेज घटावे ॥ ४ ॥
जो वे किणी ने सुत दे सके होजी, तो औरा रा सुत क्यों ढूंढे।

१—बोल भी नहीं सकते, २—आत्मज्ञान चर्चा रूपी गर्जना, ३—निश्चयात्मिक बुद्धि, ४—सत्य विवेक, ५—देहभाव से रहित ।

परतक परचो देखलो होजी; पकड़ परायाँ ने मूँडे ॥५॥
मछन्दर किणी रा सुत हता होजी; जाँने गुरु शिष्य कर लाया।
गोरखनाथजी ने मूँड लिया होजी; क्यों नहीं परचा दिखाया ॥६॥
मारण जारण उच्चाटनी होजी; मोहनी वशीकरण होवे।
तो दुष्ट क्यूँ जग में होवता होजी; धर्म मूल क्यूँ खोवे ॥७॥
मानसिंह मन मानग्यो होजी; पाई मैं असल सिद्धाई।
असली औखध नकली लग्या होजी; दियो सब रोग मिटाई ॥८॥

चंक वचन

॥ दोहा ॥

चंक कहे भूपति सुनो, करो अन्याय की बात।
पूज्य भया जो जगत में, झूठ कहे किम् जात॥
जो वे सिद्ध होता नहीं, परचा देता नाँय।
तो जग में क्यूँ मानता, सो सही देहु बताय॥

मान वचन

मान कहे कविराज सुन, हूँके कान को खोल।
बात कहूँ चित में धरो, माणक मणी अमोल॥
सिद्ध हुता साधक हुता, पर तू जाणे क्यूँ साँय।
जीवत मरेल दिखावता, अद वे मृतक जीवाय॥
देवनाथ भी सिद्ध है, पार आपने कीन।
भव सागर सूँ तारिया, मन सुत कहे न दीन॥
मोह मौत सूँ म्हे मरया, तत्त्वज्ञान दे प्राण।
मूँवा फिर जिन्दा किया, ए साचा सिद्ध जाण॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की। ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो इण विध मृतक जिवाया रे होजी।
विषय मौत में पच पच मरिया, ज्ञान का मन्त्र सुणाया रे। साधो मैं तो० ॥१॥

वे जीया तो फिर मर जावे, ए नित अमर केवाया रे होजी ।
यॉ जीवना सूँ काल नित डरपे, काल रे पेच न आया रे । माधो॰ ॥ १ ॥
शील सन्तोष रे हृदय कमण्डल सूँ, लेकर नीर छिड़काया रे होजी ।
लागत छाट कपट पट उघड्या, मौत के मुख नहीं आया रे । माधो॰ ॥ २ ॥
म्हारा जिवाया फेर मर जावे तो, फिटकिट है वे जिवाया रे होजी ।
प्रगट सिद्धाई छिपी नहीं किण सूँ, देऊँ ढोल बजाया रे । माधो॰ ॥ ३ ॥
यो ही गोरख कबीर जिवाया, तुलसी यो ही जिवाया रे होजी ।
मतहीना उलटे मग हाले, फिर फिर जगत बहकाया रे । माधो॰ ॥ ४ ॥
थे केवो ज्यूँ मुड़द जिवाया तो वे, मौत चक्र क्यूँ आया रे होजी ।
जो वे अमर तो आज मिलावो, पोल ही पोल चलाया रे । माधो॰ ॥ ५ ॥
खोटी हुण्डी किता दिन चलसी, कोई खरा निजर नहीं आया रे होजी ।
खरा मिल्याँ तो टको नहीं घटसी, ज्यूँ का त्यूँ ही रहाया रे । माधो॰ ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु शाह अडवपति, हुण्डि साच सिकराया रे होजी ।
मान विचार समझ कर कीनो, सुपने न घाटा खाया रे । माधो॰ ॥ ७ ॥

॥ सोरठा ॥

मत कोई घालो हाथ, हिम्मत बिन अड़जो मती ।
अडियाँ दुख हो जात, मरियाँ न छूटो मानसी ॥
ज्ञान खड्ग पर हाथ, मरणो तेवड़ ने धरे ।
झडे सबी तन पात, वे जिन्दा रेवे न मानसी ॥
जो मरणो मंजूर, पास हमारे आइये ।
नहीं तर रहिये दूर, मन मे समझो मानसी ॥
कोई कहे मरियाँ भूत, होवे या होवे नहीं ।
मान यूँ जीवत भूत, ब्रह्मज्ञानी ने जानिये ॥
वो लाग्याँ हट जाय, ए लाग्याँ हटसी नहीं ।
क्रिया सूँ निकट न आय, ए मरियाँ छोड़े मानसी ॥

उण पर मन्त्र अनेक, इण पर एक चलसी नहीं ।
ए लाग्यां करसी छेक, लेने जासी मानसी ॥

वे देवे ज्ञान गमाय, पण बाकी ए राखे नहीं ।
जीवत मुड़द बनाय, जीव पणे ने काढ़ दे ॥

मन भावे रा भूत, म्हारे तो नित मानसी ।
ए हरदम रहे मजबूत, वाँ भूताँ सूँ ना डरे ॥

संत इस जबरा भूत, ज्याँने घरिया कैद में ।
मार जमाँ सिर जूत, मारग लीनो मानसी ॥

वाँ भूताँ घबराय, लाखों डर डर मर गया ।
पण वाँ रे पास न आय, मार करे फिर जीवता ॥

मिले तो ऐसा भूत, मंत्र मंत्र मिलजो साथजी ।
भयो मान मजबूत, याँ भूताँ सूँ क्या डरे ॥

भायेला ही भूत, भूताँ भेला नित रेवाँ ।
डरता रहे जमदूत, याँ भूताँ सूँ मानसी ॥

कृष्ण बताया भूत, वे तो भूत भेला रहे ।
ए पकड़ लिया मजबूत, जद दुःख पाया मानसी ॥

ए सब ने लाग्या भूत, एक ही ने छोड्यो नहीं ।
उल्टा खावे जूत, मरम विहूणा मानसी ॥

काजी पढे कुरान, पण्डित बाचे वेद ने ।
पण याँ भूताँ री जाण, करी किणी नहीं मानसी ॥

काजी पाजी सोय, पागल है पण्डित सभी ।
मन्त्र पढे पढ रोय, मरम लखे नहीं मानसी ॥

काजी पण्डित दोय, पिवी भरम री भांग ने ।
भत न जाने कोय, ए मरम विहूणा मानसी ॥

देख्यो एक खईस, बहुत शीश और शिर नहीं ।

वो जतरो जगदीश, पण कोई कोई जाणे जुगत सूँ ॥
धड़ सूँ न्यारो शीश, जो कोई करने जोयले ।
तो मिले जो असल खईस, संशय नहीं कुछ मानसी ॥
बाँध्या पाँचू प्रेत, दस भूताँ ने बाधिया ।
जगदीश्वर सूँ हेत, जदे हुयो यूँ मानसी ॥
मरघट विश्व स्वरूप, भूत प्रेत मेला भया ।
लख्यो नहीं कुछ मूल, जद रहे डरिया मानसी ॥
जो दूजा हो भूत, तो इच्छा सूँ सब कुछ करे ।
तो क्यों खावे सिर जूत, मन्त्र विधी सूँ मानसी ॥
पहले ही निसर जाय, दिव्य दृष्टि सूँ देख कर ।
हाथ मे आवे नाँय, तो मन्त्रवादी क्या मारसी ॥
जिण सूँ अपणी भूल, पृथक पड़ी मासी दिखे ।
नाश अज्ञान की भूल, ज्ञान मार्ग लख मानसी ॥

बंक वचन

॥ सोरठा ॥

तुलसी मिलिया भूत, भूताँ सूँ हनुमत मिल्यो ।
क्या यह कहानी झूठ, सही बतावो मानसी ॥

मान वचन

॥ कवित्त ॥

छानो न छिपे कवि तरक कोई छाँट लेत, हाइ यह जरासी क्या अजहूँ रहाई है । एतो समझायो पर ज्ञान हू न आयो तोय, अजहूँ तरक तोमे कैसे उठ आई है । कहते ही पकड़ लेत तरक कोई काढ़ देत, हम भी निठुर बोले बिना ना रहाई है । कहे राय मानसिंह बाँकों मे बात बाँको, विधना संयोग प्रीत तेरी जो मिलाई है ॥

बंक वचन

॥ कवित्त ॥

इतने न डरो नाथ सही होय कहो बात, क्षणभङ्गुर तन यह तो काल मिट जायगो । कहीं हू न मिटे वार जगत बीच अमर रहे, दीप को उजालो होय फेर कोई आयगो । हम तो कहोगे नाथ चुप भी हो जावेंगे, अन्धविश्वास यह योंही रह जायगो । आप तुम जगत तारण घबरावो कौन कारण, तुम्हें छेड़ यश कुछ बङ्क भी ले जायगो ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

गोस्वामी गये जब ही वन में रघुनाथ के चरण में ध्यान लगायो ।
गुरुदेव मिले एक भूत उन्हें हनुमान ले ज्ञान को तहाँ प्रगटायो ।
उन ज्ञान विचार लियो उर में अपने चित के चित्रकूट में आयो ।
ब्रह्मानन्द मिल्यो यह बंक कहे मान तुम्हें सही समझायो ॥

बंक वचन

॥ दोहा ॥

शौच क्रिया के नीर से, तुलसी सींच्यो ढाक ।
सो यह ढाक है कौन सो, भूपति चौड़े भाख ॥

मान वचन

॥ सवैया ॥

प्रेम को नीर लियो सङ्ग में मल आवरण को जिन शौच करायो ।
निश्चय को ढाक जो सींच दियो गुरुदेव ही आयके दरस दिखायो ।
भूत मिले गुरुदेव उन्हें हनुमान जो ज्ञान जवी दरसायो ।
ब्रह्मानन्द मिल्यो तुलसी सुन बंक यही कह मान बतायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग-सारंग-मलार "तर्ज बाणी" की । ताल दीपचन्दी ॥

आवो रे आरो काजी पंडितो, ऐसो मन्त्र पढाई ।
कृष्ण पढायो पारथ पति, सो मैं सही समझाऊं जी ॥ टेर ॥
जन्त्र मंत्र और जिन्द थे, औरां रा निकलावो ।
थां में तो सब भेला बसे, पर घर क्यूं जावो जी । आवो० ॥ १ ॥
पांच प्राण पांचूं विषय, दश भूत है मांई ।
एक एक रे दोय नार है, लागी रहत सदाई जी । आवो० ॥ २ ॥
पांच पितर परलोक रा, ज्यांने सही समझावो ।
सतसंग्यां सूं सुध होयस्यो, नहीं तर गोता खावो जी । आवो० ॥ ३ ॥
सो परलोक अलगो नहीं, पितर नहीं आगा ।
नेणां रे नजीक है देखलो, फिरो मन भागा भागा जी । आवो० ॥ ४ ॥
सब सब भूतां में आतमा, यही मन्त्र है भाई ।
तत्त्वमसि तू साक्षी है, दूजो है कोई नांई जी । आवो० ॥ ५ ॥
कृष्ण अठारह अध्याय में, भूत न प्रेत बताया ।
आदू पितृ अपणो आप है, परापरी से आया जी । आवो० ॥ ६ ॥
अभी तो पांच पुजायजो, बाजो जग में सैणा ।
ऊंडा पैंडला दोरा घणा, जैड़ा नेणां जैडा देणा जी । आवो० ॥ ७ ॥
म्हांने समझाया नाथ जी, दया थां पर आवे ।
मनुष्य जन्म आय बापड़ा, खाली क्यों जावे जी । आवो० ॥ ८ ॥
मानसिंह कहे रे मान लो, तो निज देश ले जाऊं ।
भेद पणे ने काढदो, सुमता सिंह बणाऊं जी । आवो० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग गौरी । ताल कैरवा ॥

मन्त्रो से सुत नहीं होवे, समझ देखो मन्त्रो से सुत नहीं होवे ॥ टेर ।

जो मन्त्रों से वंश बढ़े तो, रज वीरज क्यों खोवे ।
सूरज अग्नि गन्द नहीं काढ़े, दीपक बिन क्या जोवे । समझ० ॥ १ ॥
कुन्ति आदि के मन्त्र सुन उपजे, यह अचरज सो होवे ।
मन्त्रों सुत होय फिर क्या कहनो, कौन नारी दुःख होवे । समझ० ॥ २ ॥
अन्धविश्वास को दूर करो सब, तब ही उजाला होवे ।
नारी पुरुष होय क्यों कोथा, क्या ईश्वर गैलो है । समझ० ॥ ३ ॥
नारी सबही पढ़ लो मन्तर, जो मन्त्र कुंति पढ़यो है ।
वही तो मन्त्र वही तुम नारी, वेदों में लिख के धरयो है । समझ० ॥ ४ ॥
पढ़ पढ़ के सब पागल हूवे, असली क्या है नहीं जोवे ।
मानसिंह नहीं अकल किसी में, मन्त्र मन्त्र पढ़या रोवे । समझ० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

भूल परे बपुरे सगरे और मन्त्रन से ही वंश बढ़ावे ।
बहुत बड़े बड़े ग्रन्थ रचे हैं बात कहा यह कोई नहीं पावे ।
दशरथ के सुत चार हुवे कर मन्त्र ते यज्ञ हवी जो मँगावे ।
वही तो मन्त्र और यज्ञ वही फिर क्यों इतनी वन्ध्या रह जावे ।
मान कहे कहा फरक पड़यो तिनते अब क्यों नहिं वंश बढ़ावे ।
बात बिना ही विचारे करे ये लाज जरा नहीं चित में लावे ।

॥ कवित्त ॥

धर्म मन्त्र पढ़ के कुन्ति युधिष्ठिर पैदा कियो, वही मन्त्र पढ़ के फिर युधिष्ठिर बनाइये । सूय मन्त्र साध के कर्ण उत्पन्न कियो, ऐसा ही कर्ण फिर मन्त्र से लाइये । पवन मंत्र पढ़ के जिन भीम को कियो पैदा, उसी मंत्र से फिर भीम जन्माइये । शक सुन कियो पैदा इन्द्र को मंत्र पढ़, ऐसो ही अर्जुन फिर करके दिखाइये । कहे राव मानसिंह अन्धविश्वास छोड़, सीधे जो राह होके सीधे तुम आइये । लिखी हू न वाचो यार गहरे उतर राचो इनमें, कैसे सुत पैदा कियो समझ चित लाइये ॥

॥ सवैया ॥

मत्र के बीच मे तन्त्र लिखे उन तन्त्र को ज्ञान हम कहने दवाई।
दवाई को खाय नपुंसक मर्द हो सो फिर उनसे हो यंत्र शुद्धाई।
यन्त्र हुआ शुद्ध वीर्य बढा फिर ऐसे करे तो वह पा रहे नाँई।
मान ने माने कोई मन मे अब माँग गयो रहे लोक कुटाई॥

॥ सवैया ॥

पाँच हू तन्त्र और पाँचो ही मत्र है न्यारे ही न्यारे चहे सुन लीजे।
मत्र के अर्थ ते तत्र करो और तन्त्र जिसो जस यंत्र हो दीजे।
मान कहे नहि मंत्र है झूठे ये झूठे तो पढणे हार कहीजे।
स्वारथ आग लगी इनमे यह आग बुझे बिन कैसे लखीजे॥

॥ कवित्त ॥

कौशल्या कुन्ति और माद्री है यज्ञवेदी, केकई सुमित्रा ताही कर मानिये। वशिष्ठ और व्यास आदि मंत्र के तंत्र किये, दशरथ और पाण्डु इन्हे यन्त्र कार जानिये। तन मन से सेवा कीन मन चाहे पुत्र लीन, सही है बात यामे अचरज न आनिये। मंत्र हू न झूठे झूठे वेद के न करनहार, बिना अर्थ जाने बके झूठे इन्हे जानिये॥

॥ कवित्त ॥

प्रथम वेदाचार्य कोई द्वितीय वेदाचार्य बने, कोईक तृतीय वेदाचार्य जो कहाते है। कई चतुर्वेदाचार्य आचार्य बने बैठे, आपहू बहक और जन को बहकाते है। आपही सलूझे नाँय कैसे सलुझावे औरन, आप तो आचार्य बीच अचार बन जाते है। कहे राव मानसिंह आप मे फर्क पड्यो, आपको फरक महा पुरुषन में बताते हैं॥

॥ गान ॥

॥ राग गोरी । ताल कैरवा ॥

यूँ मंत्रन सुन लीजे, लेना हो तो यूँ मंत्रन सुन लीजे॥ टेर॥

देख भूत प्रेत कर पूजा, मुक्त न जूत सहीजे।
मन्त्र से तन्त्र कर यन्त्र करो शुद्ध, जूत इन्हीं के शिर दीजे। लेना हो० ॥ १ ॥
बिगड़यो यन्त्र और तन्त्र कियो नहीं, मन्त्र किता पढ़ लीजे।
तूं मंत्रों से कभी न सुख होवे, चाहे जितो दुःख सहीजे। लेना हो० ॥ २ ॥
मन्त्र मात्र से ही सुख होवत, तो एक एक दूर रहीजे।
किनके पति और नारी कि किनकी, लेना जिता सुख लीजे। लेना हो० ॥ ३ ॥
चारों वेद को भाष्य हम देख्यो, देख के दुःख ना सहीजे।
है तो कुछ और यह क्या कहवे, जिरा सूँ मन ना पतीजे। लेना हो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिले दिव्य दृष्टि, अन्ध होय क्यों रहीजे।
मान ज्ञान कर साफ कहेंगे, चाहे माने न मानीजे। लेना हो० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह जीवणे(१) चले, जगत निकम्मो सोय।
हम तो बायें(२) जायेंगे, थके न खावें कोय ॥
मानसिंह में बल होवे, तो जग बायें ले जाय।
जो जग में बल होयगा, तो जीवणा ले खैंचाय ॥
मैं दृष्टा हूँ जगत का, जगत दृश्य है मोर।
खैंचे दृश्य जो दृष्टा को, तो दृष्टा कमजोर ॥
दृष्टा पण जब ही मिले, जग लेह दृष्टा बनाय।
जो तू दृश्य ही बण गयो, तो लेसी जगत दबाय ॥
जग खैंचन को बल नहीं, तो लहे न दृष्टा नाम।
दृष्टा तो जबही बने, कि ले ले जगत तमाम ॥
रे योगी सीधो रहे, कहा धरे त्रिपुटी ध्यान।

१—परम्परा की रूढ़िवाद का सीधा मारग, २—रूढ़िवाद परम्परा को तोड़ कर आचरण करने का उल्टा मारग।

ध्यान ध्येय और धारणा, सब मेरे एक समान ॥
इड़ा पिंगला सुखमणा, रेचक पूरक छोड़ ।
विश्व सभी निज रूप है, कुम्भक में मन मोड़ ॥

॥ ज्ञान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

सुन पंडित ज्ञानी, मत हो अभिमानी, कर पहिचानी ज्ञान ।
तू क्या पढ़े वेद पुरान रे सुन पंडित ॥ टेर ॥
पूजा करावे प्रेम सूँ रे, लेवे नित रो दान ।
थारो देश नारेलो थारा, इठे छुड़ावेला कौन रे । सुन पंडित ॥ १
एक तो लेवे और सहस्र तू देवे, सुण्यो खजानो कौन ।
साहू की हुण्डी तो सिकरे बरोबर, दूजा देवे ना ज्ञान रे । सुन पंडित० ॥ २
जैसा लेवणिया तैसा देवणिया, दोनों ही एक समान ।
खोटे खत्तों में नाम चुका देवे, इण सूँ तो रहिवे मौन रे । सुन पंडित० ॥ ३
व्यास वशिष्ट पराशर विप्र ज्यांने, कोईयन दीनो दान ।
उनर सारी काम कियो थाँ, जद बाज्या गुणवान रे । सुन पंडित० ॥ ४
आगे पीछे रो थे सौंदो न रखता, देता वे तुरत सुजान ।
धन और सुत थारे हाथ में होता, वे होता ब्रह्म समान रे । सुन पंडित ॥ ५
दशरथ ने सुत परगट होता, गावे वेद पुरान ।
थाँरी बुद्धि ने जो ये ही ज पहोंच्या, थाँरी ने लागे अज्ञान रे । सुन० ॥ ६
थे गुरु होवो और होवो या विद्या, तो तन ही वेर रा दान ।
ऐसे सुजन कृपा टाट छुड़ावे, कहे यूँ सुरति मान रे । सुन० ॥ ७

॥ ज्ञान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

पण्डित किमड़ो तू वेद सुणावे । मेरे विचार मोटो मैं सांचो,
नहीं आवे नहीं जावे रे । पण्डित किमड़ो तू० ॥ टेर ॥

कौण जपे ने जाप फेर किण रो, म्हाँ सूँ जप्यो नहीं जावे ।
आतम जाप माँयलोड़े ने कियो, म्हारे और जाप नहीं भावे रे । पण्डित० ॥ १ ॥
देव है एक सकल जग माँही, सो निज मोंमें समावे ।
दूजे देव सूँ काम सरे नहीं, कुण जो वृथा भटकावे रे । पण्डित० ॥ २ ॥
आनन्द स्वरूपी तो मैं निज मेरो, मोहे क्यों बिसरावे ।
माला मंत्र जपूँ अब किण रो, दूजो निजर नहीं आवे रे । पण्डित० ॥ ३ ॥
"तत्त्वमसि" सूँ वेद तेरो गावे, सोही हम "असि" जो कहावें ।
तत् त्वम् छोड़ असि ने लख जद, पूर्ण पण्डितता आवे रे । पण्डित० ॥ ४ ॥
इसड़ी केवाँ जद थे नहीं मानो, वाँने तो समरथ बतावे ।
अपणी गरज ने खुद समरथ बणो, मन में लाज नहीं आवे रे । पण्डित० ॥ ५ ॥
तुम नहीं समरथ तुम्हें क्यों पूजाँ, समरथ जिकाँने पुजावें ।
सिंह छोड़ भेड़ाँ ने पूजाँ, म्हारे हाथ काँई आवे रे । पण्डित० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु समरथ मेरे, हम भी समरथ कहलावें ।
मानसिंह हम टोली सिंहन की, भेड़ाँ ने शिर क्यों नमावें रे । पण्डित० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

अब चुप रहो मत मोहे बतलावो; अब चुप रहो मत मोहे बतलावो ॥ टेर ॥
मेरी तरफ नहीं तुम देखो; तुमतो अपनी अपनी गावो । अब चुप रहो० ॥ १ ॥
स्वारथ आग मिटे नहीं तुमरी; जावो जावो तुम परे जावो । अब० ॥ २ ॥
तुम्हरे तो यज्ञ हवन मिटे नहीं, जीव फसाय लूटो खावो । अब० ॥ ३ ॥
तुम्हरे तो दान पान भोजन के; गीत उमर भर यही गावो । अब० ॥ ४ ॥
अपनी मुक्ति करलो पहले; फिर मेरी करने आवो । अब० ॥ ५ ॥
खुद तो फँसे जाल माया के; हमें मोक्ष कैसे ले जावो । अब० ॥ ६ ॥
नवग्रह तुम्हारे लगेंगे तुमको; हमें मिथ्या मत डरपावो । अब० ॥ ७ ॥
खोटे वार तिथी सब तुम्हरे; तुमही काल के मुख जावो । अब० ॥ ८ ॥

नित हूं अजर अमर ना मरूं मैं, डारके भरम मत बहकावो । अव० ॥ ६ ॥
जीवित पिंड छोड़ें त्रय वक्त मे, बाद मरे ना देने आवो । अव० ॥ १० ॥
वजा अस हम खाने न आवे, चाहे नरक कुण्ड भल जावो । अव० ॥ ११ ॥
जाबे नाक तो तुम्हे क्या इसकी, हमको छुडाने मत आवो । अव० ॥ १२ ॥
क्या यमराज बाप है तुम्हरो, देकर साख कैसे छुडवावो । अव० ॥ १३ ॥
थोथी बात हाथ नहीं आवे, कोरे कागद क्यों चलवावो । अव० ॥ १४ ॥
देवनाथ गुरु सहज मोक्ष दिनी; मान फंद मे क्यों आवो । अव० ॥ १५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी गाली के डंके "सगीजी ने बरजण आया" की । ताल कैरवा ॥

हाँ ब्रह्म विद्या नहीं जाणे, ये सब अपनी अपनी ताणे ।
ब्रह्म विद्या रही दूर हाथ नहीं, आवे ये कहा बखाणे ।
विद्या नहीं जाणे । ये सब अपनी अपनी ताणे ॥ टेर ॥
व्यास गुणी और वशिष्ठ प्रवीन । जिनके बाल भयो आधीन ।
वे नर उत्तम ज्ञानी हुए सो, ज्योंने सकल जग जाणे । विद्या नहीं० ॥ १ ॥
ब्रह्म विद्या सहजे नहीं कोय । रचना रची आदि जिन सोय ।
उण विद्या ने गुप्त करी यह, भूल कभी नहीं छाणे । विद्या नहीं० ॥ २ ॥
मनु आदि रिषि महर्षि जोय । ज्योंरा वाक्य सत्य ही होय ।
स्वर्ग पाताल और मृत मण्डल मे, जीव मात्र सब जाणे । विद्या नहीं० ॥ ३ ॥
ऋमन सौंप दिवी निफल मिलाय । सो पण ज्ञानी रेवे सॉय ।
परमारथ तज स्वारथ केरे, पडिया ए भव पाने । विद्या नहीं० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु गह कर हाथ । मेट दिवी स्वारथ की रात ।
मानसिंह आतम परमातम, सब घट दीसत सॉने । विद्या नहीं० ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥ ३

अपने घरने मे आरूट तुम आप रहत, हम भी हमारा केहना, कहते कहते जाएंगे । मानो न मानो यह मरजी तुम्हारी मित्रो, बाट जो हमारी यह हमी

रह जायेंगे । आवोगे नहीं तो तुम ही दुःख पावोगे, यदि साथ चलो तो साथ ले जायेंगे । कहे राव मानसिंह अभिमान दूर कर, यहां अभिमान बीच खाली रह जायेंगे ॥

॥ दोहा ॥

एकीयाँ बिन ना रहे, कहता मैं रेहऊँ बाँय ।
मानसिंह करते रहो, कब तक करते जाँय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी, "कोरे कागलिये" की । ताल कैरवा ॥

द्विज लिख मन में निज ज्ञान, कोरो कागदियो ॥ टेर ॥
नित्य कर्म ऊपर करो; ब्रह्म भेद से मती डरो ।
ओ देखो ब्रह्म समान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ १ ॥
अपनी अपनी खेंच मती; आतम लख निज पाय गती ।
यूँ गावे वेद पुराण; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ २ ॥
पढ्याँ पढ्याँ ब्रह्म नाहि मिले; गायाँ सूँ भ्रम नाहि टले ।
कर उर में कछु पहिचान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ३ ॥
सत्यता री स्याही भरो; आतम एक विचार करो ।
भेद ऊगे निज भान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ४ ॥
ज्योतिष देख्याँ नहीं सरे; घर रो मरणो नहीं टले ।
यो देखणो भूल समान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ५ ॥
पाती लिखजो प्रेम तणी; सीधा चालो धार अणी ।
ये छोड़ो पोल पुराण; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ६ ॥
ऋषि महर्षि जन साफ कही; इनमें समझो झूठ नहीं ।
ओ आतम रूप जहान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ७ ॥
पोल कागद ने फाड़ देवो; आतम तत्त्व उघाड़ लेवो ।
यो में डूबे भारत सन्तान; कोरो कागदियो । द्विज लिख० ॥ ८ ॥

देवनाथ गुरु कही वही, मान बात निज मान जही।
ये बात बड़ी आसान छोगे पार्गादियो। द्विज लिख० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बसन्त, तर्ज "बाजे-बाजे रे वृन्दावन मांय, खेलत फाग सुहावनो"

ताल कैरवा ॥

कही मानो, हाँ रे कही मानो रे;
द्विज कुल और सन्त, स्वारथ पणे ने मन सूँ त्यागो ॥ टेर ॥
थे तो सन्त उपदेश छोड़ो मती रे। थाने वेवे, हाँरे थाने वेवे रे;
जैसे वेद और ग्रन्थ। स्वारथ पणे ने मन सूँ त्यागो ॥ १ ॥
थे तो सन्त उपदेश में चित्त जोड़ो। मुख मोड़ो रे, हाँरे मुख मोड़ो रे;
जो है पाप रो पन्थ। स्वारथ पणे ने० ॥ २ ॥
थे तो ब्रह्म उपदेश विचारलो रे। थाँने रटसी, हाँरे थाँने रटसी रे
जग जहाँ अनन्त। स्वारथ पणे ने० ॥ ३ ॥
थे तो ब्रह्म विद्या ने भूल गया रे। जिण सूँ लाजे, हाँरे जिण सूँ लाजे रे,
रिषि कुल कुलवन्त। स्वारथ पणे ने० ॥ ४ ॥
मान कहे द्विज वर सुनलो। बण जावो, हाँरे बण जावो रे,
वेद विद्या गुणवन्त। स्वारथ पणे ने० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बसन्त, तर्ज "बाजे बाजे रे वृन्दावन मांय, खेलत फाग सुहावनो"

ताल कैरवा ॥

कही मानो, हाँरे कही मानो रे; सब सन्त समाज, प्रेम पन्थ छोड़ो मती रे ॥ टेर ॥
गोरख कबीर जैसे सन्त भया। देखो जनक भीष्म सा केता भया।
जिण बान्धी, हाँरे जिण बान्धी रे; सत धर्म री पाज। प्रेम पन्थ० ॥ १ ॥
व्यास वशिष्ठ गुणी कहिये। वाँसे सन्तों री माने लटचे।
ज्यों सूँ रेवे, हाँरे ज्यों सूँ रेवे रे, थाँरी जग माँहि लाज। प्रेम पन्थ० ॥ २ ॥
थाँरी नाई कोई गावणो। जो गावो तो उभ घर आवणो।
बण जावो हाँरे बण जावो रे; जग रा सिरताज। प्रेम पन्थ० ॥ ३ ॥

कहे मान इसो मत भालियो । मैं तो मन माँयले ने पालियो ।
जद जोयो, हाँरे जद जोयो रे; मेरो मैं ही महाराज । प्रेम पन्थ० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल केहरवा ॥

किण ने बात बताऊँ मेरे सन्तो; किण ने बात बताऊँ होजी ।
चोलाक(१)तो चोर(२)से मिलिया, किण ने साथ ले जाऊँ । मेरे सन्तो० ॥ टेर
कही सुणी ये कुछ नहीं माने, किम करके समझाऊँ होजी ।
देऊँ सैन सैन नहीं माने, कहो कैसे सुलझाऊँ । मेरे सन्तो० ॥ १ ॥
तोड़े एक और दोय बिछावे, क्यों कर जीव बचाऊ होजी ।
पक्षापक्ष की गलियाँ साँकड़ी, कहो किण मारग लाऊँ । मेरे सन्तो० ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु नाथ मान के, मन मान्याँ घर आऊँ होजी ।
पक्षापक्ष को दूर निवेड़ी, गुरु गम खोज लगाऊँ । मेरे सन्तो० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कैरवा ॥

समझलो अपने मन में तुम, दोष औरों को क्या देना ॥ टेर ।
कोई कुछ भी कहे तुमको, धरो मत ध्यान तुम उसका ।
करो बन आय सो तुमसे, करो मत और का कहना ॥ १ ॥
वृथा है दोष देना भी, किसी के शिर पे ऐसा ही ।
समझलो दोष अपने का, चले नहीं घर की तुम सैना ॥ २ ॥
करें क्या साधु और ब्राह्मण, जबरदस्ती नहीं किसकी ।
आप दौड़े ही जा जा कर, चरण में मुफ्त शिर देना ॥ ३ ॥
कहा गुरुदेव ने कुछ तो, समझ लिया घर से कुछ हमने ।
मान निज रूप को आमें, किसी का लेना ना देना ॥ ४ ॥

१—पहरेदार=गुरु आचार्य लोग, २—अन्धविश्वास ।

॥ मान ॥

॥ राग आसावरी । ताल दीपचन्दी ॥

अब मोहि• अपनो हि दोष दिखायो । दोष कोई अवर निजर नहीं आयो ॥ टेर ।
पाखण्डी पाखण्ड जो कीनो, मैं ही भरम भुलायो ।
अपनी तरफ कौन गाढ़-ओढी, मैं ही ज ओढू कहायो । अब मोहि० ॥ १ ॥
घर की बात जरा नहीं सोची, औरन के बहकायो ।
दौड़ दौड़ के गयो मैं इनमे, जद अधिकार जमायो । अब मोहि० ॥ २ ॥
आछा बुरा यह मैं पूछ्या, जद इन बाँच सुनायो ।
जत्र मंत्र तंत्र इन कीना, इनमे ही मोय सुनायो । अब मोहि० ॥ ३ ॥
इनको दोष रती नहीं मित्रो, मेरो ही दोष कहायो ।
बिन विश्वास फिर यो मैं बहकन, हाथे ही माल लुटायो । अब मोहि० ॥ ४ ॥
खानों माल भला मुख किणरो, मैं ही खवायो यों खायो ।
मैं अपने घर की नहीं सोची, जब तक वृथा लुटायो । अब मोहि० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड के, ले एकान्त बैठायो ।
बात करी घर की जो होती, विधि-विधि मोय समझायो । अब मोहि० ॥ ६ ॥
कुछ गुरु कही कुछ मन की सोची, दोनों हि मेल मिलायो ।
हाथे कियो दोष अब किणने, करके फिर पछतायो । अब मोहि० ॥ ७ ॥
इनको दोष इतो ही कहिए, साच हु तो ना बतायो ।
अपनो घर सो आप कुण चाले, यह मन में समझायो । अब मोहि० ॥ ८ ॥
साधु न बुरे और विप्र बुरे नहीं, मैं ही बुरो जो कहायो ।
मान कहे अब ही मन मान्यो, मानत अलग होय आयो । अब मोहि० ॥ ९ ॥

॥ मान ॥

॥ राग परज । ताल दीपचन्दी ॥

वृथा विवाद न कीजे, मित्रो वृथा विवाद न कीजे ।
जो कुछ करो अपनी मन आई, तुम अपनो मग लीजे । मित्रो वृथा० ॥

तुम्हो जीव तो जीव रहन दो, नाहक मगज पचीजे।
मेरो तो रूप सकल जग दीखे, तुमते मन न पतीजे। मित्रो वृथा० ॥ १ ॥
मैं अमी अपनो ज्ञान के पीऊँ, क्यों तुम रेत नखीजे।
अलग रहो तुम निकट न आवो, भावे तुम कीच हि पीजे। मित्रो वृथा० ॥ २ ॥
तुम करो अपनी और मैं करूँ अपनी, इनमें न झंझट कीजे।
मेरी माने सो मेरी मानसी, तुम से अन्ध पतीजे। मित्रो वृथा० ॥ ३ ॥
तुमरे वेदान्त सिद्धान्त पढ़े रहो, हमको यह न चहीजे।
मेरो वेदान्त जगत से न्यारो, जग इन माँय रहीजे। मित्रो वृथा० ॥ ४ ॥
तर्क वितर्क कुतर्क करो तुम, बकत वृथा यों छीजे।
मान कहे अब जावो परे तुम, और कोई पकड़ीजे। मित्रो वृथा० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मानसिंह संसार में, मच्यो मोक्ष को शोर।
मोक्ष गाँव न्यारो रह्यो, मारग बड़ो कठोर ॥
मोक्ष मोक्ष की हाकते, बहक्यो जगत तमाम।
वाचालू बातों करे, माया तणा गुलाम ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

नहीं चहिये अस मोई, मोक्ष साधो नहीं चहिये अस मोई ॥ टेर ॥
दूर से दूर बनायत जावे, साच न आवत कोई।
ऐसी मोक्ष ते यों ही भले हम, होय निशंकित सोई। मोक्ष साधो० ॥ १ ॥
पोल के ढोल बजाय बजाय के, सारी जगत डुबोई।
आप नरक में मोक्ष औरन दे, कहो किम कर पत होई। मोक्ष साधो० ॥ २ ॥
इनकी लार धार बहे काली, मत जावो तुम कोई।
इनकी मोक्ष इन्हें ही लेन दो, मूरख जन मति खोई। मोक्ष साधो० ॥ ३ ॥
देवनाथ को साथ कियो जब, मेरी मोक्ष मैं जोई।
मोक्ष स्वरूप हमी तो कहिये, दूजी मोक्ष न कोई। मोक्ष साधो० ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

भूल पर्यो सगरो जग यह नित वेद कहे पर एक न माने
नॉय तजे अपनी यह आदत जावत पन्थ पुराने पुराने
भटकत आये सदा जिसमे फिर नाहि ज पन्थ की राह उठाने
मोक्ष की पोल के ढोल बजे जिसमे भय बहरे सुने नहीं काने
मोक्ष को गॉम कितो अलगो कई लाद चले फिर कोऊ न आने
केतोक लम्बो और चौडा कितो जिसमे सब जाय के जगत समाने
देत प्रमाण न कोई हमे यह मोक्ष हि मोक्ष की हाक मचाने
मान कहे परमाण विना हम मोक्ष की बात कभी नहीं माने।

॥ सवैया ॥

कबीर कबे जिन स्वॉग भरयो अरु जनक कबे भगवॉ जो रँगायो ॥
व्यास कबे जिन भीख हू जॉची कब शुकदेव जो मॉग के खायो।
मान कहे पुरुषारथ कौन उन्हे हरि आप मे सहज मिलायो।
जो पुरुषार्थ होत हुए जन योंहि फिरे और जगत हँसायो।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की। ताल करवा ॥

हाँरे सन्तो करो अपनो व्यवहार, हिम्मत मत हारो रे ॥ टेर ॥
इन व्यवहार मे क्या दुःख होय, इनको देख कर तू क्यो रोय।
हाँरे सन्तो कर लीनी अपनो विचार। हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
जगत जले तेरो क्या लहे, तू इनके पीछे क्यो बहे।
हाँरे सन्तो रहे निर्लेप निराधार। हिम्मत मत हारो रे ॥ २ ॥
त्याग ग्रहण क्यों न्यारो दिखाय, त्याग में जाय नफा क्या पाय।
हाँरे सन्तो क्या है घर बिच हार। हिम्मत मत हारो रे ॥ ३ ॥
क्यों सन्यस्त ले फिरे उदासी; प्रीतम पायो सर्वज्ञ अविनाशी।
हाँरे सन्तो सब को है प्राण आधार। हिम्मत मत हारो रे ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

भूल पर्यो मगरो जग यह नित वेद कहे पर एक न माने ।
नॉय तजे अपनी यह आदत जावन पन्थ पुराने पुराने ।
भटकत आये सदा जिसमें फिर नाहि ज पन्थ की राह उठाने ।
मोक्ष की पोल के ढोल बजे जिसमें भय बहरे सुने नहीं काने ।
मोक्ष को गॉम कितो अलगो कई लाद चले फिर कोऊ न आने ।
केतोक लम्बो और चौड़ा कितो जिसमें सब जाय के जगत समाने ।
देत प्रमाण न कोई हमें यह मोक्ष हि मोक्ष की हाक मचाने ।
मान कहे परमाण बिना हम मोक्ष की बात कभी नहीं माने ॥

॥ सवैया ॥

कबीर कवे जिन स्वॉग धर्यो अरु जनक कवे भगवाँ जो रंगायो ॥
व्यास कवे जिन भीख हू जाँची कब शुकदेव जो मॉग के खायो ।
मान कहे पुरुषारथ कौन उन्हें हरि आप में सहज मिलायो ।
जो पुरुषारथ हीन हुए जन चौंहि फिरे और जगत हँसायो ।

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

म्हारे सन्तो करो अपनो व्यवहार, हिम्मत मत हारो रे ॥ टेर ॥
उन व्यवहार में क्या दुख होय इनको देख कर तू क्यों रोय ।
म्हारे सन्तो कर लोनी अपनो विचार। हिम्मत मत हारो रे ॥ १ ॥
जगत जले तेरो क्या लहे; तू इनके पीछे क्यों बहे ।
म्हारे सन्तो रहे निर्भेर निराधार। हिम्मत मत हारो रे ॥ २ ॥
त्याग ग्रहण क्यों न्यारो दिखाय, त्याग में जाय नका क्या पाय ।
म्हारे सन्तो क्या है घर बिच हार। हिम्मत मत हारो रे ॥ ३ ॥
क्यों सन्यस्त ले फिरे उदासी; प्रीतम पायो सर्वज्ञ अविनाशी ।
म्हारे सन्तो सब को है प्राण आधार। हिम्मत मत हारो रे ॥ ४ ॥

ये उलटी मोये हाँसी आवे; जहाँ जावे निकमो न रहावे ।
हाँरे सन्तो कर रखो अपनो कार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु घर में बतावे; मेरी बलाय बाहर अब जावे ।
हाँरे सन्तो मान सभी अपनो दीदार । हिम्मत मत हारो रे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

बक्ता ज्ञान न कीजे; ज्ञानी बक्ता ज्ञान न कीजे ।
हित अहित को कर विचार मन, साचो ब्रह्म रस पीजे । ज्ञानी बक्ता० ॥ टेर ॥
ब्रह्म ब्रह्म कहे भरम न राखो, अनरथ चित मत दीजे ।
खाँड कयाँ मुख मीठो न होवे, साच कहूँ सुन लीजे । ज्ञानी बक्ता० ॥ १ ॥
जग को कहे खल्विदं ब्रह्म है, उर में विषय बरतीजे ।
यह तेरो ब्रह्म काम नहीं आसी, उलटी मार सहीजे । ज्ञानी बक्ता० ॥ २ ॥
भूल से किये तो माफ भी होवे, थोड़े में भोगीजे ।
जाण के करे जूत लगे दूणा, कोइ न सहाय करीजे । ज्ञानी बक्ता० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ कहे, वाक्य हृदय धर लिजे ।
मानसिंह मत जाण अजाण होय, काँटाँ में पाँव न दीजे । ज्ञानी बक्ता० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

ज्यों वाचो ज्यों ही राचो; ज्ञानी ज्यों वाचो ज्यों ही राचो ।
वाचो और करो कुछ और ही, काम रहे सब काचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ टेर ॥
वाच विचार धार हिरदे बिच; क्या कूड़ो क्या साचो ।
कूड़ कूड़ को दूर निवारो, छाँ लेवो जो है आछो । ज्ञानी ज्यों० ॥ १ ॥
नाँही विचार कियो उर अन्दर; ऊपर वाच्यो ही वाच्यो ।
आप पढ्यो और कईयन पढ़ाये, नाँहि रचायो नहिं राच्यो । ज्ञानी० ॥ २ ॥
औरन को ब्रह्मज्ञान बतावो, आप धरो पग पाछो ।
मान कहे हम साची कहेंगे, चाहे तुम लाल होय नाचो । ज्ञानी ज्यों० ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

राच रही ज्यूँ लाली, हिना(१) बिच राच रही ज्यूँ लाली(२) ॥ टेर ॥
शब्द शिला पर सतगुरु घोटी , कबहू न दरसे काली ।
ज्यूँ घोटी ज्यूँ रङ्ग है चौगुणो, रङ्ग सुरङ्ग खुशाली । हिना बिच० ॥ १ ॥
बाँटी जुगत सूँ गुरु कृपा कर, मिट गई मन बदहाली ।
घोटत घोटत ऐसी घोटी, फिर छगण से टाली । हिना बिच०
पाच(३) पचीस(४) हिना कर घोटे, होय रही लाल गुलाली ।
या हिना को बोही लगावे, पिव रंग(५) में मतवाली । हिना बिच० ॥ ३ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, मिट गई और की स्याली ।
मानसिंह जब बोझ भयो हलको, छूटी द्वैत दुमाली । हिना बिच० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई वाचक ज्ञान तज दीजे रे ।
वाचक ज्ञान आनन्द नहीं उपजे, आयु घटे तन छीजे रे ॥ टेर ॥
बातों कियाँ ब्रह्म नहीं मिलसी, भरम भरम न रहीजे रे ।
ब्रह्म बिचार धार उर अन्दर, तत्त्व अमी रस पीजे रे ॥ १ ॥
जाग्रत होय नींद ने त्यागो, निज असली ओलखीजे रे ।
अपनो ही रूप आप में लख तू, भरम भूत भागीजे रे ॥ २ ॥
देवनाथ को साथ कियो जद, निज आतम ओलखाया रे ।
मानसिंह अब मरे न जन्मे, विश्व विभू में समाया रे ॥ ३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग बिहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई जाग्रत काहे जगावो रे ।

१—संसारिक व्यवहार रूपी मेंहदी, २—आत्मज्ञान, ३—इन्द्रियाँ ४—प्रकृति
५—विश्व-प्रेम ।

नित चेतन चेतं क्या अब हम, भूल भरम नहीं भावो रे ॥ टेर ॥
नहीं मैं जाग्या नहीं मैं सूता, अपनी आ भूल मिटावो रे ।
अपनी भूल डुबावे आपने, ब्रह्म तत्त्व दरसावो रे ॥ १ ॥
जाग्रत बीच जाग्रत निज मेरी, ऐसी सैन समावो रे।
जाग्रत सुपन सुषोपति तुरिया, एक स्वरूप लखावो रे ॥ २ ॥
देवनाथ गुरु मिले ब्रह्मवेत्ता, दर्शन कर सुख पावो रे ।
मानसिंह जद एक रूप भयो, देव में दृष्टा समावो रे ॥ ३ ॥

॥ कुण्डलिया ॥

ब्रह्मज्ञानी अभिमान में, रह जावेला लार।
ज्यूँ खाजे ज्यूँ ऊबके, अन्तर अमी अपार।
अन्तर अमी अपार, पार इनको नहिं पावे।
अमी रूस हो जाय, नहीं जग के दुःख आवे।
तू ही जगत तू ही ब्रह्म है, निराकार साकार।
ब्रह्मज्ञानी अभिमान में, रह जावेला लार।

॥ सवैया ॥

औरन को ब्रह्मज्ञान दहे और आप पड़े भ्रम कूप के माँहि।
औरन को ब्रह्म रूप करे और आप बन्यो जग रूप रहाई।
आप स्वरूप को जाने नहीं जग को कस रूप स्वरूप बताई।
मान कहे यह भ्रम जो तीव्र है देख अती मन में हँसी आई॥

॥ सवैया ॥

ऐक सौ आठ पढ़े उपनिषद् और वेदान्त के सूत्र संभारे।
अपने निज सूत्र को भूल गयो यह औरन को कर ज्ञान प्रचारे।
कहे मान विचार सदा निज सूत्र यह एकहू एक को देखले न्यारे।
सब सूत्र (१) मिलाय के एक किये तब आपही आपनो होत उजारे॥

१—वृत्तियों की ब्रह्म में एकता।

॥ कवित्त ॥

बुद्धि को विवेक कर अन्तरगत छेद (१) कर, अन्तरगत छेद बुद्धि ब्रह्म (२) तू बनाइये। किये हैं चार (३) ताको डार अब दूर (४) ज्ञानी, चारन के बीच एक (४) एक दरसाइये। एक न रह्यो न रहे चार तहाँ देख अब, अपनो स्वरूप तू आप ही कहाइये। कहे राव मानसिंह तू ही है जगत, और जगत को प्रेरक नित साक्षी तू सदाई है॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माळली घर जोय मगुदा मॉही" की। ताल दीपचन्दी

साधो भाई दूर करो रे अज्ञाना।

ज्ञान विचार धार उर माँहि, मेट वृथा अभिमाना रे। साधो भाई० ॥ टेर ॥

करम करन सब जगत पुकारे, कर्म कौन नहि जाना।

करम करे और रहत अकर्ता, सो कम नाँहि पिछाना रे। साधो भाई० ॥ १ ॥

स्वारथ कारज साधे सिद्धायाँ, फिर फिर जगत बहकाना।

अपणी भूल मेट नहीं जाणे, देखो अन्ध दीवाना रे। साधो भाई० ॥ २ ॥

पच पच करत सब कई साधन, माया के अभिमाना।

कर कर धाक जगत के ऊपर, अपनो ही स्वार्थ दिखाना रे। साधो भाई० ॥ ३ ॥

पर उपकारी सो संत सायर रा, आदि अनादि बखाना।

किनको शाप देवे वर किनको, सब उधारे एक समाना रे। साधो भाई० ॥ ४ ॥

एक पर क्रोध खुशी दूजे पर, वो हम साधु न जाना।

मानसिंह वो कुछ न करेगा, ले शिष्य साथ डुबाना रे। साधो भाई० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

झूठ ही झूठ कहे जग को फिर आप कहो सब सत्य कहायो।
आप नहीं जब होवत तो जग काहे को ये फिर नाम धरायो।
जिनसे उत्पन्न उनको ही निन्दत मूढ़ है उनको जो छोड़न चायो।

१—अविद्या को तोड़ना, २—शुद्ध ब्रह्माकार, ३—अन्तःकरण, ४—चारों की एकता

तुम से कहो कब जगत भिन्न है तेरे अन्दर यह जगत समायो ।
मरुधर पति मान कहे सब से कुछ गहे नहीं क्या त्यागन धायो ।
जो जग झूठ तो झूठ तुमही हो जग है सत्य तो सत्य कहायो ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे सन्तो सुणो, यह अचरज मोय आय ।
जिण सूँ थे सब ऊपज्या, खोटी क्यों बतलाय ॥
खोटी तो क्यों ऊपज्या, पड़िया क्यों न आकाश ।
जो पड़ता आसमान सूँ, तो करता विश्वास ॥
गन्दी गन्दी कहत हो, क्यों रह गये नौ मास ।
जब क्या गन्दी ना हुती, अब क्यों करो विनास ॥
जैसी है सो रहण दो, है यह नर की खान ।
उपजे जिणरी निन्दा करो, थे मनुष्य हो या हैवान ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

साधो मत नारी वंश बहकावो ।
मिथ्या ही मिथ्या बको मत मुख से, इनको संकुचित ना बनावो रे ॥ टेर ॥
आप पवित्र देव ज्यूँ बने नित, देखो अकल चौराई ।
आदि की बात कोई नहीं जाने, अपनी तान चलाई रे । साधो मत० ॥ १ ॥
बुरी बुरी कह लूटो इनको, जावो परे क्यों न जावो ।
खान पान सब लेवो इनसे, बुरी न कहत शर्माओ रे । साधो मत० ॥ २ ॥
अक्षर एक न पढ़े बिचारी, ज्यूँन हाथ नीचे रखी चावो ।
गार्गी अनसूया जैसी नारी, जबरयाँ ने सती कह बतावो रे । साधो मत० ॥ ३ ॥
सती क्या थीं वे गुरु थीं तुम्हारी, जिनसे पहलाई बयरावो ।
ज्याँरा रच्या कई सूत्र श्लोक हैं, ज्याँरो अर्थ थेई नहीं पावो रे । साधो मत० ॥ ४ ॥
अब तो कहत अधिकार नहीं इनको, जिनसे न विद्या पढ़ावो ।

नव नाथ और सिद्ध चौरासी, नारी बिना कैसे आवे ।
सर नर मुनि सब नारी से उपजे, फिर क्यों बुरी बतावे । देखो ऐसे० ॥ २ ॥
ग्रन्थ शास्त्र पुरुषन सब कीना, नारी न एक बनावे ।
एक कोई ग्रन्थ नारी जो करती, तो पुरुषन की पोल उडावे । देखो ऐसे० ॥ ३ ॥
गार्गी और अनसूया जैसी, नारी में ही पावे ।
जिनसे पुरुष हार कर बैठे, फिर कहते शर्म न आवे । देखो ऐसे० ॥ ४ ॥
नारी बुरी तो पुरुष भले कब, यह मोहे हाँसी आवे ।
नारी में लाज पुरुष नहीं इतनी, कैसे बड़े बन जावे । देखो ऐसे० ॥ ५ ॥
जो यह बुरी तो क्यों फिर बनाई, दोष ईश में आवे ।
नारी बिना ही नर क्यों न किये, सगरो दुःख मिट जावे । देखो ऐसे० ॥ ६ ॥
नारी ही नारी कर कर इनको, उत्तम देश डुबावे ।
नारी को अब नाहरी कर दे, तो सगरो सुधरावे । देखो ऐसे० ॥ ७ ॥
जब तक नाहरी करें नहीं इनको, तब तक हम दुःख पावे ।
धर्मी विधर्मी शान गमावत, यह दुख सह्यो न जावे । देखो ऐसे० ॥ ८ ॥
गोरख कबीर भरथरी आदिक, तुलसी सूर सुहावे ।
बल्लभ शंकर जैसे कहिये, नारी नर्क कहाँ पावे । देखो ऐसे० ॥ ९ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जब, हाथ पकड़ समझावे ।
मान नारी को नाहरी कर अब, न्यारी रची नहीं जावे । देखो ऐसे० ॥ १० ॥

॥ मान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल केरवा ॥

साधो मेरे नारी पुरुष नहीं कोई रे होजी ।
नारी पुरुष भाव दोय खोया, परमानन्द सुख होई रे । साधो मेरे नारी० ॥ टेर ॥
पाँच तत्व रो घाणो झूठो, सत यामें साता पाई रे होजी ।
देह अभिमान मतलब क्या उससे, आतम एक रस जोई रे । साधो० ॥ १ ॥
आतम एक पुरुष नारी में, जिणने सगलाँ खोई रे होजी ।

प्रत्यक्ष चेतन ख्याल करे नहीं, फिकर है इणरो मोई रे । साधो० ॥२॥
देवनाथ को साथ कियाँ सूँ, ज्ञान रयो नहीं गोई रे होजी ।
आठूँ पहर घड़ी नित चौसठ, मान मगन सुख सोई रे । साधो० ॥३॥

॥ सोरठा ॥

नारी पुरुष न कोय; बालक बूढ़ो है नहीं ।
जीवत मुक्ति होय, माँय लख्याँ सूँ मानसी ॥
नारी होय न ज्ञान, यह स्वप्ने मानें नहीं ।
वो थी नारी कौन, अनुसूया मन्दालसा ॥
गारगी आदि नार, चार वेद भाषण किया ।
जाणे जग संसार, छाने छिपी न मानसी ॥
नहीं यहाँ देह रो काम, काम है ज्ञान विवेक रो ।
भूली नार तमाम, पड़ी बखेड़े मानसी ॥
मल मूत्र की है नार, तो मरद कदे मलयागिरी ।
सब में यूँ ही विकार, जो तन धारी मानसी ॥
नारी में दुर्गन्ध, सुगन्ध मरद में आवती ।
तो जाणत निश्छन्द, नारी मलीन है मानसी ॥
नारिन और स्वभाव, मरद हो और स्वभाव के ।
यह अपणोईज भाव, मन सूँ हटादो मानसी ॥
लाज लाज में लाज, खोई लाज समाज की ।
भारत को सिरताज, सो ज्ञान न दीनो मानसी ॥
नारी में नहीं ज्ञान, दोष सभी मरदाँ तणो ।
कर कर खैंचा ताण, न्यारी राखी मानसी ॥
दे दे अन्धविश्वास, सब ही लूटण में रया ।
बाँध भरम री फाँस, मारी मौत बिन मानसी ॥
मरदाँ रो उपदेश, कर टीका पोथा भरया ।

नारी री उपदेश, राख्यो श्लेष में मानसी ॥
जो होता निष्पक्ष, तो अंग बरोबर राखता ।
एक अंग का भक्त, वे क्यों जीवे मानसी ॥
विधि किया दो अग, एक बाप के लाल दोऊ ।
क्यों कर होवे भंग, राम रूखालो मानसी ॥
पतन देश को होय, अंग बरोबर बिन रख्यॉ ।
पीछे रहसी रोय, भारत धससी भूमि में ॥
अजहू देहु तत्त्वज्ञान, करो नारी मन्दालसा ।
प्रसन्न होय भगवान, दूवी नदया नारदो ॥
विधर्मियों सूँ मार, एक अग रेयाँ सूँ पड़ी ।
दोऊ अग होता तैयार, तो कदे न मरता मानसी ॥
पड़ी एक अग मार, एक अंग देखत रयो ।
शक्ति बिन लाचार, मदद करे किम मानसी ॥
जिण अंग कियो तैयार, जाने प्रत्यक्ष देखलो ।
करने उठी ललकार, जग जाग्रत है मानसी ॥

॥ सवैया ॥

हुए फकीर फिकर फिनको जो फिकर होवे क्यूँ फकीर कहायो ।
कहा बंगले और महल में सोवत कहा कोई जो खाक लेटायो ।
कहा अतर और चन्दन चढावत कहा कोई मट्टी मे लिपटायो ।
फाका किया जो फिकर सबका तब होय फकीर जबे उठ धायो ।
रंग कषाय रंग्यो मन है तो वस्त्र रँगाय भले न रँगायो ।
घर ही मसान मसान ही घर लख जगल शहर सो एक दिखायो ।
मान कहे बेफिक्र भये तब मोहो फकीर फतेपुर पायो ।
भाँड से डॉड फिरे बहुते ये भेख पराय के मूँडो दिखायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल कैरवा ॥

तोहे फिर कोई न सतावे रे, बन जा तू मस्त फकीर ॥ टेर ॥

स्वानवत् फक्कड़ नहीं होना, सुन लेना मेरे वीर।
भेख धार फिर निकमो न रहिये, जब लग रहे शरीर। तोहे फिर० ॥ १ ॥
मेह वृक्ष संत है पर उपकारी, केवे जग सगरीर।
पर उपकार उमर भर करिये, डर धर कँडी धीर। तोहे फिर० ॥ २ ॥
पर उपकार बिन साध न कहिये, वृथा न करिये भीर।
साध पन्थ यह बहुत कड़ो है, सन्मुख सेवे तीर। तोहे फिर० ॥ ३ ॥
चाहे तुम पाँचों कपड़ा पहिनो, चाहे नंगे चाहे चीर।
इन में भलाई नेक न कहिये, साध नहीं छलगीर। तोहे फिर० ॥ ४ ॥
चाहे सूके पकवान मिठाई, चाहे हलवा और खीर।
अच्छे बुरे की कुछ नहीं परवा, वो जीते ही जानो पीर। तोहे फिर० ॥ ५ ॥
लोकहित काज शीश धर देवे, नहीं होवे दिलगीर।
देवनाथ कहे असल फकीर वो, मान सगो ऐसा वीर। तोहे फिर० ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

मस्तान पिये मद यह जब ही दिन दूणी चढ़े उनको मस्ताई।
घूम रहे दिन रात सदा बेख्याल ज्यों घूमत है गजराई।
तीनूँ ही लोक डरे उनसे पर वे किनके डर नाँहि डराई।
मान कहे उन मस्तन को भगवान् भी आन के शीश नँवाई॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग । ताल कैरवा ॥

साधो भाई कद मिटसी अन्धियारो रे।
दीपक बिना जोय रहे आतम, भूल गयो जग सारो रे। साधो भाई० ॥ टेर ॥
असली तत्त्व नहीं ये जाने, नहिं होवे उर उजियारो रे।
भूल पड़े ये जानत नाँहीं, खावत मार अपारो रे ॥ १ ॥
पन्थ अनेक सिद्धान्त अनेकों, कब तक गिन गिन हारो रे।
शास्त्र और ग्रन्थ अनेकों कहिये, थक गयो शेष विचारो रे ॥ २ ॥

धर्म अनेक और इष्ट अनेकों, कर्म अनेक पुकारो रे ।
किनको करे त्याग दे किनको, खोज खोज मति हारो रे ॥ ३ ॥
ममता शील सहनता छोड़ी, आतम भाव निवारो रे ।
पक्षापक्ष मे जीवन सब खोयो, लख्यो न सार असारो रे ॥ ४ ॥
इण अन्धियारे मे हम दुःख पावें, रट्यो कृष्ण हमारो रे ।
अमी को छेड़ जहर हम पीयो, मरण मतो उर धारो रे ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु गीता अमृत, ज्ञान के खूब निकारो रे ।
कृष्ण मथ्यो ऐसो हमको पिलायो, जीवत मोक्ष निहारो रे ॥ ६ ॥
दीपक की क्या देऊँ ओपमा, कोड़ भानु उजियारो रे ।
मान कहे कोई मानो न मानो, मानो तो जीवन सुधारो रे ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "मछली घर जोय समुदा माँहो" की । ताल दीपचन्दी

नाथ म्हाँने मारट साध न चाहिये ।
घर के स्वाँग करे सरदारी, ज्याँ सूँ दूर कर दइये हो । नाथ म्हाने० ॥ टे॥
त्यागी नाम और सम्पति संग्रह, ज्याँ सूँ दूर ही रहिये ।
आपणो स्वारथ स्वारथ नहिं जग रो, ज्याँने कहो क्या कहिये हो । नाथ० ॥१॥
चेला चेली पुत्र सम अपणा, त्याँने धोखा दइये ।
आये विचारे तरण के ताँई, बाँय पकड़ डुबइये हो । नाथ० ॥२॥
होय पिता और काम करे पति को, ज्याँरो मुख न देखइये ।
साधू नाम सीधा होय रहवे, याँरे सीधा पण निकट नहीं है हो । नाथ० ॥३॥
साधन सहित सदा हितकारी, वे म्हाँ सूँ दूर न रहिये ।
चाहे होय भेख गृहस्थ क्यों न होवे, इण रो बन्धन नहीं है हो । नाथ० ॥४॥
देवनाथ गुरु गृहस्थ संन्यासी, जिण सूँ मैं दीक्षा लई है ।
मानसिंह ऐसे दो चार होवे, तो भारत सहज तिरइये हो । नाथ० ॥५॥

॥ दोहा ॥

बंक वचन

बंक कहे सुन मानसिंह, मत कर तू अन्याय ।
षट दरशन है जगत में, जाको शीश नमाय ॥

मान वचन

एक शीश सतगुरु लियो, धड़ पर रह्यो न कोय ।
एक शीश क्षत्री तणो, यह अब नीचो न होय ॥

बंक वचन

बाने से लियो ज्ञान तुम, उनकी काटो बात ।
मुकुट मणी मानो जरा, नमकहराम कहात ॥

मान वचन

जिनसे लीनो ज्ञान हम, वो बाना मिल जाय ।
शीश नमाऊँ तुरत ही, इण में संशय नाँय ॥
मर्यादा राखूँ सदा, सो मैं तोड़ूँ नाँय ।
इष्ट शीश तो फिर नमे, मन फिर नमे न काय ।
मनवो मस्ताँ सूँ मिले, जो मन इकता होय ।
देहवादी ये हैं सभी, मनवो मिले न कोय ॥

बंक वचन

बंक कहे सुन मानसिंह, करे संन्यास को नाश ।
वेद कहे संन्यास को, क्या भयो बावरो व्यास ॥
जो संन्यास होतो नहीं, तो व्यास काहे को कहत ।
तुम तो खण्डन कर रहे, करो कौन के हेत ॥

मान वचन

मान कहे कबिराज सुन, कह्यो असल संन्यास ।
वेद कह्यो मैं सो कह्यो, नहीं बावरो व्यास ॥

देखा देखी करेई नहीं कीजे; पन्थ खएडे री धार। फकीरा० ॥ ३ ॥
नगन होय क्या फिरे जगत में, बैठा शरम उतार।
काम ने क्रोध पहरिया कपड़ा; याँने देवो जार। फकीरा० ॥ ४ ॥
ए तो कपड़ा बन्या सूत रा; तू पहर भलांई यार।
कफनी क्रोध डार दे तन सूँ, जद तोहूँ रग अपार। फकीरा० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु मन रंग दीनो, श्रो रँग्यो रहत हर बार।
मानसिंह अन्दर रंग लागो; कौण रंगे म्हारे बार। फकीरा० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

भेद फकीरी न भाय, सन्तो मोहे भेद फकीरी न भाय।
कहे कुछ और करे कुछ अवर ही, मिथ्याँ ही स्वाँग लताय; सन्तो० ॥ टेर ॥
औराँ ने तो ब्रह्म बतावे, खुद की खबर न पाय।
घर रो जीव भाव नहीं जावे, औराँ रो कैसे मिटाय। सन्तो मोहे० ॥ १ ॥
पिछले कुटुम्ब ने छोड़ने आया, और अगले में लिपटाय।
इणने त्याग नको क्या कारण, दिवी आ जहाज डुबाय। सन्तो मोहे० ॥ २ ॥
देह का भाव बराबर दरसे; बाताँ ही ब्रह्म बणाय।
हुकम अदूली कोई शिष्य करदे, चट अग्नि भड़काय। सन्तो मोहे० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु नाथ कियो मोहे; अब न अनाथ रहाय।
मानसिंह जग रूप मेरो सब, कहूँ मैं ढोल बजाय। सन्तो मोहे० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

नहीं ज्याँरे चाय अनाय, फकीरा समदृष्टि दरसाय ॥ टेर ॥
कहा धनवान् गरीब कहा है; दूजो निजर नहीं आय।
सब पर कृपा रहे नहीं कोई खाली; आतम रूप लखाय। फकीरा० ॥ १ ॥
कहा बालक और वृद्ध कहा है; क्या पशु पक्षी कहाय

अपनो रूप सकल में दरसे; भिन्न बतावे नाँय । फकीरा० ॥ २ ॥
जब लग देह भाव रहे न्यारो; तब लग ही दुःख पाय ।
मरे और जन्मे जन्मे फेर मरणो; उल्टा ने सीधा जाय । फकीरा० ॥ ३ ॥
भगवाँ भेष सफेद कहा ज्याँरे; एकहि भाव दिखाय ।
घर ही बन और बन ही घर है; सो घर तज कहाँ जाय । फकीरा० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कियो मोहे समर्थ; अब असमरथ कौन रहाय ।
मानसिंह जग मेरो रूप है; न्यारो दीसत नाँय । फकीरा० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

होय निडर ज्याँरो काम; फकीरा, ज्याँसूँ ही रीझे राम ॥टेर॥
निरस होय नहीं बैठे जग में; करता रहे सब काम ।
बोले चाले उठे बैठे; आतम में विश्राम । फकीरा होय० ॥ १ ॥
धारे भेख अलेख न चीन्हे; मन ज्याँरे कंचन काम ।
माग सन्यस्त वृथा ही लजावे; खायने करत हराम । फकीरा० ॥ २ ॥
धरके भेख टेक नहीं राखे; अजगर होसी तमाम ।
ऊपर धूप धूल जले नीचे; कभी न मिले आराम । फकीरा० ॥ ३ ॥
असल फकीरी वे नर पावे; जल्यो देश आशाम ।
मानसिंह काम मरदाँ रो; क्या करे विषयी गुलाम । फकीरा० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

साधो ऐसो देखो मैं हूँ मस्त फकीर ।
रहूँ मैं फकीर और काम करूँ सब; फिर भी अजब अमीर । साधो० ॥ टेर ॥
राज करें और दुःख नहीं हमको; कबहु न हो दिलगीर ।
दुःख को दुःख नहीं सुख को सुख नहीं; ऐसी अमर जागीर । साधो० ॥ १ ॥
शाहों का शाह फकीर फकीरों का; क्या करे [illegible]

बंक वचन

बंक कहे हो मानसी, मिले अनन्त जो सन्त ।
हमको कुछ लागी नहीं, नहीं पायो कुछ तंत ॥
जिनको आप सराहत हो, वे ही मिले केई बार ।
तदपि आनन्द ना मिल्यो, भयो शब्द नहीं पार ॥

मान वचन

या में कसूर न सन्त को, कसर आप में होय ।
भँवरे तणो कसूर कहा, शब्द सुणे नहीं कोय ॥
तू नहीं खट उण जाति को, कि जिनसे भँवरा होय ।
मान कहे सुनिये कवि, सन्तन दोष न कोय ॥

॥ सवैया ॥

नाम वैरागी धरयो अपनो और राग अपार जो पार नहीं है ।
क्रोध की झाल उठे तन में जिन नेकहू ज्ञान विचार नहीं है ।
नाम तो सन्त धरे पुनि आपने सन्तपने को संचार नहीं है ।
मान कहे हम साची कहें इनमें कुछ झूठ लिगार नहीं है ॥

॥ दोहा ॥

वैरागी मुख से कहें, देखो अर्थ विचार ।
गृहस्थी हुते तो कम हुती, अब भई राग अपार ॥
पहिले खात कमाय के, फुरसत मिली न कोय ।
अब तो बैठे खात हैं, काम यही तब होय ॥
वेद गिनो चाहे शास्त्र तुम, रामायण है एक ।
इनके सिवा जाणे नहीं, उसको भी नहीं विवेक ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

देखो क्यौंरो मन न भयो है वैरागी होजी ।

राग ने द्वेष रती नहीं निकस्या, भया है चौगुणा रागी रे। देखो अॅरो० ॥टेर॥
ऊपर है त्याग आडम्बर धारे, आशा उर नहीं त्यागी होजी।
मुख मिटावण भेष धर्यो शिर, शबद चोट नहीं लागी रे। देखो० ॥ १ ॥
मूरख कों कहे खाई भाँग क्यूँ, यहाँ तो प्रत्यक्ष ही फाकी होजी।
नाम ही भाँग भरम कैसे भागे, उलटी अकल ने भाँगी रे। देखो० ॥ २ ॥
गोला रा गोला चरस धरत है, जोन चिलम पर जागी होजी।
यॉ मे अकल जो आवे कठे सूँ, आग अकल ने लागी रे। देखो० ॥ ३ ॥
मुख आवे ए बके बलधाँ ज्यूँ, साध नहीं है स्याँगी होजी।
ऊपर अन्ध अन्ध ज्यारो हिरदो, ब्रह्मज्योत नहीं जागी रे। देखो० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, मन री भरमना भागी होजी।
मानसिंह पाणी सूँ पग फाक्या, जद मैं अमल भयो पागी रे। देखो० ॥ ५ ॥

॥ कवित्त ॥

सीताराम कहत मुख जोर जोर हाक करत, मानो लगूर सो स्वाँग ये दिखावे है। भस्मी रमाय देह चन्दन को नाश करत, सैठो आडबन्ध ले कमर जो कसावे है। करत लगोटी गाढी मल्लम को लेप करत, साक्षात रूप जाणे प्रेत सो दिखावे है। धाक से डरावे जगत क्रोध मानो शेष जैसो, समता को भाव जाके लेश हूँ न आवे है। राग को न पार जहाँ नाम के वैरागी कहत, कुंडी मिचाई बीच जगत ठग खावे है। कहे राव मानसिंह ऐसो नहीं भाय मोको, ऐसे सन्तों से मोहे राम ही बचावे है॥

॥ कवित्त ॥

सेर सेर पीये भंग खडक रहे कुण्डी घोटा, लाल लाल आँख करत जगत को डरावे है। कहत फिर दाउदयाल दहूत अयोध्या के लाल, आप तो डुबे नाम बड़ो के डुबावे है। जादू और टोना करत माल मता सकल हरत, सेर सेर चरस भङ्ग गाँजो मँगावे है। कहे राव मानसिंह ऐसे नहीं भावे सन्त, देश को डुबावे याँ को काल हू न खावे है॥

॥ सवैया ॥

आवे जिसी घस मारत हैं ये अर्थ कहा इन को न विचारे ।
अर्थ करे कोई छेड़त हैं तबही ये लेके चिम्मट मारे ।
जाते डरें सब बोले नहीं कोई चोरन आगे हैं ढोर ही सारे ।
मान कहे कछु नाँय डरें हम सिंह के सुत है कौन के सारे ॥

॥ सवैया ॥

नाँय रहे इतने ही में सीधे ये और नई नई बातें बनावें ।
लोहे को सुवर्ण ताम्बे को रूपो रसायन को बिश्वास दिलावें ।
मोंदू हे जीव भूले बपुरे जिनते इन गुरुडन हाथ ठगावें ।
लोहा न सोना न ताम्बा न रूपा है अपनी झूठी दुकान जमावें ।
मान कहे मैं तो मानूँ नहीं विश्वास हमें इनको नहीं आवे ।
दूर से शीश नमावत हूँ मैं तो पहिले ही ते नहीं मुँह लगावे ॥

॥ कवित्त ॥

राम रक्षा के सिवा दूसरो न मन्त्र कोई, तामें भी शुद्ध मंत्र पढ़नो न आवे है । तुलसीकृत रामचरित्र सिवा नहीं ग्रन्थ पढ्यो, घणी हद करे तो बालमीक गावे है । जैसे गुरु मूर्ख तैसे शिष्य भी मिले मूर्ख, भूखे सिधाई के दौड़ दौड़ जावे है । द्रव्य को उतार लेत आप से बनाय देत, भंग गाँजा चरस पीनो साथ में सिखावे है । लकड़ को जलाय देत द्रव्य हू की करे रेत, देखो अनत मैलो कैसे मूढ़ गुरु ध्यावे है । कहे राव मानसिंह इनमें जो सिद्धाई होय, बैठे क्यों न रहे काहे माँग माँग खावे है ॥

॥ दोहा ॥

मान कहे हो नाथ जी, कीजे ब्रह्म विचार ।
बिन निज ब्रह्म विचारियाँ, दूणी पड़सी मार ॥

॥ सवैया ॥

स्वाँग धर्यो सिर नाथ पने को नाथ पनो तर नाँय निभायो ।

मायत्र माँगे जवाव जबै तब देनो तुम्हें जो कठिन रहायो।
नाथ को हाथ लियो सिर पे हमने तो नाथ पने को निभायो।
मान कहे गुरुदेव कृपा कर मोहि तो नाथ सही जो बनायो॥

॥ सवैया ॥

भेष दियो नहीं कान जो फारे ना हमको उन भीख मंगाई।
आपही पूरण नाथ हुते बस ही हमको निज घूँटी पिलाई।
मेट दिवी सब ताप मेरी उन आपके बीच में दीन लखाई।
मान कहे जब जान परी तब जाय मिले हम नाथ के माँई॥

॥ सवैया ॥

चाहे रहो तुम जायके वन में चाहे रहो तुम शहर निवासी।
चाहे रहो तुम गृहस्थ बीच में चाहे बनो बन जाय संन्यासी।
चाहे खुशी और खेल करो तुम चाहे रहो सब ही से उदासी।
मान कहे मन स्थिर न होवे तब तक तुमको नहीं सुख आसी॥

॥ सवैया ॥

ना उतते कुछ जोग सध्यो और ना इतते कुछ भोग भोगायो।
ना उतते जो वैराग हुवो और ना इतते तैं गृहस्थ कमायो।
ना उतते त्रिवेणी को देखी इत चन्द्र-मुखी को गले न लगायो।
मान कहे धृक स्वाँगन में तैं तो स्वाँग धरयो योंही जीवन बितायो॥

॥ दोहा ॥

माला फेरत मसखरा, तिलक करत वेईमान।
जिन अन्तःकरण माँजियो, सोही सन्त सुजान॥

॥ कुण्डलिया ॥

स्वामी सरड़ा सेवड़ा, संन्यासी दरवेश।
भलो बिगाड़यो भेख ने, कर स्वारथिया भेष।

कर स्वारथिया भेष, बात हित री नहीं जाणे।
करत हैं वाद विवाद, नहीं वे असल पिछाणे।
निज वैराग आगो रयो, आगो रह गयो देश।
स्वामी सरड़ा सेवड़ा, संन्यासी दरवेश॥

गीता महिमा

॥ सवैया ॥

चारों हि वेद तो गाय बनी एकादश उपनिषद् पय पाये।
ज्ञान का बच्छा भया तिनते उपनिषद् का पय पान कराये।
ताहि को कृष्ण ने ताया अति षट शास्त्र की छाछ सबी छिटकाये।
गीता सो घृत निकाल लियो जो निकाल के पारथ को लै पिलाये।
देहुनाथ कृपा करके उस घृत को स्वाद हमें जो चखाये।
मान वो पीते ही मस्त हुए जब मस्त हुए तब सहज समाये॥

॥ सवैया ॥

दश और एक पढ़े उपनिषद् चारों हि ब्रह्म के वाक्य सुनाये।
और षट शास्त्र के मंत्र पढ़े तदपि तृप्ति उर में नहिं आये।
पुराण अठारह को बाँच लिये कछु औरहि और जो और बताये।
मंत्र हजारों हि याद किये पर ऐसो तो मंत्र कोई न सिखाये।
कृष्ण कृपा कर पार्थ को यह गीता को मंत्र भले समझाये।
मान कहे ऐसो घृत हमें फिर कृष्ण कृपा करके जो पिलाये॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "सोढे सूमरे" की। ताल धीमा कैरवा॥

धर्म भूमि और कुरुक्षेत्र रे माँय, सजनो म्हारा रे।
कोई पारथ सूँ गिरधारी हँसने बोलिया रे, म्हारा लाल॥ टेर॥
भलो डरयो तू लड़ने सूँ मन माँय, मित्र हमारा रे।

कोई कविता ने कायर री चारण जोड़सी रे, म्हारा लाल ॥ १ ॥
कुन्ति मात री दूध जो देवे लजाय, मित्र हमारा रे ।
कोई कलक जो लागे रे कुन्तीभोज ने रे, म्हारा लाल ॥ २ ॥
डूबे-डूबे पाण्डु राव री जहाज, मित्र हमारा रे ।
कोई दुश्मण देवला थाँने मैंणा रे, म्हारा लाल ॥ ३ ॥
फिट रे अर्जुन यूँ मन काची लाय, मित्र हमारा रे ।
कोई म्हारो तो रथ हाँक्यो मुफ्त गुमावसी रे, म्हारा लाल ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अर्जुन वचन

कुटुम्ब घात मैं न करूँ, लाज भलाँई जाय ।
पुत्र पौत्र सब ही खड़े, वंश नाश हो जाय ॥
ताते माँग के खावणो यही निश्चय मैं कीन ।
खड्ग चलाणो नहीं बणे, सब ही बिचारे दीन ॥

कृष्ण वचन

जो तुमको लड़नो नहीं, तो क्यूँ लायो मोये साथ।
अब मैं जाणे ना देऊँ, करणो पड़सी घात ॥
पाप पुण्य मोही सबे, तुम्हें पाप नहीं होय।
लड़णो पड़सी खेत मे, जाण न देऊँ तोय ॥

अर्जुन वचन

कुटुम्ब हनन हत्या बुरी, महापाप की चाल।
अब पाछा चालो परा, मान लेवो गोपाल ॥
राज सबी हर लेन ये, जिनकी परवाह नाँय।
धर संन्यस्त द्वारे फिरूँ, माँग माँग कर खाय ॥

भजन का अन्तरा

कृष्ण वचन

माँग के खाणो तो पहिले क्यूँ नहीं खाय, मित्र हमारा रे ।

तैं किण ने हिम्मत सूँ झगड़ो साँभियो रे; म्हारा लाल ॥ ५ ॥

जो लेणो तो पहला लेत संन्यास, मित्र हमारा रे ।

कोई अब तो संन्यासी होवण ना देऊं रे; म्हारा लाल ॥ ६ ॥

रण में आयाँ गुरु कुटुम्ब कोई नाँय, मित्र हमारा रे ।

कोई लड़वाने आया तो समझो काल सा रे; म्हारा लाल ॥ ७ ॥

भय दीनो पण अर्जुन मान्यो नाँय, सजनो म्हारा रे ।

कोई तब तो गिरधारी जुगति उपाय ली रे; म्हारा लाल ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण वचन

कुण मारे और कुण मरे, तज अर्जुन अज्ञान ।
आतम अज अम्मर सदा, पारथ गह कर ज्ञान ॥
पाप पुण्य में भूल के, तू पारथ गयो फँसाय ।
धर्म भूमि में खेलताँ, पाप लगे कछु नाँय ॥
नित्य कर्म करतो रहे, करत करत मर जाय ।
सो पारथ दुःख ना गहे, मुझ में रहे समाय ॥

भजन का अन्तरा

अर्जुन वचन

जप तप सुमरण करणो नित्त को काम, प्रभु जी म्हारा हो ।

कोई बणे तो हाथाँ सूँ दान दिलावणो रे; म्हारा राज ॥ ९ ॥

देणो देणो गौवाँ सुवर्ण दान, प्रभु जी म्हारा हो ।

कोई दीन जनों पर दया राखणी रे: म्हारा राज ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

सुन पारथ के वैन ये, बोले कृष्ण सरोष ।
यूँ जाणूँ क्यों आवतो, लग्यो संग को दोष ॥
भीष्म पिता दादा तेरे, उनसो ज्ञानी नाँय ।

परशुराम से क्यों लडे, उनको पूछो जाय ॥
शान्तनू राजा हुते, तुम उन वश के मॉय ।
लाखों जीव उण मारिया, कौन नरक बतलाय ॥
भीष्म पिता दादा तेरो, उण सम पापी नॉय ।
जाय देश गभार मे, खोस के वन्या लाय ॥
मारण मरण यह काम है, क्षत्री तणो सुजान ।
नीच कर्म को छोड़ दे, नित्य कर्म पहिचान ॥
जप तप यज्ञ और दान सब, पीछे जाय कर लेह ।
लहे गाडीव को हाथ मे, के शिर लेह या देह ॥
इतनी कही पर ना लग्यो, फेर कही गोपाल ।
अब तो म्हनो मान ले, नहीं तर होय बेहाल ॥

॥ सोरठा ॥

जाणी मन गोपाल, अर्जुन दिल मे बहक गयो ।
होसी खोटो हाल, निज सख्य याही समझाय दो ॥

भजन का अन्तरा

कृष्ण वचन

जो तू करे सो नित्य करम ही जाण, मित्र हमारा रे ।
कोई नित्य करम सूँ अर्जुन ना टलो रे; म्हारा लाल ॥ ११ ॥
पढणो पढाणो कहिये विप्र को काम, मित्र हमारा रे ।
और वैश्य जो करे नित वणिज ब्यौपार ने रे, म्हारा लाल ॥ १२ ॥
रण में आयने मत हिम्मत ने हार, मित्र हमारा रे ।
कोई ओई ने क्षत्री रो नित्य जो करम है रे; म्हारा लाल ॥ १३ ॥
शूद्र होय सेवा सूँ चूके नॉय, मित्र हमारा रे ।
कोइ करम परवाणे जाति जाण ले रे; म्हारा लाल ॥ १४ ॥

चारों वरण हैं सब ही मेरे माँय; मित्र हमारा रे ।
कोई म्हारो ही स्वरूप जगत ने जाण ने रे; म्हारा लाल ॥ १५ ॥
मो में कौरव पाँडव कोई नाँय, मित्र हमारा रे ।
कोई नहिं तो यादव ने ना कोई ग्वाल है रे; म्हारा लाल ॥ १६ ॥
तुम हम इन तुम कहिये एकम एक, मित्र हमारा रे ।
कोई कुण तो मारे ने कुण जो मर सके रे; म्हारा लाल ॥ १७ ॥
यह तो समझ तू देह थकाँ सब भाव; मित्र हमारा रे ।
कोई देह तो मिटियाँ सूँ म्हारे माँयने रे; म्हारा लाल ॥ १८ ॥
पंचभूत और तिरगुण मेरो रूप, मित्र हमारा रे ।
कोई पाप ने पुण्य सब म्हाँने जाण ले रे; म्हारा लाल ॥ १९ ॥
ऊठो अर्जुन उठने करो संग्राम, मित्र हमारा रे ।
कोई साचो ने बताऊँ मारग जोग रो रे; म्हार लाल ॥ २० ॥

कवि वचन

असल योग री कही अर्जुन ने बात, सजनो म्हारा रे ।
कोई जद तो अर्जुन उठ सन्मुख लड़ रह्यो रे; म्हारा राज ॥ २१ ॥
कर कर बोल्यो गाँडीव टंकार, सजनो म्हारा रे ।
अब देरी नहीं कीजो ने झगड़ो छेड़दो रे; म्हारा राज ॥ २२ ॥
दिवस अठारह भारत खूब हि कीन, सजनो म्हारा रे ।
कोई गिरधर रो कयोड़ो उर बिच धारियो रे; म्हारा राज ॥ २३ ॥
नहीं लागो जाने पाप पुण्य रो लेस, सजनो म्हारा रे ।
ये तो आखिर बिलिया में सिलिया श्याम में रे; म्हारा राज ॥ २४ ॥
थोड़े में बरणी जो गीता सार, सजनो म्हारा रे ।
कोई ज्यादा ने कैयाँ सूँ सुण्यो न जावसी रे; म्हारा राज ॥ २५ ॥
नहीं अर्जुन ने दियो श्याम संन्यास, सजनो म्हारा रे ।
कोई नाँही कुशा ने जनेऊ धारली रे; म्हारा राज ॥ २६ ॥

नहीं बिठायो यज्ञ हवन रै माँय, सजनो म्हारा रे।
कोई भेदी तो वणियोड़े ने सिद्ध बणावियो रे; म्हारा राज ॥ २७ ॥
मारण मरणो सदा हमारो काम, सजनो म्हारा रे।
कोई निश्चय राखौ जो आतम ज्ञान ने रे, म्हारा राज ॥ २८ ॥
दीनो दीनो देवनाथ यही ज्ञान, सजनो म्हारा रे।
कोई मान तो माने यूँ जीवत स्वर्ग में रे, म्हारा राज ॥ २९ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "सोढ़े सूमरे" की । ताल कैरवा ॥

देखो देखो गीता ग्रन्थ विचार, सजनो म्हारा रे।
कोई केशवजी संन्यासी पारथ ने ना कियो रे, म्हारा राज ॥ १ ॥
जीवन मुक्ति पाण्डव सुत ने दीन, सजनो म्हारा रे।
कोई गीता तो सुणाई रण खेत मे रे, म्हारा राज ॥ २ ॥
नहीं वहाँ होतो जप तप यज्ञ रो काम, सजनो म्हारा रे।
कोई नहीं तो होतो ऊठे मारग जोग रो रे; म्हारा राज ॥ ३ ॥
नहीं पण होतो मृतक काल रो काम, सजनो म्हारा रे।
कोई राजा ने पाण्डु ने कई दिन बीतिया, म्हारा राज ॥ ४ ॥
जो अर्जुन ने देत कृष्ण संन्यास, सजनो म्हारा रे।
कोई हस्तिनापुर तज आवे क्यूँ रण खेत में रे, म्हारा राज ॥ ५ ॥
ए सब वाला कल्पी पोल पुराण, सजनो म्हारा रे।
कोई सार्योड़े घृत में छाछ ने भेलदी रे, म्हारा राज ॥ ६ ॥
अवविश्वास सूँ नैणाँ दोखे नाँय, सजनो म्हारा रे।
कोई निकल्योड़ो घृत पाछो छाछ में ना मिले रे, म्हारा राज ॥ ७ ॥
स्वारथिया ए निज घृत पावे नाँय, सजनो म्हारा रे।
कोई छाछ ही पाय पाय ने देश डूबावियो रे; म्हारा राज ॥ ८ ॥
अन्तकाल में दे गीता रो ज्ञान, सजनो म्हारा रे।

कोई जिण माँही स्वारथ री बाताँ ए केवे रे; म्हारा राज ।। ९ ।।
बोलचाल भी लागे खारी जहर, सजनो म्हारा रे ।
कोई एडी रे बिल्लियां में गीता क्या सुणे रे; म्हारा राज ।। १० ।।
तन थिर मन थिर वचन नहीं थिर होय, सजनो म्हारा रे ।
कोई शिर पर तो बाजा बाजे काल रा रे, म्हारा राज ।। ११ ।।
देखो जग रो कैड़ो अंधविश्वास, सजनो म्हारा रे ।
कोई स्वारथिया लूटे इण भारत देश ने रे; म्हारा राज ।। १२ ।।
सब सूँ ऊँचो उत्तम गीता ज्ञान, सजनो म्हारा रे ।
कोई स्वारथियां बिगाड़्यो गीता ग्रन्थ ने रे; म्हारा राज ।। १३ ।।
परहित कारण पारथ कृष्ण संवाद, सजनो म्हारा रे ।
कोई स्वारथियां रुलायो रतन ने राख में रे; म्हारा राज ।। १४ ।।
अर्जुन सुणे तो धरे कृष्ण अवतार, सजनो म्हारा रे ।
कोई दुराचारियों रो पाणी काट दे रे; म्हारा राज ।। १५ ।।
गीता समझो अखिल विश्व रो सार, सजनो म्हारा रे ।
थे तो मन्तर ही मात्र गीता मत जाणजो रे; म्हारा राज ।। १६ ।।
गीता कहिये असल व्यवहार समुद्र, सजनो म्हारा रे ।
कोई रंचक भर नहीं मारग इण में त्याग रो रे; म्हारा राज ।। १७ ।।
गीता ग्रन्थ ने लख्यो भरतूराज, सजनो म्हारा रे ।
कोई उण रे भाग्य में निश्चय जाण लो रे; म्हारा राज ।। १८ ।।
देवनाथ गुरु गीता घृत से लेय, सजनो म्हारा रे ।
कोई सोई ने पिलायो घृत मानने रे; म्हारा राज ।। १९ ।।
मानसिंह ज्यांरो भूले नहीं एहसान, सजनो म्हारा रे ।
म्हांने सतगुरु नहीं मिलता तो खाली रेवता रे; म्हारा राज ।। २० ।।

।। दोहा ।।

रंक कहे सुन मानसिंह, यह मोहे हांसी आय ।

इतनी कहाँ फुरसत हती, जो गीता दई समझाय ॥
पट श्लोक है सात सौ, सेना दोऊ तैयार ।
ताहि समय कैसे कही, येहि विधि कृष्ण विचार ॥

॥ कवित्त ॥

एक हू पद को अर्थ जो करे कोऊ, केती ही घडी तामें करत बीत जात है। यह हुते सात सौ कैसे कहे कृष्णचन्द्र, एक दिवस कहा कई दिवस गुजर जात है। ऐसी यह बड़त बातों में तो नहीं मानूँ मान, कहो समझाय क्या यह झूठी कही जात है। बिना विश्वास कहो बात कैसे माने हम, तुम जो कहत बात समझ मे न आत है। कहे कवि बक यह वंक है बात तेरी, बिना सीधी कियाँ बिना वृथा ही लखात है। आप बिना कौन यह स्पष्ट समझावे मान, गुणिजन को काम अमी ज्ञान के पिलात हैं ॥

॥ दोहा ॥

मान हँसे सुखते मधुर, कवि बंक कहा कीन ।
छानो तू पछु ना रह्यो, बोल उठ्यो परवीन ॥

॥ कवित्त ॥

थोडी सी कही कृष्ण अर्जुन भी सुनी थोडी, दोनों चतुर हुते उन सैनी समझायो है। वेदव्यास जैसे विज्ञानी पुरुष हाजर तहाँ, दोनों को भाव देख ग्रन्थ यह बनायो है। दूजी हू न समझ याको समझ तू कृष्ण वाक्य, कृष्ण और व्यास कोई दोष ना कहायो है। जामें थे आत्मदर्शी सूझे थे नाहिं दोऊ आतमदर्शिन के विरव सगरो समायो है। कहे राव मानसिंह वंकी न समझ याको, तोको कहा वंकी बक वंक तू कहायो है। तू तो है प्रवीण कवि तोको समझाऊँ कहा, तेरो हित नाँय हित तैं औरन को चायो है ॥

॥ दोहा ॥

पर हित कारण तैं कियो, मोते यह संवाद ।
मैं तो ते अति खुश भयो, समझूँ नाँय विवाद ॥

।। राग काफी । ताल दीप चन्दी ।।

वंक वचन

धन्य तुम्हारी माई। बात सब खोल सुनाई; धन्य तुम्हारी० ।। टेर ।।
कृष्ण कही अर्जुन के तांई, क्या हाजिर थे वहाँई।
हाजिर होय जिम बात कही तुम, कसर रखी कछु नाँई। बात सब० ।। १ ।।

मान वचन

मैं हूँ अनादि आज को नाँही, यह क्या शंका आई।
तुम हम हम तुम केते जन्म लिये, अबके हि मारग राई। बात सब० ।। २ ।।

वंक वचन

हमें तो बात याद नहीं नृपति, तुम्हें किम याद रहाई।
हम तुम न्यारे या भेले होते, यह समझावो गुसाँई। बात सब० ।। ३ ।।

मान वचन

भास मात्र तुम हम दोऊ हैं, कितनी बार बताई।
भास उड्यो महा भास में मिल गयो, तब कहाँ दोय दिखाई। बात सब० ।। ४ ।।

वंक वचन

क्या तुम व्यास कृष्ण खुद आये, यह संशय मन माँई।
कितने झमेड़े हटत नहीं निश्चय, दिन दिन साफ दिखाई। बात सब० ।। ५ ।।

मान वचन

मोते व्यास कृष्ण कब भिन्न थे, झूठी शंका चलाई।
खोट नहीं तो निकसत कहाँ ते, कितनो ही छेड़ भलाँई। बात सब० ।। ६ ।।

वंक वचन

क्या कहूं बात समझ नहीं आवे, तुम खुद बोलो गीताई।
बार बार मैं कहूँ आपको, तुम नहीं रूठत कदाई। बात सब० ।। ७ ।।

मान वचन

याके रोम क्रोड़ कहा करिये, तू मेरी आतम पाई ।
आतम धन यह अखूट खजाना, ज्यों बाँटे त्यों बधाई । बात रख० ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिले थे, जिन हू न बात छिपाई ।
मान छिपावे क्या अकल है खोई, गुप्त रख्यॉ गुम जाई । बात रख० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

गीता गीता क्या करे, नहीं तायो तो नाय ।
स्वारथियां स्वारथ वशी, दीवी छाछ मिलाय ॥
ओ घृत चट ही गुधरसी, मिलियो रहसी नॉय ।
मन ने पकड़ निज मन करे, तो छाछ सभी उड़ जाय ॥
जो तू घी नहीं ता सके, तो गुरुमुख होकर ताय ।
स्वारथिया गुरु ना करो, फिर देसी स्वारथ मिलाय ॥
आगे स्वारथ वहु मिल्यो, कियो अरथ अनरथ ।
साचा गुरु जो केवली, सुणसी होय पारथ ॥
पारथ हो गीता सुने, तो गुरु की पोल उड जाय ।
कृष्ण रूप गुरु ठहरसी, पोल जिकाँ में नॉय ॥
श्रोता भी पारथ नहीं, तो गुरु कृष्ण किम होय ।
गल्ती दोनों में रही, समझया नहीं है कोय ॥
शिष्य जाने गीता सुनी, पूरो कीयो नेम ।
गुरु जाने मतलब कियो, नहीं दोनो मे प्रेम ॥
मानसिंह अस शिष्य गुरु, वे ऊँडे कूवे जाय ।
चाहे तो पढ़ गीता सुनो, चाहे वेद सुनाय ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "मारवाड़ी डंके" की । ताल कैरवा ॥

होवे होवे जो पारथ समान, ज्यांने गीता भावे रे ॥ टेर ॥

नहिं गीता सुन ले संन्यास; नहिं वह जग से रहे उदास ।
दीखे जन अपने समान । ज्यांने गीता० ॥ १ ॥
गीता जीवन मोक्ष कहे सोय; ऐसी मुक्ति सहजे होय ।
देखो देखो वेद प्रमाण । ज्यांने गीता० ॥ २ ॥
खाटो खारो चरपरो नाँय; स्वादि ने इनमें स्वाद न आय ।
पड़े हैं नरक की खान । ज्यांने गीता० ॥ ३ ॥
स्वारथ बस प्रमाण क्या दीन; पढ़ के तोते मोक्ष ने लीन ।
देखो क्या गहरो है अज्ञान । ज्यांने गीता० ॥ ४ ॥
भवन वृक्ष तल प्रेत गमाय; सिर्फ गीता को पाठ पढ़ाय ।
मत होवो अति रे अजान । ज्यांने गीता० ॥ ५ ॥
तन तरु मन मन्दिर जो कहाय; क्रोध प्रेत तो निकस्यो नाँय ।
पढ़ पढ़ दीवी उमर गुमाय । ज्यांने गीता० ॥ ६ ॥
तोते ज्यों पढ़ पढ़ परवीन; शिष्य जो शंका कुछ भी न कीन ।
हरे नमः कह कर वक्त बिताय । ज्यांने गीता० ॥ ७ ॥
हरे नमः अर्जुन कर जाय; तो यह गीता बनती नाँय ।
कृष्ण भी नाँय सुनाय । ज्यांने गीता० ॥ ८ ॥
पद पद ऊपर शंका कीन; पैंड एक नहीं जावण दीन ।
जब हुवे अठारह अध्याय । ज्यांने गीता० ॥ ९ ॥
यहाँ तो दी प्रथा उल्टी डार; शिष्य को पूछन नहिं अधिकार ।
गुरु चाहे कहीं दे गिराय । ज्यांने गीता० ॥ १० ॥
देवनाथ घर कृष्ण अवतार; कियो मान को परले पार ।
क्यों कर भूलूँ मैं अहसान । ज्यांने गीता० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माड । ताल दादरा ॥

यह गीता प्यारी, नर और नारी, देखो समझ विचार ।

जिन्हें भावी वसुदेव कुमार रे; यह गीता० ॥ टेर ॥
पाठ पाठ में रहीजो मनी रे; कर कर लाख हजार।
गीता पढ़जो ने प्रेम लगाजो, लखजो सार असार रे। यह गीता० ॥ १॥
कृष्ण जी जैसे तो योगी सुनाई, सुनी अर्जुन से चतुर सरदार।
वेद व्यास जैसे कविता बद्ध कीनी, गलती न होय लिगार रे। यह गीता० ॥ २॥
मन्त्र स्वरूप जानली इसको, कीनो अति उपकार।
सार असार विचार न कीनो, डूब गये मझधार रे। यह गीता० ॥ ३॥
गीता जैसो घृत है अमृत, रहे जमी पर डार।
मानुष तन फिर और न मिलसी, होसी कष्ट अपार रे। यह गीता० ॥ ४॥
देवनाथ गुरु हाथ पकड़ के, दीनो शुद्ध विचार।
मान कहे रे धन्य महा पुरुषों, धन्य है लाख हजार रे। यह गीता० ॥ ५॥

॥ गान ॥

॥ राग मॉड। ताल दादरा ॥

निज प्यारा हमारा, नैनों का तारा, क्यों रूठा करतार।
यह करलो मन में विचार रे, निज० ॥ टेर ॥
उनके तो प्रेम की नदियें बहती, यहाँ पर जाल ही जाल।
उनके तो ज्ञान विज्ञान भरा था, यहाँ पर चाल कुचाल रे। निज० ॥ १।
उनने तो गीता ताया हुआ घृत, दिया था तुमको निकाल।
उल्टी कुमति यह हुई तुम्हारी, फिर दिया छाछ में डाल रे। निज० ॥ २।
गीता पढो और प्रेम से रहो, राजी हो दीनदयाल।
वाड़ा बन्दी को छोड़ दो भाई, कभी न खावे काल रे। निज० ॥ ३॥
वाड़े की भेड़ों को बाहर निकालो, और सिंह करो तत्काल।
हो हुशियार ललकार करो तो, दूर भगे सब जाल रे। निज० ॥ ४॥
गोरख कबीर और दादू नानक, काल दिया शिर से टाल।
गीता के अमृत को छान के पीया, राजी हुआ नन्दलाल रे। निज० ॥ ५।

मान कहे कोई मानो न मानो, मेरा तो बदला ख्याल ।
देवनाथ ने हाथ गह्यो जब, भाग्यो अन्देश को जाल रे । निज० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

मन गीता वाक्य उर धर रे । कृष्णचन्द्र ने प्रगट प्रकार्यो,
जाको दूर मत कर रे । मन० ॥ टेर ॥
सब तज शरण एक की रह नित, निर्भय होय विचर रे ॥ १ ॥
सब तज दे तो शरण कौन की, यह संशय परहर रे ॥ २ ॥
सर्व तज्यो पर आप तज्यो नहीं, वाही की शरण सुमर रे ॥ ३ ॥
मान आप अपने की शरण बन, सब बंधन ते टर रे ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज मारवाड़ी "डंके" की । ताल कैरवा ॥

पढ़ गीता रहे रीता उन्ही को धूड़ जमारो रे, अर्थ निज नाँय विचारो ॥ टेर ॥
गीता मंत्र समान ही जान; होय बिमार सुणावत आन ।
स्वारथ हित ये करत सबी नहीं अर्थ विचारो रे । अर्थ निज० ॥ १ ॥
समझे कृष्ण यशुमति को लाल; उनको खाय अवश्य ही काल ।
कृष्ण रहे यूँ विश्व बीच में व्यापक सारो रे । अर्थ निज० ॥ २ ॥
देख कृष्ण को आतम रूप; सबी भूत को आप स्वरूप ।
अखंड रूप लख लेहे अविद्या दूर ये डारो रे । अर्थ निज० ॥ ३ ॥
गीता कही उण अर्थ विचार; कृष्ण समान गुरु को धार ।
तारण कारण कष्ट कियो यह कृष्णजी सारो रे । अर्थ निज० ॥ ४ ॥
देवनाथ कल्याण के रूप; मेट दिवी जिन त्रिविध की धूप ।
मान जान निज रूप नैन बिच सहजे निहारो रे । अर्थ निज० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

कीनो है जुलम अपार रे, जिन गीता बिगाड़ी । कीनो है ॥ टेर ॥

कोई कहे ये सांख्य योग है; कोई कहे त्याग पुकार रे। जिन गीता० ॥ १ ॥
कोई कर्मकाण्ड लो मेले, जुदाई जुदा मत धार रे। जिन गीता० ॥ २ ॥
गीता यह जो ताया घृत है, खाद्य दिए संसार रे। जिन गीता० ॥ ३ ॥
मत्र ही मात्र कहे गीता को, पढ पढ मरती वार रे। जिन गीता० ॥ ४ ॥
तत्वमसि और समता भाव ले, सुख सूं करणो व्यवहार रे। जिन गीता० ॥ ५ ॥
गीता पढाय भेष दे जिनको, उनके पड़े सुख द्वार रे। जिन गीता० ॥ ६ ॥
ये तो खबर पड़े प्यारो जब ही; कृष्ण धरे अवतार रे। जिन गीता० ॥ ७ ॥
मान कहे ये गीता ऐसी, सगले जगत रो सार रे। जिन गीता० ॥ ८ ॥
॥ मान ॥

॥ राग परज। ताल धमाल ॥

फेर धरो अवतार रे, निज तत्त्व सुनावो। फेर धरो० ॥ टेर ॥
सब उपनिषद् सार बतायो, मेट्यो मेट्यो द्वैत विकार रे। निज तत्त्व० ॥ १ ॥
मिथ्या मोह पारथ ने घेर्यो; दिवी है ज्ञान तलवार रे। निज तत्त्व० ॥ २ ॥
उपज्यो ज्ञान खड़ो भयो अर्जुन, करके लड्यो ललकार रे। निज तत्त्व० ॥ ३ ॥
तुम बिन गिरधर कौन बचावे; भारत डूबे मझधार रे। निज तत्त्व० ॥ ४ ॥
यह स्वारथिया उलटी बतावे; अब तो छुड़ावो आँसूं लार रे। निज तत्त्व० ॥ ५ ॥
सुरपति सुत को ज्ञान दियो जैसे, ऐसे ही दीजे पधार रे। निज तत्त्व० ॥ ६ ॥
सब ही देश सुरक्षित रहवे; कर समता रो व्यौहार रे। निज तत्त्व० ॥ ७ ॥
मान कहे मोये फिकर न मेरो; तारे तो भारत खंड तार रे। निज तत्त्व० ॥ ८ ॥
॥ मान ॥

॥ राग भैरवी। ताल धमाल ॥

गर जो गीता न होती तो रहते योंही; अनमोल अभी नहीं पाते कभी। टेर ॥
श्रीकृष्ण ने महर करी कैसी; जिन गीता अमोल धरी कैसी।
जिन्हें पढ़ते ही द्वैत गई कैसी। अनमोल० ॥ १ ॥
गोपाल ने सब कुछ ठीक किया, मतवादी बखेड़ा मिटाय दिया।

जब नाथ ने आ अवतार लिया। अनमोल० ॥ २ ॥
गीता सी गाय दिवी हमको; जिन आते ही दूर किया तम को।
सब खोज लिया अपने दम को। अनमोल० ॥ ३ ॥
इस गाय को दुह के दूध लिया; तब बुद्धि के माट जमाय दिया।
अब तर्क वितर्क विलोना किया। अनमोल० ॥ ४ ॥
सब छाछ बखेड़ों को दूर किया; निज तत्त्व का घृत यह लूण लिया।
जिन शीश दिया उन घृत पिया। अनमोल० ॥ ५ ॥
यह गैया मेरी मरने की नहीं; चोरों से कभी हरने की नहीं।
और दूध से यह टरने की नहीं। अनमोल० ॥ ६ ॥
हैं हम इनके जो बाछड़िया; गो गीता का पय हम खूब पिया।
हम पीते ही पीते एक रूप भया। अनमोल० ॥ ७ ॥
गुरु देवनाथ गोपाल मिले; वे कर्ता अकर्ता ग्वाल मिले।
हम भान इन्हीं के लाल मिले। अनमोल० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

भरी क्या रोशनी गीता में; ऐसी कृष्ण ने प्यारी ॥ टेर ॥
जो जाने है वही जाने, विचारे ज्ञान से इसको।
न जाने मूर्ख जन भूले, हुए कंकर के व्यौपारी ॥ १ ॥
जबर है रोशनी सबसे, न कह सकते कोई शोभा।
पुराण और बेद सब खोजे, तो सबसे रोशनी न्यारी ॥ २ ॥
न होते कृष्ण दुनिया में, पिलाते कौन मथ के घृत।
स्वारथियों ने बिगाड़ी है, छाछ इसमें जो फिर डारी ॥ ३ ॥
निकाला फिर नहीं मिलता, जबरदस्ती मिलाते हैं।
पृथक आती नजर है यह, स्वार्थ की छाछ जो न्यारी ॥ ४ ॥
यज्ञ और हवन का करना, भेष धर बन में बीचरना।

काम क्या था वहां करना, अन्धविश्वासता डारी ॥ ५ ॥
अगर सन्यास ही करना, मराये काहे को कौरव ।
किया यह कृष्ण क्यों ऐसा, हिंसा का पाप दुख कारी ॥ ६ ॥
तजो इस अन्धता को अब, उघाड़ो आँख उर देखो ।
कहे यूं ज्ञान ब्रह्मविद्या, भरी गीता में है सारी ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

उगाया एक नया सूरज, हमारे कृष्ण प्यारे ने ॥ टेर ॥
अन्धेरा छा रहा गहरा, न सूझे कर से कर भी तो ।
दया कर भारत के ऊपर, उगाया अर्थ दुलारे ने ॥ १ ॥
स्वारथी फिर से ये करते, अन्धेरा भारत भूमि में ।
उड़ा के मान्यता को ये; मिटाते फिर उजारे को ॥ २ ॥
उघाड़ो ज्ञान की आँखे, मिटा दो फिर अन्धेरे को ।
सभी दुनिया को कीया तंग, इसी भ्रम के अन्धेरे ने ॥ ३ ॥
ज्ञान इस बात को मानी; न जाऊं मैं अन्धेरे में ।
कृपा कर चानणा दीया, मेरे यशुमति दुलारे ने ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

रेख पर मेख मारी है, हमारे कृष्ण प्यारे ने ॥ टेर ॥
भाग्य की रेख को रोते, बितादी उम्र सारी को ।
पढ़ाया मंत्र गीता का; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ १ ॥
जो अर्जुन भाग्य को रोता, विजयी नहीं कभी होता ।
उतारा भार भूमि से; हमारे कृष्ण प्यारे ने । रेख० ॥ २ ॥
अगर किस्मत को वो जोते, मिटता कस मान दुष्टों का ।
हटाये दैत्य भूमि से; हमारे कृष्ण प्यारे ने रेख० ॥ ३ ॥

जो करते करम का खण्डन, करें क्यों कर्म कृष्ण जो खुद।
ज्ञान से युक्त कर्म करना; बताया कृष्ण प्यारे ने। रेख० ॥ ४ ॥
करम को साथ लेकर के, ज्ञान की वृद्धि बतलाई।
योग और यज्ञ का रस्ता; दिखाया कृष्ण प्यारे ने। रेख० ॥ ५ ॥
कर्म है जोकि शुभ करना, योग है आप में जुड़ना।
यज्ञ है सबके रङ्ग शामिल; बताया कृष्ण प्यारे ने। रेख० ॥ ६ ॥
मिटादो रेख क़िसमत की, इसे तुम झोंको आगी में।
बनो मत आलसी यारो; बताया कृष्ण प्यारे ने। रेख० ॥ ७ ॥
अगर रोते हो क़िसमत को, पढ़ो मत कृष्ण की गीता।
पढ़के क्यों बोझ उठाते हो; बताया कृष्ण प्यारे ने। रेख० ॥ ८ ॥
कहे नृप मान सब सुनिये, भारतवासी बहिन भाई।
बड़ा अनमोल यह अमृत; पिलाया कृष्ण प्यारे ने। रेख० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

राग भैरवी, रेखता। ताल कवाली ॥

अगर श्रीकृष्ण नहीं होते, अन्धेरे में ही रह जाते।
उगाता कौन यह सूरज, यूँ ही भव बीच बह जाते ॥ टेर ॥
अन्धेरा छा रहा गहरा, न दिखता पाणी से पाणी।
उमर तो है यह थोड़ी सी; इसी में यूँ ही चले जाते ॥ १ ॥
कृपा कर कृष्ण ने दीया, नेत्र यह ज्ञान का हमको।
अगर नहीं गीता को करते; तो जंगल बीच रह जाते ॥ २ ॥
कृपा कर कृष्ण ने हमको, पिलाया ज्ञान का अमृत।
नाहक मिसरी के धोखे में; डली कहीं जहर खा जाते ॥ ३ ॥
मिले गुरु नाथ जी हमको, लियां अवतार गिरधर का।
कहे यूँ मान निज जोया; मरें क्यों पोल के खाते ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, रेखता । ताल कवाली ॥

पढ़े हम मन्त्र गीता का, अमर रहते हमेशा हैं ।
उठा सिर कृष्ण का कहना, अमर रहते हमेशा हैं ॥ टेर॥
कवच हम पहन गीता का, खड़े रण बीच में झूके ।
उड़ाके फौज दुश्मन की । अमर रहते० ॥ १ ॥
भरे हैं बाण तरकस में, चलाये यह नहीं खूटे ।
सहे हम बाण ब्यौहार के । अमर रहते० ॥ २ ॥
बनें जंगल के क्यों जोगी, दिखा के दिल मे कायर पन ।
कवच जो अमर पहना है । अमर रहते० ॥ ३ ॥
अगर हम मरने से डरते, कवच क्यों गीता का पहनें ।
करे क्यो खुद को शरमिन्दा । अमर रहते० ॥ ४ ॥
पहन लो कवच गीता का, शाह संसार के बनलो ।
चक्र चले लोक तीनो में । अमर रहते० ॥ ५ ॥
कहे यूँ मान निश्चय से, शाहनशाह हैं हम दुनिया के ।
जगत सब रूप मेरा है । अमर रहते० ॥ ६ ॥

प्रेम महिमा

॥ दोहा ॥

पीओ प्याला प्रेम का, जो कोई पीआ जाय ।
बिन पायाँ पीजो मती, पीयो तो पचसी नाँय ॥

॥ चौपाई ॥

और घृत पिवत बिमारी मिटावे । प्रेम घृत पीए तो बिमार हो जावे ॥
तातें पिओ समझ कर भाई । पिया जिके नर जीया नाँई ॥

॥ गान ॥

॥ राग गौरी । ताल कैरवा ॥

प्रभु है प्रेम से राजीः सुन्यो है मैं तो प्रभु है प्रेम से राजी ॥ टेर ॥
वेद कुरान प्रेम बिना पढ़ई, मूरख पंडित काजी । सुन्यो० ॥ १ ॥
प्रेम के नेम कायदा कौनसा, रात दिवस रहे साजी । सुन्यो० ॥ २ ॥
हरि ने रिझावन एक न जाने, माया रिझावन पाजी । सुन्यो० ॥ ३ ॥
शबरी गणिका गीध गवालन, कौन गायत्री साधी । सुन्यो० ॥ ४ ॥
नेम आचार कायदा टूटे, प्रेम घटा सिर छाजी । सुन्यो० ॥ ५ ॥
मान कहे हम सत्य कहेंगे, चाहे कोई राजी नाराजी । सुन्यो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल तिताला ॥

वो मग रह गयो न्यारो; साधो वो मग रह गयो न्यारो ॥ टेर ॥
अजामील गज गनिका लीनो, मग पकड़यो जिन सारो ।
यों हो बको उण मग नहीं जावो, तो कैसे मिले पिव प्यारो । साधो० ॥ १ ॥
शवरी निषाद आदि सन्त जन, जिन निज मारग विचारो ।
मारग विचार उजड़ नहीं चाल्या, तो कट गयो पैंडो सारो । साधो० ॥ २ ॥
आदि भक्तन गाय गाय कर, बील्यो सगरो जमारो ।
आप चल्याँ बिन राह कटे नहीं, बक बक के मत्व मारो । साधो० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु कीन दया जब, दरस्यो पंथ हमारो ।
मानसिंह या मग कोई आवे, सो मोहे लागत प्यारो । साधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग प्रभाती । ताल कैरवा ॥

सब जग रूप हमारो; सन्तों सब जग रूप हमारो रे ॥ टेर ॥
ऊँच नीच मेरे क्या कोई, ये नहीं दुःख अगारो रे ।
सब में मैं और मुझ में सब हैं, एको एक आधारो रे । सब जग० ॥ १ ॥

क्या हिन्दू और तुर्क कोई थे, झूठो झौड तुम्हारो रे ।
आतम रूप सबहि में ओलख्यो, भरम उड़ायो सारो रे । सब जग० ॥ २ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र यह, मेरे वर्ण नहीं थारो रे ।
ब्रह्म जनेऊ पहर गले में, मिट गयो द्वैत विकारो रे । सब जग० ॥ ३ ॥
नहीं मैं खप्पर हाथ उठाऊं, नहीं दंड को धारो रे ।
भगवां रंग न भेष नहीं धारूं, ना कोई बनूं भिखियारो रे । सब जग० ॥ ४ ॥
पतड़ो नॉय पढ़ूं मैं कबहू, ना कोई ज्योतिष विचारो रे ।
तीसों ही तिथि बरोबर समझूं, गरू ही सातों वारो रे । सब जग० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, उलझन सूं कियो न्यारो रे ।
कहे मानसिंह सुनो भाई साधो, आतम दृष्टि निहारो रे । सब जग० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

क्या कहूँ कहि न जाय, लछमण क्या कहूँ कहियन जाय ॥ टेर ॥
प्रेम नदी में मैं जो बह रयो; मोसूं समरथ नॉय । लछमण० ॥ १ ॥
त्रिप ऋषियाँ रे प्रेम न अन्तर, कोय भक्तो जग मॉय । लछमण० ॥ २ ॥
शबरी गरीब प्रेम कैसो इसके, नाम लियां हृदय भर आय । लछमण० ॥ ३ ॥
जहां अभिमान तहां मैं नहीं रेहऊँ, जिनके गरीबी तहां जाय । लछमण० ॥ ४ ॥
कहत कहत शबरी गुण रघुवर, लीनी हृदय लगाय । लछमण० ॥ ५ ॥
नयन सजल जाणे बहत परनाला, विरह व्यथा नाय समाय । लछमण० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु मान मथ शबरी; राम गरीबी सुहाय । लछमण० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग । ताल कैरवा ॥

ऊँच नीच नहीं म्हारे, लछमण भैया ऊँच नीच नहीं म्हारे ॥ टेर ॥
जब बन मांय जो बनफल खाये; तब कहां विप्र हतारे ॥ १ ॥
भील किसान निशाचर लागे; सोई फल कीन अहारे ॥ २ ॥

जात न पूछी मैं तो थरो न पूछ्यो; आतम जात विचारे ॥ ३ ॥
शबरी के बेर भूठे नहीं खाते; भूख मरत रैन सारे ॥ ४ ॥
प्रेम प्रभाव कहां लग वरणूँ; वरण वरण हम हारे ॥ ५ ॥
मानसिंह हरि भक्त भक्ति वश; बार ही बार पुकारे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

निषादभैया कर म्हांने गंगा पार, तरन तांई नाव मँगावो हो ॥ टेर ॥
प्रभुजी म्हारी सुनो हो बात रघुनाथ, म्हाने थारी पत नहीं आवे हो ॥ टेर ॥
पाहन नार अहल्या उड़ गई हो। प्रभुजी म्हारी उड़ जावे काठ की नाव,
कमाय के किण सूँ खावे हो ॥ १ ॥
थांरी चरण रज इसड़ी कहिये हो। प्रभुजी म्हारा धोयलूँ तो आवे विश्वासि,
पछे म्हारी नाव चढ़ाऊँ हो ॥ २ ॥
मन मुस्काय सिया से हरि बोले हो। जनक सुता पांव धोवण यह चाहत,
जिके सूँ सारी बात बनावे हो ॥ ३ ॥
लावो लावो जल वेग मँगावो हो । निषाद भैया मन आवे सो कर लेय,
थांने हम कछु न कहावे हो ॥ ४ ॥
कनक कटोरो भर कर लायो हो। प्रभुजी म्हारा पतित पावन पग धोय,
हर्ष मन नांय समावे हो ॥ ५ ॥
आप पियो ने कुटुम्ब ने पायो हो। प्रभुजी म्हारा दियो भवन छिड़काय,
कटोरे नीर रहायो हो ॥ ६ ॥
हँस कर कहे रघुनाथ सुन भैया हो। निषाद भैया अब करो परले पार,
काहे को देर लगावो हो ॥ ७ ॥
सब मल्लाह मिल जहाज चलायो हो। प्रभुजी म्हारा गावे वे प्रेम सूँ गीत,
गायन थांरा बहुत सुहावे हो ॥ ८ ॥
लक्ष्मण सूँ रघुपति फरमावे हो। लक्ष्मण भैया कैसो थांरो सुन्दर गान,

कहा हिन्दू और तुर्क कोई बे, झूठो मौड़ तुम्हारो रे ।
आतम रूप सबहि में ओलख्यो, भरम उड़ायो सारो रे । सबे जग० ॥ २ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र यह, मेरे वर्ण नहीं चारो रे ।
इन अनेक पथ गने से, मिट गयो द्वैत विकारो रे । सबे जग० ॥ ३ ॥
नहीं मैं न्यारा हाथ उठाऊं, नहीं दंड को धारो रे ।
भगवा रंग न भेष नहीं धारूँ, ना कोई बनूँ भिखियारो रे । सबे जग० ॥ ४ ॥
पतड़ो नांय पढ़ूँ मैं कबहू, ना कोई ज्योतिष विचारो रे ।
तीसों ही तिथि बराबर समझूँ, एक ही सातों वारो रे । सबे जग० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जब, उलझन सूँ कियो न्यारो रे ।
कहे मानसिंह सुनो भाई साधो, आतम दृष्टि निहारो रे । सबे जग० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

क्या कहूँ कहि न जाय, लक्ष्मण क्या कहूँ कहियन जाय ॥ टेर ॥
प्रेम नदी में मैं जो बह रयो; मोसूँ समरथ नाँय । लक्ष्मण० ॥ १ ॥
विप्र ऋषियों रे प्रेम न अन्तर, क्रोध भट्ठी जगे माँय । लक्ष्मण० ॥ २ ॥
शबरी गरीब प्रेम कैसो इसके; नाम लियां हृदय भर आय । लक्ष्मण० ॥ ३ ॥
जहां अभिमान तहां मैं नहीं रेहऊँ, जिनके गरीबी तहां जाय । लक्ष्मण० ॥ ४ ॥
कहत कहत शबरी गुण रघुवर; लीवी हृदय लगाय । लक्ष्मण० ॥ ५ ॥
नयन सजल जाणे बहत परनाला, विरह व्यथा नांय समाय । लक्ष्मण० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु मान मय शबरी; राम गरीबी सुहाय । लक्ष्मण० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग । ताल कैरवा ॥

ऊँच नीच नहीं म्हारे लक्ष्मण भैया ऊँच नीच नहीं म्हारे ॥ टेर ॥
जब मन मांय जो बनफल खावे, तब कहां विप्र हमारे ॥ १ ॥
भील किरात निशाचर लावे; सोई फल कीन आहारे ॥ २ ॥

जात न पूछी मैं तो वर्ण न पूछ्यो, आतम जात विचारे ॥ ३ ॥
शबरी के बेर झूठे नहीं खाते; भूख मरत रैन सारे ॥ ४ ॥
प्रेम प्रभाव कहां लग बरणूँ; बरण बरण हम हारे ॥ ५ ॥
मानसिंह हरि भक्त भक्ति वश; बार ही बार पुकारे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल । ताल दीपचन्दी ॥

निपादभैया कर म्हांने गंगा पार, तरन तांई नाव मँगावो हो ॥ टेर ॥
प्रभुजी म्हारी सुनो हो बात रघुनाथ, म्हाने थारी पत नहीं आवे हो ॥ टेर ॥
पाहन नार अहल्या उड़ गई हो। प्रभुजी म्हारी उड़ जावे काठ की नाव,
कमाय के किण सूँ खावे हो ॥ १ ॥
थांरी चरण रज इसड़ी कहियें हो। प्रभुजी म्हारा धोयलूँ तो आवे विश्वास,
पछे म्हारी नाव चढ़ाऊँ हो ॥ २ ॥
मन मुस्काय सिया से हरि बोले हो। जनक सुता-पांव धोवण यह चाहत,
जिके सूँ सारी बात बनावे हो ॥ ३ ॥
लावो लाओ जल वेग मँगावो हो। निपाद भैया मन आवे सो कर लेय,
थांने हम कछु न कहावे हो ॥ ४ ॥
कनक कटोरो भर कर लायो हो। प्रभुजी म्हारा पतित पावन पग धोय,
हर्ष मन नांय समावे हो ॥ ५ ॥
आप पियो ने कुटुम्ब ने पायो हो। प्रभुजी म्हारा दियो भवन छिड़काय,
कटोरे नीर रहायो हो ॥ ६ ॥
हँस कर कहे रघुनाथ सुन भैया हो। निपाद भैया अब करो परले पार,
काहे को देर लगावो हो ॥ ७ ॥
सब मल्लाह मिल जहाज चलायो हो। प्रभुजी म्हारा गावे वे प्रेम, सूँ गीत,
गायन वांरा बहुत सुहावे हो ॥ ८ ॥
लक्ष्मण सूँ रघुपति फरमावे हो। लक्ष्मण भैया कैसो वांरो सुन्दर गान,

जिण सूँ मन आगे न जावे हो ॥ ६ ॥
गंगा रो नीर थोड़ो ही रयो तिरनो हो । लछमण भैया म्हाँने भावे इण रो गान
नही इण सूँ वढ क्यों न जावे हो ॥ १० ॥
पार पहुँच ने राम हँस बोले हो । निषाद भैया लीजे उतराई आप,
माँग तुम जो चित चावे हो ॥ ११ ॥
क्या मैं माँगूँ क्या तुम देवो हो । प्रभुजी म्हारा खुद तो धार्यो है संन्यास,
आप बन माँय सिधावो हो ॥ १२ ॥
घर संन्यास ने महमान आया म्हारे हो । प्रभुजी म्हारा क्या माँगूँ माँगी न जाय,
उतराई अब पास तुमारे हो ॥ १३ ॥
तुम हम एक ही तारक कहिये हो । प्रभुजी म्हारा अपणो है एक ही काम,
उतराई फिर क्यों कर लीजे हो ॥ १४ ॥
तुम भी केवट केवट हम कहिये हो । प्रभुजी म्हारा केवट सूँ केवट कैसे लेय,
जवाब म्हाँने इण रो कहिये हो ॥ १५ ॥
जो चाहो तुम मजूरी देणी हो । प्रभुजी म्हारा कर दीजो भव पार,
फेर कछु देनी न लेनी हो ॥ १६ ॥
आज री ड्योढ़ी भूल मत जाइजो हो । प्रभुजी नहीं तो रह जावे सिर अहसान,
याद हर वक्त रखाजो हो ॥ १७ ॥
ऊंडी प्रीत गुहा की देखी हो । प्रभुजी म्हारा हृदय मे प्रेम विशेष,
हरि हंस कंठ लगावे हो ॥ १८ ॥
ऊँच ने नीच वर्ण नहीं प्रेम में हो । लछमण भैया जद तन मन शुध होय,
प्रेम ज्याँरे हिरदे समावे हो ॥ १६ ॥
देह को भाव जो निषाद जाणतो हो । लछमण म्हाँने कह देतो दश थ लाल,
पतित पावन काहे को बतावे हो ॥ २० ॥
ज्ञानी राम गुहा पण ज्ञानी हो । मित्रो वो तो मिलिया पूरबिया एक,
पूरबिया सूँ प्रेम बढ़ावे हो ॥ २ ॥

देवनाथ गुरु मिले हैं पूरबिया हो । प्रभुजी म्हारा प्रीत पूरबली जाण,
पूरब रो प्रेम जगायो हो ॥ २२ ॥
मानसिंह निषाद जिकाँरो हो । प्रभुजी म्हाँने जीवत कियो भव पार,
सहजे ही जीते स्वर्ग समायो हो ॥ २३ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

धीरे चलावो नाव; केवट भैया धीरे चलावो नाव।
हम किसो पड़ियो रे भाई क्या ताकीदी; मीठे मीठे स्वर सूँ गाय ॥ टेर ॥
थारा तो गायन भैया अमृत सो लागे; ऐसा म्हे तो सुणिया नाँय। केवट० ॥ १ ॥
राधा ज्याँरी सुन्दर भैया बोल ज्याँरा मीठा; लघुता रो रस ज्याँरे माँय ॥ २ ॥
नदी तो छोटी भैया गायन सुहावे; या में थोड़ी देर लगाय। केवट० ॥ ३ ॥
धीरी न चले तो भैया इणने रोकदे; गाय ने पूरो सुणाय । केवट० ॥ ४ ॥
तान ने ताल म्हाँने याद नहीं आवे; कोई दुःख नहीं दरसाय। केवट० ॥ ५ ॥
गायन नहीं रे भैया वेद मंत्र थारा; भाग जद म्हाँने सुणाय। केव० ॥ ६ ॥
प्रेम जिकाँ रे ऊँच नीच कौन सो; सब माँहे एक दिखाय। केवट० ॥ ७ ॥
मानसिंह यूँ दीन के बन्धु; दीन ज्याँने लिया अपनाय। केवट० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

निषाद भैया अब अपने घर जावो।
हम जब लौट आवेंगे वन से, तब फिर दरस दिखावो। निषाद० ॥ टेर ॥
यह उपकार एक नहीं भूलूँ, जब तक प्राण रहावो ।
तुम मोय अति पिता सम प्यारे, कहाँ तक गुण तेरो गावो। निषाद० ॥ १ ॥
प्यार लगाये गीत सुणाये, फिर कब गीत सुणावो।
अवसर मिले तो फेर मिलेंगे, याद रहे भूल न जावो। निषाद० ॥ २ ॥
पुलकित नैन हृदय भयो पुलकित, नैन नीर बरसावो।
मानसिंह ऐसो नेह दीन से; रघवर सो [illegible]

॥ गान ॥

। राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

नाथ हम चरण छोड़ कहाँ जईये ।
हम सो दीन बन्धु सम तुमसो, फिरत कहीं ना पईये । नाथ० ॥ टेर ।
वन में रहेंगे प्रभु मारग दिखावें, अपने संग ले लईये ।
पुष्प पत्र तहाँ तोरि तोरि के, सुन्दर सैज बिछईये । नाथ० ॥ १ ।
निशिचर वन में हैं अति गहरे, साथ तुम्हारे कोई नहीं है ।
अधम जाति हम पहाड़ गति जानें, साथ हमारो चहिये । नाथ० ॥ २ ॥
कहा हम गरीब दाय नहीं आवें, इनने उत्तर दे दईये ।
रहन पैजार पाव के माँहि, पाँव ने दूर नहीं है । नाथ० ॥ ३ ॥
बिन पैजार पांव दुःख पावें, साची कहूँ सुन लईये ।
छोटे बिना बड़ो किट किनको, सीख कहा तुम्हे दईये । नाथ० ॥ ४ ॥
प्रेम प्रवाह रोक्यो जो रुके नहीं, मानों सरिता बही है ।
दीनानाथ हाथ गहे दोनूँ, दूर हटाय नहीं है । नाथ० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु नाथ मान के, वही गति मोरी भई है ।
मान शरण में लियो सत्गुरु को, दुवधा दूर गई है । नाथ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

निषाद भैया यह नहीं बोल सुहावे ।
तुम मोये हो दशरथ सम प्यारे, दूर किये किम जावे । निषाद० ॥ टेर ॥
हम तीनों को दियो वन पितु ने, चौथो संग नहीं जावे ।
चौथा तुमको जो संग लेवें, पितु के बचन टरावे । निषाद० ॥ १ ॥
तन से दूर भैया दूर नहीं मन से, निकट ते निकट कहावे ।
तू कहा दीन दीन हम तेरे, तुम मह मांगन आवे । निषाद० ॥ २ ॥
ना कोई जान विज्ञान न अपनी, आगे न मेल मिलावे ।

आते ही तुम सत्कार कियो अति, आश्रम रह सुख पावे। निषाद० ॥ ३ ॥
कौन है मोट छोट को भैया, कहा तुम्हें ज्ञान सुनावे।
तुम तो ज्ञानी आप जो कहिये, मम पितु तुल्य कहावे। निषाद० ॥ ४ ॥
यह सुन वचन निषाद राज मन, अतुलित हर्ष बढ़ावे।
जिनकी डोर हाथ भगवन् के, कहो कुण ताहि गिरावे। निषाद० ॥ ५ ॥
देवनाथ अवतार राम के, दीन जान मिल जावे।
मानसिंह कहे अब डर किनको, पतितन पार लगावे। निषाद० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ। ताल कैरवा ॥

दूर नहीं होत निषाद; भरत म्हा सूँ दूर नहीं होत निषाद ॥ टेर ॥
एक निषाद सुग्रीव दूसरो, तीजो निशाचर जात।
तू जाने थाको त्याग अलग करू, ये मम उर में समात। भरत म्हां सूँ० ॥ १ ॥
गुरु वशिष्ठ जो मोये बताई, वो मोसे तजी न जात।
मेरोहि आतम सब जग कहिये, ये मोहे बहुत सुहात। भरत म्हां सूँ० ॥ २ ॥
स्वारथ हेत निकट न जाने ये, ख्याल रहे मन माँय।
जैसो तू तैसी सृष्टि सगली, भिन्न भेद नहीं आय। भरत म्हां सूँ० ॥ ३ ॥
भेद नहीं रावण सूँ हो तो, नहीं वो अलग कहाय।
नीति युक्त युद्ध हम कीनो, इन मांहे दोष न आय। भरत म्हां सूँ० ॥ ४ ॥
गद्गद् कण्ठ भरत इम बोले, तुम हो दीनानाथ।
मोको निषाद आप सम दीखे, हम कब दूर हटात। भरत म्हां सूँ० ॥ ५ ॥
देवनाथ रघुनाथ स्वरूपी, जिन पकड्यो मेरो हाथ।
पकड़त हाथ ज्ञान मन उपज्यो, हो गयो मान सनाथ। भरत म्हां सूँ० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मंगल। ताल दीपचन्दी ॥

लछमण भैया प्यारो लागे मरकट साथ, म्हां सूँ अब छोड्यो न जावे हो ॥ टेर ॥

ऊंच और नीच म्हारे नहीं कहिये हो।
लछमण भैया म्हांने दीखे एक ही जात साथ म्हारो पूरो निभावे हो॥ १ ॥
आपन काज मदद म्हाँने दीनी हो।
लछमण भैया नहीं आये वही काम अबे याँने क्यूँ बिसरावे हो॥ २ ॥
गीध निषाद काम कैसो कीनो हो।
लछमण भैया याँ मांडी रारमां मूँ मौत जिकांने कैसे दूर हटावे हो॥ ३ ॥
प्रेम बाणी रघुवर फरमावे हो।
लछमण भैया आय गयो नैणाँ में नीर मुख सूँ नहीं बोल्यो जावे हो॥ ४ ॥
दीन वचन हरि बहुत सुहावे हो।
लछमण भैया गन कियो मरकट आन मान सब दुःख मिट जावे हो॥ ५ ॥

गोपि महिमा

॥ छप्पय ॥

व्रज वनिता सी भक्त कृष्ण की कोजी न पावे।
कोई ना कर सके होड होय नहीं पच मर जावे॥

॥ सोरठ ॥

कृष्ण वियोग के बीच में, कारो तन कीनो सबी।
अपनो रंग तज दीन, जिन कृष्ण रंग में आ फबी॥

॥ सवैया ॥

त्याग चले हरि गोकुल को मथुरा मे उन्हें क्या हती अधिकाई।
गोपिन को परभाव बढ़ावन यह हरि ने एक माया दिखाई।
प्रेम ही प्रेम मे जात बही यह कृष्ण स्वरूप को जानत नाँई।
आपनो रूप जनावन कारण यह हरि ने एक युक्ति उपाई।
पूरण ज्ञानी जो उद्धव हतो तिनते ब्रह्मज्ञान की बात सुनाई।

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

आछो लागे ब्रज रो सनेह; ऊधो म्हांने आछो लागे ब्रज रो सनेह ॥ टेर ॥
आछा ब्रजवासी म्हारा साचा कहिये; साचो ज्यांरो सुघड़ो है नेह । ऊधो० ॥१॥
प्रेम पवित्र ऊधो भूल्यो न जावे; नाम लियाँ नीर बहे । ऊधो० ॥२॥
छोटे सूँ मोटा ऊधो ब्रज मांहि होया; कैसे ज्यांरो गुण बिसरे । ऊधो० ॥३॥
ब्रज रो रस ऊधो मथुरा में नांहि; वह रस अपने घरे । ऊधो० ॥४॥
मानसिंह कहे सिन्धु सुता पति; भक्तों रो विरध वरे । ऊधो म्हांने० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ राग देश । ताल कैरवा ॥

कद मिलसी गोपाल; ऊधोजी म्हांने कद मिलसी गोपाल ॥ टेर ॥
हरि जो मिले वो बात कहो रे ऊधो, और सभी जंजाल ।
बिन गिरिधर बिन कोई नहीं रे, मैं निशि दिन रहूँ बेहाल । ऊधोजी० ॥ १ ॥
जब हरि आवें हम सुख पावें, तब ही होवें निहाल ।
छोड़ चले हरि पूछे नहीं कछू, करत नहीं मेरो ख्याल । ऊधोजी० ॥ २ ॥
घर ने बाहर ऊधो सब मैं छोड़ था, कबकी मैं फिरत कङ्गाल ।
ऐसी मैं जानूँ तो छोड़ती क्यों यह, कर गयो गिरिधर चाल । ऊधोजी० ॥ ३ ॥
मान कहे अब मान कहाँ री सखी, जब से गये नन्दलाल ।
श्याम बिहूणी फीकी लगूँ रे ऊधो, झेलत नहीं मोय काल । ऊधोजी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मलार । ताल तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे क्या ब्रह्मज्ञान पढ़ावे ।
ऐसो ब्रह्म तुम्हारो उद्धव, मेरे काम क्या आवे । ऊधोजी प्यारे० ॥ टेर ॥
जोग समझ या भोग समझ ले, हमको तो एक दिखावे ।
भोगहि जोग जोग भोग सम है, मो उर और न आवे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
हमको जोग एक श्याम विरह को, और न जोग सुहावे ।
तू जो जोग कहे रे उद्धव, मेरी समझ नहीं आवे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
ऐसे ब्रह्म ते प्रीति क्या उद्धव, संग खेलन नहिं आवे ।
मानसिंह यों कहे ब्रजबनिता, मरम को ब्रह्म बतावे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

ब्रह्म की बात को छोड़ रे उद्धव बार हि बार क्यों जीव जरावे ।
मिनखाँ ज्यों सौ बार कह्यो तेरे ब्रह्म को पन्थ हमे नहीं भावे ।
तेरे जिसो कोई ढीठ नहीं और ना मुझसी तुमको समझावे ।
तू तो तेरो यह ब्रह्म न छोड़त मोते मेरो नहिं श्याम छुटावे ।
मान नरेश ये भाव है विरह को विरहिया मिले जब आनन्द आवे ।
कहा कहूँ ब्रजनारी को प्रेम यह कहत ही कहत हृदय उमगावे ।

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोडी । ताल तिताला ॥

थोथी बात बनावे; उद्धव थोथी बात बनावे ।
थोथी बात हाथ नहीं आवत, तोते ज्यूं बक जावे । उद्धव० ॥ टेर ॥
है वो व्यापक गयो क्यों मथुरा, पहिले क्या वहां न रहावे ।
दो दो कृष्ण किया क्यों भेला, हमरो तो हमे दिलावे । उद्धव० ॥ १ ॥
मारी पूतना बकासुर आदि, कंस को मार गिरावे ।
ऐसो काम तेरे व्यापक कियो नहीं, मेरो ही कृष्ण करावे । उद्धव० ॥ २ ॥
बातां करण में निपुण है तू उद्धव, बक्क पड़े भग जावे ।
तेरे ऊपर धरूं ये गिरिवर, तो सगली बात उड़ जावे । उद्धव० ॥ ३ ॥
और बात तेरी है सो रहन दे, हमको तो कृष्ण मिलावे ।
तू तो उद्धव भंग पिवी है, हमे क्यों नाहक पिलावे । उद्धव० ॥ ४ ॥
आतम व्यापक सबही जाने, ये क्या हमे समझावे ।
जिन को काम उनही से होवे, काहे ज्ञान चलावे । उद्धव० ॥ ५ ॥
तुम मे है व्यापक और हम में है व्यापक, तो क्या हमे समझावे ।
वृत्रासुर वच्छासुर कंसा, उनमे न व्यापक कहावे । उद्धव ॥ ६ ॥
कृष्ण को पकड़ कृष्ण क्यूँ मारयो, यह मोये हांसी आवे ।
तेरो निगुन तो ऐसो कहिये, स्वप्न मात्र दरसावे । उद्धव ॥ ७ ॥

देवनाथ गुरु द्वैताद्वैत सब, मेट के एक दिखावे ।
मानसिंह बरतन सी वस्तु, बरतन भेद जनावे । उद्धव० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

निगुन सगुन कहा न्यारो; श्यामा निगुन सगुन कहा न्यारो ।
भूल के दोय भेद तोय दीखे, ये भ्रम दूर निवारो । श्यामा० ॥ टेर ॥
निगुन माँय सगुन कहे व्यापक, सगुन औ निगुन विचारो ।
जल को कुम्भ पड़्यो है जल में, जल है भीतर बारो । श्यामा० ॥ १ ॥
सब कुछ बोले फिर भी अबोला, जग को प्राण आधारो ।
तुम हम में सब जग में कृष्ण है, एक रस भरियो सारो । श्यामा० ॥ २ ॥
ऐसी बात सुनी उद्धव की, हंसो उपज्यो मन भारो ।
मानसिंह व्रजनारी कहे यूँ, तू कहा जाने बिचारो । श्यामा० ॥ ३ ॥

॥ सवैया ॥

दोय से एक जो शूरा करे वह कैसे करे हमको समझावे ।
एक बताय बताय दहे तब ही उनको हम शीश नमावे ।
झोर मकोर करे सगरे यह आपनि आपनि रोल मचावे ।
मान कहे जब ही हम मानत एक बनाय के सामने आवे ॥

॥ गान ॥

॥ राग जौनपुरी-टोडो । ताल तितला ॥

यह निर्गुन नहीं भावे; रे ऊधो मोहे, यह निर्गुन नहीं भावे ॥ टेर ॥
नैन न दीखे और बोले नहीं निर्गुन, कौन लो ऐसो ध्यावे
खेल्यो शामिल और मक्खन खिलायो, सो दूर किया किम जावे । रे० ॥ १ ॥
रूप नहीं और रंग नहीं है, को अन्ध कूप गिरावे ।
प्रत्यक्ष देव बिहारी हमारो, हंस हंस बैन सुनावे । रे० ॥ २ ।
निर्गुन कृष्ण रखो मथुरा में, मेरे सगुन पठावे ।

निशिचर हनन करे तेरो निर्गुन, मेरो सगुन क्यों ले जावे । रे० ॥ ३ ॥
हम तो चाहत है कि माँग मक्खन ले, हंस हंस कण्ठ लगावे ।
वो नहीं दीखे तेरे निर्गुन में, ताते नाँहि सुहावे । रे ऊधो० ॥ ४ ॥
जो तेरो निर्गुन कंस को मारन, क्यूँ मेरो श्याम बुलावे ।
थोथी बात करे मत ऊधो, गैब धक्के क्यूँ खावे । रे ऊधो० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण हमारे, मान गोपी बन जावे ।
ज्ञान उद्धव तेरो निर्गुन त्यागूँ, बोलत आतम प्यारे । रे ऊधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरट । ताल कैरवा ॥

ऊधो क्या मोहे जोग सुनावे । तोय कहत शरम नहिं आवे । ऊधो० ॥ टेर ॥
एक श्याम और जोग दूसरो, नहीं यहाँ जगह समावे ।
जगह मिले तो तुही रख ले, मोहे अन्देसो न आवे । ऊधो० ॥ १ ॥
नभ और जल थल अगनि पवन मे, खाली कहीं न पावे ।
सूक्ष्म ते सूक्ष्म अपार सूक्ष्म कहिये, ता बिच श्याम समावे । ऊधो० ॥ २ ॥
श्याम परा पश्यन्ति श्याम है, मध्यमा श्याम दिखावे ।
वैखरी खेल श्याम को सब ही, ओंकार धुन गावे । ऊधो० ॥ ३ ॥
स्वप्न हि श्याम सुषुप्ति श्याम ही, जाग्रत श्याम कहावे ।
तुरिये श्याम शुद्ध है मेरो, जहाँ जगत मिट जावे । ऊधो० ॥ ४ ॥
सभी देह सो गोपी कहिये, सब में श्याम लखावे ।
गो अतीत गोपाल सभी मे, भूले बात बनावे । ऊधो० ॥ ५ ॥
देवनाथ सो स्वयं कृष्ण है, मान कृष्ण बन जावे ।
मल विक्षेप आवरण मिटियो, महान में मान समावे । ऊधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जोगिया । ताल दीपचन्दी ॥

ऊधो मैं जोगन वा दिन की ।
जब ते श्याम त्याग चले मोहि, व्याकुल हूँ ता दिन की । ऊधो० ॥ टेर ॥
श्याम वियोग सह्यो नहीं जावे, कल न पड़त एक छिन की ।
का से कहूँ अब कौन लखे यह, मैं जानू मेरे मन की । ऊधो० ॥ १ ॥

भगवाँ बाना फिर भी उतरे, कौन रंगे रंगन की।
श्याम को रंग रंग्यो नहिं उतरे, और न रंग चढ़न को। ऊधो० ॥ २ ॥
कहा हमको मृगछाल ओढ़ावे, लावे कौन मृगन की।
मन को मार मृगा हम कीनो, खाल न चेऊँ अंगन की। ऊधो० ॥ ३ ॥
श्याम मिले तो जोऊँ रे उद्धव, नहीं तो प्राण तजन की।
मान कहे यों भई बावरी, भूल गई सुध तन की। ऊधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग दुर्गा अथवा सारंग। ताल तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे क्या मोहि जोगिन बनावे।
ब्रह्मज्ञान को पकड़ के बैठो, खुद जोगी बन आवे। ऊधोजी० ॥ टेर ॥
खुद तो जोग रीति नहीं जाने, औरों को समझावे।
हमसे परे फिर जोग कौन सो, जिनको तो मोहि दिखावे। ऊधोजी० ॥ १ ॥
एक म्यान में खडग दोय किम, लाख जतन नहिं मावे।
भाव पुराने श्याम श्याम के, ब्रह्म मोको नहिं भावे। ऊधोजी० ॥ २ ॥
कोई तो भगवाँ रंगत गेरू में ऊधो, वो रंग फिर उतरावे।
श्याम रंग मेरो उतरे नाँहीं, दूजो नाँहि चढ़ावे। ऊधोजी० ॥ ३ ॥
एक सखी उठ ऐसी बोली ऊधो, निकल क्यों न अबे जावे।
मर जावें और खाक मिलेगी, खाक श्याम गुन गावे। ऊधोजी० ॥ ४ ॥
ऐसो कह्यो जब उद्धव पिघल्यो, अब नहिं चाल चलावे।
ब्रह्म रूप हरि को ही जान्यो, और ध्यान नहिं आवे। ऊधोजी० ॥ ५ ॥
मान कहे मित्रो समझ सोच कही, अर्थ अनर्थ न हो जावे।
ज्ञानी उद्धव पर गोपी कम नहीं, दधि से दधि टकरावे। ऊधोजी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश। ताल धीमा केरवा ॥

ऊधोजी थाँने कहताँ लाज नहीं आवे। म्हाने क्या ब्रह्म ज्ञान बतावे। ऊ० ॥टेर॥

निशिचर हनन करे तेरो निर्गुन, मेरो सगुन क्यों ले जावे । रे० ॥ ३ ॥
हम तो चाहत हैं कि माँग मक्खन ले, हंस हंस कण्ठ लगावे ।
वो नहीं होवे तेरे निर्गुन में, ताते नाँहि सुहावे । रे ऊधो० ॥ ४ ॥
जो तेरो निर्गुन कंस को मारत, क्यूँ मेरो श्याम बुलावे ।
थोथी बात करो मत ऊधो, गैब धक्के क्यूं खावे । रे ऊधो० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण हमारे, मान गोपी बन जावे ।
ज्ञान उद्धव तेरा निर्गुन आपूँ, बोलत आतम प्यारे । रे ऊधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल कैरवा ॥

ऊधो क्या मोहे जोग सुनावे । तोय कहत शरम नहिं आवे । ऊधो० ॥ टेर ॥
एक श्याम और जोग दूसरो, नहीं यहाँ जगह समावे ।
जगह मिले तो तुही रावदे, मोहे अन्देशो न आवे । ऊधो० ॥ १ ॥
नभ और जल थल अगनि पवन में, खाली कहीं न पावे ।
सुन्न ते सुन्न अरर सुन्न कहिये, ता बिच श्याम समावे । ऊधो० ॥ २ ॥
श्याम परा पश्यन्ति श्याम है, मध्यमा श्याम दिखावे ।
वैखरी खेल श्याम को सब ही, ओंकार धुन गावे । ऊधो० ॥ ३ ॥
स्वप्न हि श्याम सुषुप्ति श्याम ही, जाग्रत श्याम कहावे ।
तुरिये श्याम शुद्ध है मेरो, जहाँ जगत मिट जावे । ऊधो० ॥ ४ ॥
सभी देह सो गोपी कहिये, सब में श्याम लखावे ।
गो अतीत गोपाल सभी में, भूले बात बनावे । ऊधो० ॥ ५ ॥
देवनाथ सो स्वयं कृष्ण है, मान कृष्ण बन जावे ।
मल विक्षेप आवरण मिटियो, महान में मोन समावे । ऊधो० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग जोगिया । ताल दीपचन्दी ॥

ऊधो मैं जोगन वा दिन की ।
जब ते श्याम त्याग चले मोहि, व्याकुल हूँ ता दिन की । ऊधो० ॥ टेर ॥
श्याम वियोग सह्यो नहीं जावे, कल न पड़त एक छिन की ।
का से कहूँ अब कौन लखे यह, मैं जानूँ मेरे मन की । ऊधो० ॥ १ ॥

भगवाँ बाना फिर भी उतरे, कौन रंगे रंगन की।
श्याम को रंग रंग्यो नहिं उतरे, और न रंग चढ़न की। ऊधो० ॥ २ ॥
कहा हमको मृगछाल औढ़ावे, लावे कौन मृगन की।
मन को मार मृगा हम कीनो, खाल न नेऊँ अगरन की। ऊधो० ॥ ३ ॥
श्याम मिले तो जोऊँ रे उद्धव, नहीं तो प्राण तजन की।
मान कहे यों भई बावरी, भूल गई सुध तन की। ऊधो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग दुर्गा अथवा सारंग। ताल तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे क्या मोहि जोगिन बनावे।
ब्रह्मज्ञान को पकड़ के बैठो, खुद जोगी बन आवे। ऊधोजी० ॥ टेर ॥
खुद तो जोग रीति नहीं जाने, औरों को समझावे।
हमसे परे फिर जोग कौन सो, जिनको तो मोहि दिखावे। ऊधोजी० ॥ १ ॥
एक म्यान में खड़ग दोय किम, लाख जतन नहिं मावे।
भाव पुराने श्याम श्याम के, ब्रह्म मोको नहिं भावे। ऊधोजी० ॥ २ ॥
कोई तो भगवाँ रंगत गेरू में ऊधो, वो रंग फिर उतरावे।
श्याम रंग मेरो उतरे नाँहीं, दूजो नाँहिं चढ़ावे। ऊधोजी० ॥ ३ ॥
एक सखी उठ ऐसी बोली ऊधो, निकल क्यों न अबे जावे।
मर जावें और खाक मिलेगी, खाक श्याम धुन गावे। ऊधोजी० ॥ ४ ॥
ऐसो कहो जब उद्धव पिघल्यो, अब नहिं चाल चलावे।
ब्रह्म रूप हरि को ही जान्यो, और ध्यान नहिं आवे। ऊधोजी० ॥ ५ ॥
मान कहे मित्रो समझ सोच कही, अर्थ अनर्थ न हो जावे।
ज्ञानी उद्धव पर गोपी कम नहीं, दधि से दधि टकरावे। ऊधोजी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश। ताल धीमा ३॥

ऊधोजी थाँने कहताँ लाज नहीं आवे। म्हाने क्या ब्रह्म

ऐसो ब्रह्म ऊधो देवो कुब्जा ने जो मेरो कृष्ण नचावे ।
बोले न चाले वचन केवे नहीं, हमको तो नहिं सुहावे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
ब्रह्म और जीव जो चाहे कहे रे ऊधो, म्हाँने क्या भरमावे ।
जो कुछ है तो कृष्ण चन्द्र है, नहीं नर पोल दिखावे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
म्हाँने तो कहे ऊधो जोग की करणी, कृष्ण ने क्यों न समझावे ।
गोकुल छोड़ भग्यो मथुरापुरी, उनको काहे न मिलावे । ऊधोजी० ॥ ३ ॥
जोगी कृष्ण जोगन कर कुब्जा ने, तो दु:खड़ो मिट जावे ।
थाँने तो नु कुछ न कहे रे ऊधो, म्हाँने क्यूँ निकमी बहकावे । ॥ ४ ॥
थाँजो मरद मूँछ मुख ऊपर, ज्याँने ब्रह्म न पावे ।
नारी जात मती गती ओछी, क्यों कर ओलख्यो जावे । ऊधोजी० ॥ ५ ॥
हमरी साडी पहने मुरारी, हम सिर मुकुट चढाव ।
गोपी कृष्ण कृष्ण बने गोपी, जदहि ब्रह्म मिल जावे । ऊधोजी० ॥ ६ ॥
रैण मे सूरज कदे न ऊगे, ऊगे तो रैण मिट जावे ।
रे ऊधो तू चुप रह बावरे, नाहक जरी को जरावे । ऊधोजी० ॥ ७ ॥
पूरण ब्रह्म केवे तू जिणाँने, वे मथुरा क्यों चढावे ।
क्या तो राज अरु क्या कोई जंगल, एकहि क्यों न दरसावे । ऊधोजी० ॥ ८ ॥
उद्धव ज्ञान और गोपी जीव है, आप मित्याँ मिट जावे ।
मानसिंह के देवनाथ प्रभु, दूजो दाय नहीं आवे । ऊधोजी० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल धीमा तिताला ॥

ऊधोजी प्यारे अब तो चुप होय जावो ।
श्याम कहो तो ठहरो रे ऊधो, ब्रह्म कहे तो जावो । ऊधोजी० ॥ टेर ॥
लाख कहो हम एक न मानें, नाहक ज्ञान गमावो ।
जीव कहो चाहे ब्रह्म कहो तुम, मोरे रंग श्याम रंगावो । ऊधोजी० ॥ १ ॥
एक हि ब्रह्म तो सत्ता तुम किनके, अपनो तो भाव मिटावो ।

हम अबला को क्या समझावत, अपनो हि मन समझावो । ऊधोजी० ॥ २ ॥
ब्रह्महि ब्रह्म बको क्या ऊधो, नाहक मूँड पचावो ।
छोड़ जिकर हरि मिले सो कह अब, प्राणाँ ते अधिक सुहावो । ऊधोजी० ॥ ३ ॥
प्रेम सम्बन्ध बन्ध सब तोड़्या, ऊधो सुध बिसरावो ।
मानसिंह सुध भूल गयो सब, जीव न ब्रह्म कछु पावो । ऊधोजी० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मांड—आसावरी ।ताल कैरवा ॥

ऐड़ो रस और न आवे रे; ऊधोजी म्हाँने, ऐड़ो रस और न आवे रे ॥ टेर ॥
दूध पिलायो ने नाच नचायो रे; लूट लूट दधि खावे रे । ऊधोजी० ॥ १ ॥
गऊआँ तो दूध देणो छोड़ियो रे; तृण जल कछु नहीं खावे रे । ऊधोजी० ॥ २ ॥
म्हाँने तो ऊधोजी तुम आये समझावन; बछियाँ ने कुण समझावे रे । ऊधोजी० ॥३॥
गोरस गयो ने गई रंग रलियाँ रे; श्याम बिना कुण खावे रे । ऊधोजी० ॥ ४ ॥
मान कहे धन है ब्रज बनिता; इण विध प्रेम बढ़ावे रे । ऊधोजी० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

बात सुनी ब्रजनारिन की तब ऊधो सब निज होश भुलायो ।
पोल हुती सो उड़ी मन की निज ब्रह्म को भूल के श्याम सुनायो ।
बहुत हुतो ब्रह्मज्ञानी बड़ो वह प्रेम समुद्र में जात बहायो ।
ब्रह्म की पोट अचानक छूटी है डूब गयो फिर ऊँचो न आयो ।
एक भयो गलतान मिल्यो ब्रह्म को बकनो सब ही बिसरायो ।
भूल गयो अब आहा कर्यो मुख नैन में नीर की धार बहायो ।
मान कहे धन है ब्रजनारिन को यह जिन काम कमाल कमायो ।
आप तो कारी भई सो भई फिर बपुरे ऊधो को कारो बनायो ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी या कैरवा ॥

लम्पट रोल मचाई रे, दीनो देश बिगाड़ ॥ टेर ॥
ब्रह्म रूप जो कहिये कृष्णजी, कैसे कियो व्यभिचार।
अणदीठी यह ऐसी मेली, कर दीनो सब ख्वार। लम्पट रोल० ॥ १ ॥
कहत जगदीश शरम नहिं आवे, महा लुच्चन सरदार।
धृक धृक वॉने दोष देवे भूठा, धर्म रूप अवतार। लम्पट रोल० ॥ २ ॥
कोई कहे कृष्ण यशोमति माये, कोई कहे नन्दकुमार।
कोई कहे कृष्ण बाल है हमरो, काम करे बेजार। लम्पट रोल० ॥ ३ ॥
कृष्ण नाम ले लीला करत है, नाना भोग विहार।
कृष्ण की हद को एक न पहुँचे, माल मुफ्त खावे मार। लम्पट रोल० ॥ ४ ॥
ज्ञान घृत गीता के अन्दर, पायो है सार निकार।
क्या व्यभिचारी की ताकत कहिये, भरदे उपनिषद् सार। लम्पट रोल० ॥ ५ ॥
कृष्ण समान कोई योगी हुवो नहीं, नहिं छोड़े घर बार।
वाताँ ब्रह्म कृष्ण नहिं जाएगो, जाएगो सत् आधार। लम्पट रोल० ॥ ६ ॥
धर संन्यास योग को धारे, कीना फैल अपार।
मुख वाचाल जो ब्रह्म बके यूँ, माँगत द्वार हि द्वार। लम्पट रोल० ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु हाथ धर्यो शिर, बिगड़ी दीन सुधार।
मानसिंह संन्यास लेत तो, बह जाते काली धार। लम्पट रोल० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी । ताल कैरवा ॥

यह मत हमको न भावे, दूर रखो यह मत हमको न भावे।

छूत ही छूत में उमर सब खोई, छूत कभी नहीं जावे । दूर रखो० ।। टेर ।।
नित ही मरत चौके दस चींटी, यह कुण पाप कमावे ।
जीवहिंसक बणे कुण पूरे, कुण ऐसी श्यान गमावे । दूर रखो० ।। १ ।।
अपने कुटुम्ब को वस्त्र नहीं छूवे, भूठ पराई खावे ।
थूक थूक है ऐसे वैष्णव को, इनमें कहा सुख पावे । दूर रखो० ।। २ ।।
जिन पति से परमेश्वर नातो, नीर ऊपर से पावे ।
गुण्ड गोल में जाय खुशी से, वस्त्र सभी फड़वावे । दूर रखो० ।। ३ ।।
निज पति प्रेम कभी नहीं कीयो, महा प्रसाद वाँरो पावे ।
निज पति यों ही पड़यो झख मारो, ये तो दौड़ी रास में जावे । दूर रखो० ।। ४ ।।
निज पति सेती उमर बितानी, तिनको आँख दिखावे ।
ये गुण्डे दस दिन के कहिये, तिनते प्रेम लगावे । दूर रखो० ।। ५ ।।
जो बालक अपने से उपजे, इनते छूत रहावे ।
गर्मी शीत गिने नहीं कोई, केतेई वार नहवावे ।-दूर रखो० ।। ६ ।।
निज पति अपणो कृष्ण कर माने, जो कोई मुक्ति चावे ।
पुरुष को चाहिये स्वप्रिया निज गोपी, तब प्रभु प्रेम निभावे । दूर रखो० ।। ७ ।।
जगत पिता है विष्णु मेरो, सब जग बीच समावे ।
कुटुम्ब कलत्र रूप विष्णु को, नित सेवा करवावे । दूर रखो० ।। ८ ।।
पशु पक्षी जड़ चेतन विष्णु, खाली ना दरसावे ।
ऐसे वैष्णव यत कोई आवे तो, चरणों में शीश नवावें । दूर रखो० ।। ६ ।।
देवनाथ गुरु पूरे वैष्णव, नेक न फरक रहावे ।
मान लियो है ब्रह्म समर्पण, जग ब्रह्म रूप लखावे । दूर रखो० ।। १० ।।

फुटकर पद्य

।। दोहा ।।

कनक कामिनी जगत में, दुःख नहीं व्यापे मोय ।
मानसिंह यह मन बुरो, देख दियो केई रोय ।।

॥ सवैया ॥

कबहु गढ़ गाँव बसावत है कबहु चित योग वैराग धरे ।
कबहु मन मन्द उमंग रहे कबहु संग कामिनी केल करे ।
नृप मान कहे बरज्यो न रहे दृढता न गहे इत उत ही फिरे ।
हरि कैसे भजूँ सुन रे सजना मन तो मृग जैसे फलंग भरे ॥

॥ दोहा ॥

चार वेद गुरु मुनि पढ्यो, व्यास पिता के पास ।
तदपि मन पति नहीं, मिटी न अन्तर प्यास ॥

॥ कवित्त ॥

चले शुकदेव तबे विष्णु के पास ध्यात, देव मुनि को विष्णु मन में हरषाये हैं । अहो धन्य भाग आज दरस दिये मुनिराज, किये शुभ कर्म जाको फल आज पाये हैं । उच्चासन दियो लाय भाव भक्ती अधिक भाय, सरिता को नीर लाय चरण जो धुवाये हैं । चरणामृत कियो पान स्वयं जो कृपानिधान, आप कियो पान और कमला को कराये हैं ॥

॥ कवित्त ॥

व्यास सुत बोले तभी सुनहो कृपानिधान, चारों वेद पढ़े पर तृप्ति न आई हैं । कहा जगत जीव कहा ईश्वर और ब्रह्म कहा, कौन तत्व मिथ्या इन चारन के माँई है । पढ़े हम चारों वेद तदपि नहीं मिट्यो भेद, आपहु के पास आयो सही समझाई है । हँसे जब जगतपति शुक की कहा भई गति, व्यास पास पढ्यो पर संशय ना मिटाई है। हरि यूँ कहे मान जाय जनक गुरु ठान, कहेंगे तो सही प्रमाण तोय मन भाई है । पूर्ण है ज्ञानी राव गुरु दीक्षा ताते पाव, बिना गुरु बिना तेरो भरम हू न जाई है ॥

॥ दोहा ॥

व्यास सुत मन सोचियो, अब कहा जनक सुजान ।
वेद निधी के पुत्र हम, लहें जनक ते ज्ञान ॥

तद्पि उर धीरज लयो, गयो जनक के पास ।
जनक वहाँ पूछ्यो नहीं, खड़ो रह्यो सहे त्रास ॥
एक दिवस जब सोचियो, नृपति निज उर माँय ।
व्यास सुवन बाहर खड़ो, अन्दर लेहो बुलाय ॥
पौढ़े रात्र सुभ्र सैज में, शुकहू पहुँच्यो जाय ।
तब शुक मन शंका भई, यह मोय कहा समझाय ॥
व्यास पुत्र हम विप्र हैं, इन कुछ शंकन कौन ।
यह शुक मुनि मन सोचते, भये निद्रा आधीन ॥

॥ कवित्त ॥

शुक जैसो मुनि फेर हुवे न होय कोई, ताही को मन ऐसो नाच जो नचायो है । स्वप्ने में सूतो शुक प्यास जो लगी है भारी, महा वीरान जंगल बीच में जो धायो है । और कोई न पाय नीर प्यास हू से प्राण जात, एक जो कमारी वाला ताते भेटायो है । ताको कहत प्राण जाय नीर हू पिलाय मोको, सुनी ऐसी बात नारी हास्य सो दिखायो है । तू तो जात विप्र है और मैं हूँ जो कमारी नार, होत भ्रष्ट तू ही यदि नीर जो पिलायो है । कहे राव मानसिंह साच हू की बात नहीं, साच हू न समझो यह तो स्वप्न एक आयो है । नींद हू न सोने देत मन को स्वभाव देख, मन यह नकटो कैसो खेल जो दिखायो है । स्वप्न की कहूँ बात मन को प्रभाव कैसो, शुक जैसे ज्ञानी को स्वप्ने में नचायो है ।

॥ कवित्त ॥

दूर रह दूर रह छूय ना तू मोय हू को, मोय हू को छूयाँ कहीं पाप तू लगायगो । मैं हूँ जो कुमारी नार तुम हो पुरुषाकार, पल्लो जो अड़ायो तोको पाप लग जायगो । ठहर ठहर पूछूँ जाय अपने पिता को मैं, पानी तभी पाऊँ जब मोय को तू व्याहयागो । करले शरत यह मैं पूछूँ मेरे बाप हू से, बिना पूछे लाख बात नीर नहीं पायगो ॥

॥ कवित्त ॥

कहे शुकदेव मुनि तोहि को न ब्याहूँ कभी, प्राण मेरे जाय तो भलाँई क्यों न जाइये। ऐसे सुन नार चली पीछे जो मुड़ी है वह तो, सोचे शुकदेव नाहक प्राण क्यों गमाइये। पीय के पलट लेंगे यहाँ तो न देखे कोई, यह और हम तीजो कोई न गवाई ये। कर ललकार नार पीछे जो बुलाई शुक, पाय पाय नीर हम तुमही को ब्याहिये। मानूँ नहीं लाख बात चलो जो पिता पे मेरे, पुरुष होत भूठे कहीं कहके बदलाईये। ऐसे सुनी शुक जब आपत्ति यह आई कैसी, अब तो पिता को तीजो साख जो बनाईये।

॥ कवित्त ॥

चमारी जो लेके साथ अपने बाप पास आन, मधु जैसो मीठो मुख वैन जो सुनायो है। मोहो को बिछावे यह पाऊँ मैं नीर पिता, यह वेदव्यास सुत शुक जो कहायो है। ऐसी बात सुनी जब हर्षित भयो पिता मन, पाय पाय नीर जो तैं वचन में बँधायो है। पाय दीनो नीर ताको आयो कुछ प्राण जब, तब शुकदेव मुनि वचन पलटायो है। तू तो है चमारी और मैं हूँ जाति विप्र देख, तेरे मेरे सम्बन्ध कहो कौन सो जुड़ायो है। रे रे मुनि गजब तू तो कह कर पलटे अब साधु विप्र दोय जन भूठ न बोलायो है। कहे राव मानसिंह साच हू न मानो यारो, स्वप्न हू की बात यह तो स्वप्न में बनायो है। स्वप्न में देखे है दुःख जागन में होय केसो, मन की गति को कोऊ ब्रह्माहु न पायो है॥

॥ कवित्त ॥

लाख बात कही पर एकहु न मानी तब, हठ चढ कर शुकदेव हू को ब्यायो है। कई दिन रहे संग सुत सुता दोय चार, अब शुकदेव के परिवार जो बढायो है। नारी सुत लिए साथ जंगल में जो चले जात, आमहू को वृक्ष एक बहुत सुन्दर आयो है। ताके नीचे कूप एक ताके ऊपर लागी कैरी, ताको देख बालक एक रुदन जो मचायो है। यही आम लेऊँ मैं तो ओर हू न लेऊँ आन, लाखों बात कहकर शक उनको समझायो है। सुपने की यह बात याहू न मानो कोई, मयारी की चमारी ज्यूँ सुपने शक आयो है॥

॥ कवित्त ॥

बालक को कहत तो नहीं शुक मान्यो कछु, नारी घूँघट पट में बैन गुटकायो है। झीणे झीणे नैन जोय तीखे जो भवारे होय, टेढ़ी निजर करके यूँ वचन फरमायो है। आछो मरद भयो तो ते हम ही भली है नार, एक आम काज केतो ओठो उतरायो है। मेरो भेष पहन ले तो मैं ही जाय तोडूँ याका, ऐसो बैन सुन्यो तो शुकदेव रिसियायो है। तुरत जाय चढ़्यो वह आम के ऊपर शुक, चढ़ते एक नारी को वचन जो सुनायो है। कठिन आम ऐसो याते नहीं टूटे गिरूँ मैं तो, बात सुनी नार हंस दंत जो दिखायो है। भलो मरद भयो ऐसो मरण हू से डरे तू, अंत जाति हू को भला विप्र जो कहायो है। कहे राव मानसिंह स्वप्न हू की बात यारो, स्वप्न हू की बात याको रिस हू न लायो है॥

॥ कवित्त ॥

शुक चायो तोड़ने को आम हू की करी जाते, कैरी हू को तोड़े पहले डारो जो गिरायो है। जाय गिरयो साथ साथ कूपहू में शुकदेव, बैठो जो तख्त पर आप झिझकायो है। चल्यो जो जनक हू के पाँव छुवन काज शुक, दूर रह दूर रह बैन जो सुनायो है। व्याह तो चमारी साथ कियो मोय भ्रष्ट करे, दोय चार सुत को बाप बन आयो है। ऐसी बात सुनी शुकदेव शरमायो मन, और नहीं सूझ्यो हाहा करके चिल्लायो है। कहे राव मानसिंह स्वप्न हू ते जागो मित्रो, वह स्वपनो तो यह कहा साच जो दिखायो है॥

॥ कवित्त ।

कहे यूँ जनक राव धीरो रह धीरो शुक, रह चुप ऐती क्यूँ हाहा तैं मचाई है। वह स्वप्न यही स्वप्न स्वप्न ही में स्वप्न देख्यो, वह न सत्य तो कब सत्य यह कहाई है। वो ही है असत्य और येही है असत्य देखो, यह असत्य से असत्य दरसाई है। जैसो मन बाहर लागे वैसो ही जो लागे उर, मन की कला को यह मन ही लखाई है। मन की कला कोई शूरवीर संत लखे, ज्ञान खड्ग हाथ लेके

॥ कवित्त ॥

कहे शुकदेव मुनि मोहि को न ब्याहूँ कभी, प्राण मेरे जाय तो भलाँई क्यों न जाइये । ऐसे मृत नार चली पीछे जो मुडी है वह तो, सोचे शुकदेव नाहक प्राण क्यों गमाइये । पीय के पलट लेंगे यहाँ तो न देखे कोई, यह और हम तीजो कोई न गवाई दे । कर ललकार नार पीछे जो बुलाई पुन, पाय पाय नीर हम तुम्हरो को ब्याहिये । मानूँ नहीं लाख बात चली जो पिता पे मेरे, पुन्य होत झूठे यहाँ कहके बदलाईये । ऐसे सुनी शुक जब आपत्ति यह आई कैसी, अब तो पिता को तीजो साख जो बनाईये ।

॥ कवित्त ॥

चमारी जो लेके साथ अपने बाप पास आन, मधु जैसो मीठो मुख बैन जो सुनायो है । मोहो को विहावे यह पाऊँ मैं नीर पिता, यह वेदव्यास सुत शुक जो कहायो है । ऐसी बात सुनी जब हर्षित भयो पिता मन, पाय पाय नीर जो तैं वचन में बँधायो है । पाय दीनो नीर ताको आयो कुछ प्राण जब, तब शुकदेव मुनि वचन पलटायो है । तू तो है चमारी और मैं हूँ जाति विप्र देव, तेरे मेरे सम्बन्ध कहो कौन सो जुड़ायो है । रे रे मुनि गजब तू तो कह कर पलटे अब साधु विप्र दोय जन भूठ न बोलायो है । कहे राव मानसिंह साच हू न मानो यारो, स्वप्न हू की बात यह तो स्वप्न में बनायो है । स्वप्न में ऐसो है दुःख जागत में होय केतो, मन की गति को कोऊ अज्ञाहु न पायो है ॥

॥ कवित्त ॥

लाख बात कही पर एकहु न मानी उन, हठ चढ कर शुकदेव हू को ब्यायो है । कई दिन रहे संग सुत सुता दोय चार, अब शुकदेव के परिवार जो बढायो है । नारी सुत लिए साथ जंगल में जो चले जात, आमहू को वृक्ष एक बहुत सुन्दर आयो है । ताके नीचे कूप एक ताके ऊपर लागी कैरी, ताको देख बालक एक रुदन जो मचायो है । यही आम लेऊँ मैं तो ओर हू न लेऊँ आन, लाखों बात कहकर शुक उनको समझायो है । सुपने को चार मान नाचो हू न मानो कोई, सपने की चमारी ज्यूँ सुपने शुक आयो है ॥

॥ कवित्त ॥

बालक को कहन तो नहीं शुक मान्यो कछु, नारी घूँघट पट में बैन गुटकायो है । भीणे भीणे नैन जोय तीखे जो भवारे होय, टेढ़ी निजर करके यूँ वचन फरमायो है । आछो मरद भयो तो ते हम ही भली है नार, एक आम काज केतो ओठो उतरायो है। मेरो भेप पहन ले तो मैं ही जाय तोड़ूँ याका, ऐसो बैन सुन्यो तो शुकदेव रिसियायो है । तुरत जाय चढ़यो वह आम के ऊपर शुक, चढ़ते एक नारी को वचन जो सुनायो है । कठिन आम ऐसो याते नहीं टूटे गिरूँ मैं तो, बात सुनी नार हंस दंत जो दिखायो है । भलो मरद भयो ऐसो मरण हू से डरे तू, अंत जाति हू को भला विप्र जो कहायो है । कहे राव मानसिंह स्वप्न हू की बात यारो, स्वप्न हू की बात याको रिस हू न लायो है ॥

॥ कवित्त ॥

शुक चायो तोड़ने को आम हू की करी जाते, कैरी हू को तोड़े पहले दारो जो गिरायो है । जाय गिरयो साथ साथ कूपहू में शुकदेव, बैठो जो तख़त पर आप भिझकायो है । चल्यो जो जनक हू के पाँव छुवन काज शुक, दूर रह दूर रह बैन जो सुनायो है। व्याह तो चमारी साथ कियो मोय भ्रष्ट करे, दोय चार सुत को बाप बन आयो है । ऐसी बात सुनी शुकदेव शरमायो मन, और नहीं सूझ्यो हाहा करके चिल्लायो है । कहे राव मानसिंह स्वप्न हू ते जागो मित्रो, वह स्वपनो तो यह कहा साच जो दिखायो है ॥

॥ कवित्त ।

कहे यूँ जनक राव धीरो रह धीरो शुक, रह चुप ऐसी क्यूँ हाहा तैं मचाई है । वह स्वप्न यही स्वप्न स्वप्न ही में स्वप्न देख्यो, वह न सत्य तो कंय सत्य यह कहाई है । वो ही है असत्य और येही है असत्य देखो, यह असत्य से असत्य दरसाई है । जैसो मन बाहर लागे वैसो ही जो लागे उर, मन की कला को यह मन ही लखाई है । मन की कला कोई शूरवीर संत लखे, ज्ञान खड्ग हाथ लेके

शीश जिन उड़ाई है। नहीं तो चमारी हती नहीं तू चमार शुक, नहीं जो चमार तो तू विप्र कहाँ ते आयो है। कहे राव मानसिंह यदि पत आय नहीं, योगवशिष्ट पढो जामें भाख यह सुनायो है। मन की कला ते हारे बडे बडे सन्तजन हार के हैरान भये पार पायो हू न पायो है ॥

॥ कवित्त ॥

स्वप्न हू में स्वप्न देख डरो नहीं शुकदेव, तू नहीं तो चमारी ब्याही नहीं व्यास जायो है। व्यास हू को पुत्र माने माने जो चमारी पति, यह तो तेरो वृथा ही जो मन भरमायो है। नित्य है आनन्द रूप शुद्ध है स्वरूप शुक, जनक कहत तेरो उनमें बितायो है। नारी साथ सोयो ताको दोष हू तै जान्यो शुक, मैंने तेरे मन को यह भरम जो मिटायो है। जैसे तू स्वप्न में चमारी नारी ब्यायो हतो, तैसे जाग्यो नींद हू ते एक न दिखायो है। ऐसे राज्य धन भाग्य झूठे है यह स्वप्न जैसे, मेरो तो नित्यानन्द आनन्द रहायो है। कहे राव मानसिंह स्वप्न ऐसो होत यार, मन यह देखो स्वप्न बीच ही हिलायो है। देवनाथ हाथ पकड़ स्वप्न बीच स्वप्न दीनो, मान जाग जाग्रत बीच ग्यान जो जगायो है ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार । ताल दीपचन्दी ॥

एड़ो कलजुग आयो आवसी; सतजुग दूर रहेला ॥ टेर ॥
बेटा नहीं गिणेला बाप ने, सामो जाब करेला ।
नूर नरों का ऊतरे, नारी जोर चलेला । एड़ो कलजुग० ॥ १ ॥
धीरज धोरियों रो ऊतरे, पाड़ा हलिया खडेला ।
ब्राह्मण अजिया राखसी, धोबी गाय रखेला । एड़ो० ॥ २ ॥
पंडित घर घर मांगसी, मूरख उत्तर करेला ।
महाजन मजूरी कर रह्या, शूद्र धन जोड़ेला । एड़ो० ॥ ३ ॥
क्षत्री रेवेला सूधा गाय ज्यों, दुश्मण वार करेला ।
पोल पन्थ बधसी घणा, खैंचा ताण मचेला । एड़ो० ॥ ४ ॥

ब्रह्मचारी ने बूझे नहीं, साधू देख्याँ डरेला।
व्यभिचारयाँरी पूजा करे, सन्त कोई नाँय मिलेला। एड़ो० ॥ ५ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य ये, कन्या बेच करेला।
वृद्ध बालक कछु ना गिणे, गल पर छुरी जो धरेला। एड़ो० ॥ ६ ॥
चिलम तंबाकू से प्रीतड़ी, ज्याँरा आदर करेला।
दूध छोड़ दारू पिये, बिना मौत मरेला। एड़ो० ॥ ७ ॥
सिंहा रे संग स्यालनी, हाँसी इण री हुवेला।
निज नारी ने छोड़ के, वेश्या गोलो रखेला। एड़ो० ॥ ८ ॥
गोलाई क्षत्री बाजसी, क्षत्रियाँ मान ढलेला।
मानसिंह यों अगम कहे, चौथे अन्त मिलेला। एड़ो० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी। ताल दीपचन्दी ॥

अरे विधिना तू क्यों बावरी भई है॥ टेर॥
कंटक पेड़ गुलाब को रे, निर्फल बेल रही है।
चतुर नारी गल बैलज बान्ध्यो, छैल को मत्रा दिवी है; लिखतीतू भूल गई है॥ १॥
धनवंत किरपण निर्धन पण्डित, धन जहाँ पुत्र नहीं है।
पड़दायतणी गोद खिलावे, रानी के गर्भ नहीं है; लिखतो तोको सुध ना रही है॥ २॥
एक समय राजा रावण के, पायगा माँय रही है।
दाणो दलती नीर भरंती, सो दिन भूल गई है; तोको कुछ याद नहीं है॥ ३॥
सब असुरों मिल यज्ञ कियो है, ब्रह्म त्याग दई है।
आप स्वरूप जोगन होय बैठी, राजा मान कही है; बात सब ही सही है॥ ४॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग-मलार। ताल तिताला ॥

मेहरवा बरसत क्यों नहीं पानी।
तुम बिन राजा रंक दुखित भये, हार के हुए हैरानी॥ टेर॥

जल में थल में तरस रहे सब, थकित मोर पिक बानी ।
पीव पीव कर रटत पपैया, किम कर देर लगानी ॥ १ ॥
मरुधर देश नीर नहीं नेडो, प्राण तजे सब प्राणी ।
प्रजा दुखित देखी नहीं जावे, तब तुम तें विनय ठानी ॥ २ ॥
देव में इन्द्र इन्द्रिय में मन तुम, गीता मध्य बखानी ।
ताहि से हम विनय करत हैं, मान अरज गुन खानी ॥ ३ ॥
नर में राव सोही हम तुम हैं, या में झूठ न जानी ।
हमरो काम काम जो तुमरो, भेद भिन्न नहीं मानी ॥ ४ ॥
जो हम तुम दोऊ एक रूप है, तो जुदा नहीं कोऊ प्रानी ।
करके कृपा आवो जलधारा, अब आनन्द बरसानी ॥ ५ ॥
मान कहे इतने नहीं मानो, वेद उक्त विनय ठानी ।
अब तो कृपा मरुधर पर कीजे, सब घट अन्तर्यामी ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "निहालदे" की । ताल कैरवा ॥

नृपति वोही संसार में रे, रहे प्रजा हितकार ।
प्रजा दुःख देखे नहीं रे, करले जतन हजार ।
करले जतन हजार; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ १ ॥
आप तो सोवे सुख में सदा रे, प्रजा दुःख सूँ मर जाय ।
वो नृपति नहीं दुष्ट है रे, कहूँ न भला पण पाय ।
कहूँ न भला पण पाय; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ २ ॥
प्रजा दुःखी खुद दुःखी रहे रे, प्रजा सुखी तो सुखी होय ।
निश्चय राखे मन माँयने रे, वाँने जीते नहीं कोय ।
वाँने जीते नहीं कोय; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ३ ॥
चक्रवर्ती कई आगे भया रे, सुणलो जिकाँरो भास ।
रामचन्द्र और युधिष्ठिर रे, ज्याँरो प्रजा ने विश्वास ।

ज्यारो प्रजा ने विश्वास; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहेरे लाल ॥ ४ ॥
प्रजा सो जीव रूप है रे, नृपति आतम समान
जीव मिल्यो फिर आतम भयो रे, यूँ कर नीति पिछान।
यूँ कर नीति पिछान; प्रजा रो दुःख सुख शामिल लहेरे लाल ॥ ५ ॥
देवनाथ प्रताप सूँ रे, बढ्यो प्रजा सूँ स्नेह।
मान हमेश आनन्द है रे; बरस्यो प्रेम को मेह।
बरस्यो प्रेम को मेह; प्रजारो दुःख सुख शामिल लहे रे लाल ॥ ६ ॥

॥ सवैया ॥

सत संगत को सुख नाँहि लियो, हिय में नहीं जोत अखण्ड जगी।
मृगनयनी त्रिया के कटाक्षन की, उर में नहीं ये आँनयाली खगी।
घर सूते के दीपक जैसे रह्यो, नहीं योग अरु भोग से प्रीति पगी।
नृप मान कहे धृक है उनको, गल सेली लगी ना नवेली लगी।

॥ सवैया ॥

नहीं डंबर अंग भभूत छई, आडंबर की नहीं खूंटी खगी।
पद लंगर लोह झनंक न हो, कटि मेखली की न खनंक जगी।
जग मग्न समाधि नहीं शिव से, छक अशन चन्द्रमुखी उमगी।
नृप मान कहे धृक है उनको, गल सेली लगी न नवेली लगी॥

परिशिष्ट

॥ सोरठा ॥

॥ मान वचन ॥

मन री मच रही हाक, मन मन कर दौड़े सभी।
इण री करणी राख, ओ मिले कठेई मानसिंह॥

॥ वंक वचन ॥

मानो सूक्ष्म रूप, जाल्यां सूं उलमी नहीं।
भूल में कह दी भूप, कही जिकी टलमी नहीं॥

॥ मान वचन ॥

माया वन अंधियार, जिणमें ओ मनरो बसे।
ज्ञान अग्नि दो जार, कह्यो वचन पूरो करो॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मन गंगा न्हावो, मैल मिटावो, साफ करो मन चोर।
ज्यांसूं मिलसी नन्दकिशोर रे। मन० ॥ टेर ॥

इण जल न्हायो तन होय उजला, मन है कठिन कठोर।
ज्ञान की गंग हमेशा न्हावे तो, चाले न मन रो जोर रे। मन० ॥ १ ॥

गंगा न्हावो ने न्हावो जमुना, मन तो ढोर को ढोर।
इण मन रो नहीं मेल मिटे जद, जूत पड़े दश ओर रे। मन० ॥ २ ॥

अड़सठ तीरथ भटक ने आया, खरचे द्रव्य करोड़।
बाहिर को मैल धोय भया उजला, पर मिट्यो न मन को शोर रे। मन० ॥ ३ ॥

सद्गुरु गिरी से गंगा निकसी, फैल्यो नीर चहूँ ओर।
म्हे तो म्हारे घर मे सूता, पर बहतां दे गई हिलोर रे। मन० ॥ ४ ॥

लागत हिलोरो पाप सब उडगया, मान गयो मन मोर।
जीव ही जीव को चकरो भूल्यो, मिलगयो और ही और रे। मन० ॥ ५ ॥

महातम सुण ने गंगा न्हाईजो, मिट जावे जम रो जोर।
ज्ञान की गंग गुरु नित बहावे, धार पड़े चहूँ ओर रे। मन० ॥ ६ ॥

देवनाथ गुरु गंग न्हवायो, फन्द दिया सब तोड़।
और न्हावो तो न्हावो मित्रो, मान कहे कर जोड़ रे। मन० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

यह है गंग हम री, बहे गहरी धारी, ब्रह्म समुद्र में जाय।

कोई नर गंगा सागर में न्हाय रे। यह है० ॥ टेर ॥
ब्रह्म समुद्र गहरो भरियो, नहीं है जिण रो थाह।
भाग्य सभागी सो उण में न्हासी, नहिं तर नदियों में न्हाय रे। यह० ॥ १ ॥
पांच पचीस वृत्ति उरवृत्ति, मच्छी बसे इण मांय।
मोह को मच्छ रहत है मांही, चाहे तो बाहिर आय रे। यह० ॥ २ ॥
प्रेम की जहाज और सन्त खेवैया, जावे जिकां ने ले जाय।
जहाज में बैठ कपट जो राख्यो, अधबिच देला डूबाय रे। यह० ॥ ३ ॥
साठ हजार सगर सुत उबरे, अचरज इण रो नांय।
इण ही तरह सूं समझा आवो तो, जग ने देऊँ तिराय रे। यह० ॥ ४ ॥
हमने तो ब्रह्म समुद्र जो पायो, नाथ मिल्या म्हाँ ने आय।
सागर में गंग जो सहज समाई, गुरुगम दीवी मिलाय रे। यह० ॥ ५ ॥
मुवाँ मुक्ति वह गंग देवे, शायद देवे नाँय।
मेरी तो गंग सहजे देवे मुक्ति, आवो तो देऊँ दिखाय रे। यह० ॥ ६ ॥
उण गंग न्हाया अनन्तो मरग्या, पत्र किणी रो नाँय।
इण गंग न्हाया जिकाँरी सुनलो, आगे देऊँ बताय रे। यह० ॥ ७ ॥
विश्वामित्र वशिष्ठजी न्हाया, राम गरक जिण माँय।
वेदव्यास शुकदेव मुनि जिन, प्रत्यक्ष साख सुणाय रे। यह० ॥ ८ ॥
दत्त ने गोरख कबीर भरत, न्हाये गंग के माँय।
शंकराचार्य न्हाये थे इण में, जीवन मुक्ति पाय रे। यह० ॥ ९ ॥
डंके की चोट मैं कह देता हूँ, मन घबराऊँ नाँय।
ऐसे तिरे तो हमभी तिरेंगे, स्वाने नाँय डुबाय रे। यह० ॥ १० ॥
घर में गंगा समुद्र है घर में, घर में सब योग मिलाय।
मान यों जीवित मोक्ष मिली फिर, बाहिर जाय बलाय रे। यह० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

मैं तो लिवी फकीरी, अजर अमीरी, छिन्न भिन्न नहीं होय।

फिर ले देखो सब कोय रे। मैं तो० ॥ टेर ॥
च्यार जिणां ने ले चेला मूंड्या, दीवी आपदा खोय।
राग ने द्वेष जन्मो जन्मो रा, पड़िया रेवे सब रोय रे। मैं तो० ॥ १ ॥
सुरता निरता दोय चेल्याँ मूंडी, रही विषय में मोय।
समता धार जिवी मन माँयने, मूर्धनी मठ मे सोय रे। मैं तो० ॥ २ ॥
सत्गुरुपों सूँ भीख जो माँगी, उतर न दीयो कोय।
शरणा झोली में लीनी भिक्षा, मन शब्दों री जोय रे। मैं तो० ॥ ३ ॥
चेला ने चेली सगला सुपातर, दु:ख न देवे मोय।
कबहू हुक्म लोपे नहीं मेरो, ज्यूँ चाहूँ वही होय रे। मैं तो० ॥ ४ ॥
देवनाथ को नाथ कियो जद, अपनो आप मे पोय।
मानसिंह ऐसो संन्यासी, होयाँ सूँ मिट जावे दोय रे। मैं तो० ॥ ४ ॥

॥ सवैया ॥

होत फकीर बुरे जबरे जो फकीरन तें तो हरी घबरावे।
नेकहू टेढी दृष्टि करे तो ये राम को काम सभी जो मिटावे।
ध्यान ही राम बने यह बैठे तो और सो राम को कौन कहावे।
काल हू देख डरे इन ते यह काल बड़े इन्हे काल न खावे।
आप ही राम बतावन है ये और राम को कहा बतावे।
राम ते राम डरे किम कर ये राम ही राम सो राम रमावे।
देवनाथ गुरु राम मिले जो फकीरों के प्रीति की रीति सिखावे।
मान कहे कोई मानो न मानो ये संत अनन्त सो साफ सुनावे॥

॥ गान ॥

॥ राग विहाग। ताल कैरवा ॥

साधो मेरे बिन गेरू रंग छाया रे।
रंगियों पिछे रंग कदे नहीं उतर्यो,
दिन दिन घुटत सवाया रे। साधो मेरे० ॥ टेर ॥

कूँडी विचार प्रेम रो पाणी, गम री गेरू घिसाया रे ।
बाँकिकरी री लिवी फिटकड़ी, जद रंग पक्का आया रे । साधो मेरे० ॥ १ ॥
सत रो साबू सुरता ने दीयो, श्वासो ही श्वास घुपाया रे ।
मन कपड़े ने इसड़ो धोयो, कूड़ रा दाग मिटाया रे । साधो मेरे० ॥ २ ॥
निरख परख ने रंग में डुबायो, खूब झकोल रँगाया रे ।
घोटो ताड़ना सद्गुरु दीनी, कर कुन्दी सुख पाया रे । साधो मेरे० ॥ ३ ॥
माया बादल अलगा हटिया, ज्ञान सूरज चमकाया रे ।
अगम निगम रा दिया झपेटा, सुरती ने निरती सुकाया रे । साधो मेरे० ॥ ४ ॥
गुरु रँगरेज रँगयो रंग आछो, पहर अमर पद पाया रे ।
पाखंडिया तो देख ने डरिया, अलगाँ सूँ शीश झुकाया रे । साधो मेरे० ॥ ५ ॥
अग्नि-वरण रंग मेरो भगवाँ, हम तेही रूप कहाया रे ।
पाँच तत्त्व ने पचीस प्रकृति, सबने भस्म बणाया रे । साधो मेरे० ॥ ६ ॥
इण रंग रंग में तो भयो संन्यासी, ना कहीं गया न आया रे ।
जरणा झोली भीख भाव की, जिण दिया जासूँ पाया रे । साधो मेरे० ॥ ७ ॥
ऊँच ने नीच वरण नहीं जाति, भेदा भेद मिटाया रे ।
तीनूँ आश्रम के गुरु बन बैठे, अब भेद कौन विध लाया रे । साधो मेरे० ॥ ८ ॥
चारूँ ही वरण आश्रम तीनूँ, अब शिष्य मेरे कहाया रे ।
आखिर देखा रूप सब मेरा, मम स्वरूप शुद्ध पाया रे । साधो मेरे० ॥ ९ ॥
देवनाथ गुरु किरपा करके, अगम योग दरसाया रे ।
मानसिंह ऐसे होय संन्यासी, धिन उणाँ री जननी जाया रे । साधो मेरे० ॥ १० ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ गिरनारी । ताल फैरवा ॥

कोई चालो उण घर चालो रे, मत ऊता ऊता मालो । कोई चालो उण घर ॥ टेर ॥
रेचक पूरक कर कर कुम्भक, यूँ कँई मन ने पालो रे । मत ऊता० ॥ १ ॥
यूँ तो पालियो ओ नहीं पलसी, मनड़ो बड़ो है विलालो रे । मत ऊता० ॥ २ ॥
कँई थे कुण्डली नागन जगावो, कँई सत भोम रुखालो रे । मत ऊता० ॥ ३ ॥

मुन्न ने धुनों सूँ ओ नहीं डरसी, मनवो बड़ो है नखरालो रे । मत० ॥ ४ ॥
इण मन ने निज मन कर देवो, झोड मिटेला जद थॉरो रे । मत० ॥ ५ ॥
निज मन होयाँ कटेई चाहे रेवो, नहीं चहिये रखवालो रे । मत० ॥ ६ ॥
मानसिंह मन निज मन कीयो, हरदम रहे मतवालो रे । मत० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ-गिरनारी । ताल कैरवा ॥

मैं तो नहीं हठयोग कमाया रे, नित राजयोग चित लाया । मैं तो नहीं० ॥ टेर ॥
भारत वंश उधार कृष्णजी, उनका मैं हुकम उठाया रे । नित राज० ॥ १ ॥
राजरोगी मन भयो विषयन में, गुरु ने नबज दिखाया रे । नित राज० ॥ २ ॥
समता सुवर्ण भस्म दिवी इसको, जिमसे ताप मिटाया रे । नित राज० ॥ ३ ॥
गीता गाय को लेकर माखन, कई-कई औषध(१)मिलाया रे । नित राज० ॥ ४ ॥
सुवर्ण वसन्त(२)मालती करके, मन को लेके बिलाया रे । नित राज० ॥ ५ ॥
सील सन्तोष को मितोपलादि, गम गिलोय मन लाया रे । नित राज० ॥ ६ ॥
मैं मगना की गलिका खड़ाई, तत्त्वमसि मद (३) लाया रे । नित राज० ॥ ७ ॥
कर हठयोग बिमार भयो बपुरो, स्वास्थ्य सुखर सुख पाया रे । नित राज० ॥ ८ ॥
भाव विदाम सेक कियो गीरो, आगम आश्रठ मिलाया रे । नित राज० ॥ ९ ॥
क्षय रोगी को कियो है निरोगी, मरते फेर जिवाया रे । नित राज० ॥ १० ॥
देवनाथ गुरु मिले रसायनी, जद यह रसायन सीखाया रे । नित राज० ॥ ११ ॥
मानसिंह ऐसे वैद भये पक्के, सतगुरु मोय बनाया रे । नित राज० ॥ १२ ॥

॥ गान ॥

॥ राग देश-सोरठ । ताल कैरवा ॥

मो सम कौन है अन्तर्यामी ।
सबके अन्तर व्यापक हूँ मैं, सब प्राणिन मे नामी । मो सम० ॥ टेर ॥

१—साधन, २—उत्तम विचार, ३—शहद ।

वेद ने ग्रन्थ साख दहे सगरा, नहीं है इण में खामी।
न्यारो कहे सो कहे भूल से, कर कर बात निकामी। मो सम० ॥ १ ॥
दीन गरीब आप हम अपने, फिर क्यों लहें बदनामी।
करता हम अवरन से माँगें, बात नहीं मन मानी। मो सम० ॥ २ ॥
हम ही तो मात पिता पुनि हम ही, हम ही गरभ में जामी।
हम ही किये और हम ही भोगें, कुण होय नमक हरामी। मो सम० ॥ ३ ॥
देवनाथ गुरु मिले हमें जद, मेट दिवी मन खामी।
मानसिंह जद अपने आप हम, किसकी करें गुलामी। मो सम० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सारंग। ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई म्हाँने नहीं मुक्ति रो डर रे।
चाहे तो मुक्ति मिले ना मिले तो, इण रो नहीं है फिकर रे ॥ टेर ॥
तीरथ व्रत खेल लड़कन का, म्हाँ पर नहीं है उजर रे।
शिर हो तो जब सब कुछ करिया, अब तो काट दियो धर रे ॥ १ ॥
पत्थर पाथर कदे न पूजूँ, मन मुड़दा लिया कर रे।
पोल पाखण्ड रो ढोल फोड़साँ, इण पर कसी कमर रे। ॥ २ ॥
कुण गिरनार चढ़े अब म्हारे, जद चढ़ गया महल शिखर रे।
कुण रत्नाकर सागर तिरसी, ज्ञान समुद्र लिया तिर रे। ॥ ३ ॥
रामेश्वर जगदीश द्वारिका, नहीं बद्री री हर रे।
सब कुछ में और मुझ में सब कुछ, पायो अजर अमर रे ॥ ४ ॥
तुंगनाथ त्रिजुगी चढ़े कुण, मैं तो पायो देव अधर रे।
कुण शंकर त्रिम्बक ने पूजे, पायो असल अणघड़ रे ॥ ५ ॥
कुण तो भैरव देवी पूजे, कुण दे शंखाँरा स्वर रे।
याँ बपुड़ो ने कुण आवण दे, नहीं अठे यांरी कदर रे ॥ ६ ॥
मुक्ति री मुक्ति कर देवां, म्हे क्षत्री सुत नर रे।

पन्थापन्थ बकरियाँ बापड़ी, इणने सिंह बण चर रे ॥ ७ ॥
साचा बोलो तो मन्तो थे आईजो, नहीं तो रहिजो पर रे।
पग पर पग दे कर दूँ सीधा, मारूँ ज्ञान रो शर रे ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु साथ कियो जद, मिट गई सब गडबड़ रे।
मान कहे मत भूल थे आईजो, मर जीवाँ रे घर रे ॥ ६ ॥
॥ मान ॥

॥ राग सारंग । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई मैं तो उड़ गयो बिन पग पर रे।
इण मारग तो वे नर आवे, जीवनडा जाय मर रे ॥ टेर ॥
पाँच तत्त्वों से न्यारो रहूँ मैं, सब मे राखूँ निजर रे।
क्या है मजाल विमुख कोई रेवे, राखूँ सगलों ने पकड़ रे ॥ १ ॥
मेरो हुक्म सभी ये माने, कर राख्या सब ने मर रे।
दुश्मण जिणने मार पछाडिया, भायो गी करली कदर रे ॥ २ ॥
ज्ञान विवेक विचार चार ए, भाई हमारे घर रे।
शुद्ध वैराग ने काम सब दीयो, नहि तर जातो बिगड़ रे। ॥ ३ ॥
"मैं" अहंकार पकड़ कियो उलटो, बात दिवी है बदल रे।
ब्रह्मास्मि स्वय "मैं" ब्रह्म हूं, आदि अजर अमर रे ॥ ४ ॥
शीश उड़्यो तो कुछ नहीं परवा, अब दूजो शिर लियो धर रे।
तुरिया पद चौथे पर पहुंच्यो, जीत्यो काल समर रे ॥ ५ ॥
पोला पन्थ गोल नहीं चलसी, म्हारी मत कीजो कोई डर रे।
आवणो हुवे तो समझने आईजो, मैं तो लेऊँ झट शीश कतर रे ॥ ६ ॥
स्याल जाण थे मत भरमाज्यो, मैं क्षत्रीसुत नर रे।
काढ्यो मैं खड्ग धधक तो बाहर, निकल जावेला अकड़ रे ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु मार्‌यो मोकूँ, मैं तो मर ने जीयो फिर रे।
मानसिंह अब काल क्या कामी, कांपे ऊभो थर थर रे ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ राग मालकोश । ताल तिताला ॥

साधो सब जग कुटुम्ब हमारो। विश्वविभू में व्यापक हूँ हम,
कौन रहे फिर न्यारो ॥ टेर ॥
सब वसुधैव रूप निज मेरो, वेद और ग्रन्थ उचारो।
खेलत खेल अखेल रहें हम, देखो परम उजियारो ॥ १ ॥
मैं ही कर्म करत पुनि मैं ही, मैं हूँ कर्म से न्यारो।
मैं ही फल और भोग मैं ही हूँ, मैं हूँ तत्त्व इकसारो ॥ २ ॥
जब "वसुधैव कुटुम्बकम्" चीन्यो, मिट गयो भरम हमारो।
भिन्न भिन्न समझ मार नित खाई, भयो मैं आतम हरआरो ॥ ३ ॥
व्यक्तिभाव नहीं उर आनूँ, नहीं अहङ्कार उर धारो।
मेरो ही रूप विश्व यह कहिये, मैं ही विश्व आधारो ॥ ४ ॥
काम रूप होय काम करूँ मैं, देत यज्ञ में सहारो।
एक अनेक अनेक एक होय, पूरो यज्ञ हमारो ॥ ५ ॥
मैं ही पिता पुत्र पौत्र मैं हूँ, मैं पती पत्नि विचारो।
मेरी खुशी से भयो अनेको, देख्यो ब्रह्मतत्त्व सारो ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु दया करी जद, पड़दो दूर निवारो।
"तत्त्वम्" पद में मान "असि" पद, सब जग सम उजियारो ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड । ताल दादरा ॥

जग रूप हमारो, ना कोई न्यारो, किनको जावें त्याग।
मेरे ना कोई राग वैराग रे। जग० ॥ टेर ॥
अपणो आप ताप है किण री, कहो कहाँ लागे दाग।
एक स्वरूप विचार लियो जद, न्यारो रयो कहाँ भाग रे। जग० ॥ १ ॥
सङ्कल्प विकल्प सब ही छोड्या, सब की उड़ाई खाक।

आधि ने व्याधि उणी दिन मिट गई, जगी ज्ञान की आग रे । जग० ॥ २ ॥
देवनाथ ने हाथ गह्यो जद, सीधो बतायो माग ।
मान अमान निर्मान भयो जद, ना कोई किण री लाग रे । जग० ॥ ३ ॥

॥ मान ॥

॥ राग सारंग मलार, तर्ज "थारी" की । ताल दीपचन्दी ॥

जीव ब्रह्म खोजण गया, अपना आप गमाया हाँ ।
जीव ब्रह्म कुछ ना मिल्या, खाली हाथे आया जी । ॥ टेर ॥
जीव कह्यो कद जनमियो, आप ही अलुझाया हाँ ।
ईश कह्यो दूजो है कोई, यह सब भरम भुलाया जी । ॥ १ ॥
ब्रह्म कह्यो व्यापक विश्व में, अपनो आप है सोई हाँ ।
यों कर ब्रह्म चीन्यो नहीं, न्यारो कर जोई जी । ॥ २ ॥
ब्रह्म जीव कुछ है नहीं, वह तो कल्पित सोई हाँ ।
अधर जहाँ लागे नहीं, धरणी कैसे होई जी । ॥ ३ ॥
ब्रह्म कोई खाडो नहीं, गिर ऊँचा नहीं आया हाँ ।
अपनो आप निज आप है, ना कोई शब्द लगाया जी । ॥ ४ ॥
वाचक ज्ञानी सो इसा, ब्रह्म खाड के माँई हाँ ।
खाड गिरयाँ कैसे मिले, तुम ही सुन कहाई जी । ॥ ५ ॥
मेरो तो व्यापक विश्व में, आपो आप ही पाया हाँ ।
जीव ब्रह्म और ईश भी, कल्पित मैं ही तो लगाया जी ॥ ६ ॥
माया भी मो से भिन्न नहीं, भिन्न कहे सोई कूड़ा हाँ ।
"एकोऽहम् बहुस्याम" की, मो में भई है फोरा जी ॥ ७ ॥
दीपक लोय उजियार हो, कैसे कहे जो न्यारो हाँ ।
वही तो उजारो वही लोय है, लोय ते होय उजियारो जी ॥ ८ ॥
देवनाथ सतगुरु मिल्या, भ्रम मेरो बह गयो सारो हाँ । . .
मानसिंह अपने रुप में, सगला रुपनिहारो जी ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग कानड़ा । ताल दीपचन्दी ॥

जनक जनक वहे सब ही गावे। हिम्मत करे तो खुद होय जावे। जनक० टेर।
जनक के हुती पंच भूत की देहा। देह छते भी वो था जो विदेहा।
इण में संशय रती नहीं आवे। जनक जनक० ॥ १ ॥
जनक भी हुतो कोई जननी को जायो। नहीं वो जनक आकाश से आयो।
कर पुरुषारथ निज पद पावे। जनक जनक० ॥ २ ॥
जनको शब्द को अर्थ सुण भाई। जिणसूँ जीत लेवो जनकाई।
होय जनक निज रूप समावे। जनक जनक० ॥ ३ ॥
अपणा जाणे जनक है सोई। अपणा भूल्या सो मूरख होई।
जाण्याँ बिना कैसे जनक कहावे। जनक जनक० ॥ ४ ॥
हम नहीं हैं जनक भूनक हैं भाई। भूले हुवे कैसे वो पद पाई।
भूल भूल में ज्ञान गमावे। जनक जनक० ॥ ५ ॥
देवनाथ गुरु जानक चीना। मानसिंह को जानक कीना।
देह देह छते ही विदेह रहावे। जनक जनक० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी की। ताल कैरवा ॥

साधो हम ऐसा यज्ञ कर लीना होजी।
कृत्य अकृत्य विचार लियो उर, आतम परगट चीना रे। साधो हम ॥टेर॥
गुप्त देव को भूल कर बैठे, अब परगट कर लीना होजी।
यज्ञ भाग हम प्रत्यक्ष देत हैं, उन हमें अमीरस दीना रे। साधो० ॥ १ ॥
जो कुछ किया सो यज्ञ रूप है, और भाव तज दीना होजी।
सर्व देव सो हम में व्यापक, न्यारा फेर रहे ना रे। साधो० ॥ २ ॥
कृष्ण कृपा कर यज्ञ बतायो, कियो पारथ परवीना होजी।
नित्य विचार मंत्र लख, दुविधा निकट रही ना रे। साधो० ॥ ३ ॥

छान्दयोग और केन पढ़े हम, साफ साफ कह दीना होजी।
तातें यज्ञ हमें मन भायो, दुविधा तन पै सही ना रे। साधो० ॥ ४ ॥
यज्ञ चक्र गुरु देवनाथ से, कर हिम्मत ले लीना होजी।
मानसिंह स्वारथिये मिले सब, असली बात कही ना रे। साधो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "धाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो म्हाँ सूँ वो यज्ञ बण नहीं आवे होजी।
बैठे मंत्र जपे कई लाखों, कहाँ वक्त अस पावे रे। साधो० ॥ टेर ॥
कौन महनत कर देवे आहुति, कुण फिर अग्नि जलावे होजी।
क्षुधा तृषा दोऊँ अग्नि जलत हैं, नित आहुति पहुँचावे रे। साधो० ॥ १ ॥
उण यज्ञ से फल मिले या मिले नहीं, कालान्तर बतलावे होजी।
इण यज्ञ में जो देय आहुति, देते फल मिल जावे रे। साधो० ॥ २ ॥
शुद्ध ब्रह्म नित सद्‌गुरु कहिये, सो नित यज्ञ करावे होजी।
ब्रह्म रूप सो अन्तर बैठा, नित साक्षी दरसावे रे। साधो० ॥ ३ ॥
वो यज्ञ करत यदि जो अर्जुन, सगलो काम बिगड़ावे होजी।
शूरवीर तैयार खड़े शिर, दुश्मण वार चलावे रे। साधो० ॥ ४ ॥
मेघनाद नारायणतक जो, उण यज्ञ सूँ ड पचावे होजी।
कर्म यज्ञ लखमण कियो हनुमत, यज्ञ विध्वंस करावे रे। साधो० ॥ ५ ॥
इन पर देवी कोपी नाँही, उन पर कोप दिखावे होजी।
मंत्र यज्ञ से कर्म जबर है, इण कर इण फल पावे रे। साधो० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु कृपा मिले जब, साचो यज्ञ करावे होजी।
मानसिंह ऐसो यज्ञ कीनो, जीवत मुक्त हो जावे रे। साधो० ॥ ७ ॥

॥ सोरठ ॥

मान वचन

कीनो विविध विचार, सार लख्यो गीता तणो।
तो पायो निरय अवतार, मन अपने मे मानसी॥

बंक वचन

सुन हो छत्रपति नाथ, मनुष्य ईश अवतार कहो।
यह मन नाँहि समात, बात तुमारी बंकुरी॥

मान वचन

जो जन बाँका होय, सीधी तो सूझे नहीं।
बांकी लेवे जोय, सीधी पर पग ना धरे॥

॥ कवित्त ॥

कर्म के परवाण होत विभूति यह वेद कही, सो तो हम तुम्हें कैसे न्यारी बतलायँगे। बारह कला के अवतार श्रीरामचन्द्र, सोलह कला के श्रीकृष्ण दरसायँगे। इनकी विभूति अधिक उनकी कमी है क्यों, इनके सदृश क्या अवतार न कहायँगे। यह तो है भूल बंक त्याग भ्रमना को अब, जितनो है प्रकाश तितनो तेज दिखायँगे॥

॥ कवित्त ॥

निमित्त अवतार धार कारण सूँ लियो रूप, पर मेरी इच्छा से वह बाहिर न कहाये हैं। माया वशु धार जीव तार पार किये जिन, आखिर तो मेरे शुद्ध रूप में समाये हैं। देख निर्वाण प्रकरण गीता को देख इत, सर्व भूतात्म यूँ कृष्ण फरमाये हैं। कहे राव मानसिंह घर को न लायो मैं, जैसे वेद कहे वचन तैसे हम गाये हैं॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे व्याऊं राधे कृष्ण तेरो कारो" की। ताल कैरवा॥

देखी उर माँय, हरि ने लीला दिखाई रे; देखी उर माँय॥ टेर॥
जननी जसोदा कहिये जरणा, जिन ऐसो सुत जाय॥
ज्ञान पुत्र ऐसो हम पायो, जन्म मरण ज्याँरा फेर नहीं आय रे। देखी०॥ १॥
समता जमुना निर्मल वेवे, जिण रो तीर सुहाय।
तर्क वितर्क गेंद वो खेले, कबहू हार के घर नहीं आय रे। देखी०॥ २॥

छान्दयोग और केन पढ़े हम, साफ साफ कह दीना होजी।
ताते यज्ञ हमें मन भायो, दुविधा तन पे सही ना रे। साधो० ॥ ४ ॥
यज्ञ चक्र गुरु देवनाथ से, कर हिम्मत ले लीना होजी।
मानसिंह म्हारिये मिले सब, असली बात कही ना रे। साधो० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "बाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो म्हाँ सूँ वो यज्ञ बण नहीं आवे होजी।
बैठे मंत्र जपे कई लाखों, कहाँ वक्त श्रम पावे रे। साधो० ॥ टेर ॥
कौन महनत कर देवे आहुति, कुण फिर अग्नि जलावे होजी।
क्षुधा तृषा दोऊँ अग्नि जलत हैं, नित आहुति पहुँचावे रे। साधो० ॥ १ ॥
उण यज्ञ से फल मिले या मिले नहीं, कालान्तर बतलावे होजी।
इण यज्ञ में जो देय आहुति, देते फल मिल जावे रे। साधो० ॥ २ ॥
शुद्ध ब्रह्म नित सद्गुरु कहिये, सो नित यज्ञ करावे होजी।
ब्रह्म रूप सो अन्तर बैठा, नित साक्षी दरसावे रे। साधो० ॥ ३ ॥
वो यज्ञ करत यदि जो अर्जुन, सगलो काम बिगड़ावे होजी।
शूरवीर तैयार खडे शिर, दुश्मण बार चलावे रे। साधो० ॥ ४ ॥
मेघनाद नारायणतक जो, उण यज्ञ मूँड पचावे होजी।
कर्म यज्ञ लछमण कियो हनुमत, यज्ञ विध्वंस करावे रे। साधो० ॥ ५ ॥
इन पर देवी कोपी नाँहीं, उन पर कोप दिखावे होजी।
मन्त्र यज्ञ से कर्म जबर है, इ कर इ फल पावे रे। साधो० ॥ ६ ॥
देवनाथ गुरु कृपा मिले जब, साचो यज्ञ करावे होजी।
मानसिंह ऐसो यज्ञ कीनो, जीवत मुक्त हो जावे रे। साधो० ॥ ७ ॥

॥ सोरठ ॥

मान वचन

कीनो विविध विचार, सार लख्यो गीता तणो।
तो पायो नित्य अवतार, मन अपने में मानसी ॥

बंक वचन

सुन हो छत्रपति नाथ, मनुष्य ईश अवतार कहो।
यह मन नाँहि समात, बात तुमारी बंकुरी ॥

मान वचन

जो जन बाँका होय, सीधी तो सूझे नहीं।
बांकी लेवे जोय, सीधी पर पग ना धरे ॥

॥ कवित्त ॥

कर्म के परमाण होत विभूति यह वेद कही, सो तो हम तुम्हें कैसे न्यारी बतलायेंगे। बारह कला के अवतार श्रीरामचन्द्र, सोलह कला के श्रीकृष्ण दरसायेंगे। इनकी विभूति अधिक उनकी कमी है क्यों, इनके सदृश क्या अवतार न कहायेंगे। यह तो है भूल बंक त्याग भ्रमना को अब, जितनो है प्रकाश तितनो तेज दिखायेंगे ॥

॥ कवित्त ॥

निमित्त अवतार धार कारण सूँ लियो हरण, पर मेरी इच्छा से वह बाहिर न कहाये हैं। माया वपु धार जीव तार पार किये जिन, आखिर तो मेरे शुद्ध रूप में समाये हैं। देख निर्वाण प्रकरण गीता को देख इत, सर्व भूतात्म यूँ कृष्ण कहाये हैं। कहे राव मानसिंह घर को न लायो मैं, जैसे वेद कहे वचन तैसे हम गाये हैं ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ध्याऊं राधे कृष्ण तेरो कारो" की। ताल कैरवा ॥

देखो उर माँय, हरि ने लीला दिखाई रे; देखो उर माँय ॥ टेर ॥
जननी जसोदा कहिये जरणा, जिन ऐसो सुत जाय ॥
ज्ञान पुत्र ऐसो हम पायो, जन्म मरण ज्याँरा फेर नहीं आय रे। देखो० ॥ १ ॥
समता जमुना निर्मल बेवे, जिण रो तीर सुहाय।
तर्क वितर्क गेंद वो खेले, कबहू हार के घर नहीं आय रे। देखो० ॥ २ ॥

पाँच पचीस मिली सब गोपी, अनहद रास रचाय ।
ओंकार ध्वनि बजी बाँसुरी, सुर नर मुनि याको सुन सुख पाय रे । देखो० ॥ ३
जिज्ञासु पण जीव हतो जद, रयो मुमुक्षु थाय ।
जीव पणो तज ब्रह्म रूप भयो, शुद्ध स्वरूप को खोज लगाय रे । देखो० ॥ ४
जीव ने ब्रह्म दोऊँ जद मिट गया, लारे रयो कछु न य ।
आप खिलारी आप भयो लीला, आप देख अपणा गुण गाय रे । देखो० ॥ ५
देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद, दीया कृष्ण बणाय ।
मान कहे अब कृष्ण भये हम, भरम गाँठ को दीवी है गमाय रे । देखो० ॥ ६

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ब्याऊँ राधे, कृष्ण तेरो" की । ताल कैरवा

देख्यो घनश्याम, सब बीच मुरारी रे, देख्यो घनश्याम० ॥ टेर ॥
अजब खेल नटवर को देख्यो, खेल्यो जगत तमाम ।
सभी खेल कर रह गयो न्यारो, पार न पायो वाको वेद पुरान रे । देख्यो० ॥ १ ॥
खेलन खेल अखेल रहे फिर, करता काम अकाम ।
नाना रूप खेल रच्यो निशिदिन, फिर बैठो खूब ओ करे विश्राम रे । देख्यो० ॥ २
नाम रूप से न्यारो कहिए, सब ही उणरा नाम ।
जो कोई उणने जाण विचारे, पाय लेवे वो पद निर्वाण रे । देख्यो० ॥ ३ ॥
सभी धाम में व्यापक कहिये, ना कोई उण रे धाम ।
मानसिंह मैं देतो देख्यो पूरण सब बिच आतमराम रे । देख्यो० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ राग भैरवी, तर्ज "कैसे ब्याऊँ राधे कृष्ण तेरो कारो" की । ताल कैरवा ॥

पारथ बनाय, हरि ने गीता सुनाई रे; पारथ बनाय ॥ टेर ॥
कुकर्मो रा कौरव ऊभा, सब ही फौज जुड़ाई ।
अर्जुन कुटुम्ब जाण कर डरियो, सदगुरु उणने धीरज बन्धाई रे । पारथ ॥ १ ॥
या तन रथ में सदगुर बैठा, करड़ी वाग संभाई ।

कर्मक्षेत्र में रथ को लीयो, इत उत घोड़ा अलग न जाई रे पारथ० ॥ २ ॥
किसका तू और कौन है तेरा, देह अभिमान गिराई।
अर्जुन कहे झूठ कर्म को जाणे, अटल रहे तन नासक शरम न आई रे। पारथ० ॥ ३ ॥
कर्म क्षेत्र में हारे मूरख, हारत लाज न आई।
उठ खड़ा हो कर्म कर निर्भय, पाप कर्म तोकूँ लागे नाँई रे। पारथ० ॥ ४ ॥
उतर गयो तू कर्म क्षेत्र में, अब क्यों रयो घबराई।
करणा है सो करले निर्भय, अब क्यों पलट तेरी म्यान नमाई रे। पारथ० ॥ ५ ॥
जीव हतो ते ब्रह्म भयो अब, जीव ब्रह्म कुछ नाँई।
कर्म भूमि के कुरुक्षेत्र में, कुकरम कौरव दीना खपाई रे। पारथ० ॥ ६ ॥
बन पारथ कोई पढ़ले सुनले, धिन है वाँरी माई।
नित्य पाठ लख पढ़े गीता को, मनुष्य नहीं वो तो पशु सो कहाई रे। पारथ० ॥ ७ ॥
करे नित पाठ विचार करे मन, बुद्धि तर्क बढ़ाई।
देह अभिमान दूर धर दीनो, करता करम फिर रहे अकरताई रे। पारथ० ॥ ८ ॥
देवनाथ गुरु कृष्ण मिल्या जद, यह बूँटी बस पाई।
मान कहे मैं कृष्ण रूप हूँ, जीव ब्रह्म ईश की मिट गई जुदाई रे। पारथ० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग माँड-ताल दादरा ॥

कैसे हीरे लुटाये, कृष्ण दिखाये, कर कर लो व्यापार।
एड़ा मिलसी न दूजी बार रे। कैसे० ॥ टेर ॥
काच कथीर ने पत्थर पाथर, काम न आवे लिगार।
गीता खाण के हीरे बिणजो, होवो भवसागर पार रे। कैसे हीरे० ॥ १ ॥
ये हीराँ ने चोर ले जावे, छीने राज दरबार।
बुद्धि खजाने ए हीरा मेलो, काम आवे हर बार रे। कैसे हीरे० ॥ २ ॥
वृत्ति नारी रे हाथ खजानो, राखो पहरायत चार।
बिना विचार कदे नहीं खरचे, खरचे विचार विचार रे। कैसे हीरे० ॥ ३ ॥

जो यों हीरां में शङ्का होवे तो, राखो न शङ्क लिगार।
तर्क वितर्क की घण ले कर में, सद्‌गुरू सन्मुख मार रे। कैसे हीरे० ॥ ४ ॥
मतवादी जो खोटा भेल्या, वे रहसी न्यारा ही न्यार।
लागन चोट ही किरचा होसी, देखो पक्की मन धार रे। कैसे हीरे० ॥ ५ ॥
हृदय एरन पर हीरा कूट्या, धँस गया एरन माँय।
एरन टूटी पर हीरा न टूट्या, जद मन मे पत आय रे। कैसे हीरे० ॥ ६ ॥
देवहुनाथ मिल्या जद जौहरी, टाल ने दिया निकाल।
मान कहे हम जौहरी पाके, खाय न खोटों री मार रे। कैसे हीरे० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की। ताल कैरवा ॥

धर के कृष्णचन्द्र अवतार, अमी गीता को पायो है॥ टेर ॥

पीने से अमृत होत अमर प्राणी होय सोई,
ऐसो अमी कृष्णचन्द्र प्रगट दिखायो है।
ढूँढते फिरे सब जहाँ हू में सिर मारे,
असल अमी सो तो हाथ हू ना आयो है।
कृष्ण करी कृपा जद दीनो है अमी असल,
पीते ही अमर रूप कृष्ण के समायो है।
भरम करम के तोड़ बन्ध,
ब्रह्म रूप दिखायो है। धर के कृष्णचन्द्र० ॥ १ ॥
पारथ हू की ओट लेके जगत को सुनाई गीता।
ऐसे जो दयाल हम पर दया भारी कीनी है।
भूल गये तत्वज्ञान भान हू न रयो हमें,
ताहूने कृष्णजी यह गीता रच दीनी है।
रस है अपार यामे पार नहीं रस हू को,
जो ही जान सके याको शुद्ध होय पीती है।

कर्मयोगी कियो कृष्ण पारथ हू को पल माँय,
कर्मयोगी करते कछु देर हू न कीनी है।
तत्त्वदर्शी नर हुए ज्ञान गीता को गायो है। धरके० ॥ २ ॥
चारों वेद सार को निकार भर्‍यो गीता बीच,
कृष्णचन्द्र ऐसे कछु कमी हू न राखी है।
सात सौ श्लोक बीच न्यारी न्यारी कीनी सब,
एक एक हूके सब मन की जो भाखी है।
केते ही पुराण ग्रन्थ शास्त्रों को पढ़ो तुम,
सब दर्शन बीच दर्शन गीता एक साखी है।
और की कहे कहा यह जगत हू की दाता गीता,
ऐसी कृष्णचन्द्रजी ने अद्भुत रच राखी है।
सभी सृष्टि को सार जगत में निजर न आयो है। धरके० ॥ ३ ॥
देवनाथ हाथ गह भूले यह बताई गीता,
सोते गहरी नींद बीच आन के जगायो है।
जाग के मैं जोयो खोयो भरम यह तमाम मन,
मेरो स्वरूप सब बीच दरसायो है।
आय हैं न जाँय कहीं मरें न जन्में हम,
त्यों के त्यों नित अक्षर अमर कहायो है।
राज हू करत कछु लेश दुख को है नाँही
ऐसी गुरुदेव युक्ति कर समझायो है।
मानसिंह अब जीव ब्रह्म एक ही दरसायो है। धरके० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

राधे राधे सब करे, पर राह को लहे न कोय।
बिना राह लीयाँ बिना, पार कहो किम होय॥
राधे राधे क्या कहो, सुनो ब्रज के लोक।

बिना राह लियाँ बिना, मिटे कभी नहीं शोक ॥
राधे भई बड भागिनी, पर तुमरे फूटे भाग।
उण सुहाग अमर कियो, तुम क्यों लियो दुहाग ॥

॥ मान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की। ताल दीपचंदी ॥

क्या रटगो राधे श्याम, दोनूँ मेरे बसे मन्दिर माँही ॥ टेर ॥
बसत मन्दिर माँहि बाहिर न जावे मेरो,
एक ही स्वरूप मेरे निज में समायो है।
आय है न जाय कहीं नित्य है प्रकाश यह तो,
धूप और छाया से निर्लेप ही कहायो है।
निराकार निर्लेप सकल में वेद ग्रन्थ गाई। हेजी क्या० ॥ १ ॥
कौन ढूंढे कौन जाय आय फिर कौन मेरे,
नित्य है प्रकाश नहीं दूर जो बसायो है।
नित्य है चेतन नहीं जड़ हू को काम कहीं,
सब खेल बीच आप खेल जो खेलायो है।
खेलत खेल अखेल रहे नहीं बात समझ आई। हेजी क्या० ॥ २ ॥
मेरी ही इच्छा अवतार लियो गोकुल माँहि,
मेरी ही इच्छा से सब खेल जो खेलायो है।
मेरी इच्छा भई जब त्याग दिये खेल सब,
एक जो अखण्डी आप आप में समायो है।
वेद ग्रन्थ यूँ कहे सकल कि न्यारो निज पाई। हेजी क्या० ॥ ३ ॥
माया ईश ब्रह्म मेरी इच्छा हू से होत न्यारे,
मेरी इच्छा भई तो सब एक दरसायो है।
दोय हू को तोड़ फोड़ एक ही स्वरूप बीच,
नहीं तो गयो ना कहीं नहीं वह आयो है।
भेद भरम में भटक भटक के यों ही मार खाई। हेजी क्या० ॥ ४ ॥
निमित्त अवतार श्रीकृष्णचन्द्र धार लियो,

नित्य को अवतार गुरुदेव नाथ आयो है।
मानसिंह भयो जद पारथ सदृश मैं तो,
गीता को दरपण लेके मुख को दिखायो है।
कर्मयोगी हम बने सहज में बड़ी धूल काई। हेजी क्या० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "ब्रज के रसिये" की। ताल कैरवा ॥

रे मंडयो चौक में रास, देखण ने घर घर कुण जावे ॥ टेर ॥
चत के चौक बिच जाजम बिछाई रे। ज्ञान चन्द्र की खूब रोशनाई रे।
चत के चौक में जाजम बिछाई। ज्ञान चन्द्र की खूब रोशनाई।
प्रेम बँसुरी ब्रह्मानन्द की, सुणताँ सुख पावे ॥ १ ॥
वृत्ति श्रृङ्गार सज्यो हद भारी रे। उत श्रृङ्गार सज मिल्यो है मुरारी रे।
वृत्ति श्रृङ्गार सज्यो हद भारी। उत श्रृङ्गार सज मिल्यो है मुरारी।
गोपी कृष्ण कृष्ण भये गोपी, द्वैत जो मिट जावे ॥ २ ॥
मान छोड़ कर आई अलबेली रे। सुरता नार जो राधे नवेली रे।
मान छोड़ कर आई अलबेली। सुरता नार जो राधे नवेली।
मिली पिया के साँय, न्यारी रह कुण अब भटकावे ॥ ३ ॥
देव तेतीस कोटि सब आया रे। रास देख सब ही सुख पाया रे।
देव तेतीस कोटि सब आया। रास देख सब ही सुख पाया।
गोप रुप सब होय ने खेल्या, रंग कर रचवावे ॥ ४ ॥
देवनाथ ऐसो रास देखायो रे। मानसिंह उण बीच समायो रे।
देवनाथ ऐसो रास देखायो। मानसिंह उण बीच समायो।
मिल्यो है अमृत मोय, जहर फिर क्यों अब हम खावें ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

हरी के कोई जात न पाँत हुती निर्बन्ध हुते नहीं बन्धन कोई।
हम बन्ध अनेकों डार दिये हरि दूर गये विश्वास यह मोई।

यदि तोड़ देवें सब बन्धन को हरि आय मिले कछु जेज न होई।
मान विचार कियो मन में यह भरम मति मैं सब कुछ खोई॥

॥ सवैया ॥

हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों शवरी घर बेर जो खाते।
हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों ले गीध को गोद उठाते।
हरि के यदि जात और पाँत हुती तो क्यों ले गुह को कंठ लगाते।
हरि के यदि जात और पांत हुती तो क्यों हनुमत को हृदय मिलाते।
हरि के यदि जात और पांत हुती तो क्यों ले विभीषण का अपनाते।
मान कहे निर्बन्ध हरि ये सभी विवादी पक्ष उठाते ॥

॥ मान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली" की । ताल दीपचन्दी ॥

साधो भाई आ भक्ति नहीं भावे हो जी।
भगवत आडी तो भींत लगाई, लम्पट माल ठग खावे रे। साधो भाई० ॥ टेर।
जगत आधार कृष्ण जी कहिये, ज्यांने चत्रिभुज बतलावे।
बांसूंई ऊँचा आप बण बैठा, सो महाप्रसाद न पावे रे। साधो भाई० ॥ १ ॥
म्हांने महाप्रसाद कर देवे, खुद क्यों दूर हटावे।
महाप्रसाद से मोक्ष मिले तो, आप ही क्यों नहीं जावे। साधो भाई० ॥ २ ।
अवर नारी से तो रास रमत हैं, अपनी क्यों ये छिपावे।
भोला जीव जिके नहीं समझे, भोंदू आपां ने बणावे रे। साधो भाई० ॥ ३ ॥
सब कुछ करे फिर बालक रेवे, यही तो हँसी मोहे आवे।
उमर पर्यन्त बालक किम रेवे, न्याय न कोई चुकावे रे। साधो भाई० ॥ ४ ॥
बालक जिके तो रोय मांगे रोटी, ए तो फुरवां माल उड़ावे।
बालक होय सो मात बहिन समझे, ए गोपी कर नाच नचावे रे। साधो भाई० ॥५॥
बालक जिके तो धूल में लिपटे, कीचड़ में ही चले जावे।
केशर स्नान करे नित उठ ये, अष्ट सुगन्धी लगावे रे। साधो भाई० ॥ ६ ॥
इण भक्ति सूं तो निकमाई आछी, भलाँई नरक में जावे।

बाजाँ झकोल हँसी होय जग में, कुण घर मुकत लुटावे रे। साधो भाई० ॥ ७ ॥
मोटा बालक ए भला घर अपने, म्हारे काम नहीं आवे।
याँ रे स्वर्ग में ए ही जावो, म्हारे तो स्वप्ने नहीं चावे रे। साधो भाई० ॥ ८ ॥
स्वर्ग नरक सब मेरी इच्छा, मुझ में ही उत्पन्न थावे।
स्वर्ग नरक को मैं ही दृष्टा, कुण फिर भोग भोगावे रे। साधो भाई० ॥ ६ ॥
म्हारो बात मानसी जो नर, वाँरे पेच नहीं आवे।
खर मूरख से समझे नाहीं, मार खाय वहीं जावे रे। साधो भाई० ॥ १० ॥
देवनाथ गुरु सहजे मिलिया, मन का धोखा मिटावे।
मानसिंह अखिल प्रभु चोख्यो, न्यारो नहीं दरसावे रे। साधो भाई० ॥ ११ ॥

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

बालकृष्ण क्या बुलाय कीर्तनी, बालकृष्ण क्या बुलाय।
इतनी देर भई तोहे गावत, अजहू सुने नहीं आय। कीर्तनी० ॥ टेर ॥
क्या तो तू झूठे ही गावे, या कान है उनके नाँय।
इन दोनों में कौन बात है, साचो देहु समझाय। कीर्तनी० ॥ १ ॥
तू ही ज झूठो हरि न बहरो, पण तू समझे नाँय।
पत्थरों को तू कृष्ण बनावे, तो स्वप्ने सुनन न आय। कीर्तनी० ॥ २ ॥
देख वेद और ग्रन्थ शास्त्र में, बात जबी यह पाय।
नित्य अवतार सबी है प्रभु को, तब धोखो मिट जाय। कीर्तनी० ॥ ३ ॥
कहा शृंगार पद गाय कनैयो, सूरत भोजन न खाय।
बालकृष्ण जो फिरे बारणे, जिनको खाय खिलाय। कीर्तनी० ॥ ४ ॥
युवा कृष्ण जो चहिये तुमको, तो हमें देय कुछ खाय।
हम खावें कुछ स्वाद बतावें, फिर तू गाय न गाय। कीर्तनी० ॥ ५ ॥
गुरु ही मूढ़ मूढ़ तुम चेले, कसर एक में नाँय।
मान कहे पत्थर पत्थरन से, रगड़याँ आग(१) उपजाय। कीर्तनी० ॥ ६ ॥

१—क्रोध।

॥ गान ॥

॥ राग परज । ताल धमाल ॥

ठाकुर सेवक नाँय, मेरे मन ठाकुर सेवक नाँय।
ठाकुर सेवक बने तो बनिये, जो बनिया दुख पाय। मेरे मन ठाकुर० ॥ टेर ।
अखिल विश्व मे ठोस भरा हूँ, खाली जगह नहीं पाय।
जहाँ ठाकुर सेवक दोऊँ रेवे, रेवे तो तुम ही रम जाय । मेरे मन० ॥ १ ।
क्यों ये बातें बनावे निकमी, फिर फिर जगत भुलाय।
आप ही ठाकुर आप पुजारी, व्यापक सब जग माँय । मेरे मन० ॥ २ ॥
कौन वृथा यह घण्टा हिलावे, कौन विधर्मी हँसाय।
अपने आपको अँगूठा दिखावे, जा सूँ मन शरमाय। मेरे मन० ॥ ३ ॥
शामिल छतों करें क्यों न्यारो, म्हाँ सूँ कियो नहीं जाय।
मान कहे मानो मत मानो, मैं तो साची दीनी सुनाय। मेरे मन० ॥ ४ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल केरवा ॥

कृष्ण मेरो, नहीं गोरो नहीं कारो रे हेजी होजी।
जहाँ देखूँ मौजूद खड़ो है, पलक नहीं है न्यारो रे। कृष्ण मेरो० ॥ टेर ॥
दैत्य बकासुर वत्सासुर मारया, तो भी न भयो हत्यारो रे हेजी होजी।
चाणूर मुष्टि मार कुवलीया, कंस को पकड़ पछाड़्यो रे । कृष्ण ॥ १ ॥
मार जरासन्ध शिशुपाल को मार्‌यो, दैत्यन दल संहारो रे हेजी होजी।
सब को मार निर्लेप रहत यह, नटवर अजब खिलारो रे । कृष्ण० ॥ २ ॥
अर्जुन मिस्राय कुरुदल ने मार्‌यो, आलम जबर धूतारो रे हेजी रे होजी।
कुछ कहतो ओ कुछ कह देवे, याने मिल्यो नहीं बरजण हारो रे। कृष्ण० ॥ ३ ॥
आप वसुदेव देवकी आप है, आप है नन्द दुलारो रे हेजी होजी।
आप ही नन्द यशोमति आप ही, आप ग्वाल यूथ सारो रे । कृष्ण० ॥ ४ ॥
आप व्रज गोपी आप पूतना, आप दैत्य बलकारो रे हेजी होजी।

प शिशुपाल जरासन्ध आप ही, आप जीत्यो आप हारो रे । कृष्ण० ॥ ५ ॥
दल आप आप पाण्डवदल, कौन मर्यो कौन मारो रे हेजी होजी।
इन में मैं झूठ कहत हूँ तो, रूप विराट विचारो रे । कृष्ण० ॥ ६ ॥
रथियों तो अपने स्वारथ बश, कीनो फैल अपारो रे हेजी होजी।
वा सखी हुड़दगा नाचे, लम्पट देश बिगारो रे । कृष्ण० ॥ ७ ॥
ना गोल रे मेला जो रहता तो, वह जाता भव धारो रे हेजी होजी।
वनाथ गुरु गीता पढ़ाई, कीयो लम्पट सुख कारो रे । कृष्ण० ॥ ८ ॥
हूँ मैं व्यवहार लिगार नहीं दुःख, सब जग रूप हमारो रे हेजी होजी।
न कहे तुम रहो रे अलगा, छुवूँ न पल्लो तुमारो रे। कृष्ण० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "वाणी" की । ताल कैरवा ॥

साधो मैं तो वो ठाकुर मन ध्याया रे हेजी होजी।
विश्व विभु में प्रगट व्यापक, ना कोई पड़दा लगाया रे। साधो मैं० ॥ टेर ॥
सब कुछ खाय सभी कुछ देवे, लेण देण से वो न्यारो रे हेजी होजी।
प्रेम पुजारी सेवा माँय बैठो, सेवा करे हरवारो रे । साधो मैं० ॥ १ ॥
बोले ना बोलायो जागे न जगायो, वो ठाकुर फिर कैसा रे हेजी होजी।
पूजा करे उत्तर नहीं देवे, हमको न चहिये ऐसा रे । साधो मैं० ॥ २ ॥
भोजन छत्तीस छप्पन करे त्यारी, वो तो कदेई नहीं खावे रे हेजी होजी।
करके तैयारी महनत करे क्यों, सुपने न स्वाद बतावे रे। साधो मैं० ॥ ३ ॥
आतमदेव ठाकुर मेरो ऐसो, माँग माँग सब पावे रे हेजी होजी।
स्वाद अस्वाद कहे सब मुख सूँ, मन राजी होय जावे रे। साधो मैं० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु मिलिया गुसांई, वल्लभ अवतार कहावे रे हेजी होजी।
मानसिंह ऐसो बन वैष्णव, ठाकुर बीच समावे रे। साधो मैं० ॥ ५ ॥

॥ सवैया ॥

हांसी जो आत मेरे मन में पशुओं से बुरे अकल कछु नांई।

राम के नाम को ऐसो गिने जिन आटे की गोली ले मच्छी चुगाई।
आटे में मच्छी में राम बसे और राम बसे उस कागद मॉई।
मान कहे मन भूल मरो इण भूल मे क्यों सब ज्ञान गमाई॥

॥ सवैया ॥

केतेक ओम और राम के मंत्र को आप लिखे औरों से लिखावे।
कौन से वेद में ऐसो लिख्यो जिनसे ये मूरख जगत बहकावे।
कागद और गुमावत स्याही नयन को अपने अन्धे बनावे।
मान कहे हर राच्यो नहीं घनश्याम उन्हें वहँ दृष्टि न आवे॥

॥ सवैया ॥

ओम को मंत्र पढ्यो हमने हम ओम् स्वरूप मे सहज समाये।
ओम ही रूप लख्यो जग को और ओम बिना कछु और न पाये।
आ और बो सब दूर गये हम ही हम ओहं रूप लखाये।
मान कहे अब ओम रटें रटते रटते निज ओम रहाये।

॥ दोहा ।

सारंग मन मीठा घणी, शोभा कही न जाय
यह रस कहिये कासको, मुख जो कान के नॉय
जहाँ मुख है शोभा नहीं, क्यों कर देहें सुनाय
मानसिंह सारंग को, सुणियों ही पन आय।
इक सारंग जो राग है, इक सारंगी साज।
इन सारग (१) को गान हो, और सारंग (२) को हो गाज।
सारग एता भेला हुआ, क्या जानूँ क्या होय।
एक ही सारग राग आ, सुणतॉ ले मन मोय।

॥ गान ॥

॥ राग सूर-सारंग ; तर्ज रसिये की। ताल कैरवा ॥

मेड सूँ सिंह बनावो रे, मनवे ने॥ टेर॥

१—स्त्री, २—मेघ।

जीव म्हौड़ में भूल गयो है । हेजी याँ सूँ अविद्या रो जाल हटावो रे; म० ॥१॥
सिहणी जायो पण पाल्यो गडरियाँ । हेजी अब थारे हाथ सूँ छुड़ावो रे; म० ॥२॥
घास गरीबी ओ खाय बापड़ो । हेजी इगने समता रो मांस खिलावो रे; म० ॥३॥
सिंह बणे जद चरसी विषयां ने । हेजी इणने तुरिया वन पहुँचावो रे; म० ॥४॥
मान कहे ऐसो मौको मिलियो । हेजी इण रो अब मत दाव मावो रे; ० ॥५॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

अब ही महल निज आवो रसिया ॥ टेर ॥
कुवड़ी रे महलां घणा दिन वीत्या;
अब सुमता सूँ प्रेम बढ़ावो जी रसिया । अब ही० ॥ १ ॥
पांच विषय रस कई दिन पीयो;
अब ज्ञान आनन्द मद पावो जी रसिया । अब ही० ॥ २ ॥
सौती की सहज घणा दिन सूता;
पीव प्यारी सहज जगावो जी रसिया । अब ही० ॥ ३ ॥
मन मथुरा थे घणा दिन रह्या;
अब राम री गोकुल में खेलावो जी रसिया । अब ही० ॥ ४ ॥
सुमता श्यामा याद दिलावे;
म्हाने दिल सूँ मती बिसरावो जी रसिया । अब ही० ॥ ५ ॥
चित्तरो चैत म्हारो सगलो ही कुम्हल्यो;
या में प्रेम वर्षा वर्सावो जी रसिया । अब ही० ॥ ६ ॥
फागुण वीत्यो फिकर के मांहि;
अब चैत चित्त मुलकावो जी रसिया । अब ही० ॥ ७ ॥
मानसिंह कह शुद्ध कामना;
म्हांने तत्त्वमसि भोग भोगावो जी रसिया । अब ही० ॥ ८ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "चैत के रसिये" की । ताल दीपचन्दी ॥

काँई रे नींद सुख सूतो मनवा ॥ टेर ॥
सूतों सूताँ थारो काम न सरसी, ऊपर काल तो आय पकड़सी;
इण काल फौज सूँ तू किण विध लड़सी । काँई रे नीन्द० ॥ १ ॥
बहुत प्रबल आ काल की माया; इण में बड़ा बड़ा गोता खाया;
कैयाँ रा माल अठे मुफ्त लुटाया । काँई रे नीन्द० ॥ २ ॥
तेरो तू अजहू जाणे नाँई, आयोड़ी बाजी ने हाथे गमाई;
अजहू जीतने जेज लागे नाँही । काँई रे नीन्द० ॥ ३ ॥
अपनो रूप लख्याँ दुःख मिट जावे; काल बली फेर निकट न आवे;
अन्ध कूप मूँ तुरत बच जावे । काँई रे नीन्द० ॥ ४ ॥
पन्थापन्थ में तो पग मत दीजे; याँ रोलाँ सूँ तो अलगो रहीजे;
कोई सन्त पिलावे तो अमृत पीजे । काँई रे नीन्द० ॥ ५ ॥
मानसिंह जैसा गुरु कद पासी; जोया न मिलसी इसा संन्यासी;
मान गुमान काट जम फाँसी । काँई रे नीन्द० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

तर्ज "चैत के रसिये का । ताल दीपचन्दी

अब के आनन्द म्हाँ ने आयो रसिया ॥ टेर ॥
बाहिर ढूँढत घर माँही निजियो, आनन्द मगन होय मनड़ो सिजियो । अब० ॥ १ ॥
बाट जोहताँ ने सहज मिलाया, सद्गुरु मिलताँ ही रतन दिलायो । अब० ॥ २ ॥
भूल भरम सूँ अकेलो सूतो, मानो नहीं संग कुमता दूतो । अब० ॥ ३ ॥
पिव प्यारी प्यारी पीव भया एको, दोय पणे रो मिट गयो लेखो । अब० ॥ ४ ॥
प्रीतम छताँ मैं तो जाणी कुमारी, हा हा भूल कर रह गई न्यारी । अब० ॥ ५ ॥
कहे यूँ गुलाब मान गुरु पायो, जिण गृहस्थ बीच संन्यास दिखायो । अब० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "कोरे काजलिये" की । ताल कैरवा ॥

नर दिव्य नेत्र में सार, कोरो काजलियो ॥ टेर ॥
ज्ञान दीप नित जोत जगी । जिण में प्रेम की बाती लगी ।
तू नर को घृत नित डार; कोरो काजलियो० ॥ १ ॥
अंतर मूँ नित सुख पावे । काम क्रोध फिर नहीं आवे ।
और मोयले वृत्ति तार; कोरो काजलियो० ॥ २॥
दिव्य नेत्र जिण सूँ खुले, मोह निन्द्रा में नाँय घुले ।
जब होसी गीता विचार; कोरो काजलियो० ॥ ३ ॥
प्राज्ञ अन्ध तू क्यों जो भयो । प्रज्ञा चक्षु मीच रयो ।
पट पट लेवो उधार; कोरो काजलियो० ॥ ४ ॥
इण दम की कुछ ठाव नहीं । आवे और यह आवे नहीं ।
मत कीजे जेज लिगार; कोरो काजलियो० ॥ ५ ॥
जैसे कृष्ण पारथ हि दियो । देवनाथ गुरु मोय कह्यो ।
मोय अपनो सेवक विचार; कोरो काजलियो० ॥ ६ ॥
मान कहे मैं सब को कहूँ । गुप्त भेद नहीं नेक रखूँ ।
कोई देखो इणने सार; कोरो काजलियो० ॥ ७ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल दीपचन्दी ॥

सत बोलो रे, साफ सत बोलो; कपट पट खोलो रे ॥ टेर ॥
स्वारथ छुरी को दूर फैंक दो, मत अमृत विष घोलो रे । सत बोलो० ॥ १ ॥
झूठ कपट सूँ किता दिन चलसी, मतले सायब सूँ ओलो रे । सत० ॥ २ ॥
तुम भी जबर उस प्रभु से छिपाओ, अन्तर्यामी नहीं है भोलो रे । सत० ॥ ३ ॥
पन्थापन्थ के कपट पट दीया, खूब मचायो इन रोलो रे । सत० ॥ ४ ॥
वाया ने जीवड़ा दसा ने बिसा, छोड़ सीधे मग होलो रे । सत० ॥

नारी ने पुरुष स्वारथ सूँ बिगाड़ो, पड़ैला जमों रो शिर ठोजो रे। सत० ॥ ६ ॥
नकटों री लाज राम किम राखे, राम नहीं है थाँरो गोलो रे। सत० ॥ ७ ॥
देवनाथ गुरु सत समझाई, जावो छाती मत छोलो रे। सत० ॥ ८ ॥
मानसिंह कहे सिंह जो बनजो, कहं सो वचन काटे तोलो रे। सत० ॥ ९ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल कैरवा ॥

आवो जी मिल होरी हेलें, घोल्यो सुरंगी रंग ॥ टेर ॥
थाँ रंगों सूँ मत खेल बावरे, कल उड़ जायगो पतंग। आवो जी० ॥ १ ॥
इण रंग सूँ तो अति सुख उपजे, शीतल होय जावे अंग। आवो जी० ॥ २ ॥
ब्रह्मानन्द की बूटी पिलाऊ, पियो मत विषय की भंग। आवो जी० ॥ ३ ॥
प्रेम भाव सूँ खेलो फगवाँ, सत्पुरुषो के संग। आवो जी० ॥ ४ ॥
मान कहे नर नारी सभी मिल, खेलो खेलो करके उमंग। आवो जी० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग काफी । ताल कैरवा ॥

होरी मे हिम्मत से खेलणो, अलबेलों रा काम ॥ टेर ॥
जो डरपोक जीव है बपुरा, विषयों तणा गुलाम। होरी मे० ॥ १ ॥
इण होरी मे काम फुरती रो, पलक नहीं है विश्राम। होरी मे० ॥ २ ॥
महा ज लिम सूँ जीत निकलनो, जबरी है माया भाम। होरी मे० ॥ ३ ॥
जो चूके तो चिम्मट मारे, कर लेवे अपनो गुलाम। होरी मे० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु फुरती सिखाई, मिल गयो आतमराम। होरी मे० ॥ ५ ॥
मानसिंह कहे जेज मति कीजो, फुरती रो है ओ काम। होरी मे ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरी कायर सूँ कद होय।
ए हेल दुखी पर हेले, कायर देवे रोय। फकीरी काय० ॥ टेर ॥

इण शूली पर काँई तू सोवे, हम नहीं मानें कोय ।
निश्चय री शूली कलेजे पोवे, मरद जाणूँ जद तोय । फकीरी० ॥ १ ॥
काँई तू लकड़ जगावे गैला, क्यों दम अमोलख खोय ।
जब तक ज्ञान अगन नहीं जागी, शिर कूटाई होय । फकीरी० ॥ २ ॥
काँई तू साँकल कसे कमर में, दीवी बुद्धि ने खोय ।
नित साँकल जो बन्धे म्हारे गज रे, वजन तोल मण दोय । फकीरी० ॥ ३ ॥
यूँ कीयाँ नहीं मानों फकीरी, म्हाँने भोला न जानो कोय ।
सिंहा रा सुत सिंह ही होसी, खाल भेड़ों री खोय । फकीरी० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु दीवी फकीरी, अब रेया बेफिकरी में सोय ।
सूताँ पछे जागण री है सौगन्द, मत बतलावो मोय । फकीरी० ॥ ५ ॥
जगत बहके ज्यों मैं नहीं बहकूँ, सोच फिकर दिया खोय ।
मानसिंह कहे मेरे घर आईजो, सुरत आप में पोय । फकीरी० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग सोरठ । ताल दीपचन्दी ॥

फकीरा मती रे बिगाड़ो देश ।
खेलणो हुवे तो खरी पर खेलो, ले गुरु रो उपदेश । फकीरा० मती० ॥ टेर
तारण कारण फकर भया थे, धर अग्नि रो भेष ।
भेष री टेक तो भूल गया थे, कर कर मौज हमेश । फकीरा मती० ॥ १ ॥
छोटो कुटुम्ब छोड़ दियो घर में, अब मोटे सूँ आदेश ।
अब तो स्वार्थ ने छोड़ो साधो, दोरा खैंचसी केश । फकीरा मती० ॥ २ ॥
थाँ सूँ तो नर म्हे ही आछा, जिण पायो आतम अचलेश ।
बाजा फकीर ने फिकर चौगुणो, कियो नहीं ब्रह्म प्रवेश । फकीरा मती० ॥ ३ ॥
भारत देश रसातल जावे, दिन दिन दूणो कलेश ।
पन्थापन्थ में पच पच मूँवा, भूल्या आतम नरेश । फकीरा मती० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु कृपा करी जद, भागा भरम सन्देह ।
मानसिंह जद मन समझायो, पहर्‌यो अचल रङ्ग भेष । फकीरा मती० ॥ ५

॥ गान ॥

॥ राग माँड । दादरा ॥

नर ए नहीं व्योपारी, देखो विचारी, बेचे काच कथीर ।
थेतो सुण लीजो सब वीर रे । नर ए० ॥ टेर ॥
मोटा मोटा धूणा बाले, बैठे गगा तीर ।
राम की ओट में चोट करे ए, चावे पूड़ा ने खीर रे । नर ए० ॥ १ ॥
मोटी मोटी बातॉ बणावे, राखे लंगोटी चीर ।
लागे दम जब राम न पड़े कुछ, नहीं वे धरे मन धीर रे । नर ए० ॥ २ ॥
पन्थापन्थ री फौड मचाई, बाधे कड़ी जंजीर ।
बाजे तो बावा पण कावा माया रा, नहीं समदॉ सूँ सीर रे । नर ए० ॥ ३ ॥
अलगॉ सूँई हाथ थांने जोड़ो, नेड़ा न अवणदो चीर ।
जो कोई थॉरे पाने पड़िया, ज्यॉरी फूटी तकदीर रे । नर ए० ॥ ४ ॥
देवनाथ गुरु महर करी म्हॉने, दिया असली हीर ।
मान मिल्या जो समुद्र से जायके, कुण पीवे नालॉ रो नीर रे । नर ए० ॥ ५ ॥

॥ गान ॥

॥ राग रेखता । ताल कवाली ॥

बने हम त्याग के त्यागी, त्याग यह क्या विचारा है । ॥ टेर ॥
अगर कहो देह को त्यागो, तो इसको हमने कब पकडी ।
छोड़ते देह को मूरख, ज्ञान झूठा तुम्हारा है ॥ १ ॥
छोड़ अभिमान इस तन का, लैन पर हम चलावेंगे ।
फॅसेंगे किस लिये हम तो, हमें खारा न प्यारा है ॥ २ ॥
रहें व्यवहार मे प्रवृत्त, वही तो सच्चे ज्ञानी हैं ।
निकल कर जांय जंगल में, मता नहीं यह हमारा है ॥ ३ ॥
अगर कुछ त्याग में होता, तो भिक्षुक होता था अर्जुन ।
बचाया क्यों सन्यासी से, कृष्ण पागल तुम्हारा है ॥ ४ ॥

यदि कोई चीज और होवे, सभी यह खेल है मेरा।
बाँन में मैं सजाता हूँ, बिगड़े ना कुछ हमारा है ॥ ५ ॥
अगर कोई त्याग को त्यागे, बनाऊँ दोस्त मैं उसको।
कहे नृप मान रूप मेरा, न मुझ से कुछ भी न्यारा है ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ तर्ज "डंके" की । ताल कैरवा ॥

धर्म धर्म सब कहे धर्म को अरथ न जाने रे, लख्याँ बिन किम पहिचाने ॥ टेर ॥
बाड़ा बन्धी धर्म बताय । इसमें नाना जोव फँसाय।
कृष्णचन्द्र जो कयो धर्म सो कोइयन माने रे । लख्याँ बिन० ॥ १ ॥
नाना मजहब सो धर्म है नाँय। यह मत आपे दिये ठहराय।
धर्म बाक्य यूँ वेद उपनिषद सही बखाने रे । लख्याँ बिन० ॥ २ ॥
धर्म यही शुभ कर्त्तव्य काम । अधरम वह विषयों के गुलाम।
विषय वास सूँ रहे रहित वो धर्म को माने रे । लख्याँ बिन० ॥ ३ ॥
जब अधर्मी बहु बढ़ जाय । विषय ज्वाल को बहुत जगाय।
देव्य मूरत धर कृष्णचन्द्र अधर्म मिटाने रे । लख्याँ बिन० ॥ ४ ॥
आतमतत्त्व लखे कोई जान । उनको धर्मी सच्चे मान।
तीन लोक को वश में किया जद आप समाने रे । लख्याँ बिन० ॥ ५ ॥
कीनो असुर धम जब ख्वार। देवनाथ गुरु लियो अवतार।
मानसिंह कहे सद् गीता को धर्म सुनाने रे । लख्याँ बिन० ॥ ६ ॥

॥ गान ॥

॥ राग खमाच, तर्ज "माछली की वाणी की । ताल दीपचन्दी ॥

मित्रो म्हाँने या लघुता नहीं भावे ॥
दुश्मण आय शीश काटण ने, क्यों कर लघु बन जावें।
क्षत्रीकुल को दाग पुनि लागे, गीता वचन शरमावे रे । मित्रो० ॥ १ ॥
आग जले और बुझावे नाँई, तो सगलोई घर जल जावे।
पाणी पहिला पाल बान्ध लो, वचन बड़ा फरमावे रे । मित्रो० ॥ २ ॥